सर्वनाश
श्री जैन जवाहर पुस्तकालय
1380
एक ही प्याला
?

दक्षिण हैद्राबाद

जीवरक्षा ज्ञान प्रचारक मंडली

सं० १९७१ विक्रमी] स्थापना [सन १९१५ इस्वी

उद्देश

अहिंसा प्रत्येक सामाजिक नीति का सच्चा और प्रजा मुख्य अंग है। इस तत्त्व का निश्चय कर सर्वसाधारण में सतत प्रचार करना इस मंडली का मुख्य उद्देश है। यह मंडली निम्न लिखित सुधारों का आग्रह पूर्वक सम्भव व प्रयत्न पूर्वक प्रचार करेगी

(अ) "इंद्रियज्ञान वाले" सब प्राणियों को हरेक प्रकार की निर्दयता से बचाने का प्रयत्न करना

(आ) वैज्ञानिक आत्मिक, नित्य नैयामिक और आयुर्वेदिक दृष्टया शुद्ध शाकाहार से व मद्यपानादि मादक द्रव्यों के त्याग से होनेवाले लाभ, प्रजा को समझाना

(इ) धर्म अथवा रूढि के नाम से प्रचलित पशुपक्षि आदि निर्दयता पूरित प्रथाओं को संपूर्णतया बंद करने के लिये अधिकारी वर्ग से विनंति करना और प्रजामत तदनुकूल करना

(ई) परदेश से मंगवाया हुआ अथवा मंडली द्वारा खास रचवा कर विविध भाषाओं में प्रकाशित किया हुआ अहिंसा संबंधी साहित्य जनता में बांटना

(उ) जन कल्याण के अराजकीय प्रश्नों को अपनाना

एक ही प्याला

?

प्रयोजक

आमुख

मद्य या दारु पीने से कैसी २ हानियां होती हैं प्रायः सब समझदार लोक जानते हैं धर्मशास्त्रों में इस का कड़ा निषेध किया गया है व्यवहार में लोक दारु के व्यसनी जनों का विश्वास कम किया करते हैं व गुन्हागार एवं सजाबार भी पाये जाते हैं वैद्य हकीमों की राय है कि दारु के पीने से उन्माद आदि बीमारियां व अकाल मृत्यु हो जाती है शराबी व उस के कुटुंब परिवार को सदा दरीद्री सताया करती है ऐसी एक नहीं अनेक बुराईयों के दिखने पर भी कैसे आश्चर्य व दुःख की बात है कि मद्यपान देशभर में दिन ब दिन बढ़ता ही जा रहा है। देश की भलाइ चाहने वालों का कर्तव्य है कि वे इस अनर्थ से बचने के लिये प्रजा का ध्यान शीघ्र आकर्षित करें व ऐसी पुस्तकें पत्रिकायें वॉलपापरें आदि साहित्य का विविध भाषाओं में प्रचार एवं ओदर भाषण आदि लोकजागृति के साधनादि अनेक प्रकारों से इस बढ़ती हुइ आपत्ति को रोकने का प्रयत्न करें

यह छोटी पुस्तक श्री बंबई लक्ष्मी आर्ट प्रिंटिंग प्रेस के मालिक सेठ पुरुषोत्तम विश्राम मावजी द्वारा सुवर्णमाला मासिक में प्रकाशित मद्यपान की करनी" नामक सचित्र कहानी पर से परिवर्धित कर लिखी गइ है, यह कृतज्ञता पूर्वक व्यक्त किया जाता है आशा है कि वाचकगण इसे पढ़ कर मित्र मंडल में इस में की उपदेश का प्रचार करेंगे उपर्युक्तानुसार साहित्य छपाने में धनसहायता के लिये भी प्रार्थना है

निवेदक

बी. जी. स्टेशन रोड, हैद्राबाद (दक्षिण) } लालजी मेघजी

श्री मफतरी.

सर्वनाश
या
एक ही प्याला

१

(१)

मोहमयी मुंबा नगरी में गोपालराव नाम के गृहस्थ रहते थे पूर्वजों की प्राप्त की हुई स्थावर मिल्कत की वार्षिक आमदनी सिवाय सवा सौ रुपये मासिक वेतन था अर्थात् आर्थिक हालत अच्छी थी आप की पत्नी रमाबाई रूप गुणवती आज्ञाकिता नारी थी आप का एकलौता पुत्र रंगराव होनहार नवयुवक अभी आर्ट्स कॉलेज में अभ्यास कर रहा था तरुण रंगराव का विवाह कुलवती सुशीला लड़की से किया गया था जिस का नाम था इंदिरा इन्दिरा उर्फ लक्ष्मी अपने नामानुसार लक्ष्मी का अवतार थीं व लज्जाविनयादि गुणों से दोनों कुलों की शोभा को बढ़ा रही थीं इंदिरा की गोद एक लड़का व एक लड़की से हरीभरी होने से पुत्रवती बहू पर रमाबाई का अधिक प्रेम था पौत्रपौत्री की बालक्रीड़ा देख कर वृद्धा रमाबाई फूली न समातीं व उस का समय वात्सल्य रस में व्यतीत हो जाता था इस प्रकार गोपालराव का सुखी कुटुंब मानों प्रेम का शांतिधाम था

जिस किसी को निर्धनता गरीबी का दु:ख हो, किसी को अपने मन के अनुकूल स्त्री न मिली हो, किसी को पुत्र

का काम न हो अथवा पुत्रवधू के कारण घर में सास-बहू की लडाई हो, किसी को पौत्र पौत्री नसीब न हुए हों इस प्रकार आधि व्याधि उपाधि पीडित कोई दु:खी प्राणी जब हमारे चरित्र नायक गोपालराव का कुटुंबसुख देखते तब उन के मुख से यह शब्द एकाएक निकल जाते थे कि "इस गृहस्थ के गृहस्थाश्रम को धन्य है" परमेश्वर किंवा कुदरत की कृपा से पुण्यवान प्राणी संसार में भी स्वर्गतुल्य सुखों का भोग कर सकते हैं इस का उस प्रेक्षक को प्रत्यक्ष अनुभव हो जाता था, हमारे इस कथन की सत्यता जांचने के लिये पाठकगण कृपया सामने के पृष्ठ पर 'सुखी कुटुंब' का चित्र नंबर १ देखें,

(२)

परंतु संसार परिवर्तनशील है भाग्य का चक्र हमेशां घूमते रहता है सदाकाल सुख किस का रहा है ! गोपालराव इस के अपवादरूप क्यों कर हो सकते ? किसी ने ठीक कहा है कि 'विनाश काले विपरीत बुद्धि' गोपालराव नवीन रोशनी के याने सुधारक पथी सद्गृहस्थ थे धर्मधर्मों को वहम समझ कर कभी के त्याग चुके थे आहार विहार एवं खानपान में स्वतंत्रता का प्रतिपादन बडे जोर से अपनी बातचीत में बारबार किया करते थे यद्यपि अभी तक उन के घर में मद्यपान किंवा मांसाहार का प्रत्यक्ष प्रवेश न हुआ था तथापि श्रीमान् की राय में इन चीजों का उपयोग करने में कुछ भी बुराई न थी। इस जमाने में प्रचलित छोटे २ व्यसनों का याने चाय सिगरेट आदि का यथेच्छ उपभोग किया करते थे जीवन की इन अनियमितता के कारण कुछ

(चित्र नम्बर १)

सुखी कुटुम्ब

(चित्र नम्बर २)

एक ही प्याला

दिन हुए अजीर्ण व्याधि आप को सताने लगी बदहजमी से बचने का उपाय आप के कुछ मित्रोंने कोई उत्तेजक पेय याने गुलाबी नशेदार पीना रोजाना पीनेकी सिफारिश की उनका अभिप्राय था कि उत्तम प्रकार की ब्रान्डी या व्हिस्की जैसी दारु यदि नित्य थोडी २ माफकसर ली जाय तो तन्दुरुस्ती को फायदा होगा इस के अनुमोदन में किसी एक डॉक्टर साहब ने अपनी सम्मति प्रगट कर दी कि ऐसा करने से आराम रहेगा इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि एक दिन मित्रमंडली के आग्रहवश भोलाशिकार बन के गोपालराव ने मद्यपान का श्रीगणेश शुरु कर ही दिया एक ही प्याला पिलाने वाले मित्रों में गोपालराव दोनों हातों से निषेध करते हुवे चित्र नंबर २ में पाये जाते हैं।

(३)

जिस ने विवेक को त्याग दिया उस का सर्वनाश अवश्यभावि है गोपालराव का दारू का व्यसन व्यसनी मित्रों की संगति में प्रति दिन बढने लगा धीरे २ उस दुर्व्यसन ने आप पर ऐसा अधिकार जमाया कि नित्य मद्य सेवन किये बिना चैन न पाते मित्रों के आग्रहयुक्त आमंत्रणों से आप उन के यहा मिजबानी पार्टीयों में जाया करते थे दारु भी वहा रहती थी कईबार मित्रों को अपने घर पर पार्टी में बुलाते थे उन के स्वागत में कई बोतलें खलास की जाती थीं इन मिजबानीयों की रातों में गोपालराव के घर में सब मित्रों द्वारा जो गडबड धींगामस्ती व नाच कूद गाना रोना मचाया जाता था उस से सारा घर कॉप ऊठता था बिचारी रमाबाई

अपने पति की यह विपरीत अवस्था देख, मन ही मन किस प्रकार सिसक जाती इस की कल्पना कीजिये उस के कोमल हृदय में गहरी चोट आई किन्तु लाचार! अनेक बार विनति करने पर भी पतिदेव ने उस की एक न मानी। औंधे घडे पर पानी! ऐसी पति की दुर्दशा देख वह अबला फूट २ कर रोती, आसुओं की धारा बहाती, इधर गोपालराव अपने मतवाले मित्रों सहित मद्यपान के मजे में मस्त रहा करते थे। पूर्ण व्यसनाधीन दशा में उन के मित्रों का नृत्य सामने के पृष्ठ पर चित्र नबर ३ में देख कर आप अवश्य दु खी होंगे

(४)

जिस घर के वडिल याने मुख्य पुरुष दुराचार के तरफ झुकते हैं उन का अनुकरण छोटे बच्चे वगैरा किया करते हैं उन की बूरी चाल का बूरा सस्कार दूसरों पर पड जाता है गोपालराव की उपर्युक्त चेष्टाओं का उन के पुत्र रगराव पर विपरीत परिणाम हुआ पिताजी नित्य मित्र मडल में इतनी बोतलें स्वाहा कर जाते हैं इतनी इस दारु में क्या माधुरी होगी यह सहज प्रश्न तरुण रगराव के चपल मस्तिष्क में बारबार घूमने लगा एक बार दारु का स्वाद चखने के लिये वह उत्कठित हो गया व चुपचाप कोई न देख सके ऐसे एकांत की ताक में रहने लगा एकांत मिलते ही थोडासा चखने का उस ने निश्चय कर लिया दुर्भाग्यवश उसे एक दिन ऐसा प्रसग मिल गया घर में दूसरा कोई नहीं है ऐसा देख उस ने आलमारी खोली व एक बोतल में से एक ही प्याला भर के थोडा सा चखने के लिये उगली डुबोकर चाट देखा! खबरदार

(चित्र नंबर ३)

पूर्ण व्यसनाधीन दशा में

(चित्र नंबर ४)

प्रथम आस्वादन

रगराव ! क्या तूने कभी नहीं सुना कि दारु पीने से बुद्धिनाश होता है ? क्या तूने अपनी आंखों से नहीं देखा कि दारु पीनेवालों की कैसी दुर्दशा होती है ? तू पढा-लिखा समझदार होते हुवे इस समय तेरी सुधबुध कहां गई ? सम्हल जा ! अंध व्यसन से अपने आप को बचा ले ! क्या ! तेरी पत्नी इंदिरा व तेरे बालकों के लिये तेरे दिल में कुछ भी दया नहीं है ? होशियार ! इस एक ही प्याले को स्पर्श करने का कुविचार कभी मत कर, परन्तु अरे ! कांपते हुवे हाथ से उसने यह प्याला उठा लिया, इतना हि नहीं, उस अविचारी मूर्ख ने पी भी डाला !! (चित्र नंबर ४) देखें

(५)

आम फलन्त परिवार सों, मधुक फलन्त पत खोय ।
ता को रस सामन पिये, काहे न निर्लज्ज होय ? ॥

चोरी छुपी से दारु पीते २ रगराव का व्यसन धीरे २ प्रबल होते चला प्रारंभ में वह अपनी पत्नी इंदिरा से छुपा कर पिया करता था किन्तु ऐसा कहां तक चले ? अंत में एक दिन इंदिरा ने देख लिया कि रगराव मेज पर बैठे मद्य का प्याला भर रहा है । पत्नी ने देख लिया यह मालूम होते ही वह निर्लज्जता धारण कर कहने लगा "मेरी तबीयत के सुधार के लिये दवा के तौर पर एक ही प्याला लेता हु" ऐसा कहे कर बात को टाल दी

दुर्भागी इंदिरा ! तेरे पति को दुर्भाग्य ने घेर लिया है उस को बचाने के लिये तू अपने अंत करण की दुःखी आह उसे सुनाने का व्यर्थ प्रयत्न कर रही है । देवि ! इस

में सदेह नहीं कि तू अपना कर्तव्य पालन कर रही है किन्तु भोली ! तेरे सदुपदेशक हित वचन सुनने के लिये अभागे रंगराव के कान कहां हैं ? इस कि बुद्धि मद्य के प्याले में डूब चुकी है ! अब तेरे लिये एक उपाय बाकी है कि उस दयालु परम पिता परमात्मा की प्रार्थना कर कि वह प्रभु तेरे रंगराव को असत् से सन्मार्ग पर ले जाये, घोर अंधेरे में से उजियाले में प्रयाण कराये प्राणनाथ के समीप निष्फल प्रार्थनायें करती हुई गृहदेवी इंदिरा को चित्र नंबर ५ में देखिये

(६)

मद्य पी कर मतवाला बना हुआ रंगराव मध्य रात्रि के शुमार पर बाजार से घर को लौट रहा था बेहद पीने के कारण उस का पैर जमीन पर न टिकता था उस का मस्तिष्क घूम रहा था एकाएक उसे चक्करी आ गई और वह धाह सा भूमि पर गिर पडा अच्छा हुआ जो पास में बहती हुई नाली की किनार पर पत्थरों से कपाल फूटते बच गया ! इधर गटार की बाजू में बेहोश पडे हुए रंगराव और जीवरहित शरीर याने मुर्दा इस में कुछ विशेष भेद नहीं दिखता यह वाचकगण देख सकते हैं अरे रे ! मद्यपान के कारण इस मनुष्य देह की कैसी दुर्दशा ! मृत शरीर पर ज्यों गीध कौवे लोंचने के लिये टूट पड़ते हैं उसी प्रकार बेहोश शराबी के खीसे पाकीट चोर डाकूओं द्वारा टटोले जाते हैं, ये उसे उल्टापुल्टा कर धन हरण कर लेते हैं परम कृपालु परमात्मा ने मनुष्य को बुद्धिका दान दिया है जिससे भला बुरा जान सके किन्तु अविचार व प्रमाद से जन बुद्धि को तिलांजलि दी जाती है, मद्य के प्याले में

(चित्र नंबर १)

निष्फल प्रार्थनायें

(चित्र नम्बर ६)

पैदलों की हालत

मत बुद्धि को डुबो दी जाती है तो परम पिता परमात्मा की आज्ञा उल्लंघन का पाप होता है जिसकी शिक्षा याने फल स्वरुप यों बुद्धिरहित जड देह की ऐसी दुर्देशा चोर डाकूओं के द्वारा होना स्वाभाविक है शराबी के चेतनारहित शरीर को चोर लूट सकते हैं, रोग अपना सहारक पना आसानी से डालते हैं कारण जिस देह में विवेक बुद्धि रूपी दीपक नहीं, जहां सार विचार सहित सुमति का निवास नहीं ऐसे अंधेरे उजाड घर में चूहे घूस का होना कोई आश्चर्य नहीं ! बेशुद्ध होकर पडा हुआ रंगराव लुट रहा है यह तो ठीक, परंतु ऐसी बेहोशी की हालत पाने के लिये, घर के दाम गंवाके लोकों में अप्रतिष्ठा कमाने के लिये उस ने आज तक अपने घर की बहुतसी अमूल्य चीजें दारुवालों की दुकान पर या सावकार के यहां गिरवी रख चुका है यह कैसी दुःखद घटना है प्रत्यक्ष अपनी जन्मदात्री माता और पत्नी व बालकों के मुख में से अन्न का कौर व अंग पर से ओढने का वस्त्र खींच कर बेचने में उसने शरम नहीं की रंगराव के देह की दुर्देशा बेहोशी की हालत में चित्र नंबर ६ से दिखती है

(७)

अरे यह कौन अभागा औरत को पीट रहा है ? वही सुधारक शिरोमणि गोपालराव का छोकरा पुत्र रंगराव जिसने अपने मद्यपी पिता का अनुकरण कर 'बाप से बेटा सवाया' प्रत्यक्ष कर दिखाया व अपने सर्वनाश को आमंत्रण दिया रंगराव का व्यसन उत्तरोत्तर बढते ही गया जिस प्रकार किसी ऊंचे पहाड की चोटी पर से लुढकता हुआ बडा पत्थर उतार की ओर अधिकाधिक वेग से गिरता हुआ किसी से नहीं रोका जा सकता किन्तु उसे रोकने की चेष्टा करने वाले का कपाल फोड कर उसे भी अपने साथ ले गिराता है उसी प्रकार रंगराव अब ऐसी हद तक पहुंच गया था कि उसका सुधार

भसभससा प्रतीत होने लगा आगे वर्णित हो चुका है कि घर की बहुतसी चीजें, औरत के जेवर भी बेच के पी चुका था अब बेचने के लिये घर में बाकी ही क्या था ? अर्थात् पत्नी के गले का सौभाग्यचिन्ह—मंगलसूत्र पर—पतिदेव रूपी शनि महाराज की नजर पड़ी। मंगलसूत्र तोड़ देने के लिये इंदिरा को फरमाया गया! हिन्दु धर्मानुसार सौभाग्यवती स्त्री अपना सौभाग्यचिन्ह—मंगलसूत्र नहीं तोड़ सकती इस लिये इंदिराने नम्रतासे पतिदेव को बहुतेरी विनतियां कीं परन्तु लात मार के उसे गिरा दी गई व उस बिचारी का गला घोंट कर जबरदस्ती मंगलसूत्र तोड़ ही लिया, और गुस्से से अनेक प्रकार की गंदा गालियां देते हुवे उसे बेतकी छड़ी से जानवर के समान पीटने लगा

वाचक गण! जहां हार्मोनियम बाजा का संगीत सुनाई देता था आज उसी घर में औरत व बच्चों का यह रोना चीखना कैसा? लक्ष्मी के समान लाड में पली हुई इंदिरा आज जानवरों के जैसी बेत की छड़ीयों से पीटी जा रही है इस का क्या कारण है? यह किस का प्रताप है? सज्जनो! यह उस 'एक' ही प्याले की करतूत है जिसे पहिले दवाई के तौर पर पिया गया था! यह उस एक ही प्याले का पराक्रम है जिस के कारण रंगराव के बच्चे आज सुखी रोटी के लिये तरसत हुवे नंगे भूखे रो रहे हैं चित्र नंबर ७ में उस हतभागी कुटुंब को देखें

(८)

उत्तमक पेय या गुलाबी नशा समझ कर पिया हुआ एक ही प्याला! इस प्याले में यह मतवाला भयरम है या उन निराधार विधवाओं व अनाथ बालकों के आंसुओं से यह प्याला लबालब भरा हुआ है? इस एक ही प्याले में श्रीकृष्ण का यदुवंश डूब गया, इस एक ही प्याले में नित्य कई कुटुंब डूब रहे हैं, फिर भी इस की मोहनी नहीं छूटती! कैसा

(चित्र नम्बर ७)

हतभागी कुटुम्ब

(चित्र नंबर ८)

करअदारी

मोहकता ! छोटीसी वामन मूर्ति ने महा प्रतापी बलिराजा को अपने साडे तीन कदमों के तले पाताल में दबा दिया था यह पुराण में प्रसिद्ध है परन्तु इस छोटे से प्याले का पराक्रम उससे कुछ कम नहीं !

सुस्ती टालने व हुशारी बढाने के लिये पीये गये उस प्याले ने गोपालराव की बीमारियां बढाने में कुछ कसर न रखी उन के त्रिविध ताप, आधी व्याधि उपाधी अत्यत बढा दिये शारीरिक कष्ट याने रोगवश पथारीमें पडे रहते, उठ न सकते थे, नौकरी छूट गई थी, पैसे न होने से दवा का ठीक प्रबध न हो सकता था खानेपीने में भी कठिनाईयां प्रतीत होती थीं इस पर भी एकलौता पुत्र रगराव अट्टल दारुबाज हो कर उतार चढाव में मस्त रहता था यह उन को बडा मानसिक दु ख था अधूरे में पूरा मारवाडी सावकार का कर्जा बढ गया था व सूद मिला कर भारी रकम देनी हो गई थी जिस की भरपाई करना गोपालराव के लिये बिलकुल असभव था सावकार क्यों दया करता ? उसने सरकार में दावा दाखिल किया व डिक्री हासिल की डिक्री बजा लाने के लिये पोलिस के दो जवानों कारकून सहित गोपालराव के घर पर जप्ती लाई गई घर में जो कुछ रहा सहा था सब हरांभ किया गया मूर्ख रगराव अब कपाल पर हाथ दे कर नसीब को व्यर्थ दोष देता हुआ सावकार के बहिखाते की ओर निराशा से देखते बैठा है, गोपालराव अधमरी हालत में चौपायी पर लेटे हुव सहुतेरा पछता रहे हैं किन्तु जैसी करनी वैसी पार उतरनी देखें चित्र नबर ८

(९)

किसी ने क्या खूब कहा है कि जब सकट आते हैं तो एक दो नहीं फौज की फौज आती है दुर्दैवी गोपालराव के भाग्य में इस से अधिक दु ख देखने बदे थे

आज घर में केवल एक ही रुपया था वह भी रमाबाई-

इंदिरा के सीनेपिरोने के काम की मजदूरी का मिला था उस में से आठ आने का अनाज लाकर घर में डाला व बाकी के आठ आने ले कर रंगराव ने बाजार के तरफ चल दिया।

सायंकाल का समय था रंगराव सीधा दारुवाले की दुकान पर गया उस ने आठ आनी दे कर अखीर का एक ही प्याला लिया व पी गया वाचकगण, रंगराव को क्या मालूम कि यह उस का अखीर का एक ही प्याला था?!

प्याला पी कर मतवाला रंगराव, विना उद्देश सडक पर से गुजरने लगा विशाल रस्ता उस के चलने के लिये बस न था यह इस बाजु से उस बाजु, दोरी तूटे हुवे पतंग के माफक गोते लगा रहा था कि सामने से आती हुई मोटरकार के साथ झपट पडा मोटर उसे गिरा कर पलायन हो गई रात का समय था, रस्ता चलनेवाले थोडे थे रंगराव खून से भरा हुआ बेहोश पड रहा था धीरे २ लोक जमा हो गये किसी दयालु पुरुष ने पानी मँगवाया व रंगराव के मस्तक पर छिनक के उसे शुद्धि में लाने का यत्न किया इतने में पोलिस आ गई व रंगराव को बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुचाया गया राहदारियोंमें से किसीने रंगराव को नहीं पहिचाना, यदि पहिचान सकते तो उस के घर पर समाचार दिये जाते किन्तु कोई क्यों न हो, मनुष्य के जैसा ज्ञानवान प्राणी, दारु के व्यसन के आधीन हो ऐसी दुर्दशा को प्राप्त होता है यह प्रत्यक्ष देख सब प्रेक्षकगण दारु का तिरस्कार एवं दारुबाज के लिये दया का भाव व्यक्त करने लगे (चित्र नंबर ९)

(१०)

मध्य रात्रि हो गई, अभी रंगराव घर नहीं आया देख, उस की पत्नी इंदिरा व माता रमाबाई को अतिशय चिंता होने लगी मित्रों के यहां कहीं मिजमानी में गया होगा समझ कर राह बहुत देखी कभी २ रंगराव नित्य रातको बडा देरी से घर आया करता था परंतु आज के जितनी देरी कभी न हुई थी

(चित्र नम्बर ९)

मद्यपान का परिणाम

उन बिचारी अबलाओं को क्या खबर कि छाकटा रगराव आम मोटर की टक्कर का शिकार हो अस्पताल का महेमान बना हुआ है? पति के कुशल सबंधी चिंता से इंदिरा आमरात में बिलकुल नहीं सोयी बीमार गोपाळराव की सुश्रुषा में रमाबाई को नित्य रत लगा हुआ ही करता था रात्रि कैसे भी व्यतीत हुई प्रभात होते ही किसी पड़ोसी को रगराव के मित्रों के घर तपास के लिये भेजा गया किन्तु कुछ पता न चला! अखीर किसी ने समाचार पत्र में छपा हुआ वृत्तात सुनाया कि "कल रात्रि के समय कोई नवयुवक दारु के नशे में किसी मोटरकार से टकरा कर बेहोशी की हालत में अस्पताल पहुचाया गया था उस का देहान्त हो गया है युवान का नाम व पता मालुम न होने से उस का मृत देह पहिचानने के लिये उक्त अस्पताल में खुला रक्खा गया है प्रमागण आ के उस देह को देख सकते हैं उस के सगेसबधी जनों को मृतदेह सस्कारार्थ दिया जा सकेगा"

इहवृत्त के शीर्षक से छपे हुवे शोक समाचार वर्तमान पत्र के पृष्ट पर चित्र नंबर १० में देखिये

(११)

यह दु खदायक समाचार सुन कर रमा इंदिरा का अत करण फाक उठा परतु धीरज धरके कुछ सबधी जनों को स्थानिक अस्पताल में तपास के लिये भेजे उन्होंने मृत रगराव का देह घर पर ले आने का प्रबध किया, उस का अग्निसस्कार किया गया उस समय रगराव की मातुश्री रमाबाई व उस की पत्नी इंदिरा ने किस कदर करुण विलाप किया होगा उस का वर्णन नहीं हो सकता उस की केवल कल्पना हो सकती है उन बिचारी अबलाओं के दयाजनक रुदन से तथैव अनाथ बालकों की आहो पुकार से वह घर स्मशान के तुल्य भयकर दिखने लगा

पुत्र का देहान्त हो गया यह समाचार बीमार पथारीवश वृद्ध गोपाळराव को मालुम होते ही उन पर बिजली पड़े जैसा आघात हुआ वे सुनते ही बेहोश हो गये, फिर होश में आ

कर बिलख २ कर रोने लगे परतु 'पछताये क्या होत जब चिड़िया चुग गई खेत ?'

गोपालराव को समस्त ससार शून्य दिखने लगा किसी प्रकार इस दु खी जीवन का अत कर देने का उन्होंने निश्चय कर लिया उन की पत्नी रमाबाई सेवासुश्रूषा निमित्त हमेशा हाजिर रहा करती थी एक रात को रमाबाई को कुछ नींद आ गई देख कर गोपालराव ने अपना निश्चय पूर्ण करने का अवसर पा लिया समीप में मेज पर शीशी में जहरी दवा जो सिर्फ लगाने की दवा थी उसे पी लिया उस कातिल जहर ने गोपालराव का जीवन—दीपक बुझा दिया।

रमाबाई जागी तो क्या देखती है? पति मीठी नींद में शात सो रहे हैं! बहुत रातों से नींद नहीं आयी, आज कुछ सो गये होंगे समझ कर कुछ समय ठहर गई। अखीर धीरज न रही। पति को हिला कर जगा रही है परतु पति कहां? मद्यपान के महालोक में अपनी करनी का फल चाखने के लिये पति ने कभी को जन्म दिया था

अभागिणी रमाबाई का सौभाग्यसूर्य अस्त हो गया उस की आंखों में अधेरा छा गया, गोपालराव की मृत्युसय्या के पास बैठ कर रोती हुई उस बिचारी विधवा की दशा देख कर कैसी भी कठिन छाती के पुरुष को दया आयेगा गरमी से लोहा भी पिघल जाता है फिर मनुष्य की क्या कथा। चित्र नबर ११

(१२)

गोपालराव के मरण से एक समय के सुखी परतु वर्तमान में अभागी कुटुब का आधारस्तभ बैठ गया पुत्र का अकाल मृत्यु के बाद पति की आत्महत्या इन एक के बाद एक आनेवाली आपत्तियों की परपरा से रमाबाई का चित्त भ्रमित सा होगया फिर भी धैर्य से रहासही जिंदगी के दिन कष्ट से गुजार रही थीं रगराव की विधवा इंदिरा व उसके बेटाबेटी की जोड़ी उसके अधकारमय जीवनमार्ग में आशा का एक मात्र किरण था रगराव का बेटा मधुकर कम बदा

(चित्र नम्बर ११)

करुण दृश्य

(चित्र नम्बर १२)

दुःखमय अंत

हो जायगा इसी आशातंतु के सहारे रमाबाई जी रही थीं

परंतु क्रूर देव को यह कब मंजूर था? यह इंदिरा कोमल हृदय की लड़की थी पतिकी अकालमृत्यु व ससरे की आत्महत्या जैसी दुःखों की परंपरा से उस का धैर्य गल गया बरफ की तूफान युक्त वर्षा को कमलिनी कैसे सह सकती? अखीर उस ने अपने छोटे २ बच्चों व वृद्धा सास को भाग्य के भरोसे छोड़ना ठान लिया एक अंधेरी सूमसाम रात्रि में एकान्त देख कर घर के कुंवे में इंदिराने आत्मसमर्पण कर दिया, आत्महत्या कर ली

इंदिरे! तूने यह क्या किया! तेरी वृद्धा सास रमाबाई की न सही, तेरे कोमल बालकों की भी तुझे दया न आइ? किन्तु बेटी तेरा क्या उपाय? जिस ने कभी दुःख के दिन देखे न थे, जो पिता के घर में व पति के मकान में गृहदेवता तुल्य मान सन्मानसे पली थी, वह ऐसे कठोर दुःखों की परंपरा को कैसे सह सकती?

भारतवासी भाईयो व बहेनो! क्यापी गोपालराव के भोलेपन पर आप को दया आती है? डाक्टर रंगराव के लिये आपके दयालु अंतःकरण में करुणाभाव उत्पन्न होता है? दुर्भागी विधवायें रमा इंदिरा व उन अनाथ बालकों की पुकार सुन आपका दिल पसीजता है? तो आओ! इन सब अनर्थों के मूलरूप उस एक ही प्याले का बहिष्कार करो! आप उस मोहक प्याले के फंदे में कभी न फँसो, व और भाईयों को इसकी मोहनी से छुड़ाओ! यदी तुमको अपनी माँ बहेनों के सुख की थोड़ा भी परवा है, रमा इंदिरा की दुःखी पुकार से तुम्हारे अंतःकरण में दयारस उत्पन्न हुआ है, तो इस पुण्यभूमि से मद्यपान का दुर्व्यसन नष्ट होने के लिये समस्त भारतवासियों को सद्बोध प्रदान करो, सत्य ज्ञान का प्रचार करो, इस विषय पर बोध देनेवाली पुस्तकें पत्रिकायें प्रकाशित कर के नवीन संतानों को मद्यपानसे बचनेका ज्ञान प्रदान करो, जिस से मद्यपान के कारण होनेवाला ऐसा दुःखमय अंत कभी न देखना पड़े चित्र नंबर १२

गायन
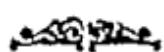
खाना खराब कर दिया, बिल्कुल शराबने,
जो कुछ कि न देखा था, दिखाया शराब ने ॥१॥
इज्जत के बदले जिल्लतें इस के सबब मिली
मुफलिस बने मरीज बनाया शराब ने ॥२॥
बुलबुल की तरह बाग में लेते थे बूए गुल,
सबास नालियों गिराया शराब ने ॥६॥
मैदाने जंगमें थे कभी जो कि शहसवार,
कीचड़ की नालियों में गिराया शराब ने ॥४॥

x x x x x

पी कर शराब क्यों न करे, शोरोशर बशर,
पहले तो शर बशर में है, और फिर शराब में ॥५॥

जीवरक्षा ज्ञान प्रचारक ग्रंथमाला

सूचिपत्र
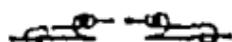
विक्रय पुस्तक का नाम	हिन्दी	गुजराती	मराठी	उर्दु	तेलगी	कानडी	अंग्रेजी	मुल्य
पुत्र बलि या पशुबलि !	,,	,,	,,		,,	,,		॥ आना
देवीभक्तों से अपील	,,		,,		,,			। आना
पब्लिक से अपील	,,		,,	,	,,			। आना
नागपूजा या नागपीडा !	,,		,,		,,			। आना
जीवरक्षा भजनावली	,,	,,		,,				। आना
दयाजनक दृश्य	,,	,,			,,		,,	२ आने
नियमोप नियम	,						,,	अमूल्य
अहिंसा संगीत रत्नावली	,,		,,		,,			१ आना
रूपरेखा	,,							॥ आना
सवनाश या एक ही प्याला !	,,							१ आना
सुवर्ण पिंजर		,,						१ आना
मिजलस या मोठमे मार्गे		,,						॥ आना
सर्व प्राणी नी सेवा								॥ आना
आहार मु आरोग्य मु					,,			॥ आना
देवीआज्ञा (सात्विक पूजा प्रकाश)			,,					। आना
मनुष्य योग्य स्वाभाविक आहार					,			॥ आना
ग्राम देवता					,,			॥ आना
अहिंसा					,			। आना
क्रिश्चियन्स व मांस भक्षण					,			। आना
गाई की कहानी				,,				॥ आना
जानवरों की फरियाद				,				। आना

Printed at the Lakshmi Art Printing Works
Sankli St P..ulla Bombay 8

बर्मा शरणार्थी सेवा
कार्य-विवरण

卐

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी
दिसम्बर १९[illegible]
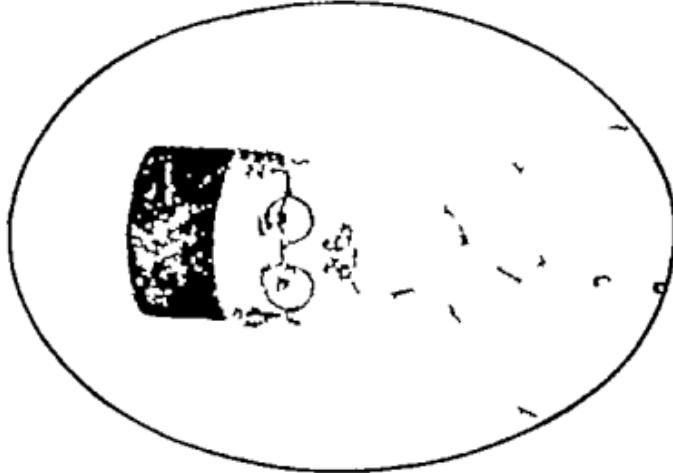
तुलसीराम सरावगी
सेवा-मन्त्री

हमारे प्रमुख सहायक—

माननीय प० हृदयनाथ कुंजरू

माननीय श्री एस० एम० श्रग

अपनी ओर से
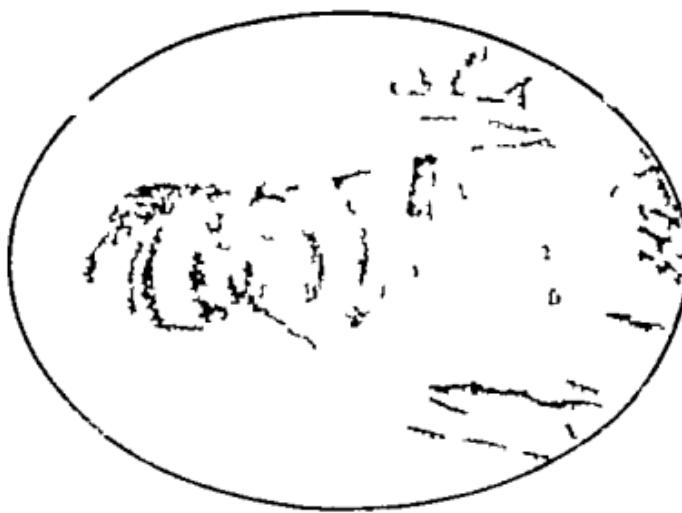
जिस समय शरणार्थी सेवा-कार्य का भार सम्हाला गया था उस समय इस बात की कल्पना भी नहीं की गयी थी कि शरणार्थी इतनी बड़ी तादाद में ऐसी दुर्दशा में आयेंगे। कार्य का आरम्भ ऐसा हुआ कि फिर हजारों शरणार्थियों की हर तरह की व्यवस्था करना हमारे कार्यकर्ताओं एवं स्वयं सेवकों की दैनिक दिनचर्या सी हो गयी। जैसे जैसे कार्य विस्तृत रूप पकड़ता गया, वैसे वैसे कठिनाइयां भी बढ़ती गयीं। युद्धजनित स्थिति के कारण खाद्य-पदार्थ पर्याप्त संख्या में नहीं मिलने लगे और इधर सेवा-कार्य में हाथ बटानेवाले अनेक सहयोगी भी तात्कालिक स्थिति के कारण कलकत्ता से हट गये। तो भी सेवा-कार्य चालू रहा और इसका मूल कारण था परमात्मा की प्रेरणा से हमारे इने-गिने कार्यकर्ताओं का उत्साह। हमें उत्साही एवं साहसी कार्यकर्ता मिले, पर्याप्त आर्थिक सहायता मिली; बड़ों का सहारा मिला और सब की सहानुभूति मिली। जहां तक बन सका, बिना किसी भेद-भाव के शरणार्थियों की अपेक्षा से अधिक मदद की गयी। कलकत्ते के अलावा डीमापुर, इम्फाल, सिल्चर, गौहाटी, [illegible] आदि स्थानों में सेवा-केन्द्र खोले गये और आसाम पर होनेवाली बम-वर्षा के बीच डटे रह कर ये केन्द्र चालू रखे गये। बड़ा काम था और परिस्थिति को देखते हुए भूलों का रहना स्वाभाविक था। इस विशाल सेवा-कार्य को इतनी सुन्दरता के साथ सम्पन्न करने का श्रेय है कार्यकर्ताओं को और भूलों का जिम्मेदार हूँ मैं।

संक्षिप्त विवरण आपके सामने है। इसमें कहां तक सफलता मिली; सोसाइटी द्वारा की गयी इस सेवा से मारवाड़ी जाति के प्रति देशवासियों एवं सरकार की क्या भावना बनी; यह आपके देखने और समझने की बात है।

विनम्र—

दिसम्बर १९४३

तुलसीराम सरावगी,

सेवा-मन्त्री।

— विवरण —

सन् १९४२ का प्रारम्भ बर्मा एवं मलाया प्रवासी भारतीयों और ब्रिटिशजनों के दुर्भाग्य का कारण बन कर आया। ब्रिटेन एवं अमेरिका के खिलाफ जापान की युद्ध घोषणा ने उनकी स्थिति को खतरे में डाल दिया था। श्यामदेश में उसकी विजय और फिर एवं मलाया की लड़ाई ने उनके दिलों में आतंक पैदा कर दिया और जब संयुक्त राष्ट्रों की फौजें परिस्थितिवश पीछे हटने लगीं और एक के बाद दूसरा स्थान जापानी अधिकार में आने लगा तो उनकी हिम्मत टूट गयी। रंगून और सिंगापुर पर जापानियों द्वारा की गयी भीषण बम वर्षा ने उनके रोंगटे खड़े कर दिये। एक भरोसा था कि जापानी युद्ध के जमने पर पीछे हटा दिये जायेंगे लेकिन वह भी मिटता गया। परिस्थिति ने उनको घर छोड़ने के लिये बाध्य किया और वे भारत लौटने के लिये उतारू हो गये। सदा की भाँति उन्होंने स्टीमरों एवं जहाजों द्वारा भारत लौटने की सोची लेकिन युद्धजनित परिस्थिति के कारण जहाजी सुविधा अनुकूल न हो सकी। साधारण भारतीयों के लिये तो जहाजों पर जगह पाना बड़ी मुश्किल का काम हो गया। जिनकी जन्मभूमि यूरोप या अमेरिका थी या जिनके पास रुपयों का बल था वे या तो नानाप्रकार की तकलीफें सहकर भी जहाज द्वारा आने के लिये कटिबद्ध हो गये, उन्हें तो किसी न किसी प्रकार जहाजों पर जगह मिल गयी लेकिन जिनकी जन्मभूमि यूरोप या अमेरिका नहीं थी और न जिनके पास रुपये का ही जोर था, उन्हें सिवाय पैदल भारत पहुँचने के कोई और चारा न मिला। बर्मा से भारत अनेक पैदल रास्ता दुर्गम पहाड़ियों घने जंगलों और हिंसक जीवों से भरा था। कदम कदम पर खतरा था। प्रकृति जहाँ इन अभागों के खिलाफ थी, वहाँ बर्मियोंने भी अपनी प्रान्तीयता का पूरा परिचय दिया। भारतीयों के खिलाफ उनके द्वेष भाव को हिंसात्मक रूप देने का उन्हें यही मौका मिला और हजारों भारतीय बर्मियों के हाथों के घाट रास्ते में उतार दिये गये। भारत के इतिहास में यह प्रथम अवसर था कि भारत और बर्मा की सीमा पैदल पार की गयी। इसके पहिले रास्ते की भयंकरता के कारण इन रास्तों का कभी उपयोग नहीं किया गया था। लेकिन करता क्या न करता! एक तरफ जापानियों की भयंकर बम वर्षा। मौत मुँह बाये चुनौती दे रही थी और एक तरफ रास्ते की तकलीफ! लेकिन किसी ने उम्मीद तक न की थी कि पैदल भारत लौटना इतना महँगा पड़ेगा। किसी ने स्वप्न में भी न सोचा था कि जब तक वे भारत

बर्मा-मलाया प्रवासी भारतीय सन्तानें पुनः स्वदेश में

८—१० कम्बलें दीं, पारसी एवं गुजराती महिलाओं ने सक्रिय सहयोग दिया और चारों तरफ चद्दरों एवं धोतियों का पर्दा तान कर प्रसव कराया गया। रात के तीन बज चुके थे जब कि स्वयं सेवक दल वापिस लौट रहा था।

१९ जनवरी को कार्य का श्री गणेश ऐसा हुआ कि करीब करीब सदैव शरणार्थी जहाजों से आने लगे। सोसाइटी के सामने एक लम्बी राह थी जिस पर चलने के लिये सहारे की सख्त आवश्यकता थी। सर्वप्रथम श्री सेठ रामसहायमलजी मोर ने प्रथम दिन का खर्च २२४ रु० ९ आना ३ पाई देकर शरणार्थी फण्ड का प्रारम्भ कराया। बाद में देश की सहानुभूति इस कार्य की ओर इतनी बढ़ी कि फण्ड की कमी कभी महसूस भी न हुई।

जहाजों द्वारा आगमन—जहाज के आने की सूचना पोर्ट-पुलिस द्वारा घण्टे दो घण्टे पहिले मिलती थी और उतने समय में सोसाइटी के कार्यकर्त्ता एवं स्वय सेवक आवश्यकतानुसार नास्ते के लिये दूध, बिस्कुट, चाय फल वगैरह लेकर जेटी पर पहुँच जाते। अक्सर ऐसा होता कि जितने आदमियों के आने की सूचना मिलती थी, उससे कहीं दोचार गुने अधिक आते थे। इस तरह एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ता था। लेकिन बाद में उपाही जरूरत से काफी अधिक सामान लेजाया जाता और जहाँ तक सम्भव होता, मदद की जाती। जहाज पर से हमारे यात्री अपने स्वागत की तैयारियाँ देख अपनी समस्त तकलीफें और भूख-प्यास भूल जाते और उन्हें लगता कि अब वे अपने देश—अपने भारत में हैं। यूरोपियनों, बर्मियों, क्रिश्चियनों, यहूदियों आदि को भी पूरी मदद बिना किसी भेद भाव के दी जाती। ज्योंही जहाज जेटी पर पहुँचता तो स्वयं सेवक यात्रियों को स्टीमर से उतरने में मदद करते। बुड्ढों, स्त्रियों एवं बच्चों को पूरी सहायता कर जहाज से उतारते और फिर सभों को नास्ता कराया जाता। बाद में सभों को सवारियों द्वारा धर्मशालाओं वगैरह में ठहराया जाता। सोसाइटी के डाक्टर भी फर्स्ट-एड के सभी सामानों से सुसज्जित नर्सों एव कम्पाउन्डरों के साथ मौजूद रहते। कई दिनों से भूखे शरणार्थियों को उससे काफी मदद मिलती। रंगून का पतन हो जाने के बाद जहाजी सुविधा पाने में और भी दिक्कतें होने लगी। सैकड़ों मील की यात्रा पैदल समाप्त कर लोग बर्मा के बन्दरगाहों पर पहुँचते जहाँ से व जहाजों पर चढ़ाये जाते। पैदल यात्रा और नाना प्रकार की तकलीफों से उन्हें कई प्रकार के रोग होने लग गये और जब सिर्फ अक्याब ही बर्मा का एकमात्र बन्दरगाह जहाजों को शरणार्थियों के उपयोग में आने के लिये रहा तो रोगियों की संख्या काफी बढ़ गयी। इस बात की आशंका हो गयी थी कि उनके संक्रामक रोग कहीं कलकत्ते में न फैल जाय लेकिन सोसाइटी सेंटजानएम्बुलेंस ब्रिगेड के कम्पाउण्डरों की सावधानी के कारण एवं रोगियों के इलाज का प्रबन्ध अस्पतालों में होने के कारण स्थिति काबू में रही तौ भी जहाजों पर तो रोग फैल ही जाता था। ता १० अप्रेल ४२ को जो जहाज

शरणार्थी ट्रामों द्वारा स्यालकोट स्टेशन से कैम्प ले जाये जाते

बर्मा स्थित एजेंट आदि जिम्मेदार व्यक्तियों का ध्यान इस ओर आकर्षित किया और [illegible] शीघ्र हस्तक्षेप करने की अपील की। सोसाइटी में कलकत्ते के प्रमुख व्यक्तियों की एक सभा भी की गयी जिसमें एक प्रस्ताव द्वारा ऐसी भेद भाव पूर्ण नीति की निन्दा की गयी और ऐसे कर्मों को सदा के लिये बन्द कर देने की मांग की गयी। [illegible] के परिणाम-स्वरूप स्थिति में काफी सुधार हो गया और रंगून पोर्ट के अधिकारियों ने निश्चय किया कि हरेक जहाज पर एक जिम्मेदार आफिसर रहेगा जो इस बात का ध्यान रखेगा कि यात्रियों के साथ अनुचित बर्ताव न होने पावे और न अनुचित लाभ [illegible] उठाया जाय।

जिस समय पैदल भारत आनेवाले शरणार्थी भी रेल द्वारा स्यालदा स्टेशन पहुँचने लगे और उनकी संख्या भी काफी होने लगी तो सोसाइटी के कार्यकर्ताओं के सामने विकट प्रश्न उपस्थित होगया कि दैनिक ८—१० हजार की संख्या में पहुँचने वाले शरणार्थियों की सेवा का सर्वांगसुन्दर प्रबन्ध कैसे हो। रेलवे भी दैनिक ५— हजार तक को भी कलकत्ते से रवाना करने में असमर्थ थी अतः सोसाइटी के कैम्पों में कई हजार यात्रियों को १—२ दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ती और जब तक वे कैम्प में ठहरते, सोसाइटी उनके भोजन वगैरह का पूर्ण प्रबन्ध करती तथा अन्य कार्यकर्ताओं को भी ठहराने एवं भोजनादि से मदद की जाती इसलिये सेवा-कार्य में कार्यकर्ताओं को अधिक से अधिक परिश्रम करना पड़ता। मई के महीने में बर्मा के सभी बन्दरगाहों पर जापानी अधिकार हो जाने से स्टीमरों से शरणार्थियों का आना बन्द होगया तो [illegible] शक्ति पैदल आनेवालों की मदद में लगा दी गयी।

जिस रूप में और जितनी संख्या में शरणार्थी स्टीमरों द्वारा कलकत्ते आते थे, [illegible] [illegible] हुए यह सम्भव न हो सका कि शरणार्थियों की पूरी पूरी संख्या रखी जा[illegible]। तो भी जहां तक हमारे पास आंकड़े हैं उसके अनुसार, करीब १० [illegible] शरणार्थी जहाजों से आये।

पैदल मार्ग द्वारा आगमन —फरवरी के प्रथम [illegible] से रेल द्वारा भी शरणार्थी आने लगे। ये वे लोग थे जिन्होंने महीनों पहिले बर्मा छोड़ा था और पैदल भारत आये थे। ये शरणार्थी प्रारम्भमें [illegible] और बाद में मणिपुर एवं [illegible] रास्ता [illegible] पर [illegible] एवं [illegible] से ट्रेन द्वारा कलकत्ते भेजे जाते थे। [illegible] के मजिस्ट्रेट [illegible] शरणार्थियों की कलकत्ते पहुँचनेवाली संख्या तार द्वारा [illegible] [illegible] सोसाइटी के कार्यकर्ता स्यालदह स्टेशन पर पहुँच जाते। [illegible] ट्रेनें [illegible] और [illegible] ट्रेनें रात के तीन [illegible] बजे तक पहुँचती [illegible] कार्यकर्ताओं को [illegible] स्टेशन पर [illegible] प्रबन्ध में लगा रहना पड़ता। बी० ए० रेलवे [illegible] ट्रेनें [illegible] प्लेटफार्म पर आती। सोसाइटी के कार्यकर्ता [illegible] में [illegible]

करते और फिर प्लेटफार्म पर उन्हें भोजन कराया जाता। बच्चों के लिये दूध और फल की विशेष व्यवस्था की गयी थी। डाक्टर एवं कम्पाउण्डर दवा लिये मौजूद रहते और आवश्यकता होने पर रोगियों को विभिन्न अस्पतालों में भेज दिया जाता था। इसके बाद उन्हें हवड़ा स्टेशन ले जाया जाता था। प्रारम्भ में सवारी का कोई प्रबन्ध न हो सका था। दैनिक २—३ हजार की संख्या में पहुँचनेवालों की सवारी सियाम ट्राम के और हो ही क्या सकती थी? यह दो मील लम्बी राह पैदल ही तय करनी पड़ती थी। राह की तकलीफों से थके-मांदे शरणार्थियों के लिये यह काफी कष्टदायक होता था। अतः सोसाइटी ने कलकत्ता ट्रामवे कम्पनी लिमिटेड से अपील की कि इन थके-मांदे शरणार्थियों को हवड़ा तक ले जाने के लिये अपनी कुछ ट्रामें बिना किसी चार्ज लिये सदैव दे। शरणार्थी स्वागत समिति के उप-सभापति मि॰ जे॰ एस॰ ग्राहम ने इस अपील का पूरा समर्थन किया और ट्रामवे कम्पनी ने शरणार्थियों की हालत देख अपनी कई ट्रामें सदैव इस्तेमाल के लिये देनी शुरू कर दीं। जितने भी शरणार्थी रात में आते ट्रामों द्वारा हवड़ा भेजे जाते। कुछ मिलाकर कलकत्ता ट्रामवे कम्पनी लिमिटेड ने १२५७ ट्रामें दीं, जिससे करीब सवा लाख शरणार्थियों ने लाभ उठाया।

कलकत्ता पुलिस ने भी अपनी लौरियाँ इस्तेमाल के लिये सोसाइटी को दी थी एवं पुलिस के आदमियों ने कार्यकर्ताओं को पूरा सहयोग दिया। पोर्ट पुलिस के डिप्टी कमिश्नर मि॰ डी॰ भट्टाचार्य आई॰ पी॰, जे॰ पी॰ ने शरणार्थियोंकी सराहनीय मदद की। उनके कार्यों को देखकर हम भूल जाते कि ये पुलिस के एक उच्चाधिकारी हैं। हमें एक प्रमुख श्रेणी के कार्यकर्ता का बोध होने लगता। सोसाइटी ने जिस रूप से शरणार्थियों की मदद की उसे एक हद तक सफल बनाने का श्रेय मि॰ डी॰ भट्टाचार्य को है।

हवड़ा स्टेशन से पुलिस द्वारा शरणार्थियों की भी टिकिटें करवा कर उन्हें उनके निर्दिष्ट स्थानों के लिये रवाना कर दिया जाता। शरणार्थियों में दक्षिण-भारतीयों को संख्या अधिक रहती थी और अगर हम कहें कि ७५% प्रति शत से भी अधिक शरणार्थी दक्षिण भारत के होते थे तो अत्युक्ति न होगी। इस तरह शरणार्थियो को दक्षिण ले जाने का पूरा दायित्व बी एन रेलवे पर था। बी॰ एन॰ रेलवे प्रतिदिन अधिक से अधिक तीन हजार तक कलकत्ते के बाहर भेजने का प्रबन्ध कर सकी और आने वालों की संख्या इस से कहीं अधिक होने के कारण शरणार्थियों को रेलवे की प्रतीक्षा २ ३ दिन तक करनी पड़ती। तबतक और कई हजार शरणार्थी कलकत्ते आ इकट्ठे होते और तब उन्हें ठहराने के स्थानों की कमी महसूस की जाने लगी। तब रेलवे के अधिकारियोंने १२ नम्बर गुड शेड शरणार्थियों को ठहराने के लिये दिया जिसमें करीब तीन हजार तक को ठहराने की गुञ्जाइश थी। सोसाइटी का मेडिकल स्टाफ यहां भी मौजूद रहता और सभी तरह की दवायें रखी जाती।
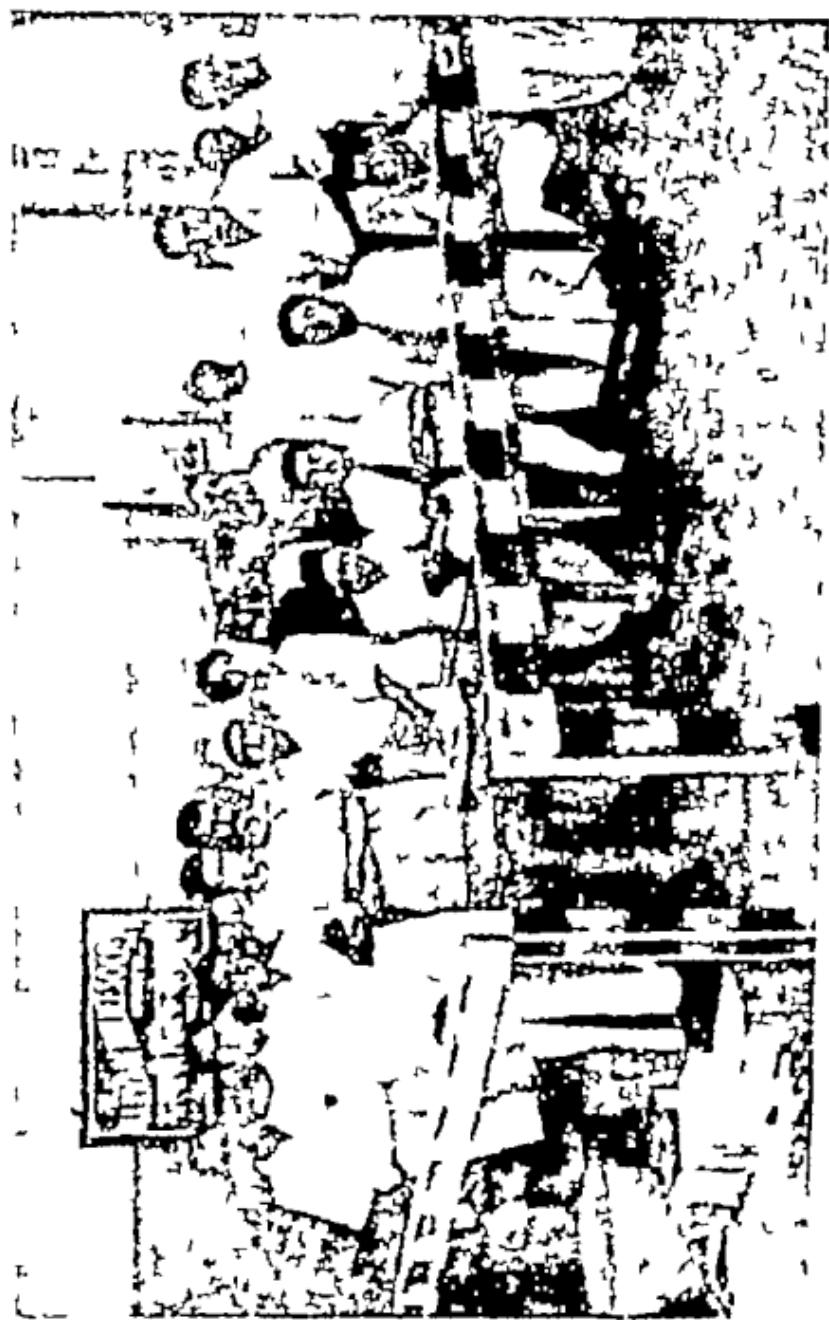
बी॰ एन॰ रेलवे, ई॰ आई॰ रेलवे एवं ई॰ बी॰ रेलवे के अधिकारियों एवं स्थान-

म्याफ ने हमारे कार्य में काफी हाथ बटाया। बी० एन० रेल्वे के प्रचार विभाग के अफसर मि० बी० सी० मल्लिक ने जो सहयोग हमें दिया उससे हमारी रेल्वे सम्बन्धी कठिनाइयां काफी हद तक कम होगयी और उनके इस सहयोग के लिये वे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

प्रतिदिन कई स्पेशल ट्रेनें दक्षिण-भारत के लिये रवाना होती एवं सोसाइटी के कार्यकर्ता मौजूद रह कर उन्हें बैठने में मदद करते। गर्मी के दिनों में ताड़ के पंखे भी वितरित किये गये और कई स्पेस पंखों का उपयोग किया गया।

दक्षिण-भारत जानेवालों की संख्या का पता इन्ही आंकड़ो से लग सकता है कि सिर्फ बगाल नागपुर रेल्वे ने सब मिला कर ११५ स्पेशल ट्रेने और ४३९ रिजर्व डिब्बे दिये जिससे करीब सवा दो लाख शरणार्थी बाहर भेजे जा सके। भारत की रेल्वे के इतिहास में यह प्रथम अवसर था कि इतनी स्पेशल ट्रेनों का उपयोग सिर्फ एक निर्दिष्ट स्थान के लिये किया गया।

पहले बताये गये प्रमुख कार्यकर्ताओं के अलावा सर्व श्री पुरुषोत्तमदासजी गुजराती नन्दलालजी जालान गिरधरलालजी गुजराती मानसिंहजी भिवानीवाला, रामकुमारजी मारवणी रामचन्द्रजी वगड़, बैजनाथजी सोनी रूपचन्दजी शर्मा, सत्यप्रकाशजी देसाई केशरदेवजी जालान बी० एन० पाण्डे राजकिशोर सिंह आदि ने जिस उत्साह और लगन के साथ कार्य किया, उसकी जितनी प्रशंसा की जाय, थोड़ी है। रात के तीन-तीन बजे तक जाग कर गाड़ियों की प्रतीक्षा करना धर्मशालाओं एवं गुड शेड में हजारों शरणार्थियों को भोजन कराना स्टेशन पर मौके-बे-मौके ट्रेन आने में देरी समझ अपना अस्तित्व भूल कर सो रहना और ट्रेन की धकधकाहट सुनते ही पुनः कार्य के लिये मुस्तैद हो जाना व्यापार, शिक्षा और परिवार की चिन्ता अभागे बर्मा-शरणार्थियों की मदद में भूल जाना हमारे ही कार्यकर्ताओं एवं स्वयं सेवकों का कार्य था और उन्हीं की सेवाओं का परिणाम था कि शरणार्थियों ने पहली बार महसूस किया कि हां! आज वे अपने देश में पहुँच गये हैं। वे भारत में हैं और भारतीय उनके दुख में हाथ बटा रहे हैं। सभी स्वयं-सेवकों एवं कार्यकर्ताओं ने अपने निजी भाई बहिनों की तरह शरणार्थियों की सेवा की। उन्हें सोसाइटी क्या धन्यवाद दें? किस रूप से हम धन्यवाद दें? धन्यवाद देंगे और दे रहे हैं चार लाख बर्मा-शरणार्थी जो उन्हें कभी न भूल सकेंगे। धन्यवाद दे रही है भारत की मूक जनता जिनके दिलों में सोसाइटी के साथ साथ उनके प्रति भी विश्वास और श्रद्धा पैदा हो गयी है।

पैदल आनेवाले शरणार्थियों की दुर्दशा :—पैदल-राह द्वारा भारत आनेवाले शरणार्थियों की दुर्दशा जहाजों द्वारा आनेवाले शरणार्थियों से भी अधिक थी। जहाज पर की तकलीफें तो सिर्फ चन्द एक दिनों की ही रहती थी लेकिन पैदल आनेवालों की तकलीफें हफ्तों—बल्कि महीनों तक की थी। बर्मा से भारत आने का मार्ग बड़ा दुर्गम

ऊंची नीची घाटियों को पार करते हुए भारत-बर्मा मार्ग पर शरणार्थी ।

(पैन्सू मार्ग पर हमारे विशेष प्रतिनिधि द्वारा लिया गया चित्र)

हमारे प्रमुख कार्य-कर्त्ता—

श्री भालचन्द्र शर्मा

श्री बाबूलाल पोद्दार

श्री गणेशप्रसाद सराफ

श्री डूंगरमलजी लोहिया

श्री रामचन्द्र शर्मा

श्री रामकृष्ण सरावगी

उनको भी टिकिटें हो जाने पर धर्मशालाओं से उन्हें पुलिस द्वारा दी गयी लारियां गाड़ियों आदि से इकट्ठा ले जाया जाता और वहां राह में खाने के लिये बिस्कुट वगैरह दे कर गाड़ी में सवार करा दिया जाता। सोसाइटी के कई स्वय सेवक धर्मशालाओं में दिन भर के लिये नियुक्त किये जाते और रातके वक्त भी सम्हाल की जाती।

भोजन व्यवस्था—शरणार्थियों के ठहराने की व्यवस्था होने में किसी विशेष कठिनाई का सामना नहीं करना पड़ा लेकिन कठिनाई पड़ी भोजन व्यवस्था करने में। आठ दस हजार आदमियों का भोजन दोनों वक्त के लिये तैयार करवाना बड़ी कठिनाई का काम था। एक बहुत बड़े भोजन घर की स्थापना की गयी थी जहां रात दिन भोजन तैयार किया जाता था। स्टीमरों एवं ट्रेनों से आनेवाले शरणार्थियों की संख्या कई बार मालूम पड़ जाती और कई बार नहीं लेकिन जब भी जितने शरणार्थी आये, कम से कम समय में इस विभाग ने भोजन तैयार करके दिया। रात के तीन-तीन बजे तक भट्टियां जलती रहती। सोसाइटी के कार्यकर्ता धर्मशालाओं एव स्टेशनों के बीच भोजन

> कलकत्ते के केन्द्र ता० ११-५-४२ को १३७४२ शरणार्थी आये। सेवा-कार्य के सिलेसिले में एक केन्द्र में सबसे बड़ी सख्या की उपस्थिति।

के सामान के लिये आते जाते रहते और हरेक वक्त गरम भात, पूड़ी दाल, साग सब कुछ इस विभाग से सप्लाई होता रहता। प्रतिदिन हजारों शरणर्थियों को भोजन प्रदान करने का पूरा श्रेय इसी विभाग को है। श्रीलादूरामजी सुरेका ने इस विभाग को पूरी मेहनत से सम्हाला। जब शरणार्थियों की सख्या एक दिन में १३५०० तक पहुच गयी थी तब भी इस विभाग ने साहस कम न होने दिया और जब तक ये १३५०० शरणार्थी पेट भर भोजन न कर चुके, तब तक किसी ने सांस तक नहीं ली। सोसाइटी की शुद्ध सस्ती-पूड़ी मिठाई की दुकान भी कुछ अरसे तक बन्द रक्खी पड़ी। यहीं पूड़ी और साग तैयार किया जाता था। यों तो कई सहयोगी संस्थाओं की ओर से भोजन कराने का प्रबन्ध स्टेशनों पर रहा लेकिन प्रमुख भार सोसाइटी ने ही सम्हाला। तुलापट्टी सेवा संघ ने भी सोसाइटी के साथ अपना यथा सम्भव भोजन देकर कार्य में हाथ बटाया। बिना किसी भेद-भाव के हिन्दू-मुसलमान, सिख एग्लो इण्डियन क्रिश्चियन यहूदी आदि आदि के शरणार्थियों की सेवा की गयी।

सड़कों पर शरणार्थियों की लाशें पड़ी रहतीं। कुछ भूख और प्यास के कारण और कुछ बर्मियों की दुश्मनी के कारण इस हालत पर पहुँचे। यहाँ वैसी ही एक लाश जिसने स्वदेश लौटने का स्वप्न भर देखा। (विशेष चित्र)

अस्पताल के काम और पद्धति की सर्वसाधारण ने प्रशंसा की और कई सम्माननीय व्यक्तियों ने समय समय पर इसका निरीक्षण भी किया और पूर्ण सन्तोष प्रकट किया। इस [illegible] की सफलता से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने ५०००) रु० की सहायता दी है। अस्पताल की संक्षिप्त रिपोर्ट निम्नलिखित है—

भरती किये गये—६१९
ठीक हुए—५२१
मृत्यु— ९८

श्रीमेघराजजी सेवक ने अस्पताल की स्थापना में काफी प्रयास किया। वस्तुतः उन्हें इसको स्थापित करने का पूरा श्रेय है। उनके बाद श्री रामकृष्ण सराफजी को यह भार सौंपा गया था जिन्होंने काफी मेहनत से सुन्दरता के साथ इसे सम्हाला और चलाते रहे। जब शरणार्थी आने बन्द होगये और पुराने रोगी ठीक होकर चले गये तो इसे बन्द कर दिया गया। मारवाड़ी वाणिज्य विद्यालय एवं गोविन्द भवन के ट्रस्टियों एवं मन्त्रियों को उनकी मदद के लिये हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

सोसाइटी के शरणार्थी अस्पताल म शरणार्थियों की मृत्यु सख्या १५% जहां अन्य अस्पतालों में यह ७५% तक पहुंच गयी थी।

मेडिकल सेवाओं के सिलसिले में सोसाइटी ने दूसरा जो प्रमुख काम किया वह स्त्रियों के प्रसव कराने का प्रबन्ध था। शरणार्थी स्त्रियों में बहुत सी स्त्रियां गर्भवती होती थी। हमारे अस्पताल में प्रसव कराने का प्रबन्ध न किया जा सका था अतः स्थानीय मातृसेवा सदन में इसका प्रबन्ध किया गया जहाँ पूरी सम्हाल के साथ कार्य किया गया। मातृसेवा सदन के पदाधिकारी और हमारे धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने हमारे इस कार्य में हाथ बटाया।

इसके अलावा जब कांग्रेस मेडिकल मिशन की स्थापना की गयी और उन्होंने [illegible] बाजार में एक हजार रुपयों के लिये अपील निकाली तो सोसाइटी ने अपने शरणार्थी फण्ड से एक हजार रुपया देकर मदद की।

जो रोगी हमारे अथवा अन्य किसी अस्पताल में भरती किया गया था उसके परिवार [illegible] चलाने वाला नहीं [illegible] पड़ता था अतः रोगियों के परिवारों के खाने की व्यवस्था की और महीने दो महीने जब तक रोगी अस्पताल में रहा [illegible] की व्यवस्था की गयी। [illegible] रोगियों के परिवार को [illegible]

दिन से अधिक न रहे लेकिन कुछ ऐसे रोगी थे जिनके कारण परिवार को करीब दो महीनों तक रहना पड़ा।

कलकत्ते के सरकारीएवं सार्वजनिक—दोनों ही तरह के अस्पतालों ने शरणार्थी रोगियों को स्थान द कर हमें सहयोग दिया। बंगाल के सर्जन-जनरल की रोगियों के लिये स्पेशल बड़ी का प्रबन्ध विभिन्न अस्पतालों में करने की तत्परता और रोगियों के प्रति पूरी सहानुभूति सम्मान के साथ याद रखी जायगी।

ठीक संख्या तो बतानी असम्भव है लेकिन करीब दो लाख शरणार्थियों ने सोसाइटी द्वारा मेडिकल-सेवायें प्राप्त की।

अन्य स्थानों में कैम्पों की स्थापना —जापान की प्रगति के कारण जब समुद्र मार्ग द्वारा भारत आने में पूरा खतरा हो गया तब पैदल मार्ग से अधिक शरणार्थी आने लगे। चटगांव के अलावा दो और नये रास्ते— मणिपुर और सिलचर हो कर खुल गये। सोसाइटी न निश्चय किया कि सिर्फ कलकत्ते में ही सेवा कार्य करने से उनकी पूरी मदद न हो पायगी—आवश्यकता है इस बात की कि उनके भारत प्रवेश क साथ ही उनके दुखों में यथासम्भव कमी की जाय और इसलिये डीमापुर, इम्फाल, मणिपुर, सिलचर, फुलेरताल, लखिमपुर, हैलाकांडी, गौहाटी आदि स्थानों में कैम्प कायम किये गये जहां हमारे कार्यकर्त्ताओं ने जा जा कर कार्य किया। इन कैम्पों के सेवा-कार्यो की अलग रिपोर्ट आपको आगे मिलेगी।

विभिन्न स्थानों में कैम्प खोलने के अलावा सोसाइटी ने कई उदारचेता मारवाड़ी सज्जनों से पत्र व्यवहार कर कटिहार, लालमनिहाट कुस्टिया, डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, दिल्ली, कटक, बदरपुर बालासोर, बोनगांव आदि स्थानों में सेवा केन्द्र स्थापित करवाये। इस दिशा में कलकत्ते के सुप्रसिद्ध फर्म मेसर्स सूरजमल नागरमल द्वारा की गयी महान सेवायें स्मरणीय रहेंगी। इस फर्म ने राय साहब मदनगोपाल मावसिंहका के संचालन में पार्वतीपुर, गमन्दो भीडो आदि स्थानों में शरणार्थियों की पूरी मदद की। इनके अलावा मेसर्स मगनीरामजी बांगड़ एवं आनन्दरामजी गजाधर, श्रीकृष्णजी बेरीवाल, हरिकृष्णजी जालान की ओर से भी कलकत्ते में शरणार्थियों के लिये भोजन व्यवस्था की गयी थी। चटगांव की नवयुवक रिलीफ सोसाइटी ने वहां मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के सहयोग से काफी पैमाने पर सेवा कार्य किया। करीब ६५००० शरणार्थियों की दवा भोजन, वस्त्रादि से सेवा की गयी और करीब १५०००) रु खर्च किया। नवयुवक रिलीफ कमेटी के मन्त्री श्रीसागरमलजी सोमानी एवं गुलाबचन्दजी सोमानी बाबू भीमजी नारायणजी, उदयचन्दजी पेड़ीवाल, दानमलजी सुरेशचन्दजी आदि कार्यकर्त्ताओं ने बड़ी लगन एवं सेवा-भाव से कार्य किया। अखिल-भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की बंगाल, आसाम एवं उड़ीसा प्रान्तीय शाखा सभाओं ने शरणार्थियों की सेवा सराहनीय रुप से की और सोसाइटी की प्रेरणा से सैकड़ों स्थानों पर सेवा कार्य प्रारम्भ होगया।

भारत बर्मा-मार्ग का एक और चित्र। (निजी चित्र)

शरणार्थी अनाथ बालक—मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के धर्मार्थ शरणार्थी सेवा कार्य के सिलसिले में एक और महत्व पूर्ण कार्य हुआ और वह था अनाथ बच्चों को सम्हालना। सैकड़ों बच्चों के मां बाप एवं अभिभावक रास्ते की भयंकर तकलीफों के कारण मर गये और सैकड़ों के रंगपुर वगैरह की धम धाड़ी के कारण अलग अलग हो गये। जिन बालकों का कुछ होश था, वे अपने अन्य भारतीय भाइयों के साथ ही भारत के लिये रवाना हो गये थे, जिन्हें कुछ होश न था कि क्या हो रहा है, उन्हें किसी करुण हृदय शरणार्थी ने अपने साथ रखने की महान सेवा की। कई एकों की जबानी हमें मालूम हुआ कि जब वे राह में थे तो देखा कि बच्चे के अभिभावक की लाश पड़ी है और बच्चा एक तरफ पड़ा रो रहा है। शरणार्थी भी अपनी तकलीफ में दया और उदारता न भूले थे, बच्चा साथ ले लिया गया और कलकत्ते लाकर सोसाइटी को सौंप दिया गया। ऐसे कई उदाहरण हमारे सामने आये। और उन उदाहरणों की सचाई के सबूत स्वयं बालक ही होते थे। जब ये भूले भटके बच्चे अपने मां-बाप और अभिभावकों से कदाई दूर

जब भूले भटके अथवा अनाथ शरणार्थी बालकों से
पूछा जाता कि 'अब तुम्हें कहाँ जाना है?' तो
भोला सा जवाब मिलता—'हिन्दुस्तान।'
क्या मालूम उन्हें कि वे उनके हिन्दुस्तान में हैं!

सिलचर, श्रीमापुर आदि स्थानों के हमारे कैम्पों से गुजरते तो वहाँ इन्हें सम्हाल लिया जाता। जब उनसे यह पूछा जाता कि "अब तुम्हें कहाँ जाना है?" तो भोला सा जवाब मिलता "हिन्दुस्तान।" उन्हें यह भी पता न रहता कि वे उनके हिन्दुस्तान में पहुँच गये हैं। भारत में अपने परिवार वालों के नाम कई एकों को मालूम थे, कई एकों को नहीं। भारत की सीमा पर अवस्थित हमारे केन्द्रों से ये बच्चे कलकत्ते भेज दिये जाते। स्यालदह और हवड़ा स्टेशन पर भी ये मिलते थे और वहाँ से भी ये सोसाइटी में ले आये जाते थे। इनकी संख्या इतनी अधिक हो गयी कि एक अलग शरणार्थी अनाथालय स्थापित करने की आवश्यकता पड़ी। और, मारवाड़ी बालिका विद्यालय एवं गोविन्द भवन के ऊपर के भागों में इसकी स्थापना की गयी। इस अनाथालय में करीब १५० बच्चों के रखे जाने की व्यवस्था थी। सभी उम्र के बच्चे रखे जाते। यहाँ पर रखे गये सबसे छोटी उम्र के शरणार्थी बच्चे की उम्र सिर्फ दो वर्ष की थी। यह बच्चा किसी शरणार्थी द्वारा रास्ते में अपने किसी परिवार-जन की लाश के पास रोता पड़ा पाकर उठा लिया गया था और कलकत्ते में इसे शरणार्थी अनाथालय में भरती कर लिया

हरेक शरणार्थी केन्द्र में दवा की पूर्ण व्यवस्था रहती और डाक्टर सदैव मौजूद रहते ।

रणार्थी काम पर लगाये गये। कई फर्मों द्वारा हजारों आदमियों की माँग भी की गयी लेकिन बहुत कम ने रहना पसन्द किया कारण सबसे पहिले वे अपने स्थान पर पहुँच परिवार वालों से मिलना चाहते थे। मेसर्स सूरजमल, नागरमल, केशोराम काटन मिल्स लिमिटेड आदि फर्मों का पूर्ण सहयोग रहा। सेवा-कार्य में भी आदमियों की आवश्यकता पड़ने पर शरणार्थियों को ही प्रथम स्थान दिया जाता था। जब भारत सरकार के ओवर-सीज डिपार्टमेन्ट के इन्चार्ज माननीय मि० एम. एस. अणे ने दिल्ली में शरणार्थियों के भविष्य के प्रश्न पर विचार करने के लिये कानफरेन्स बुलाई तो श्री तुलसीरामजी सरावगी भी आमन्त्रित किये गये थे। सरावगीजी ने कानफरेन्स के सामने कई महत्वपूर्ण प्रस्ताव रखे जिनमें से एक यह भी था कि आसाम में मारगरेटा से आगे भारत-बर्मा की सीमा के आस पास जो शरणार्थी मानसून के कारण भारत आने में कतई असमर्थ होगये हैं और उनकी हालत ऐसी है कि न तो वे पीछे ही लौट सकते हैं और न आगे ही बढ़ सकते

> पण्डित जवाहरलाल नेहरू—
>
> " इस सुदूर स्थान (आसाम) में सोसाइटी जो सेवा कार्य कर रही है, उसेदेख मुझे खुशी हुई। "
>
> (विश्वमित्र २८ अप्रेल '४२)

उन शरणार्थियों की मदद अन्नादि से करने की नितान्त आवश्यकता है। भारत सरकार ने यह सुझाव स्वीकार किया और तब हवाई जहाजों द्वारा इन फँसे हुए शरणार्थियों को, जिनकी संख्या कई हजार थी, अन्न और वस्त्र पहुँचाया गया और इस तरह एक बड़ी संख्या अकाल मौत के मुँह जाती जाती बची। सोसाइटी चाहती थी कि दक्षिण भारत एवं अन्य कुछ स्थानों में काटेज-इन्डस्ट्री केन्द्र खोले जाँय जहां पर काम कर ये शरणार्थी भारत में अपनी जीविका कमाने लायक हो जायँ लेकिन देश की मौजूदा संकटपन्न स्थिति एवं नये नये प्राकृतिक कोपों के कारण यह स्कीम कार्यान्वित न की जा सकी।

धन्यवाद एवं कृतज्ञता प्रकाशन —बर्मा शरणार्थियों की सेवा करने के लिये हमें केन्द्रीय एवं प्रान्तीय सरकार से आर्थिक मदद के साथ साथ हर तरह की सुविधायें प्राप्त होती रही हैं। खासकर भारत सरकार के ओवर सीज डिपार्टमेंट के मेम्बर इन-चार्ज माननीय मि० एम. एस. अणे, इसी विभाग के सेक्रेटरी मि० जी. एस. बोजमैन, सिलचर के डिप्टी कमिश्नर, डीमापुर, मारगरेटा एवं सिलचर के कैम्प कमाण्डर, बंगाल सरकार के

तात्कालीन सिविल डिफेन्स विभाग के मिनिस्टर मि० सन्तोषकुमार बसु, बंगाल सरकार के स्पेशल इवेकुएशन आफिसर मि० के० सेन आई० सी० एस० बंगाल के सर्जन जनरल आदि सरकारी आफिसरों ने जिस सार्वजनिक सेवा-भाव से प्रेरित होकर हमें अपना सहयोग प्रदान किया, उसके लिये हम आभारी हैं।

धर्म-शरणार्थी सेवा कार्य को सफल बनाने के लिये कलकत्ता एवं अन्य स्थानों से वैयक्तिक अथवा सामूहिक रूप से जिन सज्जनों ने हमें आर्थिक सहयोग दिया है, उनकी सोसाइटी अत्यन्त आभारी है। हरेक सेवा-कार्य में आर्थिक मदद की अत्यन्त आवश्यकता होती है और ऐसी मदद देनेवालों को जितना धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है।

आल इण्डिया सेवा समिति इलाहाबाद एवं इसके प्रधान मन्त्री माननीय डा० पं० हृदय नाथ कुँजरू, एम० एल० ए० ने हमें बराबर सहयोग और मदद दी। पं० कुँजरू ने समय समय पर हमें अपनी बहुमूल्य सलाहें दी और गवर्नमेंट से शरणार्थी सेवा-कार्य के लिये हमें मदद दिलाने में पूरा हाथ बटाया अतः सोसाइटी उनकी अत्यन्त आभारी है।

इस सेवा कार्य में प्रारम्भ से ही सोसाइटी के हितचिन्तकों ने काफी दिलचस्पी रखी। श्री ब्रजमोहनजी बिड़ला द्वारा किये गये पथ-प्रदर्शन के लिये तो हम आभारी हैं ही, साथ ही उन्होंने हमें कभी भी आर्थिक कठिनाइयां महसूस न होने दी। सोसाइटी आपकी उदारता एवं सामयिक सलाहों के लिये चिरऋणी है। इनके अलावा सर अब्दुल हलीम गजनवी मि० एम ए० एच इस्पहानी, मि गगन बिहारी मेहता आदि के भी हम आभारी हैं जिन्होंने समय समय पर हमें अपनी बहुमूल्य सलाहें दी हैं।

शरणार्थी स्वागत समिति (Evacuees Reception Committee) के उप-सभापति मि जे एस० ग्राहम तथा सेक्रेटरी मि० डब्ल्यू बाक्सैस मुस्लिम इवाक्वीज रिसेप्शन कमेटी के अवै० मन्त्री मि एस० एहसान, नव विधान रिलीफ मिशन के श्री शनाकान्त नियोगी साउथ इण्डियन इवाकुएसन कमेटी के सभापति मि० सी० एस० रंगास्वामी हिन्द मव कमेटी के सभी सदस्य आदि सहयोगियों को अनेकानेक धन्यवाद है।

सोसाइटी उन सभी सम्माननीय व्यक्तियों का हार्दिक धन्यवाद देती है जिन्होंने समय-समय पर सोसाइटी के कलकत्ता एवं आसाम स्थित केन्द्रों का निरीक्षण कर अपनी बहुमूल्य रायें हमें दी।

रिजर्व बैंक के डायरेक्टरस् एवं अन्य पदाधिकारियों के नोट परिवर्तन में मदद एवं सहानुभूति रखने के लिये हम उनके आभारी हैं।

अमृत बाजार पत्रिका हिन्दुस्तान स्टेण्डर्ड एडवांस दैनिक बसुमति आनन्दबाजार पत्रिका युगान्तर, विश्वमित्र लोकमान्य समाज सेवक (कलकत्ता) हिन्दुस्तान टाइम्स हिन्दुस्तान (देहली) हिन्दू, इण्डियन एक्सप्रेस (मद्रास) टाइम्स आफ इण्डिया, आवाज

इलस्ट्रेटेड विकली आफ इण्डिया (बम्बई) आदि स्थानीय एवं बाहर के सभी अंग्रेजी हिन्दी, बंगाली, गुजराती, तामिल, उर्दू आदि भाषाओं के समाचार पत्रों ने हमें पूर्ण सहयोग दिया और सोसाइटी की शरणार्थी सम्बन्धी गतिविधियाँ जनता तक पहुँचा इसके लिये इनके सञ्चालक एवं सम्पादक हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। सोसाइटी उन स संस्थाओं को बधाई देती है जिन्होंने इस महान सेवा-कार्य में किसी न किसी रूप में ह बटाया है। रामकृष्ण मिशन, साउथ इण्डिया इवेकुएशन कमेटी, नव विधान सि मिशन मुस्लिम इवेकुइज सब-कमेटी, बंगाल प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी, बंगाल प्रान्तीय हि महासभा, यूरोपियन-एंग्लो इण्डियन सब कमेटी, इण्डियन क्रिश्चियन सब-कमेटी, श्री का विश्वनाथ सेवा-समिति, हिन्दू सत्कार समिति, बड़ाबाजार सिख संगत, मारवाड़ी सेवा से तुलापट्टी भागानन्द मठ, बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी, बजरंग परिषद बड़ाबाजार यूथ अं

> प० हृदयनाथ कुंजरू—
>
> " जब सभी संस्थाओं ने सेवा-कार्य में यथासम्भव हाथ बटाया है तब किसी एक का जिक्र किया जाना असम्भव है लेकिन हमारा विचार है कि इस दिशा में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अपने सेवा-कार्य के लिये विशेष धन्यवाद की पात्र है। " (स्टेट्समैन २८ अप्रेल '४२)

वाड़ी भण्डार सेवा दल, गुजरात रिलीफ कमेटी सनातन धर्मावलम्बी अग्र सभा, श्रीकृष्ण सेवा समिति हिन्दू रिलीफ कमेटी, नगामल सर्विस कमेटी हवड़ा जि कांग्रेस कमेटी मछिया बाजार आर्य समाज वाई एम॰ सी॰ ए॰, ब्रिटिश को ऑपरेटिव सेंटजान एम्बूलेंस ब्रिगेड श्रीकृष्ण परिषद आदि संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने हमारे कार्य में मदद की। इस सेवा-कार्य से हमने एक होकर कार्य करना सीखा है। ईश्वर से प्रार्थना है कि हमारे मत भेदों को दूर कर हमें एकता को दृढ़तर बनावे।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं उसकी विभिन्न शाखा सभाओं को हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने समय-समय पर हमारी शरणार्थियों की सुविधा सम्बन्धी माँगों क

ऐसे कितने ही भूले-भटके अनाथ बालक भारत लौटे और सोसायटी ने उन्हें सम्हाला।

पूरा समर्थन किया और हमारी अपील पर हमें आर्थिक सहायता संग्रह कर भेजने के अ
अपने अपने स्थानों में सेवा केन्द्र स्थापित किये।

हम सेन्ट्रल एवं बंगाल प्रान्तीय असेम्बली के उन सभी सदस्यों के आभारी
जिन्होंने हमारी माँगों की पूर्ति के लिये असेम्बली में आवाज उठाई। श्री बसन्त
पाजोरिया एम० एल० ए० (सेन्ट्रल) के हम विशेष ऋणी हैं जिन्होंने मानवी
सेवा-कार्य में पूरी दिलचस्पी रखी।

कलकत्ता कारपोरेशन ने स्यालदह स्टेशन पर पानी का सुन्दर प्रबन्ध कर हमारी क
मदद की, इसके लिये मेयर एवं कौंसिलरों को धन्यवाद।

कलकत्ता ट्रामवे कम्पनी लिमिटेड के हम अत्यन्त आभारी हैं जिसने प
स्यालदह से हमको ले जाने के लिये अपनी ट्रामें बिना किसी चार्ज के दी।

सोसाइटी के सभापति श्री इन्द्रचन्दजी केजरीवाल एवं प्रधान मन्त्री श्री पद्मराज
सेठ की समय-समय पर दी गयी मदद एवं सलाहों के लिये हम आभारी हैं।

सोसाइटी की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों जिनमें सर्व श्री गजानन्दजी न
राधाकृष्णजी नेवटिया, गौरीशंकरजी गोयनका, आनन्दीलालजी पोद्दार, रघुनाथ प्रसा
खेतान, मातादीनजी खेतान प्रमुख रहे—की मदद एवं सलाहों के लिए उन्हें अनेक
धन्यवाद हैं।

सोसाइटी के स्टाफ के सभी सदस्यों को हम हार्दिक धन्यवाद देते हैं जिन्होंने प
मेहनत से मन लगाकर कार्य किया और जिनकी ऐसी मदद बिना काम का पूरा ह
असम्भव था। विशेषतः सर्व श्री महेन्द्रनारायण झा, सूरजमल सरावगी, भीखम च
चिरंजीलालजी जोशी आदि का उद्योग और परिश्रम सराहनीय है। श्री कपूरचन्द
जैन ने जिस उत्साह लगन और योग्यता से आफिस काम के साथ साथ अन्य कार्य
सम्हाला उसके लिए जो भी कहा जाय जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। सोसाइटी
उनकी सेवायें स्मरणीय रहेंगी।

हम उन सभी सहयोगी सज्जनों एवं अभिभावियों को धन्यवाद देते हैं जिन्हों
परोक्ष या अपरोक्ष रूप से हमारे काम में हाथ बटाया और सहानुभूति रखी।

शरणार्थी अनाथालय की कुछ अनाथ स्त्रियाँ एवं बच्चे ।

—डीमापुर एव मणिपुर केन्द्र—

बर्मा से पैदल चल कर आनेवाले शरणार्थियों के द्वारा ज्ञात हुआ कि मणिपुर के रास्ते में उन्हें अनेक प्रकार की विपत्तियां झेलनी पड़ती है और साथ ही जाति-भेद के नाम पर हिन्दुस्थानियों के साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया जारहा है। भोजन की भी पूर्ण व्यवस्था नहीं है। यहाँ तक कि पानी के अभाव में हजारों शरणार्थी परलोकवासी हो रहे हैं। शरणार्थियों की करुण कहानी ने सोसाइटी के सम्मुख एक आवश्यक कर्तव्य उपस्थित कर दिया कि ऐसे सुदूर स्थान में सोसाइटी शीघ्र से शीघ्र पहुँच कर इनकी मदद करे। लेकिन इस कर्तव्य-पालन में नाना प्रकार की कठिनाइयाँ थी। एक ओर, जब कि मानवता असहाय रूप से मदद के लिये निहार रही थी, दूसरी ओर जापानी खतरा दिन-प्रतिदिन निकटतर आनेकी आशंका से कलकत्ते के अधिकांश कार्यकर्ता अन्यत्र चले गये थे। कलकत्ता में जब भय इस रूप से व्यापक हो रहा था, उस समय बर्मा की सीमा के इतने निकट—मणिपुर जाने की हिम्मत करना एक साहसिक कार्य था। कलकत्ते के सुप्रसिद्ध समाज-सेवक श्री मालचन्दजी शर्मा की सेवायें सौभाग्य-वश सोसाइटी को प्राप्त हो गयी और उन्होंने आसाम जाकर सेवा-कार्य करने का इरादा किया। इसके अलावा राय साहब श्री डूँगरमलजी लोहिया ने भी मणिपुर आदि स्थानों में सेवा-कार्य करने का निश्चय किया। और परिणाम स्वरूप मणिपुर, डीमापुर और मऊ में सेवा-केन्द्र स्थापित कर दिये गये।

डीमापुर आसाम में सब से बड़ा सेवा-कैम्प था जहाँ १५०००० से ऊपर शरणार्थी आये। सोसाइटी के द्वारा इनकी भरसक सेवा की गयी। महीनों की कठिन यात्रा के बाद जब ये शरणार्थी डीमापुर पहुँचते और सोसाइटी द्वारा भोजन एवं दवा वगैरह पाते तो उनके मुख से स्वतः निकल पड़ता कि वास्तव में आज हम अपनी जन्मभूमि में पहुँच कर ठीक भोजन कर पाये हैं। कई शरणार्थियों ने तो यहाँ तक कहा कि वे आज पूरे एक महीने बाद रोटी का दर्शन कर रहे हैं। रोगी शरणार्थियों की भी पूरी सम्हाल रखी जाती थी।

डीमापुर के सेवा-केन्द्र की सराहना पं॰ जवाहरलाल नेहरू, माननीय मि॰ एम॰ एस॰ अणे पं॰ हृदयनाथ कुँजरू, मेजर जनरल रड, जस्टिस ब्राण्ड, श्री गोपीनाथ बारदोलोई आदि गणमान्य निरीक्षकों द्वारा की गयी और सोसाइटी के कार्य की प्रशंसा तो आसाम के कोने कोने में उस समय हुई जब कि मणिपुर की बम-वर्षा के कारण कई जिम्मेदार अफसरों ने अपनी ड्यूटी छोड़कर घर का रास्ता लिया था। सारे होटल बन्द होगये थे। उस समय सोसाइटी के अकेले केन्द्र ने विभिन्न कठिनाइयों के बीच प्रतिदिन

सीमापुर कैम्प में शरणार्थियों को भोजन कराया जा रहा है।

हमारे सीमापुर-शिक्षण केन्द्र के आचार्य एवं कुछ कार्यकर्ता।

सरकार की ओर से एक Exchange Office खुलवा दिया जिसमें प्रत्येक व्यक्ति दस रुपये तक के नोट बदलवा सकता था। डीमापुर के अलावा इस ओर दो कैम्प और थे। इम्फाल (मणिपुर की राजधानी) और मऊ। उक्त दोनों कैम्पों में भोजन वस्त्र, दूध दवा आदि देनेकी व्यवस्था थी।

पं० मालचन्दजी शर्मा ने जिस साहस और उत्साह के साथ डीमापुर में सेवाकार्य किया वह गौरव की वस्तु है एवं जिन जिन तकलीफों और जिन जिन विरोधों के बीच डटे रह उन्होंने कैम्प सम्हाले, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाय उसके लिये जितना भी धन्यवाद दिया जाय, थोड़ा है।

राय साहब श्री डूँगरमलजी लोहिया ने मणिपुर आदि केन्द्रों के इन्चार्ज होकर काफी लगन और उत्साह से कार्य किया। पग-पग पर विभिन्न कठिनाइयों का सामना करते हुए भारत की सीमा पर के दो दो कैम्पोंका कार्यभार सम्हाले रखना आपही जैसे कर्मठ व्यक्ति का कार्य था। सोसाइटी आपकी सेवा के लिये आपको पुनः धन्यवाद देती है। आपके सहकारी श्री गणेशप्रसाद फोगला ने भी काफी परिश्रम से कार्य किया।

सोसाइटी के सेवा-कार्य में आसाम कांग्रेस के स्वय सेवकों ने बड़े उत्साह से कार्य किया, इस सहयोग के लिये जिले के प्रमुख कर्मी श्री राजेन्द्रनाथ बरुआ एम० एस ए०, शंकर प्रसाद बरुआ एम० एल० ए०, श्री देवकान्त बरुआ आदि हमारे धन्यवाद के विशेष पात्र हैं। गोलघाट जोरहाट, शिवसागर, नवगांव बरापेठी नाजिरा आदि स्थानों के स्वयसेवकों ने भी आकर काम में हाथ बटाया। गोलघाट के पं० श्यामदासजी ने पूरी लगन और तत्परता से सभी कार्यों में हाथ बटाया और विपत्ति के समय सोसाइटी के कैम्पों के हरेक कार्य में बिना हिचक के साथ दिया। प्रान्त के नता श्री गोपीनाथजी बारदोली ने हमारे कार्य में काफी दिलचस्पी रखी और कइ बार डीमापुर आकर कार्य का निरीक्षण किया। गोलाघाट के श्री भगवतीप्रसाद लड़िया गजानन्दजी अग्रवाल एम० एल सी०, राय साहब सालिगराम मुन्नीलाल फर्म, श्री गजानन्दजी श्री विशम्भरजी गुप्ता तिनसुकिया न भी हमें काफी सहायता पहुचाई इसके लिये उन्हें धन्यवाद है।

आसाम पर बम-वर्षा के कारण हमारे केन्द्रोंमें कार्यकर्ताओं की काफी कमी हो गयी थी। सकटापन्न स्थिति को देखते हुए कलकत्ते से हरेक ने उस ओर जाने से इन्कारी कर दी थी और इधर कैम्पों को चालू रखना अत्यन्त जरूरी था, ऐसे समय में श्री रामकृष्ण सरावगी ने आसाम जाकर डीमापुर, सिलचर आदि स्थानोंमें करीब डेढ़ महीने तक रह कर सेवा-कार्य आदि में हाथ बटाया।

शरणार्थियों के आनेकी सख्या नगण्य हो जाने पर पं० मालचन्दजी के कलकत्ता लौट आने के बाद श्री बाबूलालजी पोद्दार ने कुछ दिनों तक डीमापुर का कार्य सम्हाला था।

फौजी अफसरों को भी हार्दिक धन्यवाद है जिन्होंने सोसाइटी के कार्यकर्ताओं को हर तरह की सुविधा देकर पूरी सहायता पहुँचाई।

— सिलचर केन्द्र —

अप्रैल के प्रारम्भ में जब सिल्चर-मार्ग खुला तो इस राह से भी हजारों की संख्या में शरणार्थी आने लगे। गवर्नमेंट ने यद्यपि स्थान स्थान पर भोजन केन्द्र स्थापित किये थे लेकिन इस बात की आवश्यकता महसूस की गयी कि अगर सोसाइटी इस मार्ग पर भोजन केन्द्र खोले तो शरणार्थियों के हितार्थ विशेष असर पड़े। श्री बाबूलालजी पोद्दार ने सिल्चर केन्द्र का सम्पूर्ण भार स्वीकारा और मई के प्रथम सप्ताह में सिल्चर रवाना हुए। इसी समय कांग्रेस मेडिकल मिशन भी सिल्चर के लिये रवाना हुआ था। सिलचर में गवर्नमेंट कैम्प का काम चालू हो गया था और रामकृष्ण मिशन के कार्यकर्त्ता भी कार्य कर रहे थे। इस कैम्प का प्रबन्ध एवं सफाई आसाम में खोले गये सभी सरकारी कैम्पों से उत्तम था। बिजली की पूर्ण व्यवस्था थी। शरणार्थियों के स्नानका प्रबन्ध टैंक और बेसिनों पर किया गया था तथा विश्राम घर भी काफी आराम दायक बनाये गये थे। सोसाइटी ने इसी कैम्प में अपना केन्द्र खोला। प्रारम्भ में जो शरणार्थी आते थे उन्हें अपना मूल्य देकर टिकिटें खरीदनी पड़ती थी। सोसाइटी ने भारत सरकार द्वारा नियुक्त किये गये स्पेशल आफिसर श्रीयुत मराठे से मिलकर भारत सरकार एवं अन्य सम्बन्धित व्यक्तियों से पत्र-व्यवहार किया जिसके परिणाम स्वरूप सिलचर में भी फ्री टिकिट देने की व्यवस्था की गयी। इसके अलावा प्रारम्भ में शरणार्थी मालगाड़ी के डिब्बों में कलकत्ते भेजे जाते थे उसे कोशिश कर रुकवाया गया और सवारी के डिब्बों की व्यवस्था की गयी। सिल्चर मार्ग से प्रतिदिन १०००—१५०० तक शरणार्थी आते थे और बाद में यह संख्या चार-पाँच हजार तक पहुँच गयी थी। सिलचर केन्द्र के अन्तर्गत चार केन्द्र थे—

(१) फुलेरताल सेन्टर —यह केन्द्र प्रथम गैर-सरकारी केन्द्र था जहाँ शरणार्थियों को सुविधायें प्राप्त होती थी। सिल्चर से करीब २६ मील दूर ठीक पहाड़ के नीचे इस केन्द्र की स्थापना की गयी थी। बारह कोस पैदल का भारत-बर्मा मार्ग की अन्तिम पहाड़ी से उतरते ही शरणार्थियों के प्राण पानी एवं भोजन के लिये छटपटा जाते थे। स्त्रियाँ और बच्चे एकदम थक जाते थे और गर्भवती एवं छोटे छोटे बच्चों को कन्धे पर लेकर आते हुए पुरुषों की दशा को देख तात्कालिक सहायता की खास आवश्यकता थी। इसी बात को देख इस केन्द्र की स्थापना की गयी। इस कैम्प से प्रतिदिन हजारों शरणार्थी आते भूख विह्वल पानी पूरी भरपेट पाते थे। पास ही एक आराम घर भी बनाया था जहाँ वे घण्टे दो घण्टे सुस्ता कर पुनः सिलचर के लिये रवाना हो जाते थे। इस केन्द्र की स्थापना बड़ी सूझ बूझ की रही और तात्कालिक सेवा करने का पूरा श्रेय इसी केन्द्र को है।

सिल्चर सेवा-कार्य के कुछ प्रमुख कार्यकर्ता आसाम असेम्बली की कांग्रेस पार्टी के डिप्टी लीडर मि० अरुणकुमार चन्दा एम० एल० ए० के साथ (बायें ओर से तीसरे)

शरणार्थी सिल्चर मार्ग के अन्तिम पहाड़ को पार कर भारत पहुँच रहे हैं।

सिलचर कैम्प का एक तिहाई हिस्सा बराक नदी में बाढ़ आजाने के कारण डूब गया है।

हमारे सिलचर सेवा-केन्द्र के कुछ प्रमुख कार्यकर्ता शरणार्थी अनाथ बच्चों के साथ।

इसी केन्द्र पर पहाड़ से शरणार्थियों की तकलीफों के कुछ दृश्य देखने को मिलते थे। जिस तरह तारकेश्वर जानेवाले 'कांवड़' लेकर जाते हैं (जिसके दोनों तरफ गंगाजल के भरे दो कलश रहते हैं और बीच में एक बांस की लकड़ी होती है जिसे यात्री अपने कन्धे पर रख कर चलता है) उसी तरह बर्मा से भारत आनेवाले बहुत से शरणार्थी भी ऐसी 'कांवड़' लेकर आते लेकिन दोनों तरफ पानी के दो कलश नहीं होते थे। होते थे दो बच्चे या सामान। पसीने से चूर जीर्ण-शीर्ण शरीरवाले शरणार्थी इस प्रथम गैर सरकारी कैम्प को पाकर ठहर जाते और उनकी यथा शक्ति सेवा की जाती। इस केन्द्र का सञ्चालन मेसर्स चम्पालालजी बांठिया फर्म के श्रीयुत जुहारमलजी करते थे। लखीमपुर की जनता का भी सहयोग रहा।

(२) लखीमपुर केन्द्र —फुलेरताल कैम्प से छः मील बाद शरणार्थी लखीमपुर कैम्प आते थे। यहाँ पर गवर्नमेंट का भी एक कैम्प था। सोसाइटी द्वारा यहाँ यात्रियों

> प्रोफेसर हुमांयू कबीर एम० एल० ए०—
>
> " मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी ने बर्मा-शरणार्थियों की मदद का महान कार्य-किया हैं और कर रही है एव उनको निजी स्थानों पर भेजने में भी सहायता कर रही है। "
>
> (टलीग्राफ ता० १७-२-४२)

को चाय, दूध, दवा, बिस्कुट आदि देने का प्रबन्ध था तथा उन्हें सरकारी कैम्प में ठहरा कर उनकी हरेक तरह की मदद की जाती थी। भोजन का सुन्दर प्रबन्ध था, दाह संस्कार किया जाता एवं छोटी संख्या में बर्मा-नोट भी परिवर्तन किये जाते थे। यहाँ से बाल-बच्चोंवाले शरणार्थी स्टीमर से एवं स्वस्थ शरणार्थी पैदल सिलचर के लिये रवाना कर दिये जाते थे। इस केन्द्र के भी इन्चार्ज श्री जुहारमलजी थे। आपने जिस परिश्रम से इन दोनों केन्द्रों को सम्हाला उसके लिये सोसाइटी आपकी आभारी है। यहाँ लखीमपुर युवक सम्मेलन के कार्यकर्ता लखीमपुर कैम्प कमाण्डण्ट आदि का पूरा सहयोग मिला।

(३) मेहराघाट कैम्प —सिलचर और लखीमपुर के बीच एक नदी के किनारे इसे स्थापित किया गया था। पैदल आनेवाले शरणार्थियों के लिये एक आरामघर भी बनवाया गया था। चाय, बिस्कुट मट्ठा मुरी निम्बू के शर्बत आदि की व्यवस्था थी। चलने से असमर्थ यात्रियों को बैल गाड़ी से सिलचर भेजा जाता था और भाड़ा सोसाइटी

की ओर से दिया जाता था। मेखापाट गाँव की कांग्रेस कमेटी के सदयोग से काम होता था तथा इन्चार्ज कांग्रेस कमेटी के मन्त्री थे और गोस्वामी का पूरा सहयोग मिलता था।

(४) सिल्चर कैम्प —यहाँ पर स्टीमर से आनेवाले शरणार्थियों को स्टीमरघाट पर उतरने में मदद की जाती थी गवर्नमेंट कैम्पों में ठहराया जाता था भोजन करने में मदद की जाती थी, वस्त्र वितरण किया जाता था एवं रोगियों की दवा का भी प्रबन्ध किया जाता था। बर्मा-नोट परिवर्तन का भी काम किया जाता था। मृतक दाह संस्कार सोसाइटी के कार्यकर्ता ही करते थे। अंतिम काल में जब मृतकों की संख्या बढ़ गयी तो एक एक दिनमें ४—५ लाशों तक को जलाना पड़ता था। दाह-संस्कार में श्री हरिहर प्रसाद मिश्र ने पूरा परिश्रम किया और काम सम्हाला। शरणार्थियों को कलकत्ते तक की मुसाफिरी में खाने के लिये कुछ भोजन भी दिया जाता था। कैम्प एवं अन्य सहायता कार्य में श्री सूरजमल सरावगी ने बड़ी तत्परता से काम किया। यहाँ अनाथ-बच्चे भी सम्हाले जाते थे और श्री गयाप्रसादजी खण्डेलवाल के यहाँ एक अस्थायी अनाथालय भी खोला गया था।

ये केन्द्र जुलाई में सिल्चर-रोड से यात्री आने बन्द हो जाने के कारण बन्द कर दिये गये। सब मिलाकर करीब ६०००० शरणार्थियों की सेवा की गयी। यहाँ के कार्यकर्ताओं एवं स्वयं सेवकों ने काफी हिम्मत से काम किया। जब सिल्चर से थोड़ी ही दूर एक स्थान पर जापानियों ने बम वर्षा की तब भी हमारे कार्यकर्ता जमे रहे। उस समय सिल्चर के सभी मकान हिल उठे थे। इस बम वर्षा की खबर पाकर श्री बाबूलालजी पोद्दार एवं श्री कन्हैयालालजी गिलानी फौरन घटनास्थल पर पहुंचे एवं घायलों की मदद की। आतंक फैल जाने के कारण सिल्चर के अधिकांश निवासी शहर छोड़ कर भाग गये और खाने पीने की चीजों का मिलना बड़ा मुश्किल हो गया था। शहर सुनसान पड़ा था। उस समय बाबूलालजी पोद्दार एवं कन्हैयालालजी गिलानी हिम्मत कर डटे रहे और जिस रूप से गवर्नमेंट एवं सोसाइटी कैम्प का प्रबन्ध रहा उसकी अधिकारियों द्वारा बड़ी प्रशंसा की गयी। इसके अलावा एकबार बराक नदी में बाढ़ आजाने के कारण सिल्चर कैम्प का करीब एक तिहाई भाग डूब गया था। प्रारम्भ में तो काम चलाना भी मुश्किल हो गया था। उस समय शरणार्थियों की दशा और भी खराब हो गयी थी लेकिन परिस्थिति किसी तरह सम्हाली गयी और काम चालू रखा गया।

सिल्चर रोड के इन चारों केन्द्रों के प्रधान इन्चार्ज बाबूलालजी पोद्दार थे। आपके ही द्वारा ये कैम्प खोले गये और आपके ही परिश्रम से कार्य सुन्दर रूप में हो सका। मगर यह कहना अत्युक्ति न होगी कि शरणार्थियों की सबसे अच्छी सेवा आसाम प्रान्त में इन्हीं चार केन्द्रों में हुई थी। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है श्री पोद्दारजी की तत्परता का।

सिलचर के केन्द्रों का वर्णन करते वक्त हम श्री चम्पालालजी सिपानी को नहीं भूल सकते। आपकी ही मदद और परिश्रम का परिणाम था कि सोसाइटी इतनी दूर कार्य करने में समर्थ हो सकी। नोट-परिवर्तन एवं जहाज-घाट पर सेवा करने के संचालन का भार भी आपने सम्हाला था और सिलचर में हमारे कार्यकर्ताओं एवं निरीक्षकों को हरेक तरह की मदद दी। सोसाइटी आपकी मदद कभी नहीं भूल सकती और आपको जितना भी धन्यवाद दिया जाय थोड़ा है।

सिलचर में सेवा कार्य सुचारु रूप से करने में आसाम असेम्बली की कांग्रेस पार्टी के डिप्टी लीडर श्री अरुणकुमार चन्दा एम० एल० ए०, सिलचर कैम्प कमाण्डेंट मि एन चक्रवर्ती राय बहादुर हेमचन्द्र दत्त एम० एल० सी गवर्नमेंट प्लीडर, श्रीयुत गयाप्रसादजी गंगाप्रसाद खण्डेलवाल, सूरजमानजी खण्डेलवाल, करीमगंज से आगे के तीन गवर्नमेंट कैम्पों के कमाण्डेंट और आसाम टी प्लान्टर्स एसोसिएशन के सेक्रेटरी मि० क्लेक, *कछार कांग्रेस कमेटी के मन्त्री श्री अचिन्त्यकुमार भट्टाचार्य,* धर्मचन्दजी पटवा आदि सज्जनों से बराबर मदद मिली इसके लिये उन्हें हार्दिक धन्यवाद है।

— ईश्वरडीह केन्द्र —

डीमापुर एवं सिल्चर से रेल द्वारा कलकत्ता आनेवाले शरणार्थियों को राह में सुविधायें दे सकने के विचार से इस केन्द्र की स्थापना की गयी थी। यहाँ के स्टेशन पर जब गाड़ी ठहरती तब शरणार्थियों को चाय, दूध, बिस्कुट मुरी चना, पूरी आदि दी जाती थी। रोगियों को भी अस्पताल भेजा जाता था तथा उनकी फर्स्ट-एड का प्रबन्ध भी था। जो शरणार्थी ट्रेन में मर जाते थे उन्हें इस स्थान पर उतार लिया जाता और दाह संस्कार किया जाता था। यह कैम्प अप्रेल '४२ के अन्तिम सप्ताह में खोला गया था और जब शरणार्थी आने बन्द हो गये तो इसे बन्द कर दिया गया था। कुल मिला कर इस केन्द्र से ३६००० शरणार्थियों की सेवा की गयी।
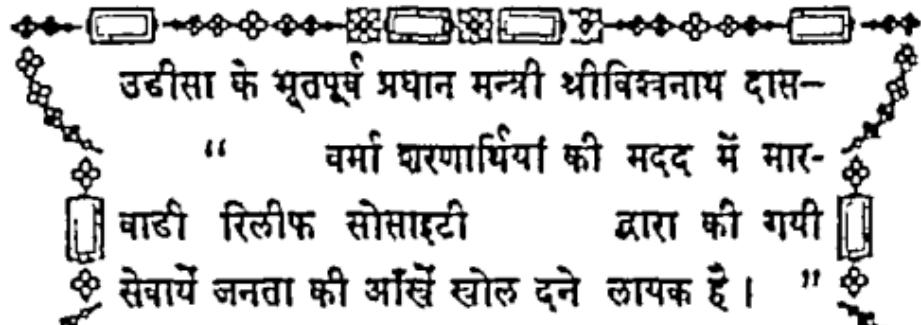
> उड़ीसा के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्रीविश्वनाथ दास—
>
> "बर्मा शरणार्थियों की मदद में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी द्वारा की गयी सेवायें जनता की आँखें खोल देने लायक हैं।"
>
> (अमृतबाजार पत्रिका १३ मई '४२)

इस कैम्प के इन्चार्ज श्री रामचन्द्रजी बादिती एवं श्री रूपचन्दजी शर्मा थे जिन्होंने काफी लगन और मेहनत से काम सम्हाला। इनके अलावा ईश्वरडीह रायबहादुर बर्णवार की धर्मपत्नी मिसेज रौनल, ईश्वरडीह स्टेशन मास्टर की धर्मपत्नी मिसेज मिडल्टन, केदारनाथजी शर्मा, मि० नूरुद्दीन, मुन्शिचन्दजी पटवारी, मायादेवीजी सराफ, बैदानन्दजी सराफ, किशनलालजी पोद्दार, मोतीलालजी अग्रवाल, बद्रीप्रसादजी अग्रवाल, हीरालालजी खेतान, मातीलालजी गोविन्दचन्दजी गुप्ता, परशुरामजी बजाजिया आदि का सहयोग मिला जिसके लिये इन्हें हार्दिक धन्यवाद है।

हमारे रिलीफ केन्द्र के प्रमुख कार्यकर्त्ता ।

— गौहाटी केन्द्र —

— *** —
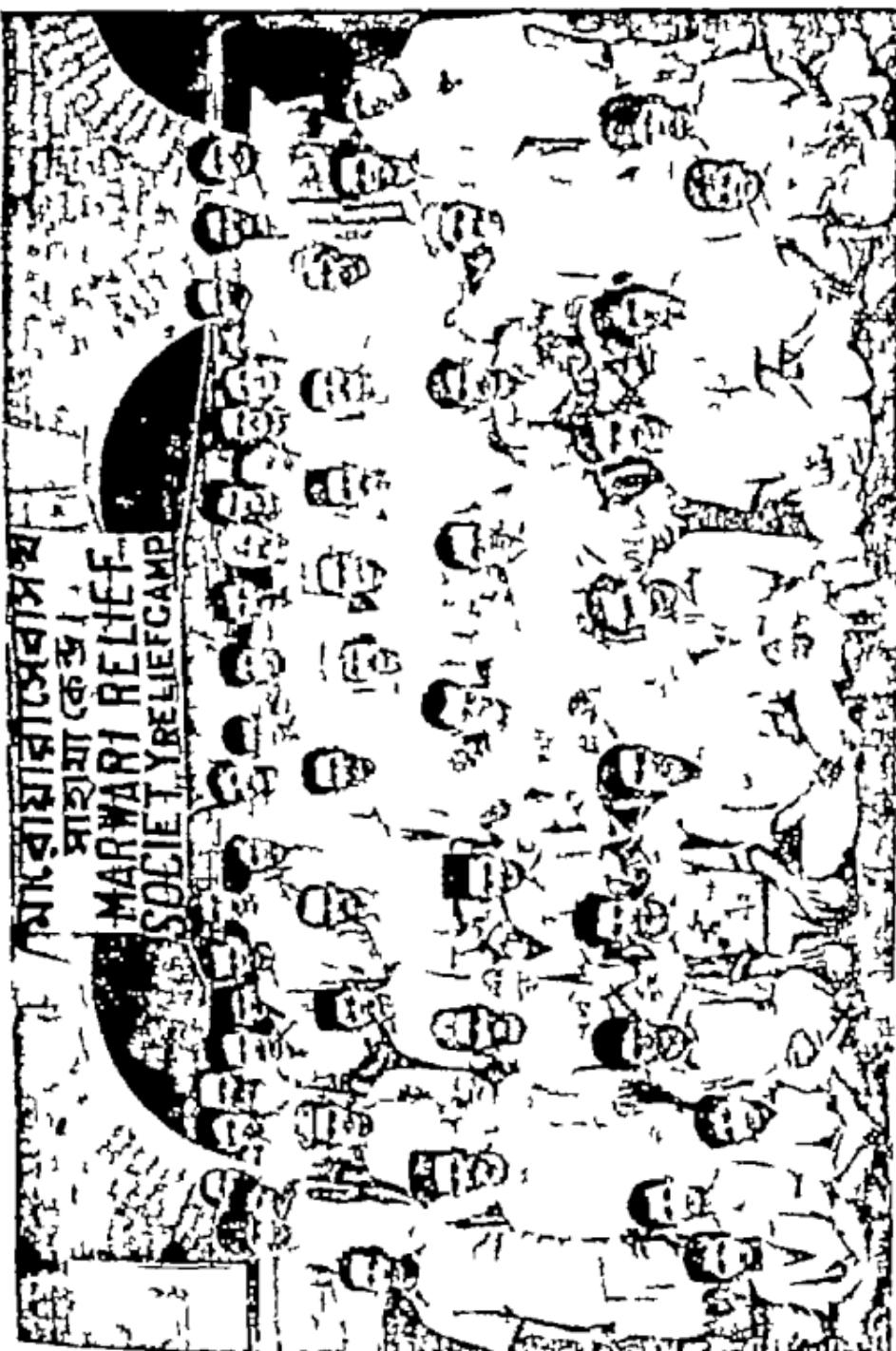
डीमापुर से रेल द्वारा कलकत्ते जानेवाले शरणार्थियों को पाण्डु (गौहाटी से चार मील दूर) में ब्रह्मपुत्र नदी पार करके अमीनगाँव में गाड़ी पकड़नी पड़ती थी। ईश्वरदी केन्द्र एवं डीमापुर केन्द्र के बीच एक केन्द्र और स्थापित करने की आवश्यकता थी, अतः गौहाटी केन्द्र खोला गया। प्रारम्भ के कुछ महीनों तक गौहाटी के मारवाड़ियों द्वारा पाण्डु एवं अमीनगाँव में सेवा कार्य होता था लेकिन आसाम में युद्धजनित आतंक फैल जाने के कारण लोगों के इधर उधर हो जाने से सेवा काम बन्द सा हो रहा था अतः सोसाइटी ने इस कैम्प की स्थापना की। इस केन्द्र द्वारा पाण्डु एवं अमीनगाँव में शरणार्थियों की मदद की जाती थी जिनमें भोजन, वस्त्र वितरण दवा और रास्ता के सामान मुख्य थे। जून के तृतीय सप्ताह में इस केन्द्र की स्थापना हुई थी और जुलाई के अन्त तक यह केन्द्र रहा। कुल मिलाकर १० ६५ शरणार्थियों की सहायता पहुँचाई गयी। इस कैम्प के इन्चार्ज डा० रामशंकर अग्रवाल थे जिन्होंने पूरे परिश्रम से काम सम्हाला। गौहाटी की मेसर्स हिम्मतसिंहका एण्ड कम्पनी के श्री रामकुमारजी हिम्मतसिंहका ने हमारे इस केन्द्र के संचालन में काफी हाथ बटाया और पूरा सहयोग दिया। आसाम के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री गोपीनाथजी बारदोलोई ने अपनी सलाह वगैरह से काफी मदद की। इसके लिये सोसाइटी बारदोलोईजी एवं हिम्मतसिंहकाजी की अत्यन्त आभारी है। कार्य को सम्पन्न करने में आसाम प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के स्वयंसेवकों तथा अन्य स्थानीय कार्यकर्ताओं ने पूरी मेहनत की एतदर्थ उन्हें धन्यवाद है। आसाम के केन्द्रों का जिक्र करते वक्त हम शिलांग के श्री कामाख्या प्रसादजी बाजोरिया को नहीं भूल सकते जिन्होंने शिलांग गये हुए हमारे प्रतिनिधियों को हर तरह की सुविधायें दीं। इसके लिये आपको धन्यवाद है।

बर्मा शरणार्थी सेवा कार्य का हिसाब—

[ता० २७-१-१९४२ से १८-१२-१९४२ तक]

आय—

१७७९९८।≈) चन्दा खाते
- १४८५४५।≈)॥ प्रधान कार्यालय में
- २१७७२)॥ शरणार्थी अस्पताल
- ५६२) सिल्चर केन्द्र
- ४११) ईस्टवीह केन्द्र
- ६३५७) मणिपुर केन्द्र

१७७९९८।≈)

६२६४॥-) सामान खाते
- ६१२८-) प्रधान कार्यालय
- ३९-) ईस्टवीह केन्द्र
- ९७≈) सिल्चर केन्द्र

६२६४॥-)

४१०॥) भारत सरकार से अनाथ बच्चों को घर पहुंचाने के लिये मिला

४) हिन्दू शरणार्थी सब-कमेटी से वेतन बाबत मिला

३७ ॥)॥ शरणार्थी अस्पताल में खुदरा जमा

१८५०४४)॥

व्यय—

१५३२८९।) रकम १ खर्च की
- ९७९९१≈)॥ प्रधान कार्यालय
- १४३४॥-)॥। गौहाटी केन्द्र
- २३०९।≈)। ईस्टवीह केन्द्र
- १२९३४)। मनिपुर केन्द्र
- ३६७९।)॥ सिल्चर केन्द्र
- ३५८२४।≈)॥। शरणार्थी अस्पताल अनाथालय

१५३२८९।)

३१७६२॥।)॥ रोकड़ बाकी

१८५०४४)॥

तुलसीराम सरावगी
अवै० सेवा-मन्त्री

हिसाब जांचा और ठीक पाया
सिंघी एण्ड को०
रजिस्टर्ड एकाउन्टेन्ट

सिलचर केन्द्र का हिसाब—

आय—		व्यय—	
३६७५)॥	रकम १ आमदनी	३६७५)॥	रकम १ खर्च
२८७०-)॥	प्रधान कार्यालय का जमा	१८९॥=)॥	भोजन खाते
७६२)	चन्दे से प्राप्त	५४॥।)	सूद खाते
१७०)	सामान खाते जमा	३४६॥≈)॥	गाड़ी खर्च खाते
१५०)	मनिपुर कैम्प का जमा	१७२।-)	पोस्टेज खाते
		१९९।-)	दवाई खाते
		८॥।) ॥	स्टेशनरी खाते
		८८९॥ऽ)॥	सामान खाते
		५९३।)	वि० सहायता खाते
		१८३॥)	नाव बदलाई कमीशन
		८८५-)॥	बाढ़ सहायता खाते
		२००)	मृतक दाह संस्कार खाते
३६७५)॥		३६७५)॥	

मनिपुर केन्द्र का हिसाब—

आय—

१३ ८४)। रकम १ आय की

९९ ३)। प्रधान कार्यालय का जमा

३१८१) चन्दा से प्राप्त

———

१३ ८४)।

व्यय—

१३०८४)। रकम १ खर्च की

१३७॥≠) दवाइ खाते

३९१) पोस्टेज तार खाते

५७६॥-) सामान खाते

७३२७॥≈)॥। भोजन खाते

९३२॥≠)॥। सफर खर्च खाते

५३४≈)॥ फुटकर खर्च खाते

३३॥≈)। स्टेशनरी खाते

७१५) । वेतन खाते

३२६-) कपड़ा खाते

८२६॥≠)॥। विशेष सहायता खाते

५८७॥।)। दूध खाते

११३-)॥। खुराकी खाते

१०≈) तंबू खाते

४२१) रेलवे महसूल खाते

१५०) सिलचर केन्द्र के नाम

———

१३०८४)।

गौहाटी केन्द्र का हिसाब—

आय—

१४३४॥-)॥ प्रधान कार्यालय का जमा
१४३४॥-)॥ नगदी

१४३४॥-)॥

व्यय—

१४३४॥-)॥ रकम १ वर्ष की
७६०) भोजन खर्च खाते
१२७॥ऽ)॥ सफर खर्च खाते
११ऽ) सामान खाते
३६॥) दवाई खाते
१०२)॥ फुटकर खर्च खाते
७०) लकड़ी कोयला खर्च
॥ऽ) पोस्टेज खर्च
८८॥ऽ)॥ दूध खर्च
१६८।) वेतन खाते
२३७।-)॥ डाक्टरी दवाई

१४३४॥-)॥

इस्लामपुर केन्द्र का हिसाब—

आय—

२३०९।≈)॥ रकम १ आयकी

१८५९।–)॥ प्रधान कार्यालय का जमा

४११) चन्दे से प्राप्त

३९–) सामान खाते जमा

२३०९।≈)॥

व्यय—

२३०९।≈)॥ रकम १ खर्च की

१६६८।≈)॥। भोजन खाते

२२ ।॥–)॥। दूध खाते

११४।≈) ॥ दवाई खाते

८।) ॥ कोयला, तेल खाते

१॥≈)॥ पोस्टेज खाते

४४॥–) ॥ वेतन खाते

७६ –)॥। कपड़ा खाते

८६॥) सफर खाते

१॥।≈) स्टेशनरी खाते

४१) ॥ सामान खाते

१३) विशेष सहायता खाते

२१॥।≈)॥ वस्त्र सहायता खाते

२३०९।≈)॥

शरणार्थी अस्पताल तथा अनाथालय का हिसाब—

आय—

१३७४ ।।=)।। प्रधान कार्यालय का जमा
२१७११) ।। चन्दे से प्राप्त
१७०।।) ।। फुटकर प्राप्त

१५८२४।=)।।

व्यय—

१०६८।।-) सामान खाते
१००४८।।।-)।। भोजन खाते
१२७२।।=)। मुद्रण खाते
६७।) ।। स्टेशनरी खाते
३६७ ≠) मकान मरम्मत खाते
४२७८।।।-)।। दवाई खाते
२१००-)।। कपड़ा खाते
८६५।≠) बिजली पंखा खाते
७५०६।।) । वेतन खाते
१५ ≡)।। शीशी बोतल खाते
७३०।।=) धोबी धुलाई खाते
१५३।।) रुई खाते
३०।-) ।। सफाई खाते
३५६।।=) मुद्रण सहायता खाते
१३।) मजूरी खाते
६५००) सहायता खाते नाम विभिन्न संस्थाओं को दिया गया जहां शरणार्थी अनाथ बच्चे और स्त्रियां भेजी गई
५००) आर्यकन्या महाविद्यालय बड़ौदा
२५००) [illegible] सेवा समिति [illegible]

१ ००) हेम्मार गुरुकुलम्, मद्रास
१०००) हिन्दू अनाथालय मुजफ्फरपुर
५००) सेवा सदन, मद्रास
५००) रामकृष्ण मिशन होम मद्रास
५००) अलीच्युरी होम, मद्रास

६५००)

३५८२७।८)॥

बर्मा शरणार्थी सेवा कार्य में प्राप्त चन्दे की सूची—

५७११८॥=)॥ ईस्टर्न रिलिफ्शन कमेटी
३०००००) गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया
२०००००) शरणार्थी अस्पताल व्यवस्था के लिये
५०००) श्रीयुत ब्रजमोहन बिड़ला
१०००) ,, सागरमल आत्माराम
२७६५॥=) कलकत्ता किराना एसोसियेशन
२४०१) मारवाड़ी मार्केट एसोसियेशन
...००) श्री रायरूड मेकेंजी एण्ड कम्पनी
१६००) ,, गिरधारीमल लक्ष्मीनारायण
१०००) मनिपुर कैम्प के लिये
१५८५) ,, सुखीलाल गनपतराय रांची
१४४०) ,, इण्डियन नेशनल एयरवेज
११०१) ,, फकीरदास मोहनका
११००) ,, सुखीलाल सनेहीराम (मनिपुर)
११००) ,, किशनलाल पोद्दार
११००) ,, मौरंगराम नागरमल
१०००) मनिपुर कैम्प के लिये
११००) ,, गजानन्द रामप्रताप
१०४७) ,, मारवाड़ी सम्मेलन रांची
१०१२) ,, मारवाड़ी सम्मेलन भागलपुर
१०१२) ,, टाटिया मानर्स
१००१) ,, जगन्नाथ जीवनमल
१००१) गुप्त दानी सज्जन,
द्वारा मगनलालजी कोठारी
१००१) धनमियाँ जैन एण्ड कम्पनी
१०००) गीता प्रेस (मनिपुर कैम्प)
१०००) श्री कन्हैयालाल सोढ़िया
१०००) ,, छोटेलाल सेठिया
१००) ,, बंशीधर घनश्यामदास (मनिपुर)
१०००) ,, महावीर टोम्बर इलेक्ट्रिक
१०००) लोक सेवक ट्रस्ट,
द्वारा मोहनलाल मानूभा
१०००) जेनरल प्रोड्यूस कम्पनी
९५०) कलकत्ता यार्न मर्चेन्टस् एसोसियेशन
८१७॥=)॥ श्री मगनराम जयपुरिया
७५३) श्री प्रयागदास मथुरादास
७५१) ,, जोखीराम बैजनाथ
२५०) शरणार्थी अस्पताल के लिये
७५०) ,, शिवशक्ति काटन मिल्स
७११) ,, मारवाड़ी सम्मेलन, किशनगंज
६०३) ,, मोहनलाल भाभानी
६००) ,, घनश्याम लक्ष्मीनारायण
६००) ,, मोतीराम सुखदी
५०२) ,, शंकरलाल मन्नालाल
५०१) ,, हरखचन्दास मामीलाल
५००) ,, तिलकचन्द सुराना
५००) ,, बैजनाथ शिवानीवास
५००) ,, गुप्त दानी सज्जन
५००) ,, रेशमी आदर्श लिमिटेड
५००) ,, रामनारायण मन्त्री
५००) ,, लक्ष्मणदास पदमचन्द
५००) ,, प्रतापमल रामेश्वर
५००) आल इण्डिया सेवा समिति, इलाहाबाद
५००) गुप्तदानी सज्जन द्वारा रामाधार सिंह
५०) श्री जगन्नाथ बीजराज
५ ०) ,, गया सुगर कारपोरेशन
५००) ,, सुखदेवदास रामविलास

४) „ मूंगा पट्टी अनाथालय
१६१) „ भगवताराम गोवर्धनदास
१७५) „ भगवानदास व्यास
१६८) „ मारवाड़ी सेवा समिति, रानीगंज
१५५) „ कोलापट्टी के दुकानदारों का
१५२) „ रामलाल गंगाजल सोमानी
१२३) „ मेघराज अमरचन्द नाहटा
१२१) „ मुरलीधर श्रीदान
११५) „ चन्द्रभान गंगाबिसन
११५) „ जगन्नाथ हनुमान बक्स
१०१) „ दुर्गाप्रसाद खाल्सा
१) „ गौरगराम बागा
१००) श्री हनुमानप्रसाद अग्रवाल
१ ०) „ रघुनाथजी महादेव
२५१) „ अमृतलाल एन्ड कम्पनी
२५१) हरदताराम प्रभुदास
२५१) „ महादेव केजड़ीवाल
२५१) „ रणछोड़दास माधामाई
२५१) „ नागरमलजी रामचन्द
२५०) „ हनुमानदास हिम्मतसिहका
(साणन्दी अनाथालय)
२५) „ बलदेवदासजी बैजनाथ
२५) „ खेतान एन्ड कम्पनी
२५०) „ चालकर्ट आर्टस
२५) „ चौहरीमलजी कन्हैयालाल
२५०) „ इण्डियन टी एसोसियेशन
द्वा अरुणकुमार चन्दा M L A
२५०) „ रंगलाल जाजोदिया
२५०) गुप्तदानी सज्जन द्वा चौधरी एन्ड क०
२५०) गुप्ता एन्ड कम्पनी
२३६।) „ रामचन्दजी रामचन्द
२२५) „ डुंगरराम रामप्रताप (मणिपुर)
२२४॥=)। रामसहायमल मोर
२२४॥) „ ईश्वरदास शिवकृष्ण
२२१) „ गुप्तदानी
द्वा श्रीमती बनारसी देवी खेतान
२१०) „ गजानन्द सराफ
२०१) „ जगदीशप्रसाद पचासिया
२०१) „ रामकुमार जाजोदिया
२०१) „ शिवलाल मदनगोपाल
२०१) „ सांवलराम केशरदेव
२०१) „ बी० बी० सुगर मिल्स
२ १) „ हजारीमल कालूराम (ईश्वरडीह)
२०१) „ जगन्नाथजी श्रीनाथजी
२०१) „ मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स
२०१) „ बोहिताराम जुगलकिशोर
२०१) „ रामकिशनदास श्यामकिशन
२०१) „ फतेहचन्द शिवचन्द रांगोलीवाला
२०१) „ सादूरामजी मोहनलाल
२०१) श्री रामवल्लभजी सत्यनारायण (धा: क:)
२००) „ सालिगराम सुशीलाल (मणिपुर)
२००) „ जयसिंहदास बागा
२००) „ जानकीदास शिवनारायण
२००) „ नेवरलाल नेमचन्द
२००) „ सदासुख कावरा
२००) „ पाँचमल नथमल
२ ०) „ आर० के० सुगर मिल्स
२००) माधोलाल एन्ड कम्पनी
२००) „ तुलसीदास कन्हैयालाल
२००) „ मारवाड़ी सम्मेलन गायकबांधा,
रंगपुर
२००) „ महास्वरूप गुप्ता
२००) „ गुप्त दानी सज्जन
२००) „ भगीरथमल कनोडिया
२००) „ पण्डित जगदीश शर्मा
२००) बंगाल टेलिफोन कारपोरेशन

१९५) „ श्रीचन्द मोरी
१९०) चौधरी एन्ड कम्पनी
१९०) गुप्त दानी सज्जन
द्द॰ मेघराज सेवक (द्दा॰ अ)
१८५-) श्री चौथमल जुहारमल
१८३॥) „ हरिप्रसाद अग्रवाल
१७५) „ गोपालचन्द रस्सी
१६२) „ गोपालजी बद्रीप्रसाद
१५१) रामदेव मोहनलाल
१५१) „ गिरधराम गौरीशंकर
१५०) „ बाबूलाल रामगढ़िया
१५०) एम॰ एम॰ हसहानी कम्पनी
१४२) जलपाईगुड़ी के मारवाड़ी भाई
द्द॰ जोशीलाल धर्मचाव
१४०॥) „ लक्ष्मी जूट मिल्स के कर्मचारी
१३६॥।≥) खड़राम सराफ
१२८॥) „ बैजनाथ गोपालदास
१२५) „ अब्दुल लतीफ
१२४) सिलचर के मारवाड़ी भाई
१२१) महादेवजी परसरामका
११४॥) श्रीयुत कैलिंग गफस मिल्स
१०६॥।) मन्त्री, मारवाड़ी सम्मेलन कटीहा
१०५) श्रीयुत फतहचन्द अग्रवाल
१०२) „ कन्हैयालाल हरगोविन्द
१ १) „ रामलाल रामेश्वर सरावगी
१०१) शंभु राइस, फ्लावर एन्ड
आसाम मिल्स (मणिपुर)
१०१) „ विश्वनाथ बैजनाथ सोनी (स॰ अ)
१०१) „ द्वारकादास मोहनलाल
१०१) „ हनुमानप्रसाद नेमानी
१०१) „ ग्वालदास बिहानी
१०१) „ आर॰ एम कोठारी
१०१) „ जानकीदास मस्करा

१०१) „ पीताम्बरदासजी सिंघी
१०१) „ भजीतमल मोतीचन्द
१०१) „ गुप्त दानी सज्जन
१०१) „ चौथराज गंगाबिशन
१०१) „ रामकुमार गोयनका
१०१) „ हरखचन्द केजड़ीवाल
१०१) „ दीनानाथ कनोडिया
१०१) „ द्वारकादास जेठाभाई
१०१) „ मोहनलाल सोनीराम
१०१) „ शिवचन्द बागड़ी
१०१) „ रामसुखदास सागरमल
१०१) „ रामरिखदास हरखमल
१०१) „ रनछोड़दास अजमेरा
१०१) „ बिहारीलाल अजमेरा
१०१) „ उम्मीदमल खेतरचन्द
१०१) „ जेठमल गोपालदास
१०१) , गोरखपुर सुगर मिल्स
१०१) „ एम॰ एन॰ घोष
१०१) „ गनपतराम ताराचन्द
१०१) „ हीरालाल मन्नूलाल
१०१) „ गुप्त दानी सज्जन
१०१) „ रंगलाल मोदी एम एम॰ ए
१०१) श्रीयुत सागरमल गिरधारीलाल
१०१) „ गणेशदास कशराम
१०१) „ रीड़राम घड़ीवाल
१०१) „ शान्तचन्द शाह (स अ)
१०१) „ जी॰ मागरदास „
१०१) „ मोपराम रामगोपाल
१०१) „ महावबक्स रामकुमार
१०१) „ गोवर्धनदास बियानी
१०१) „ रांची जमींदारी लिमिटेड
१०१) „ सेठिया एन्ड सन्स
१०१) „ मि॰ श्री एम कामेसारण

१ १) श्री जीवनमल भूतेड़िया
१ १) „ गुप्त दानी सज्जन
१ १) „ लक्ष्मीनारायण चांदमल
१ १) „ सेन० राय० एन्ड कम्पनी
१ १) „ गुलाबचन्दजी सागरमल
१ १) „ सुशीलाल नागरमल पिटकरीवाला
१०१) „ श्रीनिवास झुनझुनवाला
१ १) „ नारायणदास बाजोरिया
१ १) „ गोविन्दलाल भावक
१ १) „ छोगमल गोविन्दराम
१ १) „ केदारनाथजी
१०१) „ मून्गी सेठमी
१ १) „ इन्द्रचन्द बालचन्द
१०१) „ जगन्नाथ गंगादास
१०१) „ मागमलजी मा० रि० सो०
रसायनशाला, चम्पानगर
१ ०) „ रामकिशनदास सरावगी (सिलचर)
१००) „ गगनबिहारी मेहता (श० अ०)
१) „ एम० एस० सैयदजी „
१ ०) „ रामरिखदास गंगाराम (मनिपुर)
१००) „ रामगोपाल आस्थन „
१) „ गजानन्द चिम्मनलाल
१ ०) „ डी० नाहटा
१०) „ श्रीगोपाल झिन्नामी
१ ०) श्रीयुत छुट्टारमल अग्रवाल
१) „ भवतारण भट्टजी
१ ०) „ नन्दराम सरदारमल
१) „ रामनाथ तापड़िया
१) „ मोहनराम बजाज
१) „ चीनूभाई चुन्नीलाल
१ ०) „ मदनमोहन राइस मिल्स
१) „ तनसुखराय हरीराम दलसिंह
१००) „ मगतराम श्रीराम

१००) श्री यशोधर सूरजमल
१००) „ बंगाल केमिकल वर्क्स
१००) „ मेहेरोत्रा ब्रादर्स
१००) „ कोल्हापुर सुगर मिल्स
१००) श्रीमति भगवादेवी जमपुरिया
१००) „ शान्ति बाई
१००) श्रीयुत विमलप्रसाद जैन
१००) श्रीमति पार्वती देवी
९९॥) मा० डीप्टी कमिश्नर, कछार
(श० अ)
९५) श्रीयुत चेतनराम चेतराम
९४≈) „ गोपीराम मीतिका
९०) बंशीधर गजानन्द
९०) „ मारवाड़ी सम्मेलन, लखीमपुर
९०) श्रीमति मनी जैन
८९) श्रीयुत मोहनलाल एन्ड कम्पनी
८७) „ रामप्रताप अग्रवाल
८६) „ जानकीदास अर्जुनदास
८१) लक्ष्मीनारायण पशुपतिनाथ
(श० अ)
७८॥। „ लालचन्द हुकुमचन्द
७५) „ यूसुफ खलिल
७५) „ आंघू एसोसियेशन
७४) „ सी० डी० सोमानी
७२) „ राम समरूराम महादेवराम साहु
७१) „ गणेशदास द्वारकादास
७०) „ गोकुलदास बालमुकुन्द
६८।) श्री विश्वनाथ स्वदेशी फ्लावर मिल्स
६६) एक गुप्त दानी सज्जन
६०) „ „
५८) श्रीयुत कन्हैयालाल मगनलाल
५६।) „ गुप्तदानी ह० प्रह्लादराय खेतान
५६।) „ महादेवराम परसरामका

५१) श्री बजरंगलाल केडिया
५२) „ रामचन्द्र काशीराम
१॥=) प्रह्लाद शर्मा भैरुदान
५१॥=) „ महावीरराम मानसिंहका
५१) „ महावीर मार्च बंगाल दाल मिल्स
(ईसरबीह कैम्प)
५१) „ गुलदानी राजन
५१) „ सागरमल बैजनाथ
५१) „ दुर्गादत्त अग्रवाल (सिलचर)
५१) „ भेषराज रामनिरंजनलाल
१) „ गोपीकृष्ण महेश्वरी (मनिपुर)
५१) अमृतलाल चन्दनलाल
५१) मनसुखलाल पुखराज
५१) „ मनसुखलाल चुन्नीलाल
५१) „ भेलसीदास गिरधारीलाल
५१) „ नथमल गौरीशंकर
५१) „ कालूराम जमनादास
५१) „ जयकिशनदासजी
५१) छोगमल स्यामलाल
५१) हीरालाल सराफ
५१) नन्दीप्रसाद मठ
५१) " शिवलाल रतनलाल
५१) " मोहनलाल मोहनगरवाला
५१) " माधोजी लालजी
५१) " गुलदानी ६ नंदलाल जालान
५१) " वृद्धिचंद सोहनलाल
५१) " लालजी मल चांदमल
५१) रामदेव लक्ष्मीनारायण
५१) " सांवरमल गौरीशंकर
५१) „ गिरधारी लालजी सीताराम
५१) „ पूरनमलजी श्रीनिवास
५१) „ गोकुलचन्द गजाधर
५१) „ मेघराज पन्नालाल (सिलचर कैम्प)

५१) श्री छोटेलालजी श्रीभरमाथ (मिलवर के
५१) „ गोवर्धनदास की माताजी
५१) „ जौहरीमलजी
५१) „ बेनीशंकर भट्ट
१) „ मनफूलसिंह अग्रवाल
५१) „ रतनलाल लुनिया
५१) पन्नालाल किशोरीलाल
५१) „ अहमदाबाद मिल्स स्टोर
५१) „ फूलचन्द गौरीशंकर
५१) „ रतनलाल हरजसराय हंसराज
५१) „ गुलदानी, १० नगरमल कोठारी
५१) „ नथमल टेकड़ीवाला
५१) „ भैरुराज जीवनराम
५१) „ रामदेव अग्रवाल
५१) „ मगनलाल एन्ड कम्पनी
५१) „ मारवाड़ी आरोग्य भवन
जैसीडीह के लिए
५१) „ प्रेमचन्द खेठमल
५१) „ हीरालाल फतेहचन्द
५१) „ भीखमचन्द मानिकचन्द
५१) „ द्वारकादास मुरारका
५१) श्रीमती शान्ता देवी केजड़ीवाल
५१) श्री परमानन्दजी, (मद्रोर)
५१) रामकुमार रामदेव
५१) श्रीमती गुणवन्ती बाई
५१) श्री मदनगोपाल डागा
५१) „ बाबूलाल राजगढ़िया
५१) „ रूपराज अमोलकचन्द
५१) „ गौरीशंकर मानसिंहका
५१) „ सूरजमलजी श्रीगोपाल
५१) „ सागरमल सूरीलाल
५०) श्री रामचन्द्रजी
माः हरकृष्ण इन्सोरेन्स के

५) बिहार सुगर वर्क्स
५) श्री दामोदर मोतीचन्द
५) „ रामनारायण सरदारमल
५) „ मनीभाई भगत
५०) „ रामकिशन बजरंग (मनिपुर कैम्प)
५) „ भगवानदासजी „
५) „ जयगोपाल छावछरिया „
५०) „ गुप्तदानी, द्वः प्यारेलाल अग्रवाल (मनिपुर कैम्प)
५) मिस्टर हर्बट• ए स्यूक
५) श्री भरतराम
५) „ महावीर प्रसाद मोर
५) „ शिवमल लक्ष्मणदास
५०) „ नरसिंहदास रूपूराम
५) „ रूपचन्द घासीराम
५०) „ डी• सी• ड्राईवर
५) „ गिरधरदास भूषण
५) „ लक्ष्मीबाई करनानी
५) लाला हंसराज जैन
५) „ रतनलाल हरबसराम
५) „ रूपसराय संपतराय
५०) „ जगन्नाथ झुनझुनवाला
४९=) ऋषि केशवो शर्मा
४१) „ लक्ष्मीचन्द चोथमल
४१) कालूराम मुरलीधर
४१) „ तारकचन्द रामप्रसाद
४१) „ माधीराम मंगलसिंह
४१) „ जौहरीमल कन्हैयालाल
४१) „ गंगाप्रसाद बंशीधर
४) „ बड़ाबाजार सिल्क मरचेंट्स एसोसियेशन
४) „ गुप्त दानी सज्जन
३१) „ चम्पालाल बागा
३५) महावीर सुगर मिल्स
३३॥) श्री रामसरूप होचतिया
३१) „ मोतीचन्द नेमचन्द
३१) „ श्यामसुन्दर मुरारजी
३१) सोनी छगनजी मदनजी
३१) लक्ष्मनभाई लल्लुभाई
३१) धर्मादा कमेटी पत्थरीगंज
३१) श्री शिवध्यानजी अग्रवाल (सिलचर कैम्प)
२८) बड़ाबाजार थाना के हिन्दू कर्मचारी
२६) सुदरा मारवाड़ी भाईयों से (मनिपुर कैम्प)
२५) श्री सुखदयाल कपूर
२५) „ रामचन्द्र बनवारीलाल सरावगी
२५) „ गोविन्दजी फतेहचन्द केडिया
२५) „ भगवानदास बल्लभदास
२५) „ एक गुप्त दानी सज्जन
२५) „ राजाराम कम्पनी
२५) „ पन्नालाल कोठारी
२५) „ कन्हैयालाल मिश्र
२५) „ भीमराज मंगनीराम (मनिपुर कैम्प)
२५) „ भगवानदास एन्ड सन्स
२५) „ नारायण साह रामसरन साह
२५) „ जगन्नाथ फूलचन्द
२५) „ बैजनाथ केडिया
२५) „ गुप्तदानी, मा• तुलसीदास गोवर्धनदास
२५) „ प्रतापसिंह प्रीतमसिंह
२५) „ सेडमल रामसुखदास
२५) „ एक माहेश्वरी सज्जन मा• पुरुषोत्तमदासजी
२५) „ गम्भीरसिंहजी
२५) „ हरसुखदास घासीराम
२५) „ रामगोपाल गोरामल

२५) श्री रामनारायण शारदा
२५) „ जेठमल छनिमा
२५) „ छोटेलाल मगरांगमल
२५) „ फूसराज पानमल
२५) „ मांगीलाल धीराम
२५) „ शुभकरण चुड़ीवाला (दा० अस्पताल)
२५) „ मुरलीधरजी आलन
२५) „ रामलाल एन्ड सन्स
२५) „ प्रेमराज छगनमल
२५) „ मुरलीधर बैजनाथ
२५) „ नन्दकिशोर अग्रवाल
२५) „ पन्नालाल परतापरमल
२५) „ नथमल आनन्दीलाल
२२॥) „ रामगोपाल कनोडिया
२२) „ जानकीदास बंशीधर
२१॥) „ फूलचन्दजी (ईसरडीह)
२१) „ धीरामजी कुन्दनमल
२१) „ शिवभगवास शालिग्राम
२१) „ मोहनलाल सेकसरिया
२१) „ खेमराज सत्यनारायण
२१) „ बसन्तलाल शिवचन्द (मनिपुर कैम्प)
२१) „ शिवभगवास पागड़ी
२१) „ मघरीलाल अमरचन्द
२१) „ एक गुप्त दानी सज्जन
२१) करिमगंज के मारवाड़ी भाई

मा० प्रतापचन्द गोलछा

२१) श्री मोहनलाल प्रतापचन्द
२१) „ धनतराम घमण्डीराम
२१) „ कमदयाल उदयराम खेमका
२१) „ बालमुकुन्द काळमिर्या
२१) „ दुर्गाप्रसाद चौखानी
२१) „ बद्रीप्रसाद चौखानी
२१) „ भगवानदास मदनलाल

२१) श्री हजारीमल कनूराम
२१) „ मुरलीधर एन्ड कम्पनी
२१) „ गुलाबचन्द जयचन्दलाल
२१) „ कस्तूरचन्द जगन्नाथ
२१) „ किशनदयाल जयचन्दमल
२१) „ गुलजारीमल रौसनदास
२१) „ गौरीशंकर सूरजकरण
२१) „ परशुराम रामरतन
२१) „ कमला स्टोर्स
२१) „ पन्नालाल मारवाड़ी (दा अस्पताल)
२०॥) „ पुरुषोत्तमदास भायरी
२०) „ बी० बी० दास
२०) „ तुलसीदास गोवर्धनदास
२०) „ एल आर० नन्दा
२०) „ मनीन्द्र नाथ भट्ट
२) „ एच० जे पारिख
२०) „ एस पी० माथुर
२०) „ शिवप्रसाद रामेश्वर (मणिपुर कैम्प)
२०) „ चिंतामा मद्रासी „
१८) „ आनन्दराम आसमन
१७॥) सियालदह रेलवे पुलिस
१५) „ भास्करन मित्र
१५) „ हजारीमल इन्द्रचन्द्र (ईसरडीह कैम्प)
१५) „ रणछोड़दास सोमानी
१५) „ कस्तूरचन्द ओसवाल (शिलचर कैम्प)
१५) „ भगवानदासजी
१५) „ बंशीलाल मदनगोपाल
१५) „ भूमरमल जयचन्दलाल
१५) „ मेघराज रामगोपाल
१५) „ सावूराम सरावगी
१५) „ सुखलाल हनुमानबक्स
१५) „ सूरजराम साव
१५) „ नथमल टेकरीवाल

१५) श्री मंगलचन्द मालियार
१५) " चम्पालाल पागड़ी
१५) " बिमलप्रसाद जैन
१२॥) " भगवतीप्रसाद खेतान (द्वा० अ०)
११॥)॥ महादेवलाल केजड़ीवाल
११।)॥ केलेडोनियन इन्सोरीयेन्स कम्पनी के भारतीय कर्मचारी
११) " कुन्दन लाल
११) " मुन्शी माधोप्रसादजी (द्वा० अ०)
११) " महादेवलाल बद्रीप्रसाद (ईश्वरडीह कैम्प)
११) " चतुर्भुज अग्रवाल (सिलचर कैम्प)
११) " लक्ष्मीनारायण पजाज (मनिपुर)
११) " मालीराम हनुमान बक्स "
११) " मोतीलालजी "
११) " वृद्धिचन्द महावीर प्रसाद
११) " प्रभुदयाल शिवचन्द राय
११) " मुरलीधर बैजनाथ
११) " भजनदास मोदी
११) " हजारीमल मुवालका
११) " बाबूलाल मुवालका
११) " चिरंजीलाल खेमका
११) " किशनलाल माणिकलाल
११) " हनुमानदास मेघराज
११) " चुन्नीलाल हंसराज (द्वा अ०)
११) " अमृतलालजी "
११) " रामजीवन रामचन्द्र
११) " हरीराम सुंघवा
११) " शंकरलाल सराफ
११) " पन्नालाल पंसारी
११) " शंकरलाल रूम्माणी
११) " चिरंजीलाल मानपुरी
११) " द्वारकादास दयाराम
११) श्री नागरमल रामवल्लभ
११) " सूरजमल धनराज
११) " घासीराम मूलमल
११) " छगनलाल देसाई
११) " छोटेलाल मासीराम
११) " गोविन्दराम गोयनका
११) " हरिचन्द तातरे
११) ' उत्तमचन्द खुशालमल
११) " लक्ष्मणराम गोवर्धनदास
११) " गणेशीराम सागरमल
११) " पूरनचन्द रामनारायण
१०।⅓) " गोकुलचन्द रूपराम
१०) " जगन्नाथ कटवाल (मनिपुर)
१०) एक पंजाबी भाई (मनिपुर)
१०) श्री जीवनलाल चौधरी "
१०) " रामचन्द्र गगड़
१०) " भगवानदासजी
१०) " नागरमल काजमियां
१०) " रणछोड़दास माणिकचन्द
१०) " ईश्वर सिंहजी
१०) " विभूतिभूषण सिंह
१०) " भगवानदास बागला
१०) " कमल सिंह
१०) एक गुप्त दानी सज्जन
१०) " बिहारी अमासिंह मानाघोरघाट
१०) " घनश्यामदास चमालीराम
१०) " मांगीलाल मंगलचन्द
१०) " बनवारीलाल झुनझुनवाला
१०) " भगकरण बेतला (मनिपुर)
१०) " इन्द्रसिंह, डी० डब्लू० आई० डी० ए०
१०) " सूरजनारायण सोमानी
१०) " यू० एन बसु

१०) श्री रामदयाल राठी,
मंत्री माहेश्वरी युवक मंडल
१०) " गुप्तदानी द्वा॰ भूपेन्द्रनारायण
१०) मि॰ के॰ एल योग
१०) " मि॰ एस सी॰ दास
१०) " रामबाबू खेमानी
१०) श्रीमती सावित्री देवी
९॥) " श्रीसूरजमल गोयनका
७॥) " सी॰ दास कम्पनी (द्वा॰ अ॰)
७) श्री मेघराज नेमचन्द
७) " हीरालाल खेमका
६।) " गुप्तदानी, द्वा॰ तुलसीरामजी
६) " गुप्तदानी सज्जन
६) " चन्दाराम अग्रवाल (ईश्वरडीह)
६) " राजसभा सुखलवाड़ी (मनिपुर)
५) " बंसीधर अग्रवाल ,,
५) केहर सिंह ,,
५) " हरजीवन लालजी ,,
५) " मावजी लालजी ,,
५) " तारा बेन कपल ,,
५) " कपूरजी ,,
५) " मागरचन्द मूलचन्द ,,
५) श्रीमती दिवाली बाई ,,
५) श्री वृन्दावन भगवानजी
५) ,, रूपलाल चुन्नीलाल
५) ,, बनारसीलालजी
५) ,, वृन्दावन झुनझुनी
५) ,, पन्नाराम गोविन्दराम
५) ,, पुरुषोत्तमदास
५) ,, काशीप्रसाद रामरिछपाल
५) ,, रामसुखलालजी
५) ,, के॰ एस वर्म्मा
५) ,, एस॰ एम वर्म्मा

५) श्री कान्तीलालजी
५) ,, अजुनराम रामनारायण
५) ,, मोतीलाल बेड़ीवाल
५) ,, रामावतार ब्राह्मण
५) ,, सोमी ठक्कर मी धर्मसी
५) ,, आशुतोष होमियोपैथिक कालेज
५) ,, जगन्नाथ बनर्जी
५) ,, पुरुषोत्तमलाल हरिकिशन
५) ,, श्रीकृष्ण सारडिया
५) ,, सी॰ ए वेंकटेश्वर
५) ,, रामचन्द्र बाहिती
५) ,, परशराम बरारिया
५) ,, गौरीशंकर तुलस्यान
५) ,, केदारनाथ अग्रवाल
५) ,, मुरारमल सुन्दरमल
५) एक गुप्त दानी
५) श्री हजारीमल नेमचन्द सिंघानी
५) श्रीमती शकुन्तला देवी जैन
५) श्री पुरुषोत्तम बीजमणा भाई
५) ,, बिहारीलाल सरकार
५) ,, आत्माराम डागा
५) ,, बसन्तलाल बियासरिया
५) ,, वृजलाल दामोदर ठक्कर
५) ,, रामसाहब ए॰ एन॰ पुरी
५) ,, बैजनाथ बजाज
५) ,, के॰ एल॰ शर्मा
५) ,, बीजराज शारदा
५) ,, रमनलाल ए शाह
५) श्रीमती पूनी बाई
५) ,, गीता बाई
५) श्री परमेश्वर की माताजी
५) ,, शिवदत्त की माताजी
५) ,, कन्हाराम की माताजी

५) श्रीमती केदई बाई
५) श्री छगनमलजी देसाई
५) चन्डी प्रसाद मुकर्जी
५) „ रामदेव छावछरिया
५) „ रामसुन्दर सिंह श्यामसुन्दर सिंह
५) , इन्जिनियर्स, मैन्युफेक्चर्स,
मास क्रास्ट आइरन फैक्टरी
५) „ ईश्वर पौटरी वर्क्स
५) „ भीरीलाल सेठी
५) „ भूमरमल जैन
५) गुप्तदानी सज्जन
द० प्रभीप्रसाद परसरामपुरीया
४) „ केदारनाथ की माताजी
४) „ डा० एस० एम० घोष
४) „ नैनसुखदास भगरचन्द
४) सुदरा
३) श्री नगेन्द्रनाथ चटर्जी
३) , कमल बिहारी शाह
३) देवीदास ठीकरावाला
३) „ सुवालाल रामेश्वर
२॥) „ सुबेग सिंह
२) , रामलाल कुम्हार (सिलचर)
२) , गोवर्धनराम रामरतनीराम (ईश्वरकीह)
२) , बलदेव तिवारी (मनिपुर)
२) , ब्रजमोहन अग्रवाल
२) „ जुगमल कन्हैयालाल
२) बचन सिंह
२) विश्वनाथ तिवारी
२) उत्तमचन्दमल
२) हरीशंकर दूबे
२) , कन्हैयालाल अग्रवाल
२) सत्यनारायण पोद्दार
२) बंशीधर मवधरमल
२) , रामगोपाल मल
२) „ गोकुलदास नेमानी
२) „ हनुमान प्रसाद अग्रवाल
२) , बाबूलाल पचीसिया
२) „ रमेन्द्र घोस (ग० अ०)
२) सोमनाथ गुप्त
२) , सेख सरदार
२) देवीन्द्र नाथ चटर्जी
२) वृजलाल जीवदास
२) जे एम० बनर्जी
२) डी० एम० बनर्जी
२) , धीन्मल देवलाल
१।) „ दाल पीठस मंडी
१।) „ रामनारायण शर्मा
१।) , तरीयराम खत्री
१) , बी० एन शर्मा
१) सागरमल सोनार (ईश्वरकीह)
१) देवीदास अग्रवाल
१) गोपालचन्द्र दास
१) „ सन्तोषकुमार घोषाल
१) चारुचरन दास
१) , जतीन्द्रनाथ नागर
१) पद्मानन्द मिश्र
१) , चुन्नीलाल ब्राह्मण
१) रामचन्द्र राय
१) , तोलारामजी
१) „ एम० मेहता (ग० अ०)
१) , रूपमजी (मनिपुर)
१) , लाल गुल्टी
॥) „ सन्तोषचन्द्र घोष (ईश्वरकीह)
१०) सुदरा

१७५१।८॥)

—हमारे सेवाकार्य पर कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की सम्मतियाँ—

जेनरल और मैडम चांग-काई-शेक—

I am directed by Generallasimo & Madame Chiang Kai-Shek to express to you that they think highly of your Society and of your effort directed towards Charitable purpose.

(Dr) C. J PAO
Consel general of the Republic of China.
(२८ १ ४२)

राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद—

I am very glad to find that the Marwari Relief Society has *Zealously helped and looked after the Refugees from Burma* and other places. It helped thousands of helpless Refugees who landed in Calcutta port and Railway Stations irrespective of Castes creed, and Colour Indeed the Society deserves our admiration and thanks for the selfless Service.

(११ ३-४२)

प्रसिद्ध अमेरिकन लेखक,
मि॰ एडगर स्नो—

The work of your Marwari Relief Society is very Commendeblea all the more impressive in veiw of the back ground of chaos and disorganisation and lack of leadership against which it is performed I hope that you and other Indians will seek to extend this kind of work from purely temporary relief measure to permanent and Constructive rehabilitation This can be done so effectively that peoples lives and livlihood can actively be improved over their former States.

सर पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास—

I have heard very *Complimentary reports about the* unique work of your Society from all and sundry who had the misfortune to leave Burma at that critical juncture Your Society s relief workers were the very first in the field in affording relief most effectively to these evacuees from Burma and congratulate the Organizers of your Society *on this work*

(२ १०-४२)

सर पद्मपतजी सिंहानिया—

I hope that a resourceful and inveterate institution like yours has rendered real and potent service to the needy and have earned their hearty thanks & blessings. Such services are in keeping with Indian traditions of succour to the helpless and honour to the guest and your activities must be a living example of the undeniable feelings of brotherhood which exist between Indians and Burmese-or between our those brothren who are domiciled there for good but remain a port of our national limb a chip of the same old block

Burma with its area of 2½ lacs of Sq miles and a population of one and half crores with the coveted treasure of a production of 0 crore gallons of petrol and oil per year with its religion which was born and nurtured on Indian soil cannot remain under alien hands. It must one day return to the Indian Common wealth as a shining jewal in the greater India

Wishing you another glorious record of Service

(२७-९ ४३)

सर अब्दुल हलीम गजनवी एम० एल० ए० (सेन्ट्रल)—

As the chairman of the Muslim sub-committee of the Evacuees Reception Committee Calcutta I have had occasion to witness the activities of your Department in meeting the evacuees from Malaya Singapore and Burma and ministering to their comfort in every conceivable way irrespective of caste, creed and colour The amenities which your Society brought home to them have been many and manifold Your S ciety deserves and has earned the gratitude of all Indians and Europeans alike for the admirable work it has done for the Evacuees relief. I have great admiration for your Society s work and believe that this is the only Society of its kind in India

(१९ ३ ४३)

डा राममनोहर लोहिया—

मैं क्या मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की तारीफ करूँ। ऐसा करना तो कुछ अर्थों में अपनी ही तारीफ करना होगा। बर्मा के शरणार्थी जिनको मैंने इधर इत्यादि जगहों, में देखा, सोसाइटी को याद करते रहेंगे ऐसा मेरा अनुमान है।

(७-५ ४२)

मि• पी• म्मारई चेट्टियर,

भूतपूर्व मेयर तथा सभापति, मेकर्स सिटी सेफ्टी कमेटी, मद्रास।

It is with the greatest pleasure that I write about the labour of love of your society on behalf of Burma Evacuees Your care for them and hospitality have been in the mouth of every one of them and it is solicititude of this kind to these unfortunates driven by the dread relatives of war from their home that will remain in their memories In particular your sympathatic concern and treatment of orphan boys and girls were noble example and I know with what tender care they were escorted to Madras by your agent, a person whom they all loved as a brother or uncle. I cannot praise this work too much and this brief notice is only a very small recognition of the work done by you by one who was fortunate enough to be a fellow worker in Madras.

मि० गगनविहारी एल मेहता

प्रेसिडेण्ट—फेडरेशन आफ इण्डिया चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्री—

I have very great pleasure in testifying to the admirable work done by the Marwari Relief Society of Calcutta in regard to reli f of Evacuees from Burma and Malaya. The Society has a well knit organisation comprising selfless workers and has received and helped Evacuees on their embarkation in Calcutta as well as in transporting them and feeding and housing them at Dharmshalas and obtaining for them accommodation and tickets to Railway Stations. The Society has also sent its workers to various centres in East Bengal including Chittagong and Manipur for assisting evacuees in various ways

While paying my sincere tribute to the work of this organisation under the secretaryship of Shree Tul iram Saraogi I have no doubt the Society will never suffer from paucity of Funds. Its numerous Services for poor and the needy for several years are too well known and recognised to need any testimonial

(१८ १-४२)

मि० एन के० मुकर्जी, चेयरमैन—इण्डियन क्रिश्चियन इवेकुएज सब-कमेटी—

Dear Mr Saraogi

Some years ago through the medium of the late Rev C. F Andrews we were thrown together in our mutual efforts to alleviate the sufferings of stranded emigrants from Colonies.

Once again it has pleased God to call us for Service for thousands of Evacuees from Burma.

It is amazing to see the great work that your Society is doing from day to day and through half the night for these persons in terrible distress You have undertaken a gigantic piece of service for suffering humanity It is our humble privilege to be associated in a small way in such an over whelming mining undertaking

I am filled with joy to see how magnificently your Society has been working for one and all without the slightest discrimination This opportunity has served us well to prove that we are all brothers and there is great hope for us and our country

May God bless our effort and Strengthen us.

(१३-३-४२)

सर जे ए० हरबर्ट—बंगाल गवर्नर—

I have been greatly impressed by the way in which the Marwari Relief Society has accomplished the different and onerous task of providing relief to many thousands of Evacuees from Burma. I write to thank all concerned for the whole hearted and generous way in which they have undertaken this work.

(२१ ३-४२)

मि० डब्लू० मार्केस, सेक्रेटरी इवेकुइस रिसेप्शन कमेटी—

This is an excellent piece of welfare work reflecting the utmost credit on those in charge. I have been greatly impressed by what I have seen.

(१८-७-४२)

मि॰ के॰ सेन, आई॰ सी॰ एस॰

बंगाल सरकार के स्पेशल इवेकुइज आफिसर—

My wife and I were very pleased to visit the Evacuees Hospital. Mr Saraogi and the Medical officer in charge very kindly took us round. Evacuees who are reaching India now are coming by unwonted routes and sickness among them is very great. Beds have been made available for them in Calcutta Hospitals. But even these are not adequate. A Special Hospital for evacuees was therefore an urgent necessity. When I suggested the establishment of such a Hospital the Marwari Relief Society very readily took up the suggestion and carried it through. There are limitations to what can be done in such a congested area like Burra Bazar. But within these limitations the Marwari Relief Society is running the Hospital, as is usual with them in everything efficiently well and in a generous spirit of social Service.

साल्वेशन आर्मी कोर्प्स के कर्नल ए॰ कनियम—

It is a pleasure to me to testify to my knowledge of the excellent work done by the Marwari Relief Society especially in connection with caring and providing for Evacuees arriving in Calcutta from Burma.

Mr Saraogi their representative on the Central Evacuees Reception Committee worthily represents his Society and is indefatigable in his efforts to help all. His interest are not confined to any sect class or creed but in the administration of relief there is no discrimination.

दानवीर सेठ श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला—

भाई तुलसीराम, राम राम।

कागद थारो आयो। बर्मावासां की रिलीफ सोसाइटी की सेवा करी उसके लिये सभी जगह से लोग संतोष प्रगट कर रहे हैं। इस काम के लिये थाने बधाई-बाकी यो सारो काम गवर्नमेन्ट के करने जोग थो।

दिल्ली मिती जेठ बदी ८ सं॰ १९९९

ला बिसप आफ् कलकत्ता—

I have heard with great pleasuro of the splendid service which your Society is rendering to stranded and helpless evacuees reaching Calcutta at the present time This work of compassion and charity which you are rendering to thousands of destitute persons irrespective of caste creed and colour is worthy of the highest commendation and I desire to express my warm appreciation of the service which you are so notely rendering at this time

(१७-३ ४२)

सरोजिनी देवी नायडू—

It has given me great pleasure to visit the premises of the Marwari Relief Society and to see their permanant work of benefactions In addition I have visited the many various Relief Camps which are being conducted for the thousands of helpless evacuees from Burma. These camps are a good send to the poor helpless sufferers and I would like to reiterate what many public workers have said everywhere in praise of the wonderful and consistent philanthrophy practised by the good institution

I wish the Society and its devoted workers increasing success in its noble humanitarian work

(५ ५-४२)

मा० मि एन० बी० खरे—

भारत सरकार के प्रवासी विभाग के वर्तमान इन्चार्ज—

The Marwari Relief Society Calcutta have done and are doing extremely useful work for the benefit of the evacuees from Burma and Malaya It is working purely on humanitarian considerations irrespective of caste creed or colour I am informed that the Society has given a helping hand to thousands of poor and deserving people. This is an example which is well worth Commendation and encouragement from all philanthropic people in this country The Society deserves encouragement and help and I wish it every success.

(३०-६-४१)

जस्टिस आर० टी० शार्प, रंगून हाईकोर्ट के जज—

As the representative of His excellency the Viceroy for the purchase on behalf of this war purposes fund of clothing and other similar articles for use by Evacuees from Burma, I have been much interested and impressed by the great amount cf good work being done by the Marwari Relief Society

(२०-५-४२)

श्रीयुत बृजमोहनजी बिड़ला—

I am very glad to notice the work being done by the Society in connection with the evacuees comming from Burma I hope the society will continue to render humanitarian service in future and be a source of inspiration to others

(१०-३-४२)

पं० गोदावरीश मिश्रा, उड़ीसा सरकार के अर्थ मन्त्री—

Dear Mr Saraogi,

Your Marwari Relief Society has rendered a yeomans service in the cause of the Burma Evacuees. Thousands have been benefited by the society But for your timely help so sincerely given most of those unfortunate brethren of ours would have been put to endless difficulties I thank the members of the society for this help and I particularly thank you for taking so much interest

(२८ ४ ४२)

प्रसिद्ध देश भक्त खरशीद बेन—

It has been an interesting visit to see all the Marwari Relief Society's work. I wish them all success and all honour is due to them for their humanitarian work Their service to the motherland is precious and God will give them strength

(२०-५-४२)

मि सी• फेयरवीदर कलकत्ता पुलिस कमिश्नर—

I take this opportunity of congratulating your Society for the very great service it has rendered and is rendering to the unfortunate evacuees

(१८-४ ४२)

मि एम• ए एच• इसहानी, कलकत्ता कारपोरेशन के भूतपूर्व डिप्टी मेयर—

In appreciation of the admirable service that your organisation is rendering to the evacuees irrespective of caste and creed I am enclosing herewith a cheque for Rs 150 you will honour me by utilising this amount as you consider best

May your Society grow stronger every day to continue its admirable service to humanity in distress

(९-२-४२)

मि• जान एच• स्पेयर,
चेयरमैन—यूरोपियन एण्ड एंग्लो इण्डियन इवेकुइज रिसेप्शन कमेटी—

I am well aware of the activities of the Marwari Relief Society in connection with the arrival of evacuees in Calcutta. I think the work which your Society is doing is beyond praise and the manner in which arrivals are taken care of, goes to prove how well organised are your activities. With compliments

(१० ३-४२)

सिद्धि भक्त, नेपाल सरकार के प्रतिनिधि—

We come and pay visit to the Marwari Relief Society and are shown round all section of the relief work We are highly impressed by their works We feel they are doing magnificent work all round

(७-५-४२)

मि० एम० एस० अणे—भूतपूर्व भारत सरकार के प्रवासी विभाग के इन्चार्ज—

I have heard with great pleasure the reports of the Relief work carried on by the Marwari Relief Society in aid of the Evacuees from Burma and Malaya The Society's work is carried on purely on humanitarian considerations and takes no account of caste, creed and colour in the dispensation of its relief I am sure thousands of suffering Evacuees have received the benefits and the society has thereby earned the eternal gratitude of these people rendered destitute by the war

The example set by the Marwari Relief Society of Calcutta is one which I hope will be largely emulated by all classes all over India The number of Evacuees coming in is growing more and more and they could stand in need of all the generosity and hospitality that can be shown to relieve them of their distress and sufferings I heartily thank the members of the Society for the assistance they have been rendering to the Government by their activities in aid of these suffering Evacuees.

(११ १-४२)

सर चार्ल्स मी० मोर्टन, चेयरमैन इवेकुइज रिसेप्शन कमेटी—

I confirm that the Calcutta Evacuees Reception Committee of which I am the chairman greatly appreciate the excellent work done by your Society The Vice chairman confirms that the representatives of your Society have been a model of Co-operation and help I feel sure we may count upon the continuance of your valuable service

(१२ १-४२)

ए एफ० कनले,
रंगून हाइकोर्ट के चीफ-जज—

Mr Saraogi has shown me the various activities of the Marwari Relief Society in connection with the Evacuees from Burma and we have been most interested in all that we have seen A very great work is being done and Indians from Burma have every reason to entertain feelings of the greatest gratitude to the Society

(२८ ५ ४२)

मि मोहनलाल ए॰ शाह प्रेसिडेण्ट—इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स कलकत्ता—

It is a well known fact that the services of the Marwari Relief Society for all kind of humanitarian work is unique and it is also gratifying to note that aid is extended irrespective of caste, creed and colour

It is indeed a matter of great credit to all the workers of this Society like yourself for running this organisation so efficiently

(१३ ३-४२)

डा मुखर्जी रेड्डी—भूतपूर्व डिप्टी स्पीकर सेन्ट्रल असेम्बली—

Sir

We cannot sufficiently thank the Marwari Relief Society of Calcutta for their kindness and sympathy to our children of this Province It is our earnest prayer that the provincial organisations of the kind should get mutually acquainted with each other's work and thus co-operate for the benefit of the destitute and poor orphan children of our motherland

(मद्रास २८-८-४१)

मि ए एस॰ सैयदजी
भारत सरकार के प्रवासी विभाग के चीफ-वेलफेयर आफिसर—

I have had the honour and pleasure of visiting the hospital and have been impressed with the thoroughness of its organisation I saw some of the orphans As I am one of the evacuees who have tracked from Burma, I am not surprised at their condition I am glad and grateful that organisations exist in this great city to take care of such orphans God Almighty can alone appreciate such great work I wish every success to the organisation and its organisers

खानसाहिब एन॰ सोराबजी—

Dear Sir

It gives me great pleasure in taking this opportunity of writing to you and informing you that my family and myself have arrived safely at our destination Katteor Thanks to the splendid Railway arrangements and facilities which you have been so kind to have arranged for us We had a most comfortable journey

I cannot express to you adequately my gratefulness at all the kindness that you had shown to us during our stay in Calcutta. After the hardships and trials which we had passed through in Burma, the generosity and kind consideration touched us and we shall always remember with pleasure our stay at the Digambar Jain Dharmshala and of the kind help and attention which we received from you.

(८-५-४२)

मि॰ जे॰ एस ग्राहम थामस चेयरमैन—इवेकुइज रिसेप्सन कमेटी—

I have great pleasure in testifying to the invaluable help which your Society is giving ungrudgingly to all classes and communities of evacuees who have arrived in Calcutta from Burma and Malaya. Whether these unfortunate people have arrived by sea or by rail your representatives have invariably met ships and trains and rendered the fullest assistance in providing for their comforts.

As Vice-chairman of the Evacuees Reception Committee I personally thank your Society for all you have done and are doing in succouring the needy and for the great help you have been to me. My particular thanks go to Mr Saraogi

(१०-२-४२)

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

(स्थापित सं० १९५० वि०)

अड़तालीसवाँ वार्षिक विवरण

सं० १९९७

हिंदी की संस्थाओं की संख्या जिनकी नामावली नागरी प्रचारिणी पत्रिका ४५-४ में प्रकाशित हो चुकी है—

असम	३	बड़ोदा	२	सिंध	४
उत्कल	२	बिहार	१६	हैदराबाद	१
कश्मीर	२	मद्रास	७	दक्षिण अफ्रिका	१
दिल्ली	४	मध्यप्रांत	७	फारस की खाड़ी	१
पंजाब	७	मध्यभारत	६	ब्रह्मदेश	१
बंगाल	६	युक्तप्रांत	४०		
बंबई	१२	राजपूताना	८		
					१३०

भिन्न भिन्न प्रांतों में 'हिंदी' पत्र की ग्राहक-संख्या

संयुक्त प्रांत	७८७	राजपूताना	३७
बिहार	६६	अजमेर	३
बंगाल	७	उदयपुर	१
ग्वालियर	२	जयपुर	५
ब्रह्म देश	१८	जोधपुर	३
मद्रास	१४	बीकानेर	८७
मैसूर	२	पंजाब	१६१
बंबई	१२९	दिल्ली	११
सिंध	१	काश्मीर	२५
मध्यभारत	७	मध्यप्रांत	९
हैदराबाद (दक्षिण)	२४		१३९९

विषय-सूची

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

का

अड़तालीसवाँ वार्षिक विवरण

सभा के अधिवेशन

भगवान् की असीम कृपा से नागरीप्रचारिणी सभा, काशी का यह अड़तालीसवाँ वर्ष पूर्ण हुआ। इस वर्ष साधारण सभा के १० और प्रबंध-समिति के १२ अधिवेशन हुए। साधारण सभा की सामान्य उपस्थिति ११ ६ और प्रबंध-समिति की १०.७५ रही।

सभासद

गत वर्ष सभा के सभासद ८०६ थे। इस वर्ष २९१ नए सभासद बने। किंतु ८ सभासदों का देहांत हो गया और ७ ने त्यागपत्र दिया। नियम ३१ के अनुसार शुल्क न देने से ४२ और निश्शुल्क सूची के दोहरान पर ८ सभासद पृथक् हुए, जिससे वर्ष के अंत में सभासदों की कुल संख्या १०३२ रही। इनमें १८ विशिष्ट, १२६ स्थायी, ४८ मान्य, ८१८ साधारण और २२ निःशुल्क रहे। इस वर्ष महिला सभासदों की संख्या ४७ रही।

गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष कुल २२६ सभासदों की वृद्धि हुई। पिछले कुछ वर्षों पर दृष्टि रखते हुए यह वृद्धि कुछ आशाजनक अवश्य है, किंतु यदि इस बात पर विचार किया जाय कि (हिंदी भारतवर्ष में सबसे अधिक लोगों की मातृभाषा है) और (यह सभा-हिंदी की सबसे पुरानी और सबसे अधिक सेवा करनेवाली सर्वभारतीय संस्था है तो इसके सभासदों की यह अल्प संख्या नहीं के बराबर है।)

नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

का

अड़तालीसवाँ वार्षिक विवरण

सभा के अधिवेशन

भगवान् की असीम कृपा से नागरीप्रचारिणी सभा, काशी का यह अड़तालीसवाँ वर्ष पूर्ण हुआ। इस वर्ष साधारण सभा के १० और प्रबंध-समिति के १२ अधिवेशन हुए। साधारण सभा की सामान्य उपस्थिति ११ ६ और प्रबंध-समिति की १०-७५ रही।

सभासद

गत वर्ष सभा के सभासद ८०६ थे। इस वर्ष ३९१ नए सभासद बने। किंतु ८ सभासदों का देहांत हो गया और ७ ने त्यागपत्र दिया। नियम ३१ के अनुसार शुल्क न देने से ४२ और निःशुल्क सूची के दोहराने पर ८ सभासद पृथक् हुए, जिससे वर्ष के अंत में सभासदों की कुल संख्या १०३२ रही। इनमें १८ विशिष्ट, १२६ स्थायी, ४८ मान्य, ८१८ साधारण और २२ निःशुल्क रहे। इस वर्ष महिला सभासदों की संख्या ४७ रही।

गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष कुल २२६ सभासदों की वृद्धि हुई। पिछले कुछ वर्षों पर दृष्टि रखते हुए यह वृद्धि कुछ आशाजनक अवश्य है, किंतु यदि इस बात पर विचार किया जाय कि (हिंदी भारतवर्ष में सबसे अधिक लोगों की मातृभाषा है) और (यह सभा हिंदी की सबसे पुरानी और सबसे अधिक सेवा करनेवाली सर्वभारतीय संस्था है तो इसके सभासदों की यह अल्प संख्या नहीं के बराबर है।)

कुछ सभासदों ने इस कमी को पूरा करना आरंभ कर दिया है, जिनमें बीकानेर के श्री रामलौटनप्रसाद का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनके प्रयत्न से बीकानेर में इस समय ९४ सभासद हो गए हैं। इसके लिये सभा उन्हें धन्यवाद देती है। काशी के बाद अब सभा के सभासदों की सबसे अधिक संख्या बीकानेर में ही है। इससे बीकानेर की जनता का सभा और हिंदी के प्रति प्रेम और उत्साह प्रकट होता है।

इस वर्ष सभा के जिन आठ सभासदों की मृत्यु हुई है उनमें सबसे अधिक क्षति हुई है सभा के मान्य सभासद, सभापति तथा हिंदी के मर्मज्ञ विद्वान् आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मृत्यु से। उनके न रहने से सभा और हिंदी-साहित्य की जो महान् क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होती नहीं दिखाई देती। आचार्य शुक्लजी के शरीरत्याग के कुछ ही दिनों के भीतर सभा के दूसरे मान्य सभासद प्रसिद्ध भाषा-मनीषी डाक्टर सर आर्थर ग्रियर्सन की मृत्यु ने हिंदी पर दूसरा प्रहार किया। बीकानेर के श्री मुन्नालाल चौका यद्यपि सभा के नए सभासद थे, फिर भी वे सभा के परम सहायक थे। बीकानेर में सभा के सदस्य बनाने में उन्होंने बड़ी सहायता की थी। दिल्ली के श्री केदारनाथ गोयनका भी हिंदी के अनन्य भक्त थे और उसकी उन्नति के प्रयत्न में बराबर लगे रहते थे। माधव कालेज उज्जैन के अध्यापक श्री रमाशंकर शुक्ल 'हृदय' एम० ए० मध्य भारत के उदीयमान कवि और साहित्यप्रेमी युवक थे। सभा को अपने सभी दिवंगत सभासदों के देहावसान पर दुःख है तथा वह उनके कुटुंबियों के प्रति हार्दिक समवेदना प्रकट करती है।

पदाधिकारी तथा प्रबंध-समिति के सदस्य

२१ वैशाख, १९९७ को सभा के वार्षिक अधिवेशन में इस वर्ष के लिये सभा के ये पदाधिकारी चुने गए थे—

सभापति — पं० रामचंद्र शुक्ल
उपसभापति—पं० रामनारायण मिश्र
,, ,, —पं० रमेशदत्त पांडे
प्रधान मंत्री—पं० रामबहोरी शुक्ल
साहित्यमंत्री—बा० रामचंद्र वर्मा
अर्थमंत्री—बा० जीवनदास

किंतु १८ माघ को पं० रामचंद्र शुक्ल का देहांत हो जाने के कारण २१ फाल्गुन को राय साहब ठाकुर शिवकुमार सिंह उनके स्थान पर शेष काल के लिये सभापति चुने गए।

उक्त वार्षिक अधिवेशन में प्रबंध-समिति के निम्नलिखित सदस्य चुने गए—

सं० १९९७-९९ के लिये

बा० राधेकृष्णदास काशी, बा० सहदेव सिंह, काशी, राय सत्यप्रत, काशी, श्री कृष्णानंद, काशी, रायबहादुर रामदेव चोखानी कलकत्ता, डा० सच्चिदानंद सिन्हा, पटना, और पं० जगद्धर शर्मा गुलेरी, लायलपुर (पंजाब)।

सभा के नियम ४९ तथा ५१ के अनुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति होने पर निम्नलिखित सज्जन प्रबंध-समिति के सदस्य हुए—

सं० १९९७-९८ के लिये

बा० मुरारीलाल केडिया, काशी, प० केशवप्रसाद मिश्र, काशी, बा० ठाकुरदास एडवोकेट, काशी, राय साहब ठा० शिवकुमार सिंह काशी, श्री दत्तो वामन पोतदार, पूना, श्री व्योहार राजेंद्रसिंह, जबलपुर, और सरदार माधवराव विनायकराव किबे, इंदौर।

सं० १९९७ के लिये

बा० कृष्णदेवप्रसाद गौड़, काशी, राय कृष्णदास, काशी, पं० वंशगोपाल झिंगरन, काशी, पं० विद्याभूषण मिश्र, काशी, बा० हरिहरनाथ टंडन, आगरा, पं० अयोध्यानाथ शर्मा, कानपुर, और पं० रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, अजमेर।

किंतु उपर्युक्त वार्षिक अधिवेशन में ही यह निश्चय हुआ था कि इस वर्ष से प्र० स० के सदस्यों की संख्या २१ से बढ़ाकर ३९ कर दी जाय, और साधारण सभा को अतिरिक्त चुनाव का अधिकार दिया गया था। उसके अनुसार ५ ज्येष्ठ १९९७ को साधारण सभा में निम्नलिखित सज्जन प्र० स० के सदस्य चुने गए—

सं० १९९७-९९ के लिये

पं० चंद्रबली पांडे, काशी, राय साहब पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी, लखनऊ, पं० भोलानाथ शर्मा, बरेली, श्री भँवरलाल नाहटा, सिलहट,

बा० मूलचंद्र अग्रवाल, कलकत्ता (ब्रह्मदेश के लिये); और बा० लक्ष्मी नारायण सिंह 'सुधांशु', पूर्णिया (उत्कल के लिये)।

सं० १९९७-९८ के लिये

बा० व्रजरत्नदास, काशी; पं० श्यामसुंदर उपाध्याय, बलिया; पं० श्रीचंद्र शर्मा, जम्मू, डा० हारानंद शास्त्री, बड़ोदा, श्री ना० नागप्पा मैसूर, और श्री पी० बी० आचार्य, मद्रास।

सं० १९९७ के लिये

श्रीमती कमलाकुमारी काशी, स्वामी हरिनामदासजी उदासीन, सक्खर (सिंध), श्री सुधाकर जी, दिल्ली, श्री सत्यनारायण लोया, हैदराबाद (दक्षिण); श्री जी० सच्चिदानंद, मैसूर (सिंहल के लिये); और श्री पुरोहित हरिनारायण शर्मा, जयपुर।

राय साहब ठाकुर शिवकुमार सिंह के सभापति चुन लिए जाने पर उनके स्थान पर २१ फाल्गुन, १९९७ के साधारण अधिवेशन में पं० लक्ष्मीप्रसाद पांडेय प्रबंध समिति के सदस्य चुने गए।

इस वर्ष सभा के आय-व्यय-निरीक्षक पं० सूर्यनारायण आचार्य चुने गए थे। पर उन्हें अवकाश न था। इससे उनके स्थान पर बा० गुलाबदास नागर चुने गए।

आर्यभाषा पुस्तकालय

गत वर्ष पुस्तकालय की आय २४६१।।।=)।१३ थी और व्यय ३३८४)७३ था। इस वर्ष २४३१)।११ आय हुई जिसमें १०००) प्रांतीय सरकार से, ३६०) म्युनिसिपल बोर्ड, बनारस से और १०७१)।११ सहायकों के वार्षिक चंदे तथा फुटकर दान से प्राप्त हुआ। इस वर्ष व्यय ३०७६।।।)।।= हुआ, जिसमें ९८१।।) पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में १६८५।।।=) वेतन में और २२९।।।=) रोशनी आदि में हुआ। ८५)।।।= जिल्दबंदी के सामान में लगा। (जिल्दबंदी के लिये विशेष रूप से नियुक्त किए गए दफ्तरियों का वेतन ऊपर वेतन की रकम में ही सम्मिलित है।) १२४) फुटकर व्यय हुआ।

गत वर्ष पुस्तकालय के सहायकों की संख्या ८० थी, इस वर्ष ११७ रही। इस वर्ष भी कुछ सहायकों के यहाँ दो वर्ष या इससे अधिक का चंदा बाकी रहने से उनकी अमानत की रकम में पुस्तकों का मूल्य तथा चंदा लेकर, पुस्तकालय के नियम १४ के अनुसार उनके नाम सहायक-श्रेणी से पृथक् करने पड़े, जिसका सभा को खेद है।

गत वर्ष २०३ पत्र पत्रिकाएँ आती रहीं। इस वर्ष ६० पुरानी पत्र-पत्रिकाओं का आना बंद हो गया और ४१ नई पत्र पत्रिकाएँ आने लगीं। इस प्रकार इस वर्ष पुस्तकालय में कुल १८४ पत्र पत्रिकाएँ आती रहीं।

गत वर्ष पुस्तकालय के हिंदी-विभाग में १५२८२ मुद्रित पुस्तकें थीं। इस वर्ष ६१८ नई पुस्तकें आई। अब इस विभाग में मुद्रित पुस्तकों की संख्या १५९०० है।

गत वर्ष पुस्तकालय के हस्तलिखित पुस्तक-विभाग में ८३१ पुस्तकें थीं। इस वर्ष ४ पुस्तकें आई। अब ८३५ हस्त-लिखित पुस्तकें हैं।

द्विवेदी-संग्रह तथा रत्नाकर-संग्रह में पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त क्रमशः २७७३ तथा १५२४ पुस्तकें हैं।

गत वर्ष अँगरेजी-विभाग में २३३६ पुस्तकें थीं। इस वर्ष ७९ नवीन पुस्तकें आई। अब इस विभाग में २४१५ पुस्तकें हैं। इनके अतिरिक्त संस्कृत, मराठी, बँगला, गुजराती, उर्दू आदि की भी पुस्तकें हैं। इन सब की सूची प्रस्तुत कराने का आयोजन हो रहा है।

इस वर्ष पुस्तकालय २७९ दिन तथा वाचनालय ३३८ दिन खुला रहा और नित्य के पढ़नेवालों की सामान्य संख्या १२० थी। सहायकों ने लगभग ३५०० पुस्तकें पढ़ीं।

इस वर्ष दाशमिक-वर्गीकरण पद्धति के अनुसार हिंदी विभाग के दर्शन, धर्म, समाजशास्त्र, भाषा, विज्ञान, उपयोगी कला, ललित कला, साहित्य और इतिहास-भूगोल की शेष समस्त पुस्तकों पर संख्याएँ अंकित की गईं। हर्ष का विषय है कि पुस्तकों का नवीन-पद्धति के वर्गीकरण का कार्य, जो गत कई वर्षों से हो रहा था, इस वर्ष पूरा हो गया। पुस्तकालय की पुस्तकों की यह सूची छपने के लिये तैयार है पर धनाभाव के कारण इस वर्ष छापी न जा सकी। आशा है, वह अगले वर्ष सर्वसाधारण के लिये सुलभ हो जायगी।

जैसा गत वर्ष संकेत किया गया था, पुस्तकालय की उत्तरोत्तर वृद्धि के कारण स्थान और अलमारियों का अभाव है। इससे पुस्तकें तथा सामयिक पत्र-पत्रिकाएँ आदि रखने की कोई ठीक व्यवस्था नहीं हो पाती। नवीन पद्धति के अनुसार पुस्तकालय के लिये यथेष्ट और आवश्यक उपकरण (कैबिनट कार्ड शेल्फ अलमारियाँ आदि) प्राप्त करना सभा की वर्तमान आर्थिक स्थिति के कारण कठिन जान पड़ता है। इस संबंध में सभा ने गत वर्ष कम से कम एक सहस्र रुपयों की आवश्यकता बतलाई थी। खेद है, पुस्तक-प्रेमियों ने इस छोटी सी आवश्यकता की पूर्ति की ओर ध्यान नहीं दिया। यदि उदार हिंदी प्रेमी चाहें तो पुस्तकालय की वर्तमान कठिनाइयों के दूर होने में देर न लगेगी।

पुस्तकालय का उपयोग उसके सहायकों के अतिरिक्त स्वाध्याय तथा ग्रंथ-रचना के लिये भी उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है। गत वर्ष काशी-हिंदू विश्वविद्यालय और प्रयाग-विश्वविद्यालय के कुछ विद्यार्थियों ने अपनी खोज के निबंध प्रस्तुत करने में आर्य भाषा पुस्तकालय से यथेष्ट लाभ उठाया था। इस वर्ष प्रयाग-विश्वविद्यालय के श्री राजा पन्नालाल वृत्ति-भोगी पं० उमाशंकर शुक्ल ने भी इस पुस्तकालय में अपनी खोज का कार्य किया। इसके अतिरिक्त लखनऊ-विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी ने भी पुस्तकालय के संग्रह से समुचित लाभ उठाया।

इस प्रकार आर्यभाषा-पुस्तकालय खोज के विद्यार्थियों के काम का भी हो रहा है। आशा है भविष्य में और भी अन्वेषक और विद्यार्थी इसका उपयोग करेंगे।

सभा निरंतर यह उद्योग करती रहती है कि उसका यह पुस्तकालय तथा वाचनालय सभी दृष्टियों से परिपूर्ण रहे। हिंदी पुस्तकों का प्रकाशन जिस द्रुत गति से बढ़ रहा है उसको देखते हुए हिंदी संसार का सभी प्रकाशित पुस्तकों तथा सामयिक पत्र-पत्रिकाओं को मूल्य देकर प्राप्त करना सभा की शक्ति के बाहर जान पड़ता है। इसके लिये सभा को कम से कम तीन हजार रुपये वार्षिक की आवश्यकता है। सभा उन अनेक लेखकों, कवियों और प्रकाशकों की कृतज्ञ है जो अपनी रचनाएँ और अपने प्रकाशन सभा को बराबर प्रदान किया करते हैं, किंतु जिन सज्जनों तथा संस्थाओं ने सभा के इस निवेदन की ओर अब तक ध्यान नहीं दिया है उनसे सभा विशेष रूप से अनुरोध करती है। उनकी इस

सहायता से यह पुस्तकालय सहज ही पूर्ण बन सकता है। साथ ही युक्तप्रांतीय सरकार से सभा का अनुरोध है कि वह अपनी वर्तमान सहायता में कम से कम एक सहस्र रुपये वार्षिक की और वृद्धि करे। ऐसा होने से सभा का पुस्तकालय हिंदी का सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालय बन सकेगा और उसका उपयोग खोज करनेवाले विद्वान् एवं सर्वसाधारण हिंदी प्रेमी भली भाँति कर सकेंगे।

जिन सज्जनों तथा संस्थाओं ने इस वर्ष पुस्तकालय के लिये पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ आदि दान दी हैं, उनमें पं० रामनारायणजी मिश्र (काशी), इंडियन प्रेस लिमिटेड (प्रयाग), पं० राधेश्यामजी कथावाचस्पति (बरेली), दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (मद्रास) और श्री कमलनाथ अग्रवाल (काशी) विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। बिहार के प्रसिद्ध साहित्यसेवी पं० अक्षयवट मिश्र ने अपनी संपूर्ण कृतियाँ एक सुंदर छोटी अलमारी में सजाकर अपने जीवन के अंतिम काल में इस पुस्तकालय को भेंट की थीं। यदि इसी प्रकार सभा में प्रसिद्ध साहित्यकारों के ग्रंथ और संभव हो तो उनके सभी संस्करण अलग अलग अलमारियों में रखे जा सकें तो कितना अच्छा संग्रह हो जाय। यह खोज और साहित्य के इतिहास-निर्माण में बहुत ही उपयोगी और सहायक हो।

इस वर्ष श्री कृष्णदेवप्रसाद गौड़ पुस्तकालय के निरीक्षक थे।

हिंदी के हस्तलिखित ग्रंथों की खोज

इस वर्ष खोज का कार्य इटावा और मथुरा जिलों में होता रहा। इटावा में पं० बाबूराम मित्थरिया ने और मथुरा में पं० दौलतराम जुयाल ने कार्य किया। पं० बाबूराम मित्थरिया कुछ महीने कार्य करने के बाद कार्तिक मास में सभा से अलग कर दिए गए। उनके स्थान पर श्री महेशचंद्र गर्ग एम० ए० नियुक्त किए गए।

इस वर्ष इटावा जिले में १६० और मथुरा जिले में १८४ हस्त-लिखित ग्रंथों के विवरण लिए गए। इनके अतिरिक्त दतिया (बुंदेलखंड) के श्री हरिमोहन लाल वर्मा, बी० ए० साहित्यरत्न ने ३ तथा श्री हरिदास दुबे 'हरिहर' ने ६ विवरण भेजने की कृपा की। समस्त ३५३ ग्रंथों में से ६४ ग्रंथों के रचयिताओं के नाम अज्ञात हैं, शेष १७९ ग्रंथ १४३

ग्रंथकारों के रचे हुए हैं। ग्रंथकार तथा ग्रंथों का शताब्दी-विभाग निम्न प्रकार है —

शताब्दी स सन्	१६वीं	१७वीं	१८वीं	१९वीं	अज्ञात	योग
ग्रंथकार	८	३२	२९	१०	१०३	१८२
ग्रंथ	७	२८	३३	११	२७८	३५३

ये ग्रंथ निम्नलिखित विषयों में इस प्रकार विभक्त हैं —

(१) भक्ति—९३ (२) अध्यात्म तथा दर्शन—२५, (३) योग—२, (४) काव्य—५७, (५) संगीत—२, (६) कोश—२, (७) रीति—७, (८) पुराण—९, (९) पौराणिक कथा—२१, (१०) ज्योतिष—१०, (११) भूगोल—१, (१२) राजनीति—२, (१३) नीति—२, (१४) स्वप्न—१, (१५) स्तोत्र—१५, (१६) कथा कहानी—५ (१७) धार्मिक—२३, (१८) मंत्र-तंत्र—८, (१९) सामुद्रिक—५, (२०) रमल, शकुन तथा शुभाशुभ प्रश्न—१२, (२१) पिंगल—२, (२२) जीवन-वार्ता—१७, (२३) वैद्यक—३, (२४) स्वरोदय—१ (२५) कोकशास्त्र—१ (२६) विविध—२९।

इटावा जिले में जिन ग्रंथों के विवरण लिए गए उनमें से निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण हैं :—

(१) बाल बजरंगी चरित्र—इसमें दोहा, सोरठा और चौपाई की प्रबंधात्मक शैली में हनुमानजी का जीवनचरित्र लिखा गया है।

(२) गंगा भक्ति-विनोद—इसका निर्माणकाल संवत् १९०९ है। इसकी रचना संस्कृत के गंगा-लहरी नामक काव्य के आधार पर हुई है। इसके रचयिता का नाम रसिकसुंदर है।

(३) पक्षी चेतन—इसमें संयोग-वियोग शृंगार के ३१ दोहे हैं, जिनमें किसी न किसी पक्षी का नाम श्लिष्ट पद के रूप में आया है।

(४) चित्रगुप्त की कथा—लेखक द्विज कवि मोतीलाल। इसमें चित्रगुप्त तथा कायस्थों की उत्पत्ति की कथा है।

(५) कंस की कथा—इसके लेखक तथा निर्माण काल अज्ञात हैं। लेखक ने ब्रजभाषा गद्य में राजा कंस की कथा का वर्णन किया है। इसको पढ़ने में काव्य का सा आनंद आता है।

मथुरा में प्राप्त अनेक उत्तमोत्तम ग्रंथों में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं –

ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार का नाम	निर्माणकाल संवत्	लिपिकाल संवत्
योगाभ्यास मुद्रा	कुमुदिपाद	×	१८९७
काव्यरस	महाराज जयसिंह	×	१८०२
ब्रजकेलि	नारायण स्वामी	×	×
मोहित जू कृत कटफर बानी की टीका या सुभावनायोधिनी	ब्रजगोपालदास	१९००	१९६८
कोक सामुद्रिक	अहमद	१६७८	×
जुगल विलास	महाराज रामसिंह	१८३६	×
कृष्णचंद्रिका	अखैराम	१८११	१८८३
दुर्गाभक्ति चंद्रिका	कुलपति मिश्र	१७४९	१८११
बिहारिन देवजी की बानी	बिहारिन देवजी	×	×
रसरूप	सरस्वती	×	१८५५
भीकबीर के पदों की टीका	×	×	×
कवितरंग	सीताराम	१७६०	१८६९
अलंकार आभा	चतुर्भुज मिश्र	१८९६	×
रागमाला	×	×	×
द्रव्यसंग्रह	रामचंद्र जैनी	×	१७६१

स्पष्ट है कि खोज संबंधी कठिनाइयाँ अभी पूर्ववत् बनी हुई हैं। ग्रंथों के स्वामी अपने ग्रंथों को दिखलाने में नाना प्रकार की अड़चनें उपस्थित करते हैं। कहीं अंधविश्वास बाधक होता है, कहीं अज्ञान। कहीं कहीं तो इसे व्यर्थ की झंझट समझकर टालने की चेष्टा की जाती है। फिर भी संतोष है कि अनेक महानुभावों ने अपने ग्रंथों को प्रसन्नता-पूर्वक दिखलाया तथा उनके विवरण देने की प्रत्येक सुविधा प्रदान की। इसके अतिरिक्त कुछ ने अपने हस्तलेखों को सभा के लिये दान देकर अपनी उदारता का परिचय दिया। सभा इन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करती है। सभा के अन्वेषकों को अनेक प्रकार की सहायता देनेवाले सज्जनों में कुछ ये हैं—

सेठ कन्हैयालाल पोद्दार, मथुरा; पं० मोहनवल्लभ पंत, किशोरीरमण कालेज, मथुरा, श्री सत्येंद्रजी, चंपा अग्रवाल कालेज, मथुरा, श्री विरानस्वरूप अग्रवाल, कोसी कलाँ, मथुरा, पं० छोटेलालजी गासधारी, मुसराई, मथुरा, पं० उमाशंकरजी वैद्य, वृंदावन, गोस्वामी रूपलालजी हित, राधावल्लभ मंदिर, वृंदावन, पं० नत्थनलाल शर्मा, मंत्री, साहित्य-समिति, भरतपुर, पं० मदनमोहन लाल आयुर्वेदाचार्य, भरतपुर, पं० मदनलालजी ज्योतिषी, भरतपुर, पं० हरिकृष्णजी वैद्य, डीग, भरतपुर, पं० वासुदेवजी, पुरानी डीग, भरतपुर, और श्री मुन्नीलालजी रोध, मथुरा।

आशा है, इनसे तथा अन्य सज्जनों से सभा के अन्वेषकों को भविष्य में भी पूर्ववत् सहायता प्राप्त होती रहेगी।

इस वर्ष खोज-विभाग के निरीक्षक डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल और सहायक निरीक्षक पं० विद्याभूषण मिश्र चुने गए थे, परंतु अस्वस्थता के कारण डा० बड़थ्वाल के पदत्याग करने पर पं० विद्याभूषण मिश्र वर्ष के अंत तक निरीक्षक रहे।

भारत-कलाभवन

इस वर्ष भारत-कलाभवन का रामघाट की खोदाई से घनिष्ठ संबंध रहा। जनवरी १९४० के आरंभ से ही ईस्ट इंडियन रेलवे की ओर से 'काशी' स्टेशन को बढ़ाने के लिये उक्त स्टेशन के उत्तर वाली गंगा किनारे

की भूमि की खोदाई हो रही थी। खोदाई में निकलनेवाली प्राचीन वस्तुओं के संबंध में रेलवे अधिकारी उदासीन थे, अतः रोजगारियों ने वहाँ अपनी सत्ता स्थापित कर ली थी। वे उक्त वस्तुओं को अधिक धन प्राप्ति के लोभ से अन्य संग्रहालयों को भेज देते थे। इस प्रकार कला भवन को साधारण वस्तुएँ ही प्राप्त होती थीं। किंतु बराबर यही उद्योग किया जाता था कि अपने नगर के इन प्राचीन चिह्नों का यहीं अधिक से अधिक संख्या में संग्रह किया जाय। इस वर्ष के आरंभ से इस कार्य में सफलता मिलने लगी और अब कलाभवन में राजघाट की वस्तुओं का अद्वितीय संग्रह हो गया है। इनमें अधिकांश वस्तुएँ गुप्तकाल (चौथी, पाँचवीं शती) की हैं और इतिहास एवं कला की दृष्टि से अत्यंत महत्त्व-पूर्ण हैं। इन वस्तुओं के समुचित प्रदर्शन के लिये श्री पुरुषोत्तमदास हलवासिया ने पाँच 'शो केस' बनवा दिए हैं।

कलाभवन के आग्रह करने पर गत अक्तूबर में भारतीय पुरातत्त्व विभाग ने रेलवे द्वारा खोदी हुई उक्त भूमि को अपने संरक्षण में लेकर उसके कुछ हिस्से की वैज्ञानिक ढंग से खोदाई कराई। फलस्वरूप चौथी पाँचवीं शती की वाराणसी नगरी के ध्वंसावशेष निकले हैं। ये सभी दृष्टियों से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

राजघाट की रेलवे की खोदाई में गहड़वार महाराज गोविंदचंद्र देव का मिति कार्तिक पूर्णिमा संवत् ११९७ का बड़े आकार के दो पत्रोंवाला ताम्रपत्र रेलवे अधिकारियों के हाथ लगा था। भारतीय पुरातत्त्व विभाग ने इसे प्राप्त कर लिया है और वैज्ञानिक क्रियाओं से इसकी सफाई आदि कराके भारत-कलाभवन को ही दे देने का निश्चय किया है।

भारतीय पुरातत्त्व विभाग के डाइरेक्टर-जनरल ने कलाभवन की उत्तरोत्तर समृद्धि एवं उन्नति से संतुष्ट होकर अब यह नीति निर्धारित की है कि सारनाथ के अतिरिक्त काशी तथा आसपास के अन्य स्थानों से पुरातत्त्व संबंधी जो वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं तथा भविष्य में प्राप्त होंगी वे कलाभवन में रहेंगी। इस नीति के अनुसार अन्य स्थानों से प्राप्त और सारनाथ संग्रहालय में रखी मूर्तियों और इमारती पत्थरों में से २९ वस्तुएँ उक्त विभाग की ओर से भारत-कलाभवन को प्राप्त हुई हैं। इनमें काशी के बकरियाकुण्ड से प्राप्त गोवर्द्धनधारी कृष्ण की गुप्तकालीन विशाल मूर्ति अत्यंत भव्य तथा दर्शनीय है। इसी प्रकार जैन तीर्थंकर

के पास की गुप्तकालीन बड़ी मूर्ति भी बहुत सुन्दर और कलापूर्ण है। भारतीय पुरातत्त्व विभाग से प्राप्त राजघाट की पत्थर की वस्तुएँ यद्यपि मध्यकालीन हैं, फिर भी कुछ विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण हैं।

कलाभवन में राजघाट की वस्तुओं का विभाग अलग कर दिया गया है। उसका उद्घाटन ७ भाद्रपद १९९७ को डाक्टर पन्नालाल, आई० सी० एस०, डी० लिट्० ने किया।

चित्रमंदिर—इस वर्ष इस विभाग के प्रदर्शन में कई महत्त्वपूर्ण विशेषताओं का समावेश किया गया है। चित्रों के स्थायी परिचय-पत्र तैयार हो रहे हैं और शीघ्र ही लगा दिए जायँगे। सूची भी शीघ्र ही छापी जायगी।

दर्शक—इस वर्ष दर्शकों की संख्या बहुत अधिक रही। इनमें भारतीय पुरातत्त्व विभाग के प्रायः सभी उच्च पदाधिकारी, भारतीय इतिहासपरिषद् तथा भारतीय विज्ञानपरिषद् के काशी में होनेवाले अधिवेशनों में आए हुए विज्ञानवेत्ता तथा विद्वज्जन, थियोसाफिकल सोसायटी की जुबिली के प्रतिनिधिगण, अनेक शिक्षा-संस्थाओं—जैसे इलाहाबाद के टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, धौलपुर के शांतिनिकेतन और काशी के वसंत महिला कालेज—के छात्र तथा छात्राएँ मुख्य हैं। सेठ घनश्यामदासजी बिड़ला, श्री बी० एस० मुंजे, श्री श्रीकृष्णसिंह, सर यदुनाथ सरकार, डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी, डा० विनय सरकार, श्री ओ० सी० गांगुली, श्री अमरनाथ झा, श्री नंदलाल दास, डा० बीरबल साहनी, सर आर्देशीर दलाल, यु० प्रां० सरकार के परामर्शदाता डा० पन्नालाल, श्री एन० सी० मेहता आई० सी० एस०, युक्तप्रांतीय शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर श्री पावेल प्राइस, बनारस के कमिश्नर डा० श्री श्रीधर नेहरू आई० सी० एस० कलक्टर, तथा पुलिस सुपरिटेंडेंट आदि अन्य अधिकारी, बनारस के इंस्पेक्टर ऑव स्कूल्स, कैंब्रिज विश्वविद्यालय के श्री जेम्स हिटमोर, डा० मेघनाद् साहा, मद्रास थियोसाफिकल सोसायटी के श्री जिनराजदास आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

इस वर्ष कलाभवन में दर्शकों की संख्या लगभग ५००० थी।

रामप्रसाद समादर उत्सव—भारत कलाभवन ने मुगल शैली की चित्रकला के एकमात्र वर्तमान प्रतिनिधि वयोवृद्ध उस्ताद श्री रामप्रसादजी के समादर में एक हजार रुपए का एक कोष भेंट करने की योजना बनाई

थी। समस्त भारत के गुणग्राही तथा गुणी लोगों ने इस कार्य में सहयोग दिया और यह कार्य ७७ मार्गशीर्ष १९९७ को श्री अमरनाथ झा, वाइस चांसलर इलाहाबाद विश्वविद्यालय के सभापतित्व में संपन्न हुआ।

इस वर्ष भी कलाभवन के समद्दाध्यक्ष श्री राय कृष्णदास रहे।

नागरीप्रचारिणी पत्रिका

नागरीप्रचारिणी पत्रिका का यह पैंतालीसवाँ वर्ष समाप्त हुआ। पत्रिका में पहले की ही भाँति उच्च कोटि के लेख निकलते रहे। इस वर्ष पत्रिका के संपादक-मंडल में निम्नलिखित सज्जन चुने गए थे—

श्री रामचंद्र शुक्ल	डा० मंगलदेव शास्त्री
श्री केशवप्रसाद मिश्र	श्री वासुदेवशरण

श्री कृष्णानंद (संपादक)

इस वर्ष पत्रिका में प्रकाशित लेखों की सूची नीचे दी जाती है—

विषय लेखक

भारतीय मुद्राएँ और उन पर हिंदी का स्थान [लेखक—श्री दुर्गाप्रसाद, बी० ए०, विज्ञानकला-विशारद, एम्० एन्० एस्०]

देवनागरी लिपि और मुसलमानी शिलालेख [लेखक—डा० हीरानंद शास्त्री, एम्० ए०, डी० लिट्०]

राष्ट्र-लिपि के विधान में रोमन लिपि का स्थान [लेखक—डा० ईश्वरदत्त, विद्यालंकार, पी एच्० डी०]

नागरी और मुसलमान [लेखक—श्री चंद्रबली पांडे, एम० ए०]

मलिक मुहम्मद जायसी का जीवनचरित [लेखक—श्री सैयद आले मुहम्मद मेहर जायसी, बी० ए०]

कुवर पिया [लेखक—श्री गोपालचंद्र सिंह, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०, विशारद]

रघुवंश और भारत [लेखक—भारतदीपक डा० विष्णु सीताराम सुकथनकर, एम्० ए०, पी-एच्० डी०]

विषय लेखक

चयन—

समीक्षा—

विषय — लेखक

महाभारत का संशोधित संस्करण [ले० श्री कृ]
वाहीक ग्रामों के शुद्ध नाम [ले० श्री वासुदेवशरण]
पंजाब में हिंदी आंदोलन [ले० श्री कृ]
संस्कृत का महत्त्व [ले० श्री कृ]
भारत की प्रादेशिक भाषाओं के लिये समान वैज्ञानिक शब्दावली [ले० श्री कृ]
बहुमूल्य प्राचीन ग्रंथ-संपत्ति अमेरिका गई [ले० श्री कृ]
पृथ्वीराज रासो संबंधी शोध [ले० श्री कृ]
'सभ्यता की समाधि' में योग इंस्टीट्यूट के प्रकाशन [ले० श्री कृ]
'हिंदी' [ले० श्री कृ]
कार्तिक अंक के चित्र [ले० श्री कृ]
सभा की प्रगति [ले० श्री सहायक मंत्री]
हिंदी प्रचारिणी संस्थाएँ [„ „]

नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला

इस माला में सभा प्राचीन कवियों और लेखकों की रचनाएँ योग्य विद्वानों से संपादित करा के प्रकाशित करती है। द्रव्य के अभाव में इस वर्ष इसमें कोई नया ग्रंथ नहीं प्रकाशित किया गया।

सूरसागर को, जिसका प्रकाशन सात अंक निकालने के बाद स्थगित कर दिया गया था, अब फिर उसी रूप में प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है। गत वर्ष इसका एक सस्ता संस्करण निकालने का निश्चय हुआ था, पर इस वर्ष सभा के वार्षिकोत्सव के सभापति कथावाचस्पति पं० राधेश्याम वानप्रस्थी ने इसके लिये द्रव्य संग्रह करने का वचन दिया है, जिससे आशा है कि अब यह उसी सुंदर रूप में छपाया जा सकेगा।

मनोरंजन पुस्तकमाला

इस माला में ५३ उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आर्थिक कठिनाई के कारण इसकी ५४ वीं पुस्तक जो तैयार है, इस वर्ष छापी न जा सकी।

प्रकीर्णक पुस्तकमाला

इस वर्ष इसमें ये तीन पुस्तकें प्रकाशित की गईं—उर्दू का रहस्य, मुल्क की अमान और फाजिल मुसलमान (उर्दू में), मुगल बादशाहों की हिंदी। ये तीनों पुस्तकें हिंदी भाषा की स्थिति स्पष्ट करने और उर्दू के संबंध में प्रचारित बहुत सी भ्रम में डालनेवाली बातों का निराकरण करने में बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं।

सूर्यकुमारी पुस्तकमाला

श्रीमान् शाहपुराधीश महाराज उम्मेदसिंह जी ने अपनी स्वर्गवासिनी धर्मपत्नी श्रीमती सूर्यकुमारी देवी की स्मृति में सभा को धन देकर इस पुस्तकमाला को प्रकाशित कराने की व्यवस्था की थी। इसके लिये शाहपुरा दरबार से सभा को कुल १९९८४) प्राप्त हुए थे। इस माला में अब तक १७ ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं।

इस वर्ष इस पुस्तकमाला में 'हिंदी-साहित्य का इतिहास' का संशोधित और परिवर्धित संस्करण प्रकाशित किया गया जो, खेद है, विद्वान् लेखक की आकस्मिक मृत्यु से किंचित् अधूरा ही रह गया। 'हिंदी-साहित्य का इतिहास' का एक संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त 'हिंदी की गद्य-शैली का विकास' का पुनर्मुद्रण हुआ। स्व० पं० चंद्रधर शर्मा गुलेरी के लेखों का संग्रह 'गुलेरी ग्रंथ' के नाम से छप रहा था, किंतु गुलेरी जी के पुत्र पं० योगेश्वर शर्मा गुलेरी से इसके संबंध में कुछ आवश्यक विषयों पर पत्रव्यवहार हो रहा है जिससे १२ फार्म के बाद आगे छपाई रोक दी गई है। आशा है शीघ्र ही फिर छपाई आरंभ हो जायगी।

इस वर्ष माला के आय-व्यय का ब्योरा इस प्रकार है—

आय		व्यय	
५६९०॥)४	गत वर्ष की बचत	३६६)	हिंदी गद्य-शैली के विकास की छपाई
१५६९॥)॥	पुस्तकों की बिक्री तथा रायल्टी	५८४॥≡)	हिंदी गद्य-शैली के विकास के लिये कागज
७२६०॥)१०			

४५८।)	शशांक के लिये कागज
२९८।)	शशांक की छपाई
७७९॥-)।	शशांक की जिल्द बँधाई
१७६)	हिंदी-साहित्य के इतिहास की रायल्टी
१९६≡)॥	कार्यालय-व्यय
२४९॥)॥	सोविएत् भूमि की जिल्द बँधाई
२३९)	सोविएत् भूमि की रायल्टी
१२॥≡)॥=	फुटकर
२८८०।≡)॥=	
४३८०)११३	बचत
७२६०॥)१०	

देवीप्रसाद ऐतिहासिक पुस्तकमाला

जोधपुर निवासी स्वर्गीय मुंशी देवीप्रसाद मुंसिफ की दी हुई निधि से इस माला में ऐतिहासिक पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है। इस माला में अब तक १४ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस वर्ष १५ वीं पुस्तक 'मोहें जो दड़ो' छपने को दी गई है। उसकी छपाई प्राय: समाप्त हो चुकी है। यह शीघ्र प्रकाशित होगी।

इस वर्ष माला के आय-व्यय का ब्योरा इस प्रकार है—

आय		व्यय	
६९४२।=)४३	गत वर्ष की बचत	८९)	मध्य प्रदेश के इतिहास की छपाई
६३०)	इंपारियल बैंक के शेयरों का मुनाफा	१॥)	बैंक बट्टा
१०४॥≡)	इनकम टैक्स का फिरता	१६)	मोहें जो दड़ो के प्रूफ संशोधन करने का पारिश्रमिक
३५५)	पुस्तकों की बिक्री तथा रायल्टी	६०॥≡)॥	कागज
		१३६≡)॥=	कार्यालय व्यय
८०३२।-)४३			

४)॥।=	फुटकर व्यय
३०७॥=)॥	
७७२४॥-)१०¾	बचत
८०३२।-)४	

बालाबक्श राजपूत चारण पुस्तकमाला

जयपुर के स्वर्गीय बारहट बालाबक्सजी की दी हुई निधि से इस माला में राजपूतों और चारणों की लिखी डिंगल और पिंगल भाषा की पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। इस वर्ष इस माला में जोधपुर के वयोवृद्ध विद्वान् श्री रामकर्णजी द्वारा संपादित 'राजरूपक' नाम के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ का छापना आरंभ किया गया। इसका कुछ अंश छप चुका है।

माला के इस वर्ष के आय-व्यय का हिसाब निम्नलिखित है—

आय		व्यय	
१५२४=)७	गत वर्ष की बचत	२०७=)	रघुनाथ रूपक गीतारों का पारिश्रमिक
३४३=)॥	सरकारी कागजों का व्याज	१८६)	रघुनाथ रूपक की छपाई
६१॥)	इनकम टैक्स का फिरता	३०-)॥	रघुनाथ रूपक के लिये शेष कागज
१०६)॥	पुस्तकों की बिक्री तथा रायल्टी	१२०-)॥।	रघुनाथ रूपक की जिल्द बँधाई
२०३४॥।=)७		३३०॥।)	राजरूपक के लिये कागज
		९०२॥)	स्टाफ रूम की बनवाई
		६३॥।-)॥।	कार्यालय व्यय
		४॥=)॥।	फुटकर
		१८४५=)।	
		१८९॥।-)४	बचत
		२०३४॥।=)७	

देव पुरस्कार ग्रंथावली

ओड़छा के श्री वीरेंद्र केशव साहित्य परिषद् ने उक्त ग्रंथावली के नाम से उच्च कोटि की साहित्यिक पुस्तकें प्रकाशित करने के लिये सभा को १०००) दिया था। इस ग्रंथावली में इस वर्ष कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई। इस वर्ष इस माला के आय-व्यय का हिसाब इस प्रकार है —

आय		व्यय	
९१९॥-)॥	पुस्तकों की बिक्री	९०॥≡)॥	गत वर्ष का अधिक व्यय
९१९॥-)॥		२५)	जिल्दबंदी का सामान
		११)	पुट्ठे की छपाई
		१०७≡)॥	कार्यालय व्यय
		७॥≡)॥	फुटकर व्यय
		२३१-)॥	
		६८७≡)॥	बचत
		९१९॥-)॥	

श्री महेंदुलाल गर्ग विज्ञान ग्रंथावली

युक्त प्रांत के कृषिविभाग के डिप्टी डाइरेक्टर श्री प्यारेलाल गर्ग ने हिंदी के पुराने और प्रतिष्ठित लेखक अपने स्वर्गीय पिता डाक्टर महेंदुलाल गर्ग की स्मृति में उन्हीं के नाम से उक्त ग्रंथावली प्रकाशित करने के लिये सभा को १०००) देने का वचन दिया है। इसमें से ९००) वे दे भी चुके हैं। लाला महोदय कृषिशास्त्र के शब्दों की सूची भी स्वयं तैयार कर रहे हैं। उसके तैयार हो जाने पर उसपर सभा द्वारा कृषिशास्त्र के विद्वानों की सम्मति माँगी जायगी।

श्रीमती रुक्मिणी तिवारी पुस्तकमाला

सभा के पुराने सदस्य अजमेर के स्वर्गीय राय साहब चंद्रिकाप्रसाद तिवारी की सुपुत्री श्रीमती रामदुलारी दुबे ने अपनी स्वर्गीया माता की

स्मृति में उन्हीं के नाम से महिलाओं और शिशुओं के लिये उपयोगी एक पुस्तकमाला निकालने के लिये सभा को २०००) दान का वचन दिया है। उसमें से १०००) वे प्रदान कर चुकी हैं।

साहित्य गोष्ठी

स्वर्गीय बाबू जयशंकर प्रसाद ने ९००) रुपयों की जो निधि साहित्य-परिषद् के लिये सभा को दान दी थी उसके उद्देश्य की पूर्ति के लिये यह गोष्ठी स्थापित की गई है। यह इसका दशम वर्ष है। इसके द्वारा साहित्य प्रेमियों को समय-समय पर स्थानीय तथा बाहर के अनेक विद्वानों एवं सुकवियों के व्याख्यानों तथा रचनाओं को सुनने के अवसर मिलते हैं। गोष्ठी को अधिक उपयोगी तथा आकर्षक बनाने के हेतु सं० १९९४ से इसके अंतर्गत 'प्रसाद'-व्याख्यान-माला की आयोजना की गई है, जिसमें विभिन्न अवसरों पर विद्वानों द्वारा सुबोध व्याख्यान हुआ करते हैं।

इस वर्ष १ ज्येष्ठ को गोष्ठी की ओर से मैसूर विश्वविद्यालय के गणित के आचार्य श्री एम० वी० जम्बुनाथन् का स्वागत किया गया जिसमें जलपान का भी आयोजन किया गया था। ३ ज्येष्ठ को दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार' पर उनका भाषण भी हुआ।

२५ श्रावण को गोष्ठी की ओर से प० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' के सभापतित्व में तुलसीजयंती मनाई गई। आरंभ में हरिऔधजी के पौत्र श्री मुकुंददेव शर्मा ने 'हरिऔध' विरचित "बन राम रसायन की रसिका रसना रसिकों की हुई सफला" से प्रारंभ होनेवाले पद का बड़े ही सुरीले स्वर में पाठ किया। तत्पश्चात् पं० लालधर त्रिपाठी ने 'तुलसी का महत्त्व' पर भाषण दिया तथा पं० प्यारेलालजी शर्मा 'व्यास' द्वारा रामायण की कथा हुई। इसके अनंतर श्री संपूर्णानंदजी ने अपने विद्वत्तापूर्ण भाषण द्वारा यह बतलाया कि गोस्वामीजी की कृति में धनुर्धारी राम द्वारा अनाचारी रावण के संहार तथा आर्य-साम्राज्य की प्रतिष्ठा का वर्णन पढ़कर हिंदुओं का पुन साम्राज्य-रक्षा की ओर ध्यान गया। इसके पश्चात् पं० रामनरेश त्रिपाठी तथा पं० चंद्रबलीजी पांडे के व्याख्यान हुए और भी 'कौतुक' जी का कविता पाठ हुआ।

अंत में सभापति महोदय ने 'तुलसी के काव्य' पर विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिया।

१४ कार्तिक को काशी विश्वविद्यालय के वयोवृद्ध पंडित प्रमथनाथ तर्कभूषण के सभापतित्व में 'कालिदास-दिवस' मनाया गया। आरंभ में जयनारायण स्कूल के छात्रों द्वारा कविता पाठ हुआ। श्री श्रीराम जी ने कालिदास के रघुवंश के सरस स्थलों का बड़े ही मधुर स्वर में पाठ किया। इसके पश्चात् पं० केशवप्रसाद मिश्र, श्रीस पूर्णानंदजी, डाक्टर मंगलदेव शास्त्री, पं० महादेव शास्त्री, पं० रामबालक शास्त्री, पं० पद्मनारायण आचार्य, पं० सीताराम चतुर्वेदी, पं० कान्तानाथ पांडेय आदि के भाषण हुए।

१३ पौष को कर्नाटक प्रांत के प्रसिद्ध संगीतविशारद श्री वी० आर० पुराणिकजी ने अपनी उच्च कोटि की संगीतकला का प्रदर्शन किया।

संगीत द्वारा हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि होती रहती है। इस निधि में यदि कुछ अधिक धन होता तो सभा प्रसिद्ध संगीतज्ञों को समय समय पर निमंत्रित करती रहती।

इस वर्ष 'प्रसाद' व्याख्यान-माला में व्याख्यान देनेवाले सज्जनों के नाम और उनके विषय नीचे दिए जाते हैं—

नाम	विषय
(१) श्री स पूर्णानंद	आर्यों का मूल निवास-स्थान भारत ही था
(२) ,, ,,	,,
(३) पं० शिवनाथ सरस्वती	आर्य संस्कृति
(४) प्राणाचार्य कविराज प्रतापसिंह	बच्चों के रोग
(५) ,, ,,	युवकों के रोग
(६) पं० रामनरेश त्रिपाठी	ग्रामगीत
(७) श्री डा० उदयभानु	मानस चिकित्सा

पुरस्कार और पदक

उत्तम और मौलिक ग्रंथकर्ताओं को नियमानुसार जो पदक तथा पुरस्कार सभा दिया करती है उनकी निधियों का विवरण परिशिष्ट ८ में

दिया गया है। ये निधियाँ ट्रेजरर, चैरिटेबल एंडाउमेंट संयुक्तप्रांत के पास जमा कर दी गई हैं और उनके ब्याज से ये पुरस्कार और पदक दिए जाते हैं।

जिस प्रकार ये पुरस्कार और पदक दिए जाते हैं उसका विवरण निम्नलिखित है—

राजा बलदेवदास बिड़ला पुरस्कार—श्रीमान् राजा बलदेवदास बिड़ला की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार संवत् १९९७ से प्रति चौथे वर्ष दिया जायगा। इस बार यह पुरस्कार १ माघ १९९३ से २९ पौष १९९७ तक प्रकाशित अध्यात्म, योग, सदाचार, मनोविज्ञान और दर्शन के सर्वोत्तम ग्रंथ के लिये दिया जायगा।

यदुकप्रसाद पुरस्कार—२००) का यह पुरस्कार स्वर्गवासी राय बहादुर बाबू यदुकप्रसाद खत्री की दी हुई निधि से सर्वोत्तम मौलिक उपन्यास या नाटक के लिये संवत् १९९८ से प्रति चौथे वर्ष दिया जायगा। इस बार १ माघ १९९४ से २९ पौष १९९८ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक के लिये यह पुरस्कार संवत् १९९८ में दिया जायगा।

रत्नाकर पुरस्कार (१)—स्वर्गवासी श्री जगन्नाथदास 'रत्नाकर' की दी हुई निधि से २००) का यह पुरस्कार ब्रजभाषा के सर्वोत्तम ग्रंथ के लिये प्रति चौथे वर्ष दिया जायगा। अगला पुरस्कार १ माघ १९९४ से ९ पौष १९९८ तक प्रकाशित सर्वोत्तम ग्रंथ पर सं० १९९८ में दिया जायगा।

रत्नाकर पुरस्कार (२)—यह दूसरा रत्नाकर पुरस्कार भी २००) का है। यह पुरस्कार ब्रजभाषा के सदृश हिंदी की अन्य भाषाओं (यथा डिंगल, राजस्थानी, अवधी, बुंदेलखंडी, भोजपुरी, छत्तीस गढ़ी आदि) की सर्वोत्तम रचना अथवा सुसंपादित ग्रंथ के लिये प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ १९९५ से २९ पौष १९९९ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर सं० १९९९ में दिया जायगा।

डाक्टर छन्नूलाल पुरस्कार—श्रीयुत पंडित रामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से यह २००) का पुरस्कार विज्ञान-विषयक सर्वोत्तम ग्रंथ पर प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार

१ माघ १९९६ से २९ पौष सं० २००० तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर स० २००० में दिया जायगा।

जोधसिंह पुरस्कार—उदयपुर के स्वर्गवासी मेहता जोधसिंह की दी हुई निधि से यह २००) का पुरस्कार सर्वोत्तम ऐतिहासिक प्रब के लिये प्रति चौथे वर्ष दिया जाया करेगा। आगामी पुरस्कार १ माघ स० २००१ से २९ पौष स० २००५ तक की प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर स० २००५ में दिया जायगा।

डा० हीरालाल स्वर्णपदक—स्वर्गवासी रायबहादुर डाक्टर हीरालाल की दी हुई निधि से एक स्वर्णपदक सभा द्वारा पुरातत्त्व, मुद्राशास्त्र, इंडोलाजी, भाषाविज्ञान तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी म लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध पर प्रति दूसरे वर्ष दिया जायगा। अब यह पदक १ वैशाख ९४ से ३० चैत्र ९५ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक या निबंध पर दिया जायगा।

द्विवेदी स्वर्णपदक—स्वर्गीय आचार्य पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी की प्रदान की हुई निधि से प्रति वर्ष यह स्वर्ण-पदक हिंदी में सर्वोत्तम पुस्तक के रचयिता को दिया जाता है। इस वर्ष यह पदक १ वैशाख १९९५ से ३० चैत्र १९९६ तक प्रकाशित सर्वोत्तम पुस्तक पर दिया जाना था पर अभी पुस्तकों पर विचार नहीं हो सका है अतः अब आगामी वर्ष विचार करके यह पदक दिया जायगा।

सुधाकर पदक—स्वर्गीय बाबू गौरीशंकरप्रसाद ऐडवोकेट की दी हुई निधि से यह रौप्यपदक बटुकप्रसाद पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जायगा।

ग्रीव्ज पदक—श्रीयुत पं० रामनारायण मिश्र की दी हुई निधि से यह रौप्यपदक डा० छन्नूलाल पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जायगा।

राधाकृष्णदास पदक—श्रीयुत बाबू शिवप्रसाद गुप्त की दी हुई निधि से यह रौप्यपदक रत्नाकर पुरस्कार स० १ पानेवाले सज्जन को दिया जायगा।

बलदेवदास पदक—श्रीयुत बाबू मंगलप्रसाद वकील की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक रत्नाकर पुरस्कार सं० २ प्राप्त करनेवाले सज्जन को दिया जायगा।

गुलेरी पदक—स्वर्गीय श्रीयुत पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की स्मृति में श्रीयुत पं० जगद्धर शर्मा गुलेरी की दी हुई निधि से यह रौप्य पदक जोध सिंह पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जायगा।

रेडिचे पदक—यह रौप्य पदक बिड़ला पुरस्कार पानेवाले सज्जन को दिया जायगा। इसके लिये सभा को ३७) चंदे से प्राप्त हुए थे। सभा ने शेष रुपए पूरे करके इसकी भी निधि स्थापित कर दी है।

संकेत लिपि विद्यालय

इस विद्यालय में इसके अध्यक्ष पं० निष्कामेश्वर मिश्र की आविष्कृत प्रणाली से संकेतलिपि की तथा इसके प्रधानाध्यापक श्री गोवर्धनदास गुप्त लिखित 'हिंदी टाइप राइटिंग' के आधार पर हिंदी टाइप राइटिंग की शिक्षा दी जाती है। इस समय यहाँ से उत्तीर्ण विद्यार्थी सरकारी विभागों, रियासतों तथा बड़े-बड़े व्यापारियों के कार्यालयों में काम कर रहे हैं।

इस वर्ष के अंत तक इस विद्यालय में ३२ विद्यार्थियों ने शिक्षा प्राप्त की। इनमें कइ दो दूर-दूर के प्रांतों और रियासतों से केवल इसी विषय की शिक्षा प्राप्त करने यहाँ आए थे।

दो वर्ष पूर्व केवल उर्दू जाननेवाले संवाददाताओं को ही सरकारी गुप्तचर विभाग में विशेषता दी जाती थी, परंतु अब उसमें हिंदी संवाददाताओं की भी माँग बढ़ती जा रही है।

खेद है कि धन के अभाव के कारण विद्यालय की उन्नति में बड़ी बाधा उपस्थित हो रही है। विद्यालय का मुख्य उद्देश्य यह है कि उसके विद्यार्थी सभी क्षेत्रों में पहुँचकर हिंदी का प्रचार करें। इसके लिये हिंदी में कइ उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन बहुत आवश्यक है। विद्यालय पुस्तकें तैयार करा सकता है पर उनके प्रकाशन के लिये धन का प्रबंध नहीं है।

संबद्ध संस्थाएँ

जो संस्थाएँ सभा से संबद्ध हैं उनकी सूची परिशिष्ट ७ में दी गइ है। उनमें से जिनका विवरण समय पर प्राप्त हुआ, उनका उल्लेख यहाँ किया जाता है—

हिंदी प्रचारिणी सभा, जम्मू—यह संस्था कश्मीर में अच्छा काम कर रही है। कश्मीर-सरकार की शिक्षा-संगठन समिति की सिफारिश थी कि कश्मीर में शिक्षा का माध्यम उर्दू ही रहे। उक्त सभा ने इसके विरोध में बहुत प्रयत्न किया। इससे कश्मीर में लोकमत जागरित हुआ और कश्मीर-सरकार ने यह आज्ञा निकाली कि प्राइमरी स्कूलों में सरल उर्दू शिक्षा का माध्यम होगी जो फारसी और नागरी दोनों लिपियों में लिखी जाया करेगी।

स्टेट हाईकोर्ट आव जुडीकेचर में भाषा उर्दू है, पर इस सभा ने एक दरख्वास्त हिंदी में दिलाई जो कुछ आना कानी के बाद स्वीकार कर ली गई।

राज्य की प्रजासभा में प्रश्नों, बिलों, प्रस्तावों आदि के विवरण अब तक अँगरेजी और उर्दू में ही लिए जाते थे पर सभा के प्रयत्नों से यह घोषणा हो चुकी है कि अब से विवरण हिंदी में भी लिए जायँगे। कश्मीर के सरकारी गजट तथा अन्य सूचनाओं को अँगरेजी, उर्दू के अतिरिक्त हिंदी में भी प्रकाशित करने के लिये दस हजार हस्ताक्षरों के साथ सरकार के पास अनुरोधपत्र भेजने का आयोजन किया जा रहा है।

जनगणना के संबंध में हिंदीभाषियों को सचेत करने के लिये इस सभा ने बीस हजार 'पोस्टर' छपाकर रियासत के सभी भागों में प्रचार किया।

अब तक इस सभा की चार शाखाएँ थीं, अब अखनूर में एक शाखा और खोली गई है। सभा के सभासदों की संख्या २०० से ऊपर है। जम्मू नगर में एक विशाल 'पुस्तकालय' स्थापित करने का प्रयत्न प्रारंभ हो गया है।

नागरी प्रचारिणी सभा, मगधानपुर रत्ती, मुजफ्फरपुर—इस सभा का अब चौदहवाँ वर्ष समाप्त हुआ। इस वर्ष इसके प्रयत्न से आसपास के स्थानों में सात पुस्तकालय खोले गए। सभा के पुस्तकालय में २१६ नई पुस्तकें खरीदी गईं। कई सज्जनों ने पुस्तकें भेंट भी कीं। घर पुस्तकें ले जानेवालों की संख्या ११४३ रही। वाचनालय में १२ पत्र-पत्रिकाएँ आती रहीं। वाचनालय में पाठकों की संख्या ३६८ रही। वाचनालय खुलने का समय सायंकाल ४ से ९ बजे तक है।

इस सभा के खोज-विभाग ने इस वर्ष चार हस्तलिखित ग्रंथ प्राप्त किए। वैशाली से भगवान् बुद्ध की दो प्रस्तरमूर्तियाँ भी प्राप्त की गई। एक ध्यानमग्न व्यक्ति की पीतल की मूर्ति भी मिली है। चाँदी और मिट्टी के कुछ सिक्के मिले हैं जिनपर उर्दू तथा पाली में लेख हैं।

जनगणना में हिंदी लिखवाने के संबंध में सभा ने सूचनाएँ छपाकर बँटवाई। इसके द्वारा तुलसी और हरिश्चंद्रजयंती भी यथासमय मनाई गई।

गाँव में स्थित होकर भी यह सभा बहुत अच्छा कार्य कर रही है।

सुहृद्-संघ, मुजफ्फरपुर—छ वर्षों से यह संस्था हिंदी की अच्छी सेवा कर रही है। हिंदुस्तानी तथा रेडियो की भाषा का विरोध और अदालतों में हिंदी प्रचार के संबंध में इसने बिहार में अच्छा प्रयत्न किया। इस वर्ष इसने बिहार की साक्षरता प्रसार-समिति के इस निर्णय का घोर विरोध किया कि संथालियों के लिये प्राइमरी पुस्तकें रोमन लिपि में तैयार कराई जायँ। इसमें उसे बहुत कुछ सफलता भी मिली।

संघ का पुस्तकालय और वाचनालय भी है। वाचनालय में ६० पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं। नित्य के पाठकों की संख्या इस वर्ष ६० और ७० के बीच रही। संघ की ओर से हिंदी साहित्य-सम्मेलन की प्रथमा और मध्यमा परीक्षा के परीक्षार्थियों को निःशुल्क पुस्तकें देने तथा उनके लिये उपयोगी व्याख्यान दिलाने का भी प्रबंध किया गया।

संघ ने ग्रामगीतों का संग्रह-कार्य भी आरंभ किया है। इस विभाग के मंत्री श्री रामइकबाल 'राकेश' के प्रयास से अब तक १५०० गीतों का संग्रह हो चुका है।

संघ ने अपना भवन बनवाने के लिये इस वर्ष भूमि खरीद ली है। इसके लिये बिहार सरकार से भी सहायता मिली है। भवन बनवाने का प्रयत्न हो रहा है।

डा० राजेंद्रप्रसाद ने इस संघ का कार्य देखकर इसके विषय में बहुत अच्छी सम्मति दी है।

प्रसाद-परिषद्, काशी—परिषद् का यह तीसरा वर्ष समाप्त हुआ इस अल्प-काल में ही इसने अपने विभिन्न सुरुचिपूर्ण आयोजनों द्वारा काशी के साहित्यिक जीवन में अपना एक विशेष स्थान बना लिया है।

पर वर्ष के अंत में २०२७७।।।)११ का ऋण हो गया। इसमें लगभग ९५००) बाजार का देना है, बाकी सभा के ही अन्य विभागों तथा मालाओं का लग गया है। यह कुल धन सभा के प्रकाशन में लगा हुआ है। सभा का साधारण व्यय आय से अधिक है। सभासदों का चंदा पत्रिका के प्रकाशन में ही खर्च हो जाता है। वास्तव में उससे पत्रिका से बंधी व्यय पूरा नहीं हो पाता। प्रकाशन से जो बचत होती है वह पुस्तकालय, कलाभवन तथा फुटकर खर्च एवं डाकव्यय के लिये पर्याप्त होती है परंतु लगभग ३०००) कार्यालय के वेतन आदि की पूर्ति का कोई साधन नहीं है। यह धन स्थायी कोष के ब्याज से दिया जा सकता है परंतु इस मद में अभी बहुत कम धन जमा हुआ है। आशा है सवसाधारण इधर ध्यान देंगे। ३०००) की आय बढ़े बिना सभा के ऋण की पूर्ति असंभव प्रतीत होती है। जब तक ऐसा न होगा ऋण बढ़ता ही जायगा।

हिंदी प्रचार

इस वर्ष पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए० ने सभा की ओर से लखनऊ, मेरठ, देहरादून, सहारनपुर, हरिद्वार, बरेली आदि स्थानों में हिंदी-प्रचार के लिये यात्रा की। उनके प्रयत्न का अच्छा फल हुआ और सभा के बहुत से सभासद भी बने।

बरेली की कचहरी में वहाँ के कुछ उत्साही हिंदी-प्रेमियों ने प्रयत्न करके एक हिंदी लेखक नियुक्त किया है। उसके खर्च के लिये सभा ने भी एक वर्ष तक ५) मासिक के हिसाब से सहायता देना स्वीकार किया।

दिसंबर के अंत में मद्रास में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा और जनवरी के आरंभ में पंजाब प्रांतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन हुए। द० भा० हिं० प्र० सभा ने अपने प्रचारक-सम्मेलन और पं० प्रां० सा० सम्मेलन ने अपने शिक्षा-सम्मेलन के सभापतित्व के लिये सभा के उपसभापति पंडित रामनारायण मिश्र को आमंत्रित किया। मिश्रजी ने हिंदी प्रचार-व्रती होने के नाते काशी से मद्रास हैदराबाद और पंजाब की लंबी यात्रा का कष्ट स्वीकार किया, फिर १ फरवरी को वे जौनपुर जिला हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के १६वें वार्षिकोत्सव के सभापति हुए।

उक्त तीनों सम्मेलन मिश्रजी के सभापतित्व में खूब सफल रहे, और उनके द्वारा हिंदी का अच्छा प्रचार हुआ।

वार्षिकोत्सव

१३ १४ फरवरी को बरेली निवासी कथावाचस्पति पं० राधेश्यामजी वानप्रस्थी के सभापतित्व में सभा का वार्षिकोत्सव मनाया गया। इसमें हिंदी के संबंध में कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत हुए। यह उत्सव इस दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण रहा कि हिंदी के एक सच्चे और समर्थ सेवक पं० राधेश्यामजी की सेवाएँ सभा को पहले पहल प्राप्त हुईं। उन्होंने सभा की कठिन आर्थिक स्थिति के साथ पूर्ण सहानुभूति दिखलाई और वचन दिया कि सन् १९४१ में वे विशेष रूप से धनसंग्रह आदि द्वारा सभा का ही कल्याण साधन करेंगे। सभा इसके लिये हृदय से उनकी कृतज्ञ है।

सभा की अर्धशताब्दी और महाराज विक्रमादित्य की द्विसहस्राब्दी

विक्रमाय द्विसहस्राब्दी की पूर्ति का समय अब निकट आ रहा है। उसी समय सभा के ५० वर्ष भी पूरे हो जायँगे। इस महान् अवसर पर सभा अपनी अर्धशताब्दी तथा महाराज विक्रम की द्विसहस्राब्दी साथ साथ मनाएगी। सभा ने निश्चय किया है कि इस अवसर पर एक महोत्सव किया जाय और भारत की सभी भाषाओं के विद्वानों की सभा की जाय। सभी लेखकों और कवियों से प्रार्थना की जाय कि वे इस विषय पर अपने अपने मंतव्य प्रकट करें और उन मंतव्यों को एक बड़े स्मारक ग्रंथ में प्रकाशित किया जाय तथा श्रीमानों की सहायता से एक भव्य स्मारक बनवाया जाय।

सभा देश के श्रीमानों, कवियों, लेखकों और विद्वानों से विशेष रूप से इस महोत्सव में सफलता के लिये सहयोग की प्रार्थना करती है।

'हिंदी' (मासिक पत्रिका)

सभा ने इस वर्ष अपने तत्वावधान में 'हिंदी' नाम की एक मासिक पत्रिका निकालने की स्वीकृति दी। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा और नागरी लिपि का प्रचार तथा उसपर अनेक ओर और प्रकार से होनेवाले आघातों से उसकी रक्षा करना है। सभा ने इसकी आर्थिक व्यवस्था से अपना कोई संबंध नहीं रखा और न इसकी नीति का उत्तरदायित्व ही ग्रहण किया है। इसके संपादक, प्रकाशक और मुद्रक पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए० हैं और इसकी व्यवस्था तथा-नीति की देख भी वही करते हैं।

'हिंदी' के जो चार अंक अब तक प्रकाशित हुए हैं उनसे 'हिंदी' के आविर्भाव की आवश्यकता सार्थक प्रमाणित हुई है। लोगों ने इसका स्वागत भी किया है। परंतु आवश्यकता है उसके अधिक से अधिक प्रचार की। इसी प्रचार के उद्देश्य से इस पत्रिका का वार्षिक मूल्य बहुत ही कम--भारत में 1|), ब्रह्मदेश में 1||) और विदेश में [illegible] रखा गया है। हिंदी प्रेमियों को चाहिए कि इसके ग्राहक बनें तथा जितने हो सकें और ग्राहक भी बनाकर हिंदी-सेवा के इस कार्य में हाथ बँटावें।

मेरठ, ५

इसका प्रतिवाद होता रहा। भारत के प्रधान सिक्के—रुपए—पर हिंदी अक्षरों को पहले ही से स्थान नहीं मिला था। इधर जो नए रुपए और एक रुपए के नोट चले उनपर भी उनके दर्शन नहीं हुए। कुछ दिन हुए, 'रायल इंडियन नेवी' की ओर से एक विज्ञप्ति निकली थी जिसमें ऐसे पढ़े-लिखे रंगरूटों या नौकरों की माँग थी जो अँगरेजी अथवा हिंदुस्तानी पढ़ लिख सकते हों—हिंदुस्तानी वह नहीं जो नागरी और उर्दू लिपियों में लिखी जाती हो, बल्कि रोमन और उर्दू लिपियों में लिखी जानेवाली हिंदुस्तानी। इसके विरुद्ध भी पत्रों में लिखापढ़ी हुई।

रेडियो

रेडियो स्टेशनों की धाँधली भी प्राय: उसी प्रकार चलती रही। हिंदुस्तानी के नाम पर अब भी उर्दू का ही ढोल पीटा जाता है। हिंदी की जो दुर्गति रेडियो में की जाती है उस पर अत्यंत दुःख और साथ ही आश्चर्य भी होता है। लाहौर, दिल्ली और लखनऊ के रेडियो-स्टेशनों से गत जनवरी और फरवरी मास में २५४४ रचनाएँ सुनाई गईं। इनमें २५३० तो उर्दू कवियों की थीं और केवल १४ हिंदी कवियों की। उन १४ में भी केवल तुलसीदास, सूरदास और मीरा आदि के अतिरिक्त हिंदी के किसी भी नए कवि का नाम नहीं। और उधर उर्दू में गालिब से लेकर जिगर तक सभी कवि विद्यमान थे। रेडियो में हिंदी की छीछालेदर के नमूने हिंदी-प्रेमियों के समक्ष निरंतर पर्याप्त संख्या में उपस्थित किए गए। उदाहरणार्थ ३१ अक्टूबर को लखनऊ रेडियो में जो कालिदास-जयंती मनाई गई थी उसमें 'श्रद्धांजलि' को 'सिरधांजली', 'महारथी' को 'महार्थी', 'प्रभावित' को 'परभावत', 'प्रवाह' को 'पुरवाह', 'साहित्य' को 'साहित्या' और 'नाटक' को 'नाटिक' कहला कर इस प्रकार के अनेक शब्दों की जो मरम्मत की गई वह रेडियो कार्यक्रम में साधारण सी बात हो रही है।

रेडियो की भाषा नीति के विरोध में इस वर्ष समाचारपत्रों में काफी चर्चा हुई। हिंदी के सभी प्रमुख पत्रों और प्रांत के अँगरेजी पत्रों में भी, जिनमें "लीडर" मुख्य है, इस विषय के अनेक लेख प्रकाशित किए। लखनऊ में रेडियो सुननेवालों का एक संघ स्थापित हुआ और उसकी ओर से "आकाशवाणी" नाम की पाक्षिक पत्रिका भी (जो कुछ दिनों के

'हिंदी' (मासिक पत्रिका)

सभा ने इस वर्ष अपने तत्त्वावधान में 'हिंदी' नाम की एक मासिक पत्रिका निकालने की स्वीकृति दी। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदी भाषा और नागरी लिपि का प्रचार तथा उसपर अनेक ओर और प्रकार से होनेवाले आघातों से उसकी रक्षा करना है। सभा ने इसकी आर्थिक व्यवस्था से अपना कोई संबंध नहीं रखा और न इसकी नीति का उत्तरदायित्व ही ग्रहण किया है। इसके संपादक, प्रकाशक और मुद्रक पं० चंद्रबली पांडे, एम० ए० हैं और इसकी व्यवस्था तथा नीति की देख-रेख भी वही करते हैं।

'हिंदी' के जो चार अंक अब तक प्रकाशित हुए हैं उनसे 'हिंदी' के आविर्भाव की आवश्यकता सार्थक प्रमाणित हुई है। लोगों ने उसको पसंद भी किया है। परंतु आवश्यकता है उसके अधिक से अधिक प्रचार की। इसी प्रचार के उद्देश्य से इस पत्रिका का वार्षिक मूल्य बहुत ही कम—भारत में ॥), प्रदेश में ॥।) और विदेशों में १॥)—रखा गया है। हिंदी प्रेमियों को चाहिए कि इसके स्वयं ग्राहक बनें तथा जितने हो सकें और ग्राहक भी बनाकर हिंदी-सेवा के पुनीत कार्य में हाथ बँटायें।

हिंदी की प्रगति

गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष हिंदी की प्रगति अधिक व्यापक और अधिक हलचलों से पूर्ण रही। हिंदी के विरोधियों ने उसपर अपना चौमुख आक्रमण खुले और छिपे रूप में अधिक वेग और चेष्टापूर्वक जारी रखा। हिंदी के नाम और रूप के संबंध का झगड़ा भी चलता रहा। परंतु संतोष की बात है कि हिंदी अपने मार्ग पर दृढ़ता के साथ अग्रसर होती रही और विरोध और कठिनाइयों ने उसे अधिकाधिक बल ही प्रदान किया।

भारत की केंद्रीय सरकार और पंजाब तथा बंबई की प्रांतीय सरकारों ने हिंदी के प्रति जो नीति बरती उससे हिंदीभाषी जनता की धारणा प्रबल होती गई कि उन्होंने हिंदी के साथ न्याय नहीं किया। इस कारण हिंदीभाषाभाषी जनता में क्षोभ हुआ और पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर

इसका प्रतिवाद होता रहा। भारत के प्रधान सिक्के—रुपए—पर हिंदी अक्षरों को पहले ही से स्थान नहीं मिला था। इधर जो नए रुपए और एक रुपए के नोट चल उनपर भी उनके दर्शन नहीं हुए।' कुछ दिन हुए, 'रायल इंडियन नेवी' की ओर से एक विज्ञप्ति निकली थी जिसमें ऐसे पढ़े-लिखे रंगरूटों या नौकरों की माँग थी जो अँगरेजी अथवा हिंदुस्तानी पढ़ लिख सकते हों—हिंदुस्तानी वह नहीं जो नागरी और उर्दू लिपियों में लिखी जाती हो, बल्कि रोमन और उर्दू लिपियों में लिखी जानेवाली हिंदुस्तानी। इसके विरुद्ध भी पत्रों में लिखापढ़ी हुई।

रेडियो

रेडियो स्टेशनों की धाँधली भी प्राय उसी प्रकार चलती रही। हिंदुस्तानी के नाम पर अब भी उर्दू का ही ढोल पीटा जाता है। हिंदी की जो दुर्गति रेडियो में की जाती है उस पर अत्यंत दुःख और साथ ही आश्चर्य भी होता है। लाहौर, दिल्ली और लखनऊ के रेडियो-स्टेशनों से गत जनवरी और फरवरी मास में २५४४ रचनाएँ सुनाई गईं। इनमें २५३० तो उर्दू कवियों की थीं और केवल १४ हिंदी कवियों की। उन १४ में भी केवल तुलसीदास, सूरदास और मीरा आदि के अतिरिक्त हिंदी के किसी भी नए कवि का नाम नहीं। और उधर उर्दू में गालिब से लेकर जिगर तक सभी कवि विद्यमान थे। रेडियो में हिंदी की छीछालेदर के नमूने हिंदी प्रेमियों के समक्ष निरंतर पर्याप्त संख्या में उपस्थित किए गए। उदाहरणार्थ ३१ अक्टूबर को लखनऊ रेडियो में जो कालिदास-जयंती मनाई गई थी उसमें 'श्रद्धांजलि' को 'सिरधांजली', 'महारथी' को 'महार्थी', 'प्रभावित' को 'परभावत', 'प्रवाह' को 'पुरवाह', 'साहित्य' को 'साहित्या' और 'नाटक' को 'नाटिक' कहला कर इस प्रकार के अनेक शब्दों की जो मरम्मत की गई वह रेडियो कार्यक्रम में साधारण सी बात हो रही है।

रेडियो की भाषा-नीति के विरोध में इस वर्ष समाचारपत्रों में काफी चर्चा हुई। हिंदी के सभी प्रमुख पत्रों और प्रांत के अँगरेजी पत्रों में भी, जिनमें "लीडर" मुख्य है, इस विषय के अनेक लेख प्रकाशित किए। लखनऊ में रेडियो सुननेवालों का एक संघ स्थापित हुआ और उसकी ओर से "आकाशवाणी" नाम की पाक्षिक पत्रिका भी (जो कुछ दिनों के

मात्र मासिक हो गई) निकलने लगी। उसमें रेडियो की भाषा की ही विस्तृत आलोचना रहा करती है। दिल्ली की हिंदी साहित्य सभा ने भी इस क्षेत्र में विशेष प्रयत्न किया। इन प्रयत्नों का रेडियो अधिकारियों पर अभी तक कोई विशेष प्रभाव नहीं दिखाई पड़ता। परंतु हिंदीभाषी जनता में अब कुछ चेतना के लक्षण दिखाई पड़ने लगे हैं। दृढ़तापूर्वक उचित प्रयत्न करते रहने से अंत में सफलता तो निश्चित ही है।

वैज्ञानिक शब्द उपसमिति

इस वर्ष भारत सरकार की शिक्षा की केंद्रीय परामर्शदात्री परिषद् ने भारत की प्रादेशिक भाषाओं के लिये एक समान वैज्ञानिक शब्दावली बनाने पर विचार करने के उद्देश्य से एक उपसमिति बनाई। उसकी एक बैठक दक्षिण हैदराबाद में १५ १६ अक्टूबर १९४० को हुई। समान वैज्ञानिक शब्दावली के संबंध में उक्त परिषद् ने जो नीति स्वीकार की है उसका आधार बंबई सरकार के शिक्षाविभाग के डिप्टी डाइरेक्टर श्री० एम० सोल, आई० ई० एस० की वह योजना है जिसमें कहा गया है कि 'वैज्ञानिक शब्दावली का मुख्य और समान भाग जो प्रमुख भारतीय भाषाओं के लिये प्रस्तुत होगा वह व्यापक रूप से अँगरेजी शब्दावली से ग्रहण किया जाय।' आश्चर्य है कि एक तो प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइसचांसलर पं० अमरनाथ झा ही उक्त समिति में हिंदी के समर्थक समझे जाते थे और सुनते हैं कि उन्होंने भी इसी नीति का समर्थन किया है और अपनी सम्मति अँगरेजी से पारिभाषिक शब्दों को ग्रहण करने के पक्ष में दी है।

अँगरेजी की शब्दावली ग्रहण करने में मुख्य सुविधा यह कही जाती है कि अँगरेजी के शब्द देश भर में प्रचलित हो गए हैं, अतः उन्हें ग्रहण करने से संस्कृत अरबी के झगड़े से अनायास बचा जा सकता है। दूसरे यूरप के देशों में भी अँगरेजी के ही शब्द प्रचलित होने के कारण विदेशों में प्रकाशित पुस्तकों और पत्रिकाओं से भी लाभ उठाया जा सकता है। इस तर्क में कुछ सत्य अवश्य है पर यह सर्वथा सत्य नहीं है। इस देश में अभी केवल ६ प्र० श० के लगभग ही लोग शिक्षित हो पाए हैं, उनमें भी अँगरेजी जाननेवालों की संख्या बहुत ही कम है और उनमें विज्ञान

पढ़नेवालों की संख्या तो नगण्य भी हो है। फिर यह नहीं कहा जा सकता कि यहाँ अँगरेजी शब्दों का इतना प्रचार हो गया है कि उन्हें ग्रहण करना आसान होगा। इस समय अँगरेजी से अनभिज्ञ लोगों में अँगरेजी शब्दों के प्रचार में जितनी सुगमता होगी उससे कहीं अधिक सुगमता और सुविधा संस्कृत शब्दों को ग्रहण करने में होगी, क्योंकि केवल दो एक प्रांतों को छोड़कर सभी प्रांतों की भाषाएँ संस्कृत के अति निकट हैं। यूरप में भी, जैसा कि डा० सत्यप्रकाश ने पूना में हिंदी-साहित्य-सम्मेलन की विज्ञान-परिषद् के अध्यक्ष पद से कहा था, तीन प्रमुख भाषाओं के शब्द विज्ञान में प्रचलित हैं। वहाँ अँगरेजी के अतिरिक्त जर्मन और रूसी भाषाओं की भी अपनी स्वतंत्र शब्दावलियाँ हैं। अत अँगरेजी के शब्द ग्रहण करने से विदेशों म प्रकाशित विज्ञान संबंधी सब पुस्तकों और पत्रिकाओं से लाभ उठाना सहज न होगा।

इसमें संदेह नहीं कि विज्ञान अथवा कलाशिल्पसंबंधी जो अँगरेजी अथवा अन्य विदेशी शब्द, देशभाषाओं में सर्वसाधारण द्वारा अपनाए जा चुके हैं उन्हें निकाल बाहर करने का प्रयत्न न तो सुकर होगा और न उचित, तथापि यदि नए शब्दों को गढ़ने की आवश्यकता पड़ेगी तो उनके लिये संस्कृत का सहारा लेना ही पड़ेगा। काइ ऊटपटाँग हिंदुस्तानी भाषा गढ़ने से काम नहीं चलेगा, जैसा कि बिहार की हिंदुस्तानी कमेटी ने अपन प्रयत्नों से सिद्ध कर दिया है। उक्त कमेटी क गढ़े शब्दों के कुछ मनोरंजक नमूने यहाँ दे देना पर्याप्त होगा—

प्लैनेट—चलतारा। ईक्वेटर—समबाँटी। इस्मस—जमीन जोड़। स्ट्रेट—पननोड़। होराइजन—नजर फेर। ऐटमॉस्फियर—हवागोला। एक्वियम—माप सच। पॉस्चुलेट—मानसच। टैंजेंट—घेराचूम। पालीगन—बहुत बाहीं। निगटिव—घट। पॉजिटिव—जुट।

सभा ने केंद्रीय शिक्षा परामर्शदात्री समिति की वैज्ञानिक शब्द उपसमिति में भारतीय भाषाओं का समुचित प्रतिनिधित्व स्वीकार कराने क लिये शिक्षा-कमिश्नर से पत्रव्यवहार किया था और पत्रों द्वारा भी इस विषय में आंदोलन किया गया था। पर इसका कोई उत्तर नहीं मिला।

जनगणना

इस वर्ष फरवरी में भारत सरकार की ओर से भारत के मनुष्यों की गणना की गई। युक्त प्रांत के गणकों के संकेतार्थ एक "फ़ेहरिस्त सवालात" छपी थी। उसमें मातृभाषा संबंधी मुख्य अंश इस प्रकार दिया हुआ था—

"१८—आपकी मादरी ज़बान क्या है ?

हिदायत—(मादरी ज़बान) यह दर्ज कीजिए कि उस शख़्स की मादरी ज़बान क्या है। यानी उस शख़्स ने कौन सी ज़बान सबसे पहले बोली। दूध पीते बच्चों और गूँगे, बहरे लोगों की ज़बान वही दर्ज की जायगी जो उनकी माँ की है। सूबे की आम लोगों की ज़बान का "हिंदुस्तानी" दर्ज कीजिए। उर्दू या हिंदी न दर्ज कीजिए। पहाड़ी बोली के लिये भी हिंदुस्तानी दर्ज होगी।"

इस प्रकार जिन स्थानों की मातृभाषा हिंदी है वहाँ की मातृभाषा "हिंदुस्तानी' लिखने के लिये गणकों को आदेश दिया गया था। सरकारी हल्कों और उर्दू के पक्षपातियों का हिंदुस्तानी से क्या अभिप्राय है, यह बतलाने की आवश्यकता नहीं। उर्दू के विद्वानों ने तो उसके विषय में अपने विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त कर दिए हैं।

"अगर कोई पूछे कि सूबा बिहार की मादरी ज़बान क्या है तो जवाब हर तरफ़ से यही मिलेगा कि "हिंदुस्तानी जिसको आम तौर से उर्दू कहा जाता है।"

(नुकूशे सुलेमानी पृ० ७५९)

दिसंबर सन् ४० में कानपुर में दूसरे अखिल भारतीय उर्दू सम्मेलन के अध्यक्ष पद से सर अब्दुल कादिर ने कहा था कि उर्दू भारत की राष्ट्रभाषा बनाई जा सकती है और उर्दू और हिंदुस्तानी में कोई अंतर नहीं है। जब पंजाब जैसे प्रांतों में उर्दू वालों को अपनी मातृभाषा 'उर्दू' लिखाने का अधिकार हो और युक्त प्रांत तथा बिहार में हिंदीभाषियों की मातृभाषा 'हिंदुस्तानी' लिखी जाय (जिसका अर्थ प्रत्येक अवस्था में 'उर्दू' ही सिद्ध किया जायगा) तो हिंदीभाषियों का अस्तित्व कहाँ रहेगा, यह बताने की आवश्यकता नहीं।

सभा ने जनगणना-विभाग के भाषा-संबंधी उपर्युक्त आदेश का विरोध करने के लिये हिंदी-दिवस मनाने का आयोजन किया था और पत्रों द्वारा हिंदी की सभी प्रमुख संस्थाओं से वसंत पंचमी से एक-सप्ताह के भीतर हिंदी दिवस मनाने का अनुरोध किया था। तदनुसार बहुत सी हिंदी संस्थाओं ने हिंदी दिवस मनाया। हिंदू सभा तथा आर्य-समाज ने भी इस संबंध में बहुत प्रयत्न किया। फलस्वरूप जनता को यह आश्वासन मिला कि हिंदी और उर्दू बोलनेवालों की मातृभाषाएँ हिंदुस्तानी न लिखकर हिंदी और उर्दू ही लिखी जायँगी। जनगणना में इसका पालन किया गया या नहीं, इसका ठीक पता तो जनगणना का विवरण प्रकाशित होने पर ही चलेगा, और इसकी अभी कई वर्ष तक प्रतीक्षा करनी होगी।

प्रांतीय सरकारें

भारत सरकार से संबद्ध भाषाविषयक कार्यों का कुछ उल्लेख हो चुका, अब प्रांतीय सरकारों के कार्य देखने चाहिए। पंजाब में सर सिकंदर हयात खाँ की सरकार ने अनिवार्य प्राइमरी शिक्षा कानून बनाया है। उसके अनुसार पंजाब में लड़के-लड़कियों के लिये प्राइमरी शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है। परंतु शिक्षा उर्दू में ही दी जायगी। पंजाब की व्यवस्थापिका सभा में रायबहादुर लाला सोहनलाल ने उक्त बिल में एक संशोधन पेश किया। इसपर वहाँ के शिक्षामंत्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा—"मैं गवर्नमेंट की पालिसी को साफ़ तौर पर बयान कर देना चाहता हूँ जैसा कि इससे पहले मैं एक मौक़े पर कर चुका हूँ। जहाँ तक सूबा पंजाब का ताल्लुक़ है, ज़रिया तालीम उर्दू है।" आगे उन्होंने यह भी कहा—"ज़रिया तालीम और सूबे की दफ़्तरी और सरकारी ज़बान का गहरा ताल्लुक़ है। और चूँकि सूबा पंजाब की दफ़्तरी और सरकारी ज़बान उर्दू है इसलिये लड़कों के मदारिस में ज़रिया तालीम उर्दू ही रहेगा।" किंतु जब इस बिल से लोगों में असंतोष और विरोध की भावना बढ़ने लगी तब संतोष देने के लिये प्रधान मंत्री सर सिकंदर हयात खाँ ने जो कहा वह ध्यान देने योग्य है—

"हुकूमत ने प्राइमरी एजुकेशन के मुताल्लिक़ जो क़ानून पास किया है उसका ज़रिया तालीम से कोई ताल्लुक़ नहीं है।" उन्होंने 'स्टेटस को' की भी चर्चा की है जिससे उनका तात्पर्य यह है कि सन् १९३६ के पहले जो हालत हिंदी और गुरुमुखी की थी वही अब भी रहेगी। परंतु यह आवश्यक नहीं कि यदि १९३६ के पहले हिंदी और गुरुमुखी की अवस्था अच्छी नहीं थी तो आगे भी उन्हें दबाए रखने का ही ढंग रचा जाय। आश्चर्य तो यह है कि युक्तप्रांत, बिहार और मध्यप्रांत में जहाँ उर्दू जनता की संख्या क्रमशः केवल १४, १२ तथा ४।। प्रतिशत के लगभग है, वहाँ उर्दू पढ़नेवालों के लिये पूरा प्रबंध किया गया है, और उधर पंजाब की अधिकांश जनता की भाषा हिंदी और पंजाबी है, फिर भी वहाँ हिंदी और पंजाबी में शिक्षा देने के लिये समुचित सुविधाएँ प्रस्तुत करना तो दूर, जो कुछ हैं भी उनको दूर करने के नियम बन रहे हैं।

हिंदी के प्रेमियों की धारणा है कि बंबई सरकार भी उर्दू के प्रचार में किसी से पीछे नहीं रहना चाहती। वहाँ सरकार की ओर से स्कूलों की आरंभिक कक्षाओं में हिंदुस्तानी सिखलाने का प्रबंध है। हिंदुस्तानी के शिक्षकों को एक 'हिंदुस्तानी शिक्षक सनद' प्राप्त करनी पड़ती है। उनके लिये हिंदुस्तानी भाषा के साथ उर्दू लिपि का ज्ञान भी आवश्यक है, क्योंकि हिंदुस्तानी तो उर्दू और हिंदी दोनों लिपियों में लिखी जाती है। परंतु हिंदुस्तानी का अर्थ भी उर्दू ही है यह बंबई सरकार के उस परिपत्र से स्पष्ट हो जाता है जिसके अनुसार उसने उर्दू माध्यमवाली पाठशालाओं को हिंदुस्तानी की अनिवार्य पढ़ाई से मुक्त कर दिया है। उर्दू जाननेवालों को हिंदुस्तानी पढ़ने की आवश्यकता ही क्या? आखिर हिंदुस्तानी में उर्दू के साथ कुछ शब्द तो हिंदी के आ ही जाते हैं। इसके अतिरिक्त हिंदुस्तानी पढ़ने में नागरी लिपि सीखने का भी परिश्रम करना पड़ता है। उर्दूवाले यह व्यर्थ भार क्यों वहन करें? इस तर्क के फल-स्वरूप बंबई सरकार ने जो नियम बनाया है उससे हिंदी को पर्याप्त धक्का लगा है।

बिहार में हिंदुस्तानी का डंका तो इस वर्ष मंद रहा पर जान पड़ता है कि ईसाई पादरियों की सफलता के लिये बिहार सरकार की साक्षरता प्रसार-समिति ने यह निश्चय किया कि संथालियों को

शिक्षा देने के लिये प्राइमरी पुस्तकें रोमन लिपि में तैयार कराई जायें। प्रांत भर में इस निश्चय का उचित विरोध किया गया, जिसमें मुज़फ्फरपुर के सुहृद् संघ ने भी बड़ा उद्योग किया। इस संबंध में डा० सच्चिदानंद सिनहा, रायबहादुर श्यामानंदनसहाय और श्री सी० पी० एन० सिनहा का एक प्रतिनिधिमंडल गवर्नर के परामर्शदाता मी कर्जिस से मिला। फलतः विदित हुआ है कि अब संथालियों के लिये नागरी लिपि में ही पुस्तकें छपाई जायँगी।

रियासत

हैदराबाद में यद्यपि उर्दू-भाषियों की संख्या बहुत ही कम है, फिर भी निज़ाम सरकार ने अपनी अधिकांश प्रजा की सुविधा का कोई ध्यान न रखकर रियासत की 'लोअर सेकंडरी कोर्स' की शिक्षा में उर्दू को अनिवार्य कर दिया है। वहाँ के जनशिक्षासम्मेलन की स्थायी समिति ने निज़ाम सरकार के शिक्षा विभाग के पास पत्र भेजा है जिसमें 'लोअर सेकंडरी कोर्स' में अनिवार्य उर्दू का विरोध किया है और बालिकाओं की शिक्षा का भी उचित ध्यान रखने का अनुरोध किया गया है। अभी इसका कोई उत्तर नहीं मिला है।

कश्मीर सरकार ने राज्य की शिक्षा-संगठन समिति की सिफारिश के विरुद्ध उर्दू के साथ साथ प्राइमरी शिक्षा में नागरी लिपि को भी स्वीकार किया। यद्यपि कश्मीर राज्य ने हिंदीवालों के साथ यह कोई बहुत बड़ी रियायत नहीं की, क्योंकि हिंदी सीखनेवाली प्रजा के साथ न्याय करना उसका कर्तव्य था, फिर भी मुसलमान लोग वहाँ की राजसभा में तथा बाहर बराबर इसका विरोध कर रहे हैं और नागरी लिपि को हटाने पर तुले हुए हैं। प्रसन्नता की बात है कि कश्मीर सरकार अपनी न्यायनिष्ठा में अचल है और इसके लिये वह धन्यवाद की पात्र है। परंतु अब कश्मीरवासियों का यह परम कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों को अधिक से अधिक संख्या में हिंदी की शिक्षा दिला कर कश्मीर सरकार के न्याय का लाभ उठाएँ।

राष्ट्रभाषा और उसका स्वरूप

इस वर्ष उर्दू के हिंदीविरोधियों की अनेक करतूतों से हिंदीप्रेमियों को इस बात में कोई संदेह नहीं रह गया कि उर्दू हिंदुस्तानी नाम की आड़ में से हिंदी पर बराबर घातक चोटें करती जा रही है। राजनीति में पली हुई हिंदुस्तानी हिंदी के भोले भक्तों को भुलावे में डालने के लिये 'वारांगनेव' 'अनेकरूपा' होकर प्रकट हुई—हैदराबाद में राजभाषा उर्दू बनकर और कश्मीर में लोकभाषा उर्दू बनकर, बंबई, मद्रास, बिहार और युक्त प्रांत में राष्ट्रभाषा हिंदुस्तानी के नाम से हिंदी का विकृत करके तथा पंजाब में सर्वसाधारण की भाषा होने का दावा करती हुई निपवरण उर्दू का रूप धारण करके, उर्दू सम्मेलन के मंच पर उर्दू नाम से भावी राष्ट्रभाषा का वेश बनाकर तथा हिंदी उर्दू—समझौता के प्रेमियों के निकट हिंदी-हिंदुस्तानी का बाना पहनकर। परंतु यह सब छद्मलीला कब तक चल सकती थी। अंत में उसकी वास्तविकता छिपी न रह सकी और बंबई, मद्रास, आसम बिहार, युक्तप्रांत, यहाँ तक कि दिल्ली, पंजाब और कश्मीर में भी इसकी बहुरंगी राजनीतिक चालों से लोग सावधान हो गए। चारों ओर से इसी पक्ष की पुष्टि हुई कि भारत की राष्ट्रलिपि देवनागरी और राष्ट्रभाषा हिंदी ही हो सकती है। किसी मोह में पड़कर उसके रूप को विकृत करना स्वयं अपनी जड़ काटना है। दिल्ली की हिंदी साहित्य सभा में श्री अणे ने, मदुरा और बरार में होनेवाली अखिल भारतीय तथा प्रांतीय हिंदू सभाओं में डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी तथा सर मन्मथनाथ मुखर्जी ने, पूना में उन्तीसवें हिंदी साहित्य-सम्मेलन के अवसर पर महाराष्ट्र-साहित्य-सम्राट् श्री नरसिंह चिंतामणि केलकर ने और बंबई विद्यापीठ के दीक्षांत भाषण में शांतिनिकेतन के आचार्य श्री क्षितिमोहन सेन ने बलपूर्वक इसी सत्य का समर्थन किया। मैसूर हिंदी-लेखक-सम्मेलन के अध्यक्ष प्रोफेसर एम० बी० अंबुनाथन् ने भी मद्रास सरकार की हिंदुस्तानी का विरोध करते हुए राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचलित स्वाभाविक रूप का ही अपनाने की सम्मति दी। अस्तु।

हिंदी के सच्चे सेवकों के बीच तो राष्ट्रभाषा के स्वरूप के संबंध में कोई मतभेद हो ही नहीं सकता, परंतु राष्ट्रीय महासभा के सूत्रधार महात्मा गाँधी और उनके प्रभाव से हिंदी साहित्य-सम्मेलन ने राष्ट्रभाषा के लिए

हिंदुस्तानी या हिंदी-हिंदुस्तानी नाम को स्वीकार कर लिया था, इतना ही नहीं, सम्मेलन ने कांग्रेस की भाँति उसका नागरी और उर्दू दोनों लिपियों में लिखा जाना भी स्वीकार कर लिया था। संभव है हिंदी की अमूल्य सेवा करनेवाले राष्ट्र के नेताओं ने कोई बड़ा लाभ समझकर ही 'हिंदी हिंदुस्तानी' नाम और उसके लिये दोनों लिपियों को स्वीकार किया हो, परंतु इसमें उनके द्वारा प्रांतीय शासनकाल में भाषा-संबंधी जो कार्य हुए उनसे कांग्रेस के प्रति हिंदी प्रेमियों का संदेह बढ़ रहा था, और सम्मेलन से तो उनका मन खिंचने लगा था। फलस्वरूप एक ओर तो हिंदी के अनन्य भक्त श्री काका कालेलकर को वर्धा की राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से अलग होना पड़ा—काका साहेब की हिंदी-निष्ठा को जाननेवालों को इससे कितना दुःख हुआ, यह कहने की आवश्यकता नहीं—और दूसरी ओर श्री पुरुषोत्तमदास टंडन को लेख लिखकर सम्मेलन की ओर से सफाई देनी पड़ी। परंतु इससे सम्मेलन के प्रति अभी हिंदी-जनता का संदेह पूर्णतया दूर नहीं हुआ।

युक्तप्रांत के भूतपूर्व शिक्षामंत्री श्री संपूर्णानंद कांग्रेस के प्रतिष्ठित नेता हैं। उन्होंने अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के उन्तीसवें अधिवेशन के अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी और हिंदुस्तानी के संबंध में जो कुछ कहा वह योग्यतापूर्ण भाषण होने के साथ ही अपनी निर्भीक स्पष्टवादिता के कारण हिंदी के संबंध में सम्मेलन और कांग्रेस की स्थिति को बहुत कुछ स्पष्ट कर देता है। उस भाषण का प्रसंग प्राप्त अंश नीचे दिया जाता है—

"आप में से बहुतों ने वह पत्रव्यवहार देखा है जो पारसाल मुझमें और महात्माजी में हुआ था। मेरा अब भी विश्वास है कि मैंने जो सम्मति प्रकट की थी वह समीचीन है। हमारी भाषा का नाम हिंदी इसे कतिपय मुसलमान लेखकों ने दिया पर हमने इसे अपना लिया। यह नाम हमको प्यारा है और इसमें सांप्रदायिक या अन्य किसी प्रकार का दोष नहीं है। इसे उर्दू नाम से पुकारने का कोई कारण नहीं है। पृथ्वी पर भारत हा तो एक देश नहीं है। दूसरी जगह में भाषा का नाम देश के नाम पर होता है। फ्रांसीसी, अँगरेजी, जापानी, अरबी, ईरानी—यह सब नाम देशों से संबंध रखते हैं। हिंदी भी ऐसा ही नाम है पर उर्दू में यह बात नहीं है। यह नाम

इस देश के नाम से संबंध नहीं रखता। अब यह प्रश्न उठाया जाता है कि राष्ट्रभाषा को न हिंदी कहा जाय, न उर्दू, प्रत्युत हिंदुस्तानी नाम से पुकारा जाय। मैं स्वयं तो उन लोगों में हूँ जो इस बात का मानने को प्रस्तुत हैं। 'यदि हिंदुस्तानी कहने भर से काम चल जाय तो यह समझौता बुरा नहीं है। यह देश हिंदुस्तान भी कहलाता ही है पर मुख्य प्रश्न नाम का नहीं, भाषा के स्वरूप का है। विवाद ऊपर से भले ही नाम के लिये किया जाता हो पर उसके भीतर भाषा के स्वरूप का विवाद छिपा है। इस बात को समझकर हमको अपना मत स्पष्ट कर देना है।

"हिंदी (या वह हिंदुस्तानी जिसकी मैं कल्पना करता हूँ) जीवित भाषा है और रहेगी। वह मुट्ठी भर पढ़े लिखों तक ही सीमित न रहेगी। उसके द्वारा राष्ट्र के हृदय और मस्तिष्क का अभिव्यंजन होना है। उसको दार्शनिक विचारों, वैज्ञानिक तथ्यों और हृद्गत भावों के व्यक्त करने का साधन बनना है। हमको भारत के बाहर से आए हुए शब्दों का प्रयोग करने में कोई लज्जा नहीं है। अरबी फारसी के सैकड़ों शब्द बोले जाते हैं, लिखे जाते हैं। यह बात आज से नहीं, चन्दबरदाई और पृथ्वीराज के समय से चली आ रही है। सूर, तुलसी, कबीर, रहीम सबने ही ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है। अँगरेजी के शब्दों को भी हमने अपनाया है। योगी को सुषुम्ना नाड़ी में प्राण ले जाने पर जिस दिव्य ज्योति की अनुभूति होती है उसका वर्णन करते हुए आज से सौ दो सौ बरस पहले चरणदासजी ने लिखा था 'सुखमना सेज पर लैंप चमके।' पर यह शब्द चाहे जहाँ से आए हों हमारे हैं। आगे भी जो ऐसे शब्द आते जायँगे वह हमारे होंगे। हम उनको हठात् कृत्रिम प्रकार से नहीं लेंगे। वह आप भाषा में अपने बल से मिल जायँगे। पर उनके आ जाने पर भी भाषा हिंदी ही है और रहेगी। जिस प्रकार पचा हुआ भोजन शरीर का अविभाज्य अंग हो जाता है उसी प्रकार यह हिंदी के अंग हैं और होंगे। उनकी पृथक् सत्ता चली जायगी। जीवित भाषाएँ ऐसा ही करती हैं। हम संस्कृत के शब्दों का भी इसी प्रकार अपनाते हैं, उनको हिंदी शब्द बना लेते हैं। इसका बड़ा प्रमाण यह है कि वह हिंदी में आने पर संस्कृत के व्याकरण को छोड़ देते हैं, हिंदी व्याकरण के अधीन हो

जात हैं। राजा का बहुवचन राजानः, भुवन का भुवनानि भी का प्रयोग नहीं किया जाता। कोई लेखक ऐसे प्रयोग करने का दु:साहस नहीं करता। संस्कृत व्याकरण के विरुद्ध होते हुए भी 'अंतर्राष्ट्रीय' हिंदी में व्यवहृत है। मैंने शुद्ध रूप चलाना चाहा पर सफल न हुआ। पर शुद्ध उर्दू-लेखक सुलतान का बहुवचन सलातीन, मुल्क का मुमालिक, तालुक का तवालीन लिखता है। यह शब्द अपना विदेशीपन नहीं छोड़ते और इन्हीं विदेशीपन के अभिमान से भरे हुए शब्दों में ही उर्दू का उर्दूपन है, अन्यथा क्रिया, सर्वनाम, उपसर्ग, अव्यय—यह सब शब्द जो भाषा के प्राण हैं—हिंदी उर्दू में एक ही हैं।

"हम ऐसी कृत्रिम भाषा को, जो जनता में फैल ही नहीं सकती, हिंदी या हिंदुस्थानी नहीं मान सकते। यह हमारे किसी काम का न होगी।"

× × ×

प्रत्यक्ष रूप से उर्दू, या अप्रत्यक्ष रूप से कृत्रिम असार्वजनीन हिंदुस्थानी के नाम पर हिंदी का विरोध करनेवाले तर्क से बहुत दूर हैं। हैदराबाद की भाषा इसलिये उर्दू है कि वहाँ का राजवंश मुस्लिम है और कश्मीर की भाषा इसलिये उर्दू है कि वहाँ की प्रजा में अधिक संख्या मुसलमानों की है। पंजाब में उर्दू इसलिये पढ़ानी चाहिए कि वहाँ ५५ प्रतिशत मुसलमान हैं और बिहार में इसलिये पढ़ानी चाहिए कि वहाँ मुसलमान १२ प्रतिशत भी नहीं हैं। यह भाषा का नहीं सांप्रदायिकता का प्रश्न है। हम सब को इस बात का अनुभव है कि किसी भाषा में जहाँ कोई संस्कृत का तत्सम शब्द आया वहीं उर्दू के हामी बोल उठते हैं कि 'साहब, आसान हिंदुस्तानी बोलिए, हम इस ज़ुबान को नहीं समझते।' किंतु हिंदीमें भी क्लिष्ट, अरबी फ़ारसी शब्दों की बौछार को प्राय: चुपचाप सह लेते हैं। हिंदुस्थानी नामधारी उर्दू के समर्थकों का द्वेष भाव कहाँ तक जा सकता है, उसका एक उदाहरण देता हूँ। अभी थोड़े दिन हुए, राष्ट्रपति अबुल कलाम आजाद को प्रयाग विश्वविद्यालय के छात्रों की ओर से एक मानपत्र दिया गया। उस पर उर्दू के समर्थकों के मुखपत्र 'हमारी ज़ुबान' ने एक लंबी व्यंगमयी टिप्पणी लिखी। उसने उन शब्दों को रेखांकित किया जो उसकी सम्मति में हिंदुस्थानी में न आने चाहिएँ। यह कहना अनावश्यक है कि यह

त्सम शब्द संस्कृत से आए हुए थे। यह बात तो कुछ समझ में आती है। यह भी कुछ कुछ समझ में आता है कि इन लोगों की दृष्टि में अरबी-फारसी से निकले हुए दुरूह शब्द सरल और सुबोध हैं। पर विचित्र बात यह है कि मानपत्र का अँगरेजी का कोई शब्द भी रेखांकित नहीं है। यह द्वेषभाव की मर्यादा है। जिस हिंदुस्थानी में अँगरेजी का स्थान हो पर संस्कृत के शब्द छाँट छाँटकर निकाले दिए जानेवाले हों वह कदापि इस देश की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती।

× × × ×

हिंदी के साथ एक और खेल खेला जाता है। अपनी हिंदुस्तानी में कुछ ऐसे शब्द गढ़ लिए जाते हैं जो देखने में हिंदी से प्रतीत होते हैं। उनका प्रयोग करके यह दिखलाया जाता है कि हमको हिंदी के सरल सुबोध शब्दों से कोई द्वेष नहीं है। इसके साथ ही हिंदी की असाहित्यिकता भी प्रदर्शित हो जाती है। जैसे—'रसुलखत' हिंदुस्तानी है। इसके पर्याय में 'लिखी' शब्द को जगह दी गई है। मैं नहीं कह सकता कि यह लिखी कहाँ से आया। हम आप तो 'लिपि' बोलते हैं। मैंने सुना है 'टिकट' की जगह 'परघस' हमारे सिर मढ़ा जानेवाला है। यह भी हिंदी के भोंडेपन का प्रमाण होगा।"

बंबई हिंदी विद्यापीठ के दीक्षांत भाषण में आचार्य श्री क्षितिमोहन सेन ने अत्यंत सरस और चुभती हुई काव्यमयी भाषा में हिंदुस्थानी नाम की बनावटी भाषा के विषय में अपने विचार प्रकट किए हैं जो मननीय हैं। उनके भाषण का अल्पांश यहाँ उद्धृत कर देना उपयुक्त होगा—

"हमारे वृहत्तर जीवन में योग-साधन का कार्य करती है भाषा, उसी प्रकार जिस तरह गृह-परिवार के जीवन में योग-स्थापन करती है माता। क्योंकि बच्चों में आपसी झगड़े कितने भी क्यों न हों, वे स्नेहमयी माँ की गोद में बैठकर सभी द्वंद्व और झगड़े भूल जाते हैं। जिस प्रकार सच्ची माता संतानों के भेद-विभेद बिना दूर किए नहीं रह सकती, उसी प्रकार सच्ची भाषा और सच्चा साहित्य भी अपनी संतान का भेद-विभेद दूर किए बिना नहीं रह सकता। भाषा और साहित्य का स्थान भी माता का सा ही है।

"आप कहेंगे कि माता भी कभी मिथ्या होती है? माँ तो सदा सच्ची ही होती है। हमारे देश में जिस भाषा को भाषा कहा गया है उस

मातृभाषा की गोद में ही तो हम सबने जन्म लिया है, उसी माता ने हमारे चिन्मय स्वरूप की सृष्टि की है। वह माता मिथ्या कैसे हो सकती है? वस्तुत जब वह माता हमारे चिन्मय स्वरूप की सृष्टि करती रहती है तब सची ही होती है, किंतु जब हम उस माता की सृष्टि करने का ध्यान करने लगते हैं तो वह निश्चय ही मिथ्या हो उठती है। माता को संतान नानाविध अलंकारों और महनीय वस्त्रों से अलंकृत करे—यह तो उचित है, बल्कि संतान का यह कर्तव्य ही है कि वह माता को अधिकाधिक समृद्ध और सुन्दर रखता रहे पर स्वयं वह माता को ही बनाने लगे, यह तो एकदम समझ में आनेवाली बात नहीं है। हम भाषारूपी माता को नाना भाव से—कला-साहित्य-विज्ञान से समृद्ध और अलंकृत कर सकते हैं पर उसे काट-छाँट, गढ़-ढालकर नई माता बनाने का प्रयत्न करना नितांत दंभ मात्र है। × × ×

"जोड़ जाड़कर नारी की सृष्टि की कथा हमारे पुराणों में एकदम नई हो, सो बात नहीं है। परंतु इस प्रकार जोड़ी हुई प्रतिमा में मातृत्व की कल्पना ही नहीं की गई। स्वर्ग की अप्सरा तिलोत्तमा ऐसी ही नारी है। उसका काम था सबका चित्त हरण करना, मातृत्व नहीं। परंतु पुराण साक्षी हैं कि वह वस्तुतः किसी का भी चित्त हरण नहीं कर सकी, बल्कि एक विनाशक शक्ति के रूप में ही प्रसिद्ध हो रही। भाषा को जोड़ जाड़कर गढ़ने के पक्षपाती लोग इस कथा को याद रखें तो अच्छा हो।"

भाषा और लिपि के संबंध में, नवीनता और सुधार के नाम पर उच्छृंखलता से काम लेना उचित न होगा। परिवर्तन और विकास सृष्टि का नियम है। उसे अपनी स्वाभाविक गति से चलने देना श्रेयस्कर होता है। नेता, सुधारक अथवा क्रांतिकारी का भूत जब चढ़ बैठता है तब सिर में भले ही ये बातें न घुसें किंतु भाषा और लिपि की प्रगति चटपट, मनमाने ढंग से गढ़ डालने की वस्तु नहीं होती। हिंदी प्रेमियों के लिये उक्त मनीषियों के विचारों का मनन करना श्रेयस्कर प्रतीत होता है।

साहित्य

साहित्य के क्षेत्र में इस वर्ष कोई उल्लेखनीय विशेषता देखने में नहीं आई। न कोई नया 'वाद' ही उत्पन्न हुआ और न विशेष महत्त्वपूर्ण

साहित्यिक रचनाएँ ही प्रस्तुत हुईं। क्या ऐसा तो नहीं है कि भाषा और लिपि संबंधी झगड़ों ने महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रश्नों को कुछ आवश्यकता से अधिक दबा लिया है? उचित तो यह होगा कि भाषा के झगड़ों पर आवश्यकता से अधिक ध्यान देकर हिंदीसाहित्य सेवी साहित्य-रचना के आवश्यक कार्य की उपेक्षा न करें, बल्कि भाषा और साहित्य दोनों की उन्नति पर वे अपनी संतुलित दृष्टि रखें। इस संबंध में आचार्य क्षितिमोहन सेन ने अपने उपर्युक्त भाषण में कहा है—

"कभी कभी हम देव की पूजा न करके देहर (मूर्ति के घर) की पूजा करने लगते हैं। आधेय को भूलकर आधार की पूजा कुछ ऐसी ही है। कितना बड़ा भी प्रेमी हो, वह यदि रोज एक लिफाफा ही भेजे, चिट्ठी नहीं, तो प्रेमिका का धैर्य कब तक टिका रह सकता है? और फिर यदि वह लिफाफा बैरिंग हो तब तो कहना ही क्या है? कब तक कोई सिर्फ इस बात से संतोष कर सकता है कि लिफाफा प्यारे के हाथ का भेजा हुआ है! कुछ पत्र भी तो हो, कुछ समाचार, कुछ प्रेम-संभाषण, कुछ नई जानकारी। भाषा महज एक लिफाफा है। सो भी बैरिंग, क्योंकि इसे पाने के लिये परिश्रम खर्च करना पड़ता है। उसमें का पत्र और उसमें लिखा हुआ साहित्य, विज्ञान संबंधी सत्य है। हमें लिफाफे का भी ध्यान जरूर रखना चाहिए, क्योंकि वही प्रेमपत्र को सुरक्षित रूप से पहुँचाता है पर पत्र की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम हिंदी-भाषा को नाना शाखा और विद्याओं से भर दें।"

इसका यह तात्पर्य नहीं कि हिंदी-लेखकों और कवियों पर अकर्मण्यता का दोष लगाया जा सकता है। बात यह है कि अनेक प्रकार की राजनीतिक तथा अन्य समस्याओं के कारण इस समय जैसी परिस्थिति है उसमें वर्तमान शिथिलता कुछ स्वाभाविक भी है और कुछ अंशों में इसका कारण यह भी है कि हिंदी साहित्य अब बरसात की बाढ़ के बाद शरत्-कालीन नदी-जल की स्वाभाविक गति को प्राप्त कर रहा है।

हिंदी में प्रगतिशीलता के वहाने प्राचीन परंपरा की अच्छी बातों की भी निंदा और उनके स्थान पर पश्चिम की भद्दी स्वच्छंदताओं का प्रचार करने की जो प्रवृत्ति इधर कुछ वर्षों से देखी जा रही थी उसमें इस वर्ष वृद्धि ही हुई है। विशेषकर कहानियों और उपन्यासों में प्रेम की परि-

पाटी को नए मार्ग पर चलाकर सुधारक या निर्माता बनने की अहंमन्यता कुछ नवयुवक लेखकों में प्रबल हो रही है। इसका परिणाम कल्याणकर होगा ऐसा नहीं कहा जा सकता। ऐसी की मनोवृत्ति के परिष्कार की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त साहित्यरचना के संबंध में हिंदी-लेखकों को तीन आवश्यक बातों की ओर ध्यान देना उचित होगा। एक तो यह कि रसात्मक साहित्य के सभी अंगों पर समान दृष्टि रखा जाय। जहाँ उच्च कोटि के काव्य, उपन्यास और कहानियाँ लिखी जायँ वहाँ योग्य नाटकों और सरस निबंधों की कमी को भी पूरा करने की ओर ध्यान दिया जाय। दूसरे, उपयोगी साहित्य के अनेक विषयों में उच्च कोटि के ग्रंथों की रचना का प्रयास किया जाय। इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, राजनीति और दर्शन तथा विज्ञान की अनेक शाखाओं में अभी अध्ययनयोग्य उच्च कोटि के ग्रंथ बहुत ही कम प्रस्तुत हुए हैं। तीसरी ध्यान देने की बात यह है कि प्रांतीय साहित्यों—विशेषकर द्रविड़ साहित्य—से (क्योंकि मराठी, बँगला आदि तो हिंदी के यों भी निकट हैं) हिंदी का संपर्क अधिक बढ़ाना चाहिए। इससे सभी प्रांत एक दूसरे के अधिकाधिक निकट पहुँचेंगे और सच्ची राष्ट्रीय एकता का मार्ग अति सरल हो जायगा। किंतु यह स्मरण रखना चाहिए कि केवल अनुवाद-ग्रंथ भरने से ही हिंदी-साहित्य की अभिवृद्धि नहीं हो सकती। हिंदी में उच्च कोटि की ऐसी मौलिक रचनाएँ भी प्रस्तुत करनी होंगी जिनसे अन्यप्रांतीय साहित्य हिंदी के साथ अपना संपर्क बढ़ाने में गौरव का अनुभव करें।

हिंदी की संस्थाएँ

देश के विभिन्न भागों में हिंदी प्रचारिणी संस्थाएँ उत्साहपूर्वक कार्य करती रहीं। हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग तथा दक्षिण भारत हिंदी-प्रचार सभा, मद्रास अपनी शाखाओं सहित अपने हिंदीप्रचार के उद्देश्य की पूर्ति में यथावत् प्रयत्नशील रहीं। सम्मेलन का २९वाँ वार्षिक अधिवेशन इस बार २५, २६, २७, २८ दिसंबर १९४० को पूना में युक्त-प्रांत के भूतपूर्व शिक्षामंत्री श्रीसंपूर्णानंद के सभापतित्व में हुआ जो उस समय जेल में थे। महाराष्ट्र प्रांत ने इसमें पूर्ण सहयोग दिया और

अधिवेशन सफलता के साथ समाप्त हुआ। प० भा० हिं० प्रचारक सम्मेलन का ११वाँ अधिवेशन २२-२३ दिसंबर १९४० को मद्रास में पं० रामनारायण मिश्र के सभापतित्व में सफलता-पूर्वक हुआ। राष्ट्र भाषा प्रचार-समिति वर्धा की शाखाएँ असम, उत्कल, महाराष्ट्र, गुजरात और सिंध में बड़े उत्साह के साथ कार्य करती रहीं।

इनके अतिरिक्त असम में नौगाँव राष्ट्रभाषा-विद्यालय तथा असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, कश्मीर में हिंदी प्रचारिणी सभा (जम्मू), बंबई में बंबई हिंदी विद्यापीठ, दिल्ली में हिंदी साहित्य सभा, बिहार में प्रादेशिक हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, सुहृद् संघ (मुजफ्फरपुर) और लोकमान्य समिति (छपरा) तथा पंजाब में राष्ट्रभाषा प्रचारक संघ (लाहौर) और साहित्यसदन (अबोहर) प्रशंसनीय रूप से हिंदी की सेवा कर रहे हैं।

अबोहर का साहित्यसदन नगर में स्थित होने पर भी नगर की अशांति और आडंबर से कोसों दूर है। इसका कार्यक्षेत्र भी प्रधानतः गाँवों में ही है। यहाँ के कार्यकर्ता त्याग, परिश्रम और लगन आदि गुणों में संस्था के संस्थापक स्वामी केशवानंद का ही अनुकरण करते हैं। इस संस्था का 'दीपक' नाम का एक मासिक पत्र निकलता है। पुस्तकालय, प्रकाशन तथा शिक्षण-विभाग भी है।

देश की समस्त संस्थाएँ यदि संघटित होकर परस्पर सहयोग से कार्य करें तो हिंदी के मार्ग की बहुत सी कठिनाइयाँ शीघ्र दूर हो जायँ।

पत्र पत्रिकाएँ

इस वर्ष हिंदी की प्रमुख पत्र पत्रिकाएँ, अपनी उदासीनता त्यागकर हिंदी की चर्चा और हिंदी संबंधी आंदोलनों में बराबर योग देती रहीं। कलकत्ते के 'लोकमान्य' और 'विश्वमित्र' और दिल्ली के 'वीर अर्जुन' ने अधिक तत्परता दिखाई। 'भारत', 'देशदूत', 'प्रताप', 'अग्रगामी' तथा 'कर्मवीर' आदि भी समय-समय पर इस संबंध में लेख और टिप्पणियाँ प्रकाशित करते रहे। काशी के दैनिक 'आज' तक को अपनी चिर निरपेक्षता का त्याग करना पड़ा और उसने बड़े स्पष्ट और निर्भीक शब्दों में अपने संपादकीय लेखों में हिंदी का पक्ष पुष्ट किया। सभा हिंदी की सभी पत्र-पत्रिकाओं से आशा

करती है कि जहाँ उनमें अनेक विषयों के लेख और समाचार छपते रहते हैं वहाँ नागरी लिपि और हिंदी भाषा संबंधी प्रश्नों की चर्चा के लिये भी अधिक नहीं तो थोड़ा स्थान अवश्य दिया करें और समय-समय पर आवश्यकतानुसार इन विषयों पर स पा दकीय लेख और टिप्पणियाँ भी लिखा करें। हिंदी की रक्षा और उन्नति का प्रश्न राष्ट्र का प्रश्न है और उनका अपना भी।

(पृ० ५१ के पहले अनुच्छेद के बाद)

इसी प्रसंग में एक उल्लेखनीय बात यह है कि भारत सरकार के पाक्षिक पत्र 'भारतीय समाचार' में हिंदी भाषा का निर्वाह बड़ी उत्तमता से हो रहा है। सरकारी प्रचार पत्र में ऐसी भाषा का प्रयोग यह सूचित करता है कि सरकार हिंदी को उपेक्षा की वस्तु नहीं समझती है, और उसी के द्वारा देश के विशाल जन-समुदाय के हृदय में स्थान प्राप्त किया जा सकता स्वीकार करती है। आशा है जिस परिष्कृत सर्वमान्य और प्रचलित हिंदी में 'भारतीय समाचार' प्रकाशित होता है उसी का व्यवहार और भारत सरकार के अन्य विभागों तथा कार्यों में होगा और विशेषकर 'रेडियो' में इसी भाषा को अपनाया जायगा।

रखना इसका मुख्य उद्देश्य है। 'हिंदी पत्रिका' में पुराने 'देवनागर' की भाँति अन्य भाषाओं के लेख भी नागरी लिपि में छपा करते हैं। यह प्रयत्न प्रशंसनीय है। यह पत्र स्थायी हो जाय तो हिंदी का हित होगा। 'प्रभात' बालोपयोगी अच्छा पत्र है। 'हिंदी' के विषय में

लोगों का धारणा है कि यह हिंदी की ठोस सेवा करेगी। इतनी उपयोगी और इतनी सस्ती पत्रिका शायद ही दूसरी हो।

हिंदी की प्रकाशित पुस्तकों की संख्या

सन् १९४० में निम्नलिखित प्रांतों में प्रकाशित हिंदी और उर्दू पुस्तकों की संख्या नीचे दी जाती है—

प्रांत	अवधि	हिंदी	उर्दू
संयुक्त प्रांत—	३१ मार्च को समाप्त होनेवाले त्रिमास में	४७३	५०
	३० जून ,, ,,	३८४	६०
	३० सितंबर ,, ,, ,,	३७६	६८
	३१ दिसंबर ,, ,, ,,	३१५	३८
पंजाब—	३१ मार्च ,, ,, ,,	४०	१८२
	३० जून ,, ,, ,,	६९	२३८
	३० सितंबर ,, ,, ,,	६६	२०३
	३१ दिसंबर ,, ,, ,,	६४	२०९
अजमेर-मेरवाड़ा—	३१ मार्च ,, ,,	७३	×
	३० जून ,, ,,	४६	×
	३० सितंबर ,, ,, ,,	७७	×
	३१ दिसंबर ,, ,, ,,	३०	२

सन् १९३९ ई० तथा १९४० ई० के हिंदी, उर्दू के प्रांतीय प्रकाशनों का प्रतिशत ब्योरा—

प्रांत	१९३९ हिंदी	१९४०-हिंदी	१९३९-उर्दू	१९४०-उर्दू
संयुक्तप्रांत	९	८८७	१	११८
पंजाबप्रांत	१७८	१८९	८२२	८११
अजमेर-मेरवाड़ा	९२३	९७६	०७७	७४

इस तालिका से यह प्रकट होता है कि संयुक्त प्रांत में सन् १९३९ की अपेक्षा १९४० ई० में हिंदी के प्रकाशन में ह्रास और उर्दू के प्रकाशन में वृद्धि हुई है। इस ओर हमें उचित ध्यान देने की आवश्यकता है। पंजाब प्रांत में सन् १९३९ की अपेक्षा १९४० में हिंदी के प्रकाशन में वृद्धि हुई है। इस प्रांत में हिंदी के प्रचार तथा व्यवहार के लिये हमें और

शक्ति लगानी चाहिए। अजमेर-मेरवाड़ा प्रांत में भी सन् १९३९ की अपेक्षा सन् १९४० में हिंदी के प्रकाशन में वृद्धि और उर्दू के प्रकाशन में ह्रास हुआ है। पर इससे हमें अपने उद्योग में ढिलाई नहीं लानी चाहिए, प्रत्युत इसमें विशेष शक्ति लगाने की आवश्यकता है।

हिंदी के परीक्षार्थियों की संख्या

देश में अनेक संस्थाएँ हैं जो हिंदी भाषा और साहित्य संबंधी परीक्षाएँ अथवा अन्य विषयों की परीक्षाएँ हिंदी माध्यम के द्वारा लिया करती हैं। उनमें कुछ सरकारी हैं जैसे विश्वविद्यालयों, विद्यालयों और शिक्षा बोर्ड तथा सरकारी शिक्षाविभाग की परीक्षाएँ। कुछ गैर सरकारी परीक्षाएँ हैं जो हिंदी साहित्य-सम्मेलन, द० भा० हिं० प्र० सभा तथा गुरुकुल आदि संस्थाओं द्वारा ली जाती हैं। इनके अतिरिक्त भी अनेक परीक्षण-संस्थाएँ हैं। सभा आशा करती है कि ये संस्थाएँ प्रतिवर्ष अपनी परीक्षाओं के आँकड़े सभा के विवरण में सम्मिलित करने के लिये भेज दिया करेंगी। पर कुछ संस्थाएँ इस प्रकार की सूचना सभा को नहीं दे सकीं और खेद है कि ऐसी संस्थाओं में काशी हिंदू विश्वविद्यालय और मद्रास विश्वविद्यालय का भी नाम है।

मुख्य मुख्य परीक्षण-संस्थाओं में से जिनके विवरण सभा को प्राप्त हुए हैं उनकी परीक्षाओं में सम्मिलित होनेवाले हिंदी और उर्दू परीक्षार्थियों की संख्या दी हुई तालिका से प्रकट होती है—

हिंदी के परीक्षार्थियों की संख्या

प्रांत	परीक्षण-संस्थाएँ		परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
	सरकारी	गैर सरकारी			
दिल्ली	दिल्ली विश्वविद्यालय	×	बी॰ ए॰	१०५	१६४
			इंटर॰	२९८	३१२
पंजाब	पंजाब विश्वविद्यालय	×	प्रॉफीशियेंसी	१७२१	७८
			हाई प्रॉफी॰	१२३५	४१४
			आनर्स	६०१	१६३
			बी॰ ए॰	९०२	११६६
			इंटर॰	१४७२	८२९५
			मैट्रिक	१४५०	५११२
	×	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	भिन्न भिन्न	१२३	×
		,, मुलतान	,, ,,	२८	×
बंगाल	ढाका विश्वविद्यालय	×	बी॰ ए॰	×	८
बंबई	बंबई विश्वविद्यालय		एम॰ ए॰	×	१५
			बी॰ ए	×	१०

प्रांत	परीक्षक-संस्थाएँ		परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
	सरकारी	गैर सरकारी			
			इंटर०	२	१०९
			मैट्रिक	१०६	७५४
	×	श्रीमती नत्थीबाई दामोदर ठाकरसी			×
		इंडियन वीमेंस युनिवर्सिटी	भिन्न भिन्न	५८७	×
		गुरुकुल सूपा	,, ,,	१९८	×
		हिंदी विद्यापीठ	,, ,,	१२०७	×
बड़ोदा	×	आर्यकन्या महाविद्यालय	,, ,,	२००	×
बिहार	पटना विश्वविद्यालय	×	बी० ए०	५०६	१३६
			इंटर०	१२९७	३३७
			मैट्रिक	५८३१	१३४६
	×	हिंदी विद्यापीठ, देवघर	भिन्न भिन्न	६३०	×
मद्रास	×	दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा	,, ,,	६७१९	×
मध्यप्रांत व बरार	नागपुर विश्वविद्यालय	×	बी० ए०	४५	२१
			इंटर०	१२०	५८
	हाईस्कूल परीक्षा बोर्ड	×	हाईस्कूल	११८९	२८१

प्रांत	परीक्षक-संस्थाएँ		परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
	सरकारी	गैर सरकारी			
	×	राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा	भिन्न भिन्न	१९०८२	×
मैसूर	मैसूर विश्वविद्यालय		बी ए, बी एस-सी	×	११
		×	इंटर	१४	८६
युक्तप्रांत	प्रयाग विश्वविद्यालय		एम ए०	१३०	९
			बी ए०	१५१	६२
	लखनऊ विश्वविद्यालय	×	एम० ए०	१९	२१
			बी ए	४४	५१
	आगरा विश्वविद्यालय	×	एम० ए०	१२८	×
			बी ए	४८९	१८
	हाईस्कूल और इंटर परीक्षा बोर्ड		इंटर	१३५७	९६१
		×	हाईस्कूल	८६३४	६१५८
	प्रांतीय शिक्षा विभाग		वर्नाक्यूलर फा	२३,६७	१७४८०
		×	सी टी० सी०	२६२	२८८
			पी टी० सी०	२५९	२६०
			विशेष योग्यता	५९८	१६९८

प्रांत	परीक्षक-संस्थाएँ		परीक्षाएँ	हिंदी	उर्दू
	सरकारी	गैर सरकारी			
	प्रांतीय शिक्षा विभाग		डी० एस०	१४२	२११
		हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग	भिन्न भिन्न	४३१६	×
		प्रयाग महिला विद्यापीठ	,, ,,	१०१८	६
	×	गीता तथा रामायण परीक्षा समिति, बरहज	रामायण, गीता	१०८१६	×
		गुरुकुल काँगड़ी	भिन्न भिन्न	४०८	×
		ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, हरिद्वार	,,	१९	×
राजपूताना, मध्यभारत, ग्वालियर, अजमेर	हाईस्कूल और इंटर० परीक्षा बोर्ड	×	इंटर	४९०	७७
			हाई स्कूल	३१३९	७९१
			कुल योग	१०९५२०	४२११८६

शोक-प्रकाश

अत्यंत शोक है कि इस वर्ष हिंदी-संसार चार प्रसिद्ध साहित्यसेवियों से रिक्त हो गया। सभा के सदस्य होने के नाते पं० रामचंद्र शुक्ल, सर आर्ज डा० ग्रियर्सन, बाबू केदारनाथ गोयनका और पं० रमाशंकर शुक्ल 'हृदय' का उल्लेख पहले ही हो चुका है। खेद है कि साहित्य-दर्पण के प्रसिद्ध अनुवादक पं० शालग्राम शास्त्री और हिंदी के असाधारण प्रेमी और प्रचारक अध्यापक रामरत्न भी अब हमारे बीच नहीं रहे। प्रयाग के प्रसिद्ध पत्र 'अभ्युदय' के संपादक पं० कृष्णकांत मालवीय तथा काशी के प्रसिद्ध मुद्राशास्त्री बाबू दुर्गाप्रसाद खत्री के निधन से हमारी भाषा को गहरा धक्का लगा है। सभा इन सबके शोक-संतप्त परिवार के प्रति समवेदना प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति दे।

धन्यवाद

यह विवरण समाप्त करने के पूर्व मैं सर्वप्रथम सभा के कार्याधिकारियों और विभागाध्यक्षों को धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ जिनके अमूल्य सहयोग से ही सभा इस वर्ष सफलतापूर्वक कार्य कर सकी है। सबने अपनी शक्ति भर, खुले दिल से मुझे जो सहायता दी है, उसके बिना यह वर्ष सभा के लिये कुछ बातों में उन्नति का साधक न होता। सभा के अर्थमंत्री श्री० जीवनदास, साहित्यमंत्री श्री० रामचंद्र वर्मा, आय-व्यय-निरीक्षक श्री० गुलाबदास नागर, पुस्तकालय-निरीक्षक श्री० कृष्णदेवप्रसाद गौड़, प्रचारविभाग के संयोजक श्री चंद्रबली पांडे, खोज के निरीक्षक तथा प्रसाद-व्याख्यान-माला के संयोजक श्री० विद्याभूषण मिश्र, भारतकलाभवन के संग्रहाध्यक्ष श्री राय कृष्णदास और पत्रिका के संपादक-मंडल (विशेषकर उसके संपादक श्री कृष्णानंद) ने अपने विभागों का कार्य जिस तत्परता से संपन्न किया है, उससे सभा की मर्यादा की रक्षा और वृद्धि हुई है। डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल ने, यद्यपि कुछ ही दिनों तक खोज विभाग का निरीक्षण किया था, फिर भी उन्हीं की व्यवस्था के अनुसार कार्य होता रहा है। इसस सभा

उनकी भी कृतज्ञ है। और पंडित रामनारायण मिश्र की किस किस सहायता का उल्लेख करूँ ? इन दिनों तो उन्हें दिन-रात सभा की उन्नति का ध्यान रहता है। वे हर प्रकार से सभा की प्रतिष्ठा बढ़ाने का उद्योग करते रहते हैं। मुझे और सभा को सबसे अधिक दुःख है इस बात का कि आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी अधिक समय तक हमें पथप्रदर्शन कर न सके। अस्वस्थ होते हुए भी वे सभा के कितने उपयोगी थे और हमारी कितनी सहायता किया करते थे यह स्मरण करते ही हृदय गद्गद हो जाता है। मैं इन सब का कृतज्ञ हूँ। साथ ही मैं अपने कार्यालय के सभी विभागों के कर्मचारियों को भी नहीं भूल सकता, जो कार्यालय के लिये नियत समय के अतिरिक्त भी मेरी तथा अन्य विभागाध्यक्षों की सुविधा और इच्छा के अनुसार, सभा के कार्यों के लिये सदैव तत्पर रहे हैं। इनमें से सहायक मंत्री श्री पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, पुस्तकाध्यक्ष पं० शंभुनारायण चौबे, बी० ए०, एल्-एल० बी० और कार्यालय के पं० शंभुनाथ वाजपेयी तथा मुंशी जगन्नाथप्रसाद की सेवाएँ उल्लेखनीय हैं।

प्रबंध-समिति की ओर से
रामबहोरी शुक्ल
प्रधान मंत्री
नागरी प्रचारिणी सभा काशी

श्री रजिस्ट्रार इलाहाबाद युनिवर्सिटी, इलाहाबाद — ८
,, रजिस्ट्रार, ट्रावनकोर विश्वविद्यालय, त्रिवेंद्रम — १ (रिपोर्ट)
,, रजिस्ट्रार, पटना यूनिवर्सिटी, पटना — ३
,, राज पब्लिशिंग हाउस, बुलंदशहर — १
,, राजबहादुर लमगोड़ा, फतहपुर — १
,, राजाराम पंड्या, काशी — १
,, राधाकृष्ण जालान, रायबहादुर, पटना — १
,, राधेश्याम कथावाचक, बरेली — १९
,, रामकृष्ण भारती, लाहौर — १
,, रामकृष्ण शर्मा, काशी — २
,, रामचंद्र वर्मा, काशी — ४
,, रामजी वाजपेयी, काशी — २
,, रामदत्त भवानीदयाल नेटाल — २
,, रामदयाल चोखानी, रायबहादुर, कलकत्ता — १
,, रामनारायणजी मिश्र, काशी — १४
,, रामवचन द्विवेदी, शाहाबाद — ४
,, रामविलास पोद्दार स्मारक समिति, बंबई — १
,, राष्ट्रभाषाप्रचारसमिति, वर्धा — २
,, लालचंद्र वैद्यशास्त्री, काशी — २
,, लीडर प्रेस, प्रयाग — ७
,, विंध्यवासिनीप्रसाद वर्मा, हाजीपुर — १
,, विज्ञान-परिषद्, प्रयाग — ३
,, विप्लवी ट्रैक्ट, लखनऊ — १
,, ब्रजसाहित्य मंडल ग्रंथमाला, वृंदावन — ६
,, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, लाहौर — ४
,, शङ्करसहाय सक्सेना, बरेली — ५
, शंभूनारायण चौबे, काशी — १
श्रीमती शकुंतला देवी, झालरापाटन — ११
श्री शंदा, दिल्ली — १
,, श्यामसुंदरदास रायबहादुर, काशी — २
,, संगीत कार्यालय, हाथरस — १

श्री सस्ता साहित्यमंडल, दिल्ली	११
,, साधना मंदिर, बंबई ७	६
,, साहित्यनिकेतन, कानपुर	२
,, साहित्य प्रेस, जबलपुर	१
,, साहित्यरत्न-भंडार, आगरा	१
,, सुतीक्ष्ण मुनि, सपक्षर	१
,, सुपरिंटेंडेंट, कार्ख्यालाजी, जयपुर	१
,, स्वरूप मदर्स, इंदौर	१
,, हजारीप्रसाद द्विवेदी, शांतिनिकेतन	१
,, हरनामदास कविराज, लाहौर	१
,, हरिमोहनलाल वर्मा, दतिया	७
,, हरिहर पुस्तकालय, बरालोकपुर	४
,, राय हरेकृष्ण, काशी	२
,, ख्वाजा हसन निजामी, दिल्ली	७
,, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बंबई	५
,, हिंदी पुस्तक एजेंसी, काशी	१
,, हिंदी पुस्तक भंडार, बंबई	१६
,, हिंदी पुस्तक मंडल, सूरत	१
,, हिंदी प्रचार पुस्तक मंदिर, मद्रास	१
,, हिंदी भवन, लाहौर	१
,, हिंदी मंदिर, प्रयाग	४
,, हिंदी विद्यापीठ, बंबई	१
,, हिंदी-साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग	७
,, हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद	१
,, हिंदुस्तानी तालीमी संघ, वर्धा	२०
,, हिंदुस्तानी बुकडिपो, लखनऊ	३
श्रीमती हेमंतकुमारी चौधुरानी, देहरादून	३

परिशिष्ट २

पत्र पत्रिकाएँ जो इस वर्ष सभा के पुस्तकालय में आती रहीं—

दैनिक

अग्रगामी, काशी १६)
आज „ १६)
जागृति, कलकत्ता १०)
प्रताप, कानपुर १६)
भारत, प्रयाग १६)
लोकमान्य, कलकत्ता १२)
वर्तमान, कानपुर १६)
विश्वमित्र, कलकत्ता १६)
वीर अर्जुन, दिल्ली १०)

अर्द्ध साप्ताहिक

केसरी (मराठी) ८)
लीडर (अँगरेजी) ८)

साप्ताहिक

आज, काशी ४)
आदर्श, देवरिया [illegible])
आर्यमार्तण्ड, अजमेर [illegible]॥)
आर्यमित्र, आगरा ३)
कर्मभूमि, लैंसडाउन २॥)
कर्मवीर, खंडवा ३॥)
गुजरातीपंच(गुज०)अहमदाबाद [illegible]॥)
गुरुकुल, काँगड़ी [illegible]॥)
गृहस्थ, गया [illegible])
चित्रप्रकाश, दिल्ली ६॥)
जयाजीप्रताप ग्वालियर [illegible])
जागरण, कलकत्ता १॥)
जागृति, „ ३॥)
देशदूत, प्रयाग ३॥)
नवप्रभात, पौड़ी ३)
नवशक्ति, पटना ३॥)
न्याय, इलाहाबाद ३)
न्यू प्राचीप्रकाश, रंगून ४)
प्रजासेवक जोधपुर ४)
प्रताप, कानपुर ४)
भारत, प्रयाग ४)
मारवाड़ी समाचार, जोधपुर ३॥)
युक्तप्रांतीय गवर्न० गजट, लखनऊ ४)
योगी, पटना ३॥)
राजस्थान, अजमेर ५)
राष्ट्रलक्ष्मी, मथुरा १)
राष्ट्रसंदेश, पूर्णिया ३)
लोकमान्य, कलकत्ता [illegible])
विचार ५)
विश्वमित्र ३॥)
वीर, नई दिल्ली ३)
वेंकटेश्वरसमाचार, बम्बई २॥)
शंखनाद, कानपुर [illegible])
शुभचिंतक, जबलपुर ३॥)
समय, जौनपुर [illegible])
समाजसेवक, कलकत्ता ३॥)

सिद्धांत, काशी ३॥)
सुदर्शन, एटा ३)
स्वतंत्र, झाँसी २॥)
स्वराज्य, खँडवा ३॥)
हिन्दीकेशरी, काशी ७)

पाक्षिक

आकाशवाणी, लखनऊ ॥)
इंडियन इनफार्मेशन सीरीज (अँगरेजी) दिल्ली
क्षत्रिय मित्र, बनारस ७)
पहेली, नई दिल्ली १।=)
भारतीय समाचार, नई दिल्ली
मधुकर, टीकमगढ़ ७)
म्युनिसिपल गजट, बनारस ।।=)
हमारी जबान (उर्दू) दिल्ली १)

मासिक

अखंड ज्योति, आगरा १॥)
अनेकांत, दिल्ली ४)
अभिनय, कलकत्ता ३)
अरुण, मुरादाबाद ३)
आदर्श, हरद्वार २)
आनंद, बरई ७॥)
आरती, पटना ५)
आर्य, लाहौर ३)
आर्यमहिला, काशी ५)
इंडियन पी० ई० एन०, बंबई ४)
इस्लाम, कानपुर २)
ओरिएंटल लिटरेरी डाइजेस्ट, पूना ३)
कन्नौज समाचार, कन्नौज १)
कमला, काशी ४॥)
कल्पवृक्ष, उज्जैन ७॥)
कल्याण, गोरखपुर ४)
कहानी बनारस ३)
किशोर, पटना ३)
किसान ,, २)
कुशवाहा क्षत्रियमित्र, जौनपुर १)
कूर्मि क्षत्रिय दिवाकर, बनारस २)
केशरी, गया =)
कोकिल, सहारनपुर २)
कौमुदी, दिल्ली ६)
क्षात्रधर्म, अजमेर २)
खादी सेवक, मुजफ्फरपुर १॥)
खिलौना, प्रयाग ७)
ग्रामसुधार, इंदौर १)
चाइना एट वार (अँगरेजी), हांगकांग
जीवनसखा, प्रयाग ३)
जीवनसाहित्य, बंबई १।)
ज्योतिष्मती, काशी १॥)
झुनझुना, आगरा [illegible]
तूफान, इलाहाबाद =)
थियोसाफिस्ट (अँगरेजी), काशी
दयानन्दस देश, दिल्ली ७)
दीपक, अबोहर ७॥)
दुनिया, इलाहाबाद २)
धन्वंतरि, अलीगढ़ ३॥)
धर्मंस देश, कानपुर १)
नई तालीम, वर्धा १।)
नामंमाहात्म्य, वृंदावन १)
नोकझोंक, आगरा ७)
पालीवाल-स देश, आगरा ७)
प्रकाश, जयपुर ३)
भारत, प्रयाग ३।)

बालक, लहेरियासराय	३)	भद्रानंद, दिल्ली	७)
बालविनोद, पटना	२॥)	स फीसन, मेरठ	३)
बालसखा, प्रयाग	३॥)	सनाढ्यजीवन, इटावा	३)
बालहित, उदयपुर	२)	सबकी बोली, वर्धा	१)
ब्रजभारती, मथुरा	२)	सम्मेलनपत्रिका, प्रयाग	१॥)
भारतोदय, ज्वालापुर	३)	सरस्वती ,,	४॥)
भूगोल, प्रयाग	३)	सर्वोदय, वर्धा	३)
मनस्वी अमेठी	१)	साधना, आगरा	३)
माथुर वैश्य हितैषी, कानपुर	२)	साहित्यका देश, ,,	२)
माधुरी, लखनऊ	६॥)	सुकवि, कानपुर	५)
मेलमिलाप, बाँकीपुर	२)	सुधा, लखनऊ	५)
यादवेश काशी	१)	सुधानिधि, प्रयाग	२)
रँगीला मुसाफिर, सहारनपुर	३)	सेवा, ,,	३)
राजपूत, आगरा	२)	हंस, बनारस	४)
राठौर बंधु, मंडला	२॥)	हिंदी, काशी	॥)
रोजगार, लहेरियासराय	२॥)	हिंदी प्रचार समाचार, मद्रास	२)
विजय, काशी	१॥)	हिंदी शिक्षण पत्रिका, इंदौर	१)
विज्ञान, प्रयाग	३)	**त्रैमासिक**	
विद्यार्थी, ,,	२॥)	इंडियन हिस्टारिकल क्वार्टरली (अँगरेजी), कलकत्ता	१०)
विश्वमित्र, कलकत्ता	६॥)	उर्दू (उर्दू), नई दिल्ली	
वीणा, इंदौर	४)	एनल्स आव् दी ओरियंटल रिसर्च आव युनिवर्सिटी (अँगरेजी), मद्रास	
वैदिक धर्म, औंध	५)	एनल्स आव् दी भांडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टाट्यूट (अँगरेजी), पूना	
वैद्य, मुरादाबाद	२)	आर्मिंगटन कालेज मेगजीन (अँगरेजी), लाहौर	
व्यापार, कानपुर	३)	कर्नाटक हिस्टारिकल रिव्यू (अँगरेजी)	
व्यावहारिक वेदांत, काशी	२)		
शनिवारेरचीठी (बंगला), कलकत्ता	४)		
शाकद्वीपीय ब्राह्मण बंधु, बंबई	३॥)		
शारदा, औरैया	२)		
शिक्षण अने साहित्य (गुजराती) अहमदाबाद	२॥)		
शिक्षा-सुधा, मुरादाबाद	२)		

क्वार्टरली जर्नल आव् दी मिथिक सोसायटी (अँग०), बंबई
धारणा, लिंबड़ी
जर्नल आव् दी आंध्र हिस्टारिकल रिसर्च सोसायटी (अँगरेजी) राजामुंद्री
जर्नल आव् दी ग्रेटर इंडिया सोसायटी (अँग०), कलकत्ता
जर्नल आव् दी तेलगू एकेडेमी (अँगरेजी), कोकानाडा
जर्नल आव् दी बिहार उड़ीसा रिसर्च सोसायटी (अँग०), पटना २०)
जर्नल आव् दी मद्रास ज्याग्रफिकल असोसिएशन (अँगरेजी), मद्रास
जर्नल आव् दी यूनिवर्सिटी आव बांबे (अँगरेजी), बंबई
जैन सिद्धांत भास्कर, आरा ५)
नागरी प्रचारिणी पत्रिका, काशी १०)
न्यू एशिया (अँगरेजी,) कलकत्ता
बुद्धप्रभा (अँगरेजी), बंबई
बुद्धिप्रकाश (गुजराती), अहमदाबाद
महाविद्या (अँगरेजी), अध्यार ६)
भारतीय इतिहास संशोधक-मंडल (मराठी), पूना ३)
भारतीय विद्या
महाराष्ट्र साहित्य पत्रिका (मराठी), पूना ३)
विश्वभारती (अँगरेजी), शांतिनिकेतन ८)
वीरबाला, वनस्थली १)
साहित्यपरिषद् पत्रिका (बंगला), कलकत्ता
सूर्योदय (संस्कृत), काशी
हारवर्ड जर्नल आव् एशियाटिक सोसायटी (अँगरेजी) केम्ब्रिजसेट

चतुर्मासिक

जर्नल आव् दी इंडियन हिस्ट्री (अँगरेजी), मद्रास १०)

अर्द्धवार्षिक

जर्नल आव् दी बांबे ब्रांच आव् दी रायल एशियाटिक सोसायटी (अँगरेजी), बंबई
बुलेटिन आव् दी स्कूल आव् ओरियंटल स्टडीज (अँगरेजी), लंदन

परिशिष्ट ३

इटावा जिले के अन्वेषक श्री० बाबूरामजी बित्थरिया के भेजे हुए हस्तलेखों की सूची

ग्रंथ	ग्रंथकार
१—बड़ी भोनम	माधवदास
२—केवली भक्ति	दयाराम
३—गगाजी की स्तुति	×
४—रामाज्ञा	गौतम
५—हरि म० (मराठी)	×
६—पद	×
७—टीका ग्रंथ	×
८—कोक	शमशर
९—पदावली	×
१०—सामुद्रिक	×
११—पद	×
१२—सूरदास के पदों का संग्रह	×
१३—रघुराज के कवित्त	×
१४—जंत्रावली तथा मंत्र	×
१५—वेदस्तुति	श्रीपति
१६—चंद	चंद कवि
१७—भागवत की कुछ शंका समाधान	×
१८—भागवत के पदार्थों पर सवैया	×
१९—भीम विनय	×
२०—चंद्रचूड़ स्तोत्र	×
२१—विषाद हृति	×
२२—शिवलिंग अष्टक	×
२३—गंगा स्तुति	×
२४—जंत्र मंत्र	×

ग्रंथ	ग्रंथकार
२५—मथुरा वर्णन	×
२६—कायस्थ उत्पत्ति	×
२७—सुदामा चरित्र	×
२८—विचारमाल	×
२९—विजयमुक्तावली	छत्र कवि
३०—नाममाला	नंददास
३१—यंत्र करने की कथा	×
३२—कुछ छंद व मंत्रादि	×
३३—धन्वंतरी स्तोत्र	×
३४—सूर्यपुराण	×

मथुरा जिले के अन्वेषक श्री दौलतराम जुयाल द्वारा प्राप्त हस्तलेखों की सूची

१—इकवालीस शिक्षापत्र	मूल लेखक श्री हरिरायजी टीकाकार—श्रीगोपेश्वरजी
२—इकवालीस शिक्षापत्र	×
३—इकवालीस शिक्षापत्र (संक्षिप्त)	×
४—पंच आख्यानकी कथा	×
५—सिंघासन बत्तीसी	×
६—लघुचाणक्य राजनीति (टीका)	×
७—वृद्धचाणक्य राजनीति (टीका)	×
८—सभाविलास	×
९—कवित्त-रत्नाकर	सेनापति
१०—सदाशिवजी को व्याहलो	श्री दयाराम
११—सुदामाचरित्र	नरोत्तम
१२—कवित्त बाँसुरी	विभिन्न कविगण
१३—रामाश्वमेध	मधुअरिदास या मधुसूदनदास
१४—रामचरितमानस लंकाकांड	गो० तुलसीदासजी
१५—रामचरितमानस	
१६—रामस्तवराज (टीका)	×

ग्रंथ	ग्रंथकार
१७—अनेकार्थमंजरी	श्री नंददास जी
१८—नाममंजरी	"
१९—ध्यानमंजरी	श्री अग्रदासजी
२०—भागवत दशम स्कंध	रसजानि कृत
२१—विजयमुक्तावली	छत्र कविकृत
२२—ध्रुव चरित्र	मधुकर दास
२३—अनवरचंद्रिका [बिहारीसतसई]	शुभकरण
२४—लघु आवक	अमैराम
२५—वर्षा संवत्सरी	×
२६—अनुराग विलास	चंद्रकृत
२७—दानलीला	कृष्णदास
२८—गणेशपुराण	मोतीलाल
२९—बारामासी	दूलाल
३०—लीलावती	×
३१—इंद्रजाल	×
३२—पदावली	विभिन्न कविगण
३३—सुनाग्नि लीला	श्रीरूप हितजी
३४—चक्र चूड़ामणि	×
३५—सदाशिवजी को ब्याहला	तापा
३६—धर्म संवाद (सं स्कंध)	×
३७—नारदगीता "	×
३८—रामस्तुति	गो० तुलसीदासजी
३९—पंचाध्यायी	श्री नंददासजी
४०—विचारमाल	अनाथ
४१—भूगोलसार	पं० ओनालजी
४२—महाभारत इतिहास-समुच्चय	सालराम कृत
४३—भ्रमरगीत	श्री नंददासजी
४४—पंछी चित्र	श्याम
४५—रास पंचाध्यायी	श्री नंददासजी
४६—मार्कण्डेय पुराण	×

ग्रंथ	ग्रंथकार
४७—फुटकर पद	×
४८—ध्यानमंजरी	श्री अग्रदासजी
४९—प्रतीत परीक्षा	सदय
५०—फुकर	×
५१—भ्रमरगीत	श्री नंददासजी
५२—फुटकर पद	×
५३—पद	श्री स्वामी रामचरणजी
५४—पद	धर्मों
५५—मूलणा	दीनजी
५६—दृष्टांतसागर सटीक	मूलकार—श्री स्वामी रामचरणजी टीकाकार—श्री रामजन
५७—गीता	श्री हरिवल्लभ
५८—शनावली रूपावली	×
५९—नासकेत कथा	श्री स्वामी चरणदासजी
६०—मनविरक्तकरन गुटका सार	,, ,,
६१—दानलीला	,, ,,
६२—पद और कवित्त	,, ,,
६३—मटकी और हेली	,, ,,
६४—कालीमथनलीला	,, ,,
६५—जागरणमहात्म्य	,, ,,
६६—माखनचोर लीला	,, ,,
६७—स्फुट पद और कवित्त	,, ,,
६८—नायिका-भेद का ग्रंथ	×
६९—सतभाऊ की कथा	×
७०—प्रह्लाद कथा	×
७१—भ्रमरगीत	श्री नंददासजी
७२—गंगाजी के ब्याह	×
७३—श्रीगोपालसहस्रनाम (संस्कृत)	×
७४—रुक्मणि ब्याह	×
७५—गोकुल लीला	जनविंदा

ग्रंथ	ग्रंथकार
७६—कृष्ण विलास	×
७७—भोखाहरण (डिंगल)	देवीदास
७८—विष्णुसहस्रनाम (संस्कृत)	×
७९—शिवमंत्र (संस्कृत)	×
८०—हनुमान अष्टक	श्री गो० तुलसीदासजी
८१—ध्रुव चरित्र	मधुकरदास
८२—रासपंचाध्यायी	श्री नंददासजी
८३—गीत गोविंद (संस्कृत)	जयदेव
८४—कर्मविपाक	श्री चिंतामणि
८५—गीता	हरिवल्लभ
८६—रुक्मणि मंगल	रामसखा
८७—वृंदावन सत	श्री ध्रुवदासजी
८८—सनेह लीला	मनमोहन दास
८९—भ्रमरगीत	श्री नंददासजी
९०—विष्णुसहस्रनाम (संस्कृत)	×
९१—नारायणकवच (संस्कृत)	×
९२—सप्तश्लोकी भागवत (संस्कृत)	×
९३—सप्तश्लोकी गीता (संस्कृत)	×
९४—धर्मनारायण संवाद संस्कृत	×
९५—महिम्नस्तोत्र ,,	×
९६—सप्तश्लोकी रामगीता ,,	×
९७—हनुमान अष्टक	श्री गो० तुलसीदासजी
९८—गणेश स्तोत्र संस्कृत	×
९९—गणेशाष्टक ,,	×
१००—शिवाष्टक	×
१०१—पंचमुखी हनुमान कवच सं०	×
१०२—श्रीगणेश पंजर संस्कृत	×
१०३—हरिनाम मालास्तोत्र संस्कृत	×
१०४—श्री गंगाकवच ,,	×
१०५—श्री गंगालहरी	जनरूपराम

ग्रंथ		ग्रंथकार
१०६—गंगाष्टक	"	×
१०७—शिवपंचाक्षर स्तोत्र	"	
१०८—गंगामहिमापद		रामदास
१०९—शिवस्तुति		श्री वृजभूषण
११०—जगन्नाथ अष्टक	"	×
१११—अष्टपदी	संस्कृत	×
११२—पंचमुखी हनुमान कवच	"	×
११३—सुदामा की बारासड़ी		सूरदासजी
११४—रामाष्टक	संस्कृत	×
११५—फुटकर		विभिन्न ग्रंथकार
११६—अमृतधारा		श्री भगवानदास 'निरंजनी'
११७—भक्ति भावती		प्रपन्नगणेशानंद
११८—विचारमाल		अनाथ
११९—अनुभव हुलास		श्री भगवानदास 'निरंजनी'
१२०—ब्रह्म जिज्ञासा		×
१२१—शंकराचार्य आदिकृत कुछ सं० श्लोक		×
१२२—कबीर के पदों की टीका		×
१२३—जोगसुधानिधि ग्रंथ		×
१२४—ग्रंथ त्रिपदा या त्रिपद वेदांत निर्णय		चिदात्माराम
१२५—ज्ञानसमुद्र		श्री स्वामी सुंदरदास जी
१२६—प्रेमलता (चौरासी पद) छाया		आचार्य श्री हितहरिवंशजी
१२७—रासपंचाध्यायी रासधारियों की छाया		×
१२८—रासविलास (चौबीस छप्प)		श्री हित वृंदावनदास जी
१२९—निंबार्क संप्रदाय से संबंधित कुछ संस्कृत रचनाएँ		×
१३०—कवित्त आदि		श्री अग्रदासजी, श्री केशव दासजी, आचार्य श्रीहरिवंशजी, कविराय, रसिकगोविंद, गो०तुलसीदासजी, कविनाथ, मरवराम पद्माकर, लाल,

ग्रंथ	ग्रंथकार
	कवि छत्रसाल, सुंदर, सुवंस, बेताल और ठाकुर।
१३१—दोहे	श्री व्यासजी और गो० तुलसीदासजी
१३२—सरस मंजावली	श्री सहचरिशरणजी
१३३—फुटकर छंद और दोहे	श्री भगवतरसिकजी, गो० श्री तुलसीदासजी, नागरी और रसनिधि।
१३४—रामायण की घटनाओं के तिथिपत्र	श्री मोहनलाल समाधिया
१३५—रागमाला	×
१३६—सुधासर	श्री नवीन जी
१३७—भगवद्गीता (स सहस्त्र)	×
१३८—विष्णुसहस्रनाम ,,	×
१३९—भीष्मस्तवराज ,,	×
१४०—अनुस्मृति ,,	×
१४१—गजेंद्रमोक्ष ,,	×
१४२—उत्सव ग्रंथ	श्रीकृष्णदासि, स्वामी हरिदासजी और श्री ललितकिशोरीजी
१४३—पदावली	मायादास।
१४४—वृंदावन सत	भगवत मुदित
१४५—अमरप्रकाश या अध्यात्मप्रकाश (गुरुमुखी अक्षरों में)	×
१४६—सामुद्रिक	अजैराज
१४७—कवित्त	पालकराम
१४८—छंद प्रकाश	बिहारीलाल
१४९—जुगल विलास	महाराज रामसिंह
१५०—होरी के कवित्त	विभिन्न कविगण
१५१—मूलाक्षर बारहखड़ी	कोकाराम
१५२—पहाड़ा तथा लेखी	×
१५३—लघु चाणक्य राजनीति	×

ग्रंथ	ग्रंथकार
१५४—वृद्ध चाणक्य राजनीति	×
१५५—दामोदरलीला	देवीदास
१५६—फाग विलास	वीरभद्र
१५७—स्याम सगाई	श्रीनंददासजी
१५८—रुक्मणि मंगल	हीरामणि
१५९—परतीत परीक्षा	×
१६०—रमल सगुनावली	×
१६१—गीता महात्म्य	भगवानदास 'निरंजनी'
१६२—संस्कृत ग्रंथ (पंचरत्न) (आरंभ के दो पत्रों के किनारों पर बहुत अच्छे बेल बूटे चित्रित किए गए हैं)।	×
१६३—बिना नाम का ग्रंथ	बनारसीदास जैनी
१६४—सुदामाचरित्र	आलम
१६५—चूनरी	भगौतीदास (जैनी)
१६६—चूनरी	हेम (जैनी)
१६७—सीता चरित्र	×

परिशिष्ट ४

मान्य सभासद

श्री० अमरनाथ झा, एम० ए०, वाइस चांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

„ साहित्यवाचस्पति अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध', संकटहरन, बनारस

„ डाक्टर आनंद के० कुमारस्वामी, डी० एस्-सी० (लंदन), कीपर आव् दि इंडियन सेक्शन, म्यूजियम आव् फाइन आर्ट्स, बोस्टन (यू० एस० ए०)

रेवरेंड ई० ग्रीव्स नं० १ द लाईस, हार्निश्रोल्ड रोड, मलवर्न (इंग्लैंड)

„ ए० जी० शिरफ, आई० सी० एस०, मेंबर रेवेन्यु बोर्ड, बोर्डस् क्वार्टर्स, लखनऊ

„ एन० सी० मेहता, आई० सी० एस० संयुक्त प्रांतीय सरकार के एजुकेशन सेक्रेटरी, लखनऊ

„ काका कालेलकर, वर्धा

„ राय कृष्णदास, बनारस

„ केशवप्रसाद मिश्र, भदैनी, बनारस

„ गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री, प्रधान मंत्री सनातनधर्म प्रतिनिधि सभा, लाहौर

„ महामहोपाध्याय, साहित्यवाचस्पति, रायबहादुर, डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर

„ चंद्रबली पांडेय, एम० ए०, ठि० मुंशी महेशप्रसाद, आलिम फाजिल, मगवा, बनारस

„ चंद्रशेखरधर मिश्र, ग्राम रत्नमाला, डाकघर बगहा, जिला चंपारन

„ रायबहादुर, साहित्याचार्य, जगन्नाथप्रसाद 'भानु', द्वारा जगन्नाथ प्रेस, बिलासपुर, मध्यप्रांत

„ सेठ जमनालाल बजाज, ठि० रायबहादुर बच्छराज जमनालाल, वर्धा

„ जयचंद्र नारंग, विद्यालंकार, भदैनी, बनारस

„ डाक्टर दुर्गाशंकर नागर, कल्पवृक्ष कार्यालय, उज्जैन

श्री० रामगुरु धुरेंद्र शास्त्री, न्यायभूषण, आर्योपदेशक विद्यालय, शोलापुर
,, आचार्य नरेंद्रदेव, एम० ए०, एम० एल० ए०, फैजाबाद
,, प्रोफेसर निकोलस रोरिक, नगर, कुल्लू
,, डाक्टर पन्नालाल, आई० सी० एस०, डी० लिट्०, संयुक्त प्रांतीय सरकार के परामर्शदाता, लखनऊ
,, माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एम० एल० ए०, संयुक्त प्रांतीय असेंबली के अध्यक्ष, १० क्रास्थवेट रोड, इलाहाबाद
,, बनारसीदास चतुर्वेदी, टीकमगढ़
,, रायबहादुर ब्रजमोहन व्यास, एक्जिक्युटिव अफसर, म्युनिसिपल बोर्ड, इलाहाबाद
,, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, विरजानंद आश्रम, पोस्ट शाहदरा मिल
,, भगवद्दत्तजी, वैदिक अनुसंधान संस्था, ९ सी, माडल टाउन, लाहौर
,, डाक्टर भगवानदास, एम० ए०, डी० लिट्, भूतपूर्व एम० एल० ए० केंद्रीय, सिगरा, बनारस
,, साहित्यवाचस्पति महामना मदनमोहन मालवीय, हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस
,, माखनलाल चतुर्वेदी, संपादक 'कर्मवीर', कर्मवीर प्रेस, खंडवा
,, मैथिलीशरण गुप्त, चिरगाँव, झाँसी
,, मोतीलाल शर्मा, बालचंद्र प्रेस, जयपुर सिटी
,, साहित्यवाचस्पति, डाक्टर, महात्मा, मोहनदास कर्मचंद गांधी, मगन वाड़ी, वर्धा
,, डाक्टर रघुवीर, एम० ए०, पी० एच्. डी०, डी० लिट्., एट० फिल, फाउंडर डायरेक्टर, इंटरनेशनल एकेडेमी, लाहौर
,, परमहंस बाबा राघवदास परमहंसाश्रम, बरहज, जिला गोरखपुर
,, देशरत्न डाक्टर राजेंद्रप्रसाद, सदाकत आश्रम, पटना
,, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, त्रिपिटकाचार्य, द्वारा श्री जेलर सेंट्रल जेल, हजारीबाग
,, रायबहादुर लज्जाशंकर झा, शांति कुटीर, गालाबाजार, जबलपुर
,, रायसाहब ठाकुर शिवकुमारसिंह, मैमनत्था, बनारस
,, शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन, बनारस

श्री० रावराजा रायबहादुर डाक्टर श्यामविहारी मिश्र, एम० ए०, १०५ गोलागंज, लखनऊ

„ राय साहब श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम० ए० (लंदन), संयुक्त प्रांत के शिक्षा प्रसाराध्यक्ष, शिक्षा प्रसार कार्यालय, इलाहाबाद

„ श्रीराम वाजपेयी, १चैथम लाइन्स, इलाहाबाद

„ सं पूर्णानंद, बी० एस्-सी०, एल० टी०, एम० एल० ए०, संयुक्त-प्रांत के भूतपूर्व शिक्षामंत्री, जालपादेवी, बनारस

„ सत्यनारायण, प्रधान मंत्री, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार-सभा, मद्रास

„ डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, सुधर्मा, १६ हिंदुस्तान पार्क, बालीगंज, कलकत्ता

„ सुमित्रानंदन पंत, प्रकाशगृह, कालाकाँकर

„ सूर्यकांत त्रिपाठी, 'निराला' नारियलवाली गली, हाथीखाना, लखनऊ

„ पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए०, विद्याभूषण, खजांचीजदार का रास्ता, जयपुर

योग ४८

विशिष्ट सभासद

श्री० राय कृष्णजी पांडेपुर, बनारस

„ राय गोविंदचंद्र, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, एम० एल० सी०, कुशस्थली, बनारस

„ सेठ घनश्यामदास बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

„ महामाननीय डाक्टर सर तेजबहादुर सप्रू, एम० ए०, एल-एल० डी०, के० टी०, डी० सी० एल०, १८ अलबर्ट रोड, इलाहाबाद

„ पुरुषोत्तमदास हलवासिया, ४७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

„ कुँवर फतहलाल महता, राय पन्नालाल भवन, उदयपुर

„ सेठ बंशीधर जालान, कोठी सूरजमल नागरमल, ६१ हरिसन रोड, कलकत्ता

„ सेठ सर बदरीदास गोयनका, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता

„ राजा बलदेवदास बिरला, लालघाट, बनारस

„ सेठ ब्रजमोहन बिरला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

„ मनोबाई शाह, युनिटी लाज लखनऊ

„ मुरारीलाल केडिया, नंदनसाहु लेन, बनारस

„ महाराजकुमार डाक्टर रघुबीरसिंह एम० ए०, एल् एल० बी०, डी० लिट्०, रघुवीरनिवास, सीतामऊ

„ राधेकृष्णदास, शिवाला घाट, बनारस

„ रामदुलारी दुबे, गणेशगंज, अजमेर

„ रामनारायण मिश्र, बी० ए०, अवसरप्राप्त पी० ई० एस०, कालभैरव, बनारस

„ महाराजाधिराज सर विजयचंद महताब बहादुर, जी० सी० एस० आई०, बर्दमान

„ राय श्री कृष्णजी, पांडेपुर, बनारस

१८

स्थायी सभासदों की प्रांतक्रम से नामावली

१—आसम

(सभासदों की संख्या—×)

२—कश्मीर

(सभासदों की संख्या—×)

३—दिल्ली

(सभासदों की संख्या—९)

दिल्ली

श्रीयुत लाला बनवारीलाल, कोठी—भानामल गुलजारीमल, चावड़ीबाजार
,, लाला रघुबीरसिंह, बी० ए०, कश्मीरी गेट,
,, रामधन शर्मा, एम० ए०, एम० ओ० एल०, साहित्याचार्य, ४१८ कटरा नील

योग—३

नई दिल्ली

श्रीमती कृष्णादेवी कृपलानी, बी० ए०, ४ औरंगजेब रोड,
श्रीयुत ज्ञानचंद आर्य, १७ बारारवंभा रोड,
,, लाला देशबंधु गुप्त, एम० एल० ए०, ५ कैनिंग रोड,
,, नारायणदत्त, १३ बाराखंभा रोड,
,, भरत रामजी, २२ कर्जन रोड,
,, हंसराज गुप्त, एम० ए०, एल्-एल० बी०, २० बाराखंभा रोड,

योग—६

४—पंजाब

(सभासदों की संख्या—३)

लाहौर

श्रीयुत महाशय कृष्णजी, बी० ए०, कृष्णभवन, ४१ निस्बट रोड,

श्रीयुत राय बहादुर रामशरणदास,
,, लाला लालचंद, असिस्टेंट सेक्रेटरी, फाइनेंस, गुरु तेगबहादुर रोड, कृष्णनगर [ग्रीष्म का पता–शिमला ईस्ट]

योग–३

५—बंगाल

(सभासदों की संख्या–२१)

कलकत्ता

श्रीयुत इंद्रचंद केजड़ीवाल, फर्म कनीराम हजारीमल,
,, कालीप्रसाद खत्तान, बार एट-ला, ३ मांडले विला गार्डेन्स्, पोस्ट बालीगंज,
,, केदारनाथ सेठ, शास्त्री, १ गौरदास बसाक स्ट्रीट, बड़ाबाजार,
,, गंगेय नरोत्तम शास्त्री, गांगेय भवन, १२ आशुतोष दे लेन,
,, गिरधारीलाल नागर, कोठी बलदेवराम बिहारीलाल, ५ कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट,
,, गुलजारीलाल कानोड़िया, ठि० सेठ भगीरथ कानोड़िया, ४३ मकरिया स्ट्रीट
,, गोपीकृष्ण कानोड़िया, २९ विवेकानंद रोड,
,, सेठ छोटेलाल कानोड़िया, ५७ बड़तल्ला स्ट्रीट,
,, जगन्नाथप्रसाद गुप्त १२६ चितरंजन एवेन्यु
,, दामोदरदास खन्ना, १७, वाराणसी घोष स्ट्रीट
,, नंदकिशोर लोहिया, ११२ चितरंजन एवेन्यु
,, नंदलाल कानोड़िया, ४२ मकरिया स्ट्रीट
श्रीमती नर्मदा देवी, ठि० बाबू प्रभुदयाल हिम्मतसिंह का, ६ ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट
श्रीयुत नारायणदास बर्मन, ५५ क्लाइव स्ट्रीट
,, पूरनचंद बर्मन, कोठी डाक्टर एस० के० बर्मन, रासबिहारी एवेन्यु
,, भजनदास बागा, ठि० रायबहादुर बंशीलाल अबीरचंद, ४०१ अपर चीतपुर रोड
,, बालकृष्णलाल पोद्दार, ४१।१ ताराचंद दत्त स्ट्रीट

८—मद्रास

(समासदों की संख्या—×)

९—मध्यप्रदेश-बरार

(समासदों की संख्या—×)

१०—मध्य भारत

(समासदों की संख्या—९)

इंदौर

श्रीयुत रामभरोसे तिवाड़ी, १२ तुकोगंज साउथ
योग—१

उज्जैन

श्रीयुत मदनमोहन जैन, जीवनकुटी
,, रायबहादुर लालचंद सेठी, वाणिज्यभूषण, विनोदभवन
,, सूर्यनारायण व्यास, भारतीभवन, बड़े गणेश
,, साहित्याचार्य, प्रोफेसर, डाक्टर हरि रामचंद्र दिवेकर, एम० ए०, डी० लिट्०

योग—४

ग्वालियर

श्रीयुत राजा लक्ष्मसिंह जू देव, खनियाधाना स्टेट, ग्वालियर रजिडेंसी
योग—१

धार

श्रीयुत महाराज आनंदराव साहब पँवार, धार राज्य
,, कृष्णराव पूर्णचंद्र मांडलीक, चीफ इंसपेक्टर मामेदार, धार राज्य
योग—२

मुल्थान (मालवा)

श्रीयुत महाराज भरतसिंह साहब

योग–१

११—मैसूर

(समासदों की संख्या— ×)

१२—राजपूताना

(समासदों की संख्या—१३)

अजमेर मेरवाड़ा

श्रीयुत राजा कल्याणसिंह, भिनाय स्टेट

,, रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, एम० ए०, ठठ्ठों की हवेली, कड़क्का चौक

,, राय बहादुर प्रोफेसर हरिप्रसाद, नालंद, जयपुर रोड

योग–३

उदयपुर

श्रीयुत चम्पालाल वेरासरी, नागरवाड़ी

,, कुँवर तेजसिंह मेहता, भूतपूर्व मिनिस्टर

,, पुरोहित देवनाथ, मास्टर अव सेरेमनीज़ पुरोहितजी की हवेली

योग–३

काँकरोली (मेवाड़)

श्रीयुत १०८ श्रीगोस्वामी व्रजभूषण शर्मा, काँकरोली महाराज

योग–१

जयपुर

श्रीयुत शुकदेव पांडे, एम० एस० सी०, प्रिंसिपल, बिड़ला इंटर कालेज, पिलानी

योग–१

जोधपुर

श्रीयुत दीवान बहादुर धर्मनारायण काक, सी० आई० ई०, डिप्टी प्राइम मिनिस्टर, जोधपुर राज्य,

योग—१

प्रतापगढ़

श्रीयुत महाराजा महारावत साहब सर रामसिंह, के० सी० एस० आई०,

योग—१

बीकानेर

श्रीयुत सेठ चम्पालाल बांठिया, भीनासर,

योग—१

शाहपुरा राज्य

श्रीयुत माननीय महाशय भीखूलाल एम० ए०, एल् एल० बी०, जज हाईकोर्ट,

योग—१

सांभर

श्रीयुत कृष्णकुमार पुरोहित, एम० ए०, एल् एल० बी०, वकील हाईकोर्ट,

योग—१

१२—संयुक्त प्रांत

(सभासदों की संख्या—५१)

आगरा

श्रीयुत कैप्टेन राव कृष्णपालसिंह, फैसल गंज,

„ निहालकरण सेठी, सिविल लाइन,

„ प्रोफेसर हरिनाथ टंडन, एम० ए०, सेंट जान्स कालेज,

योग—३

इलाहाबाद

श्रीयुत कृष्णाराम मेहता, बी० ए०, एल् एल० बी०, लीडर प्रेस

„ ठाकुर नेहपालसिंह, आइ० ई० एस०, २१, म्योर रोड

श्रीयुत रायबहादुर भगवतीशरणसिंह, चन्द्र भवन, आउटरम रोड
„ मनोहरलाल जुत्शी, एम० ए०, १ बेली रोड
„ सत्यजीवन वर्मा, एम० ए०, हिंदुस्तानी एकेडमी, संयुक्त प्रांत
„ हरिकेशव घोष, इंडियन प्रेस, लि०

योग–६

कानपुर

श्रीयुत सेठ पदमपत सिंहानियाँ, कमला टावर
„ रतनचंद कालिया, १८ मुन्नालाल स्ट्रीट
„ लाला रामरतन गुप्त बिहारी निवास
„ हरीचंद खन्ना, इंसपेक्टर ओरियंटल-अश्यूरेंस कंपनी, १६।५३ गैंजेज बैंक, सिविल लाइन

योग–४

कालाकांकर (प्रतापगढ़)

श्रीयुत कुँवर सुरेशसिंह,

योग–१

खीरी

श्रीयुत आदित्यप्रकाश मिश्र, डिप्टी कलक्टर

योग–१

गोंडा

श्रीमती पूर्णिमा चाँदमल, ठि० श्री० चाँदमल, आई० सी० एस०

योग–१

गोरखपुर

श्रीयुत सत्यनारायण आर्य एम० ए० बी० टी० हेडमास्टर, श्रीकृष्ण उद्योग इंगलिश स्कूल, बसंतपुर घूसी, डाकखाना सरैकुलवा

योग १

ज्वालापुर

श्रीयुत रायबहादुर गंगाप्रसाद, एम० ए०, (अवसरप्राप्त चीफ जज, टहरी राज्य), वानप्रस्थाश्रम

योग–१

नैनीताल

श्रीयुत रायसाहब डाक्टर भवानीशंकर याज्ञिक, पटवा डोंगर

योग–१

बनारस

श्रीयुत रायबहादुर कमलाकर दुबे, एम० ए०, खजुरी
,, किशोरीरमण प्रसाद, मामूरगंज
,, कृष्णदेवप्रसाद गौड़, एम० ए०, एल० टी०, बड़ी पियरी
,, गोविन्द मालवीय, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एम० एल० ए०, न्यू इंश्योरेंस कं०
,, सेठ गौरीशंकर गोयनका, अस्सी
,, जगन्नाथप्रसाद खत्री, गोलागली
,, ठाकुर त्रिभुवननाथ शिवगोविंद, थार-पट-शा
,, दामोदरदास खंडेलवाल, छोटा गैबी
,, बनारसीप्रसाद सारस्वत
,, ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल्-एल० बी०, एडवोकेट, सुलानाला
,, रमेशदत्त पांडे, बी० ए०, बरनापुल
,, रामेश्वरसहाय सिन्हा, बी० ए०, (सुपरिंटेंडेंट शिक्षा विभाग म्युनिसिपल बोर्ड) ६४।१०० होरापुरा,
,, लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज
,, विश्वनाथप्रसाद, सुलानाला
,, वेणीप्रसाद रानी कुआँ
,, राय शंभुप्रसाद, ग्राम भगवपुर, पोस्ट रोहनिया,
,, साहित्यवाचस्पति रायबहादुर श्यामसुंदरदास, बी० ए०
,, श्रीरामचंद्र शर्मा, बी० ए०, एल्-एल० बी०, बी० टी०, कालभैरव

योग–१८

बनारस राज्य

श्रीयुत सूर्यप्रसाद शुक्ल, हजारी साहब, रामनगर

योग–१

बरली

श्रीयुत बलराम शर्मा, एम० ए०, एल्-एल० बी०, द्वारा कथावाचस्पति मा
राधेश्याम शर्मा, कथावाचक, वानप्रस्थी, राधेश्याम प्रेस
,, साहु रामनारायण लाल, बाँसों की मंडी
योग—३

बुलंदशहर

श्रीयुत रायसाहब, मदनमोहन सेठ, एम० ए० एल्-एल० बी० अवसरप्राप्त
जिला एवं दौरा जज, शिवपुरी
योग—१

मथुरा

श्रीयुत क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक कंपनी
योग—१

मिर्जापुर

श्रीयुत रामप्रताप जी, मालिक दुकान भैरवमल फतहचंद, मुरेलसंडी
,, राजा शारदामहेशप्रसाद सिंह शाह, चक्कदयाधीश, बढ़हर,
पोस्ट राजपुर
योग—२

मुजफ्फरनगर

श्रीयुत जगदीशप्रसाद, रईस
योग—१

सीतापुर

श्रीयुत ठाकुर रामसिंह ताल्लुकेदार
,, राजा सूरजबख्श सिंह, ऑनरेरी मुंसिफ व मैजिस्ट्रेट, कसमांडा,
पोस्ट कमालपुर, जिला
,, सोमेश्वरदत्त शुक्ल
योग—३

सुल्तानपुर

श्रीयुत कुमार रणंजय सिंह, भूतपूर्व एम० एल० ए० (केन्द्रीय), अमेठी राज्य, जिला

योग—१

हरदोई

श्रीयुत ब्रजभूषणशरण जेतली, एम० ए०, एल-एल० बी०, आई० पी० एस०, सुपरिंटेंडेंट पुलिस

योग—१

हाथरस

श्रीयुत रायबहादुर चिरंजीलाल बागला, रईस, म्युनिसिपल कमिश्नर

योग—१

१४—सिंध

(सभासदों की संख्या—×)

१५—हैदराबाद (दक्षिण)

(सभासदों की संख्या—१)

श्रीयुत राजा बहादुर बिश्वेश्वरनाथ, मेंबर जुडिशल कमिटी

योग १

१६—विदेश

(सभासदों की संख्या — ×)

कुल योग—१२९

समस्त सभासदों की प्रांतक्रम से नामावली

१—असम

(सभासदों की संख्या—×)

२—कश्मीर

(सभासदों की संख्या—२)

जम्मू

श्रीयुत विद्यावाचस्पति श्रीचंद्र शर्मा, तर्कालंकार, रघुनाथ स्ट्रीट,

योग—१

बारामूला

श्रीयुत आत्माराम, बी० ए०, बी० एस्-सी० (इंग्लैंड), सिविजनल इंजी-
नियर, जे० बी० रोड सिविकन

योग—१

३—दिल्ली

(सभासदों की संख्या—७३)

दिल्ली

श्रीयुत सेठ केदारनाथ गोयनका, कैपिटल म्युजिक हाउस, चाँदनी चौक,
,, नारायण स्वामी, श्रद्धानंद बलिदान भवन
,, लाला बनवारीलाल, कोठी भानामल गुलजारीमल, चावड़ी बाजार
,, लाला रघुबीर सिंह, बी० ए०, कश्मीरी गेट
,, रामधन शर्मा, शास्त्री, एम० ए०, एम० ओ० एल०, साहित्याचार्य,
४१८, कटरा नील
,, लक्ष्मीपति मिश्र, मेंबर, फेडरल पब्लिक सर्विस कमीशन,
मेटकाफ हाउस
,, शिवदत्त शर्मा, रेलवे क्लियरिंग अकाउंटस आफिस, बी० बी० ऐंड
सी० आई० सेक्शन, रोशनआरा,

श्रीयुत श्रीराम शर्मा, आर्यसमाज, बिड़ला लाईंस

,, श्रीराम शर्मा, ६३१, कूचा सेठ

,, सुंदरलाल भार्गव, बी० ए०, गली समोसा

,, सुधाकर, एम० ए०, शारदामंदिर लि०, नई सड़क

,, डाक्टर हरदत्त शर्मा, एम० ए०, पी एच्० डी०, प्रोफेसर, हिंदू कालेज

योग–१२

नई दिल्ली

श्रीयुत अमोलकराम साहनी, एम० ए०, २५०२ ११ बीडनपुरा, करौलबाग

,, रायबहादुर काशीनाथ दीक्षित, एम० ए०, डायरेक्टर जनरल आव् आर्कियालॉजी इन इंडिया

श्रीमती कृष्णादेवी मल्लाना, बी० ए०, ४ औरंगजेब रोड

श्रीयुत ज्ञानचंद आर्य, १७ बाराखंभा रोड

,, दशरथ ओझा, माडर्न स्कूल

,, लाला देशबंधु गुप्त, एम० एल० ए०, ५ कौनिंग रोड

,, नारायणदत्त १३ बाराखंभा रोड,

,, भरतराम, २२ कर्जन रोड,

,, प्रोफेसर रामदेव, एम० ए०, टोडरमल रोड

,, हंसराज गुप्त, एम० ए०, एल्-एल० बी०, २० बाराखंभा रोड

योग–१०

पानीपत

श्रीयुत जयभगवान जैन, बी० ए०, एल् एल० बी०, प्लीडर

योग–१

४—पंजाब

(सभासदों की संख्या—१३६)

अंबाला

श्रीयुत भैरवलाल मगनलाल जवेरिया, एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रोफेसर, जैन कालेज

योग–१

अबोहर

श्रीयुत स्वामी केशवानंद, साहित्यसदन

योग—१

अमृतसर

श्रीयुत इ द्रसिंह चक्रवर्ती, प्रीतनगर
„ डाक्टर पै द्रामल, एम० डी०, ढाब, खटीकाँ
„ महामहोपदेशक, पंजाबभूषण, पंडितराज बुलाकीराम शास्त्री, सांख्य-रत्न, विद्यानिधि, विद्यासागर, विद्यारत्नाकर, विद्यावाचस्पति, महामान्य, महामहाध्यापक, आदि आदि, गली भगवतीवाली, चौक, नमकमंडी
„ राधाकृष्ण शाही, बी० ए०, दुर्गियाना
श्रीमती रामप्यारी खन्ना, ठि० श्री० गुरादित्ता खन्ना, चौक, लोहगढ़
श्रीयुत विद्यासागर निराला, साहित्यरत्न, ठि० बाबू सोहनलाल, गली आचार्यां, कम्पोडियोंदी
„ हरिशरणानंद वैद्य, पंजाब आयुर्वेदिक फार्मेसी

योग—७

कुलू

श्रीयुत प्रोफेसर निकोलस रोरिक, नगर

योग—१

गुजरानवाला

श्रीयुत अनंतराम जैन, बी० ए०, एल्-एल० बी०, श्रीआत्मानंद जैन गुरुकुल

योग—१

जालंधर

श्रीमती लज्जावती देवी, प्रिंसिपल, कन्यामहाविद्यालय

योग—१

डिंगा (जिला गुजरात)

श्रीयुत स्वामी वेदानंद तीर्थ, आर्यसमाज मंदिर

योग—१

रावलपिंडी

श्रीयुत वेदप्रकाश अग्रवाल, आत्माराम चंद्रभान कपड़ेवाले, सदर बाजार

योग—१

लायलपुर

श्रीयुत जगद्धर शर्मा गुलेरी, एम० ए०, एल० एल० बी०, पंजाब, कृषि महाविद्यालय

योग—१

लाहौर

श्रीयुत महाराज कृष्णजी, बी० ए०, कृष्णभवन, ४१ निस्बेट रोड
„ प्रोफेसर कैलाशनाथ भटनागर, एम० ए०, मेलाराम रोड
„ गोस्वामी गणेशदत्त शास्त्री, प्रधान मंत्री, सनातनधर्मप्रतिनिधि सभा
„ तुलसीचन्द्र शैदा, कृष्णनगर
„ देवराज सेठी, एम० एल० ए०, लाजपतराय भवन
„ धर्मचंद नारंग, बी० ए०, विशारद, संचालक, हिंदी भवन, अनारकली, अस्पताल रोड
„ नरसिंहलाल शर्मा, एम० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर, सनातनधर्म हाईस्कूल
„ निरंजननाथजी श्रीमानजी, ४ कोर्ट स्ट्रीट
„ भगवद्दत्तजी, वैदिक अनुसंधान संस्था, ९ बी, माडल टाउन
„ मूलराज जैन, बी० ए०, प्रभाकर, ठि० डाक्टर बनारसीदास जैन, एम० ए०, पी-एच० डी० नेहरू स्ट्रीट, कृष्णनगर
„ डाक्टर रघुवीर एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० लिट्०, एट फिल, फाउंडर डायरेक्टर, इंटरनेशनल एकेडमी
„ राय बहादुर रामशरणदास
„ लाला लालचंद, असिस्टेंट सेक्रेटरी फाइनेंस, गुरु तेगबहादुर रोड, कृष्णनगर [ग्रीष्म का पता शिमला ईस्ट]

श्रीयुत चित्तस्वामसाद मिश्र, बी०।ए०, सेकेंड मास्टर, दयालसिंह हाईस्कूल
योग—१४

शहादरा मिल

श्रीयुत ब्रह्मदत्त जिज्ञासु विरजानंद श्राश्रम
योग—१

शेखुपुरा

श्रीयुत रायबहादुर मनोरचंद चोपड़ा, रिटायर्ड सुपरिटेंडिंग इंजीनियर, पंजाब इर्रिगेशन
योग—१

शिमला

श्रीयुत गर्गादत्त पांडे, प्रधान मंत्री, हिंदीप्रचारिणी सभा
" रामगोपाल रस्तोगी, हिंदीप्रचारिणी सभा
योग—२

हिसार

श्रीयुत प्रभुलाल वर्मा मेद, मंत्री, आर्यसमाज, तोशाम
योग—१

पटियाला रियासत

श्रीयुत मुन्नालाल पाठक, रतनचंद इंजीनियर के घर के पास, भाला शहीद
योग—१

बिलासपुर स्टेट (शिमला)

श्रीयुत अमर सिंह मैजिस्ट्रेट, द्वितीय श्रेणी
योग—१

५—बंगाल

(सभासदों की संख्या—६८)

कर्सियांग डी० एच० आर०

श्रीयुत रेवरेंड एस० के० सी० बुल्के, सं त मेरिस, कालेज
योग—१

कलकत्ता

श्रीयुत रेवरेंड अयोध्याप्रसाद, बी० ए०, उपदेशक सम्राट् आर्य समाज, ८५ बहूबाजार स्ट्रीट, सूट नं० १०
,, पांडे आनंदलाल, 'अटल', ४५।१ बाघ बाजघाट रोड
,, इंद्रचंद्र केजड़ीवाल, फर्म कनीराम हजारीमल
,, कालीप्रसाद खेतान, बार-एट-लॉ, ३ मॉडले विला गार्डेन्स, पोस्ट बालीगंज
,, सेठ केदारनाथ शास्त्री, १ गौरदास बसाक स्ट्रीट, बड़ाबाजार
,, गांगेय नरोत्तम शास्त्री, गांगेय भवन, १२ आशुतोष दे लेन
,, गिरधरदास अग्रवाल, २१ पाइकपारा रोड, पोस्ट बेलगछिया
,, गिरधारीलाल नागर, कोठी बलदेवराम बिहारीलाल, ५ कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट
,, गुलजारीलाल कानोडिया, ठि० सेठ भगीरथ कानोडिया, ४३ जकरिया स्ट्रीट
,, गोपीकृष्ण कानोडिया, २९ विवेकानंद रोड
,, सेठ घनश्यामदास बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस
,, सेठ छोटेलाल कानोडिया, ५७ बड़तल्ला स्ट्रीट
,, जगन्नाथप्रसाद गुप्त, १२६ चित्तरंजन एवेन्यु
,, जयनारायणसिंह, ३।४ टर्नर रोड
,, द्वारकनाथ अग्रवाल, ८० साउथ रोड इंटाली
,, दामोदरदास खन्ना, १७ वाराणसी घोष स्ट्रीट
,, नंदकिशोर लोहिया, ११२ चित्तरंजन एवेन्यु
,, नंदलाल कानोडिया, ४२ जकरिया स्ट्रीट
श्रीमती नर्मदा देवी, ठि० बाबू प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका, ६ ओल्ड पोस्ट आफिस स्ट्रीट

श्रीयुत नारायणदास बर्मन, ५५ क्लाइव स्ट्रीट
,, पन्नालाल माहेश्वरी, १६ ढाका पट्टी
,, पूरनचंद बर्मन, कोठी डाक्टर एस० के० बर्मन, रासबिहारी एवेन्यु
,, पुरुषोत्तमदास हलवासिया, ४७ मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट
,, सेठ सर बदरीदास गोयनका, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट

श्रीयुत सेठ ब्रजमोहन बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस
„ ब्रजरत्नदास डागा, ठि० रायबहादुर बंशीलाल, अबीरचंद, ४०१ अपर चितपुर रोड
„ बालकृष्ण लाल पोद्दार, ४१।१ ताराचंद दत्त स्ट्रीट
„ मानमल खेमका, २९ विवेकानंद रोड
„ भुवनेश्वर मिश्र 'भुवन', एम० ए०, विशारद, १ फ्री स्कूल स्ट्रीट
„ मंगतूराम जयपुरिया, २३ विवेकानंद रोड
„ मधुसूदनदास बर्मन, ५५ क्लाइव स्ट्रीट
„ महावीरप्रसाद अग्रवाल, मंत्री, बड़ा बाजार लायब्रेरी, १०।१।१ सैयदसाली लेन
„ म्हालीराम सोनथलिया, कोठी राधाकृष्ण सोनथलिया, कं०, ६५ पथरिया घट्टा स्ट्रीट
„ मूलचंद अग्रवाल, विश्वमित्र कार्यालय, १४।१ ए शंभु चटर्जी स्ट्रीट, पोस्ट बहूबाजार स्ट्रीट
„ राधाकृष्ण नेवटिया, मंत्री, बड़ा बाजार कुमारसभा, १५६ हरिसन रोड
„ रामकुमार गोयनका, ५ बसाक स्ट्रीट, बड़ा बाजार
„ रामकुमार जालान, कोठी रामचंद्र हनुमानबख्श, ५१।२ स्ट्रैंड रोड
„ रामकुमार भुवालका, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, फर्स्ट-फ्लोर
„ रायबहादुर रामदेव चोखानी, कोठी दौलतराम रामदेव, बाराणसी घोष स्ट्रीट
„ सेठ रामनाथ कानोडिया, कोठी लक्ष्मीनारायण कानोडिया कं०, क्लाइव स्ट्रीट
„ रामनारायण सिंह, एम० ए०, बी० एल०, एम० आर० ए० एस०, (लंदन), साहित्यरत्न, रिपन-कालेज
„ रामसुंदर कानोडिया, २९ बंसतल्ला स्ट्रीट
„ रामेश्वर नोपानी, श्री दौलतरामजी रावतमलजी, १७८ हरिसन रोड
„ वंशीधर जालान, कोठी सूरजमल नागरमल, ६१ हरिसन रोड
„ विनयकृष्ण रोहतगी, बी० एस-सी०, कोठी कन्हैयालाल लालचंद, ४५ आर्मेनियन स्ट्रीट
„ विमलाचरण दे, एडवोकेट, ७८ मंसातल्ला लेन, खिदिरपुर
„ विश्वनाथ सिंह, १२ हरी सरकार लेन, बड़ा बाजार

श्रीयुत विष्णुदास थासिल, ४३ पदोपूकर रोड, पोस्ट एलगिन रोड
„ सत्यपाल धवले, बिड़ला बिल्डिंग, ८ मंदिर स्ट्रीट
„ सीताराम सेकसरिया, शुद्ध खादी भंडार, १३२।१ हरिसन रोड,
„ सुदर्शन, पो० ए०, ७ चक्रबेरी रोड, साउथ, भवानीपुर
„ डाक्टर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, सुधमा, १६ हिंदुस्तान पार्क, बालीगंज
„ हर्षचंद्र छागेड़ ओसवाल, ४०१।७ ए०, अपर चितपुर रोड

योग—५३

कुमिल्ला

श्रीयुत रासमोहन चक्रवर्ती, सुपरिटेंडेंट, राममाला, छात्रावास

योग—१

चौबीस परगना

श्रीयुत रघुनंदनप्रसाद गुप्त, पोस्ट टाटागढ़ जिला

योग १

दार्जिलिंग

श्रीयुत सदानंदप्रसाद, कर्सियांग
„ हरनंदन सिंह, ठि० हिमाचल हिन्दी भवन

योग २

नदिया

श्रीयुत नलिनीमोहन सान्याल, एम० ए०, शांतिपुर

योग १

बर्द्धमान

श्रीयुत कालिदास कपूरिया, एम ए०, बी० एल, मोरमहल
„ महाराजाधिराज सर विजयचंद महताब बहादुर, जी० सी० एस० आई०

योग २

मुर्शिदाबाद

श्रीयुत रामस्वरूप पांडे, विशारद; प्रधान मंत्री श्री यदुकनाथ ग्रंथालय, पोस्ट अजीमगंज

योग १

रामपुर हाट

श्रीयुत एच० सी० गुप्त, आई० सी० एस० सब डिविजनल अफसर

योग १

हवड़ा

श्रीयुत मिहरचंद धीमानजी, ११५ बनारस रोड, सलकिया

„ श्रीनारायण चोखानी, ८ न्यु घुसुड़ी रोड श्री हनुमान-पुस्तकालय, सलकिया

योग २

६—बंबई

(सभासदों की संख्या—१५)

अहमदाबाद

श्रीयुत ए० बी० ध्रुव, एम० ए० एल्-एल० बी०, अवसर प्राप्त आई० ई० एस०

„ बसन्तप्रसाद एम० दीवानजी, पैराडाइज, शाहीबाग

„ मुनि जिनविजयजी अनेकांत विहार, शांतिनगर पोस्ट साबरमती

„ जेठालाल जोशी, खाडिया अमृतलाल की पोल

„ मणिभाई गुलाबभाई वहियेचा स्वामीनारायण मंदिर—टीकापोल

„ रामनारायण विश्वनाथ पाठक, सेठ लालाभाई दलपतभाई कालेज

योग ६

काठियावाड़

श्रीयुत चतुर भाई, मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल सोनगढ़

योग १

गुजरात

श्रीयुत मुनि पुण्यविजयजी, सागर का उपाश्रय, मनियारी पाड़ा, पाटण
,, मुनि रमणीक विजय जी सागर का उपाश्रय, मनियारी पाड़ा, पाटण,

याग २

उत्तर गुजरात

श्रीयुत जयशंकर उमाशंकर पाठक मुकाम वे डाकघर भगलोड़, जिला बीजापुर

योग १

पुलगाँव

श्रीयुत नागरमल पोद्दार, पुलगाँव काटन मिल्स,

याग १

पूना

श्रीयुत दत्तो वामन पोतदार, १०८ शनिवार पेठ

योग १

बम्बई

श्रीयुत आर० जी० ज्ञानी, एम० ए० एम० आर० ए० एस०, क्यूरेटर आर्कियालाजिकल सेक्शन प्रिंस ऑव वेल्स म्युजियम
,, प्रोफेसर एस० एच० हाथीवाला, २७ कान्वेन्ट एवेन्यु, गोपनदास रोड, शांता कुंज, बम्बई सबर्बन डिस्ट्रिक्ट
,, कुंदनलाल जैन हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय हीराबाग, गिरगाँव
,, कृष्णलाल वर्मा, ग्रंथ भांडार, माटुंगा
,, बाबा गणेश सावरकर, सावरकर सदन, केडुंस्कर रोड दादर १४
,, गोस्वामी महाराज गोकुलनाथ, बड़ा मंदिर ३ रा माइ वाड़ा, नं० २
,, घनश्यामदास पोद्दार, कृष्णभवन, वालकेश्वर
,, जादवजी त्रिकमजी, वैद्य, कालबादेवी रोड
,, ठाकुरसीदास जैन मंत्री, श्री ए० पी० दि जैन सरस्वतीभवन, सुखानंद धर्मशाला, ४

श्रीयुत डाक्टर दशरथलाल श्रीवास्तव, हाफकिन इंस्टिट्यूट ऑव सायंस
,, नाथूराम प्रेमी, हिंदी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, हीराबाग, गिरगाँव
,, नारायणलाल वंशीलाल, मलाबार हिल
,, प्रेमचंद केडिया, ६१४ द काटन एक्सचेंज, २
,, बी० सी० जैन, प्रिंसिपल, रामनारायण रुइया कालेज, माटुंगा, १९
,, बेगराज गुप्त ठि० बेगराज रामस्वरूप, कालबादेवी रोड,
,, भानुकुमार जैन, मंत्री, बंबई हिंदी विद्यापीठ, हीराबाग, ४
,, भानुकुमार जैन, मालिक—हिंदी पुस्तक भंडार, हीराबाग, ४
,, डाक्टर मोतीचंद्र चौधरी, एम० ए०, पी-एच० डी० क्यूरेटर, आर्ट सेक्शन, प्रिंस ऑव वेल्स म्युनियम
,, मोहनलाल दुलीचंद देसाई, बी० ए०, एल् एल० बी०, वकील हाई कोर्ट, तवावाला बिल्डिंग, लोहारचाल
,, रामप्रताप शुक्ल, विद्यालय प्रेस, विद्याभवन, फणसवाड़ी, २
श्रीमती लीलावती बाई, ठि० र० रु० आविकाश्रम, जुबिली बाग, तारदेव
श्रीयुत शारंगधर शामजी पहिलवान, भोगीराम छबीलदास, १३१।१३३ मोती बाजार नं० २
श्रीमती शीला माथुर, मार्फत प्रोफेसर माताप्रसाद, डी० एस-सी०, रायल इंस्टिट्यूट ऑव सायंस
श्रीयुत शुकदेवशरण केदारनाथ भार्गव, कृष्णकुंज, बीसेंट स्ट्रीट, शांताक्रुज
,, छूरजी मल्लभदास वर्मा, कच्छ कैसल, सैंडर्स्ट रोड ४
,, सोहनलाल वर्मा, व्यवस्थापक, मारवाड़ी हिंदी पुस्तकालय, कालबादेवी रोड
,, हरिजी गोविंद, ४१ हम्माम स्ट्रीट, फोर्ट
,, हीरालाल अमृतलाल शाह, बी० ए०, नं० ६९, मेरीन ड्राइव, ४ था फ्लोर, ब्लाक नं० १०

योग—२८

लोणावला (पूना)

श्रीयुत सी० के० देसाई, (अवसरप्राप्त) आई० सी० एस०, कैवल्यधाम, सी० आई० पी० आर०

योग—१

शोलापुर

श्रीयुत गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए०, प्रधानाध्यापक, उपदेशक विद्यालय, आर्यसमाज

„ राजगुरु धुरेंद्र शास्त्री, न्यायभूषण, आर्योपदेशक विद्यालय

योग—२

सूरत

श्रीयुत परमेष्ठीदास जैन, न्यायतीर्थ, मंत्री, हिंदी-प्रचारक मंडल, गांधी चौक

„ शंकरदेव विद्यालंकार, गुरुकुल विद्यामंदिर, सूपा, वाया नवसारी

योग—२

हुबली

श्रीयुत वी० जी० सराफ, सरस्वती विद्यारण्य की लायब्रेरी

योग—१

बड़ोदा राज्य

श्रीयुत अमृतलाल मोहनलाल भोजक, मुकाम पाटण, उत्तर गुजरात

„ आर० वी० महंत, श्री महंत पुस्तकालय, रामगलोलांवाला, नं० ६० अलकापुरी

„ ठाकुर क्षेत्रसिंह नारायणजी मिश्रण गढ़वी मुकाम मोढेरा, पोस्ट महावली, तालुका चाणस्मा उत्तर गुजरात

„ पुरुषोत्तमदास बहेचरदास ब्रह्मभट्ट, शिक्षक, मंडाला तालुका, डभोइ स्कूल, वाया मीयागाम, गुजरात

„ शांतिप्रिय आत्माराम, आत्माराम रोड

„ हरगोविंददास लालजीभाई, वकील, सावली

„ डाक्टर हीरानंद शास्त्री, एम० ए०, डी० लिट्०, डायरेक्टर ऑव आर्कियालाजी

योग—७

भावनगर राज्य (काठियावाड़)

श्रीयुत वल्लभदास त्रिभुवनदास गांधी, मंत्री, श्री जैन आत्मानंद सभा

„ विजय इंद्र सूरि, ठि० यशोविजय ग्रंथमाला

७—विहारोत्कल

(सभासदों की संख्या—४६)

गया

श्रीयुत गोपालकृष्ण महाजन, मुरारपुर

,, राय बागीश्वरीप्रसाद, किरानीघाट

,, सूर्यप्रसाद महाजन, मन्नूलाल लायब्रेरी

योग—३

चंपारन

श्रीयुत चंद्रशेखरधर मिश्र, ग्राम—रतनमाला, डाकघर बगहा

,, डाक्टर मुंशी दयाचंद जालान, साहित्यभूषण, एम० एच० बी०, मोतिहारी

,, रामरक्षपाल संघी, दि एम० पी० शुगर मिल्स् कं० लि०, पोस्ट मझौलिया

योग—३

छपरा (सारन)

श्रीयुत ध्रुवदेव सहाय, ठि० श्री० कपिलदेव सहाय, जमींदार, ग्राम हरदिया, पोस्ट बरहरिया

योग—१

पटना

श्रीयुत केदारनाथ चतुर्वेदी, ११५ ए पश्चिमिशन रोड

,, सर गणेशदत्तसिंह के०टी०, भूतपूर्व शिक्षामंत्री, विहार सरकार—

,, बंशीधर याज्ञिक, बेतियाहाउस रोड, पोस्ट गुलजार बाग

,, यदुनंदनप्रसाद पांडे, एम० ए०, बी० एड०, शिक्षक, पटना ट्रेनिंग स्कूल, पोस्ट महेंद्रू

,, देशरत्न डाक्टर राजेंद्रप्रसाद, सदाकत आश्रम

,, रामवृक्ष मिश्र, ग्रंथमाला कार्यालय, बाँकीपुर

श्रीयुत राय साहब रामशरण-उपाध्याय, प्रधानाध्यापक, पटना ट्रेनिंग कालेज, पोस्ट महेंद्र
„ श्रीराम, बी० ए० रिपोर्टर, क्वार्टर नं० २०, रोड नं० २९, गर्दनी बाग, पोस्ट अनीसाबाद
„ डाक्टर सच्चिदानंद सिन्हा, बार-एट-लॉ, एल्-एल० डी०
„ हरिप्रसाद शर्मा, मोकामाघाट

योग-१०

पूर्णिया

श्रीयुत गणेशलाल शर्मा, मिडिल स्कूल, रानीगंज, पोस्ट मेरीगंज
„ लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु', एम० ए०, जिला बोर्ड
„ सूर्यनारायण चौधरी, एम० ए०, कठौतिया, पोस्ट कामत

योग-३

बिहार शरीफ

श्रीयुत बेणीमाधव अग्रवाल, सेक्रेटरी, कामन रूम, नालंदा कालेज

योग-१

भागलपुर

श्रीयुत सत्येंद्र नारायण, बी० ए०, नया बाजार
„ हरलालदास गुप्त, प्रिंसिपल, टी० एन० जे० कालेज

योग-२

मानभूम

श्रीयुत रामजस अग्रवाल, झरिया
„ महाराजकुमार शंकरप्रसादसिंह देव, पंचकोट

योग-२

राँची

श्रीयुत मधुनी मिश्र, संतूलाल पुस्तकालय
„ फादर पी० शांति नवरंगी साहित्यरत्न, संत जान्स् स्कूल
„ रामकुमार बजाज, मंत्री संतूलाल पुस्तकालय

श्रीयुत रासबिहारी शर्मा, एम० ए०, साहित्यरत्न, सेक्रेटरी, ट्रेनिंग कालेज
,, बेणीमाधव मिश्र राँची जिला स्कूल

योग—५

रानीगंज (ई० आई० आर०)

श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद झुनझुनूवाले, आनरेरी मैजिस्ट्रेट
,, विभूतिप्रसाद शर्मा, साहित्यविशारद, मारवाड़ी सनातन विद्यालय
,, सत्यनारायण शर्मा, विशारद, बोर्डिंग हाउस, मारवाड़ी सनातन विद्यालय

योग—३

शाहाबाद (आरा)

श्रीयुत उमराव तिवारी, हरसू ब्रह्म-धाम, पोस्ट दुर्गावती
,, छेदीलाल गुप्त, बी० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर, इंगलिश स्कूल, डालमिया-नगर
,, निर्मलकुमार जैन, मंत्री जैनसिद्धांतभवन
श्रीमती रमादेवी जैन, डालमियानगर
श्रीयुत सेठ रामकृष्ण डालमिया, डालमिया नगर
,, लाला रामप्रसाद, मैनेजर, दयानंद स्कूल
,, रामसुन्दर सिंह, ग्राम घनेछा, पोस्ट दुर्गावती

योग—७

सिंहभूम

श्रीयुत घनीराम बख्शी, हितैषी कार्यालय, पोस्ट साईबासा

योग—१

हजारीबाग

श्रीयुत रायबहादुर गुरुसेवक उपाध्याय, रामगढ़ राज्य
,, डाक्टर जगन्नाथप्रसाद, एम० बी० एच०
,, नवलकिशोरप्रसाद, एम० ए०, बी० एल०, वकील
,, बद्रीदत्त शास्त्री, साहित्यरत्न, सेंट स्टेनिसलास कालेज, सीतागढ़

श्रीयुत महापंडित राहुल सांकृत्यायन, त्रिपिटकाचार्य, द्वारा—सी० जेलर, सेंट्रल जेल

योग—५

८—मद्रास

(समासदों की संख्या—४)

मद्रास

श्रीयुत पी० वी० आचार्य, आल इंडिया रेडियो

,, सत्यनारायण, प्रधान मंत्री, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार-सभा, त्यागरायनगर

योग—२

ट्रावंकोर राज्य

श्रीयुत ई० वी० रमन नंपूथिरी, ब्रह्मविलास मठ, पेरुरकोंडा, त्रिवेंद्रम

योग—१

विजयानगरम् राज्य

श्रीमती दवागर महारानी साहिबा

योग—१

९—मध्यप्रदेश—बरार

(समासदों की संख्या—२८)

अमरावती

श्रीयुत जगन्नाथप्रसाद, मंत्री, भारत हिंदी पुस्तकालय

,, हीरालाल जैन, एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रोफेसर, किंग एडवर्ड कालेज

योग—२

खंडवा

श्रीयुत माखनलाल चतुर्वेदी, संपादक 'कर्मवीर', कर्मवीर प्रेस

योग—१

छिंदवाड़ा

श्रीमती जुगुनू बाई, स्वामिनी, सेंट्रल लॉ प्रेस
श्रीयुत बाबूलाल श्रीवास्तव, 'प्रेमी' प्रासिक्यूटिंग सब इंसपेक्टर
" रामअधार शुक्ल, आशुकवि, सी० सी० आफिस

योग–३

जबलपुर

श्रीयुत व्याकरणाचार्य कामताप्रसाद गुरु, गढ़ा फाटक
" रमेशदत्त पाठक, एम० ए०, एल्-एल० बी०, नार्जटाउन
" व्यौहार राजेंद्र सिंह, एम० एल० ए०, साठिया कुआँ
" रामनाथसिंह, ३३, गोरखपुर
" रायबहादुर लक्ष्मीशंकर झा, शांति कुटीर, गोला बाजार

योग–५

नरसिंहपुर

श्रीयुत द्वारकाप्रसाद पाठक, एम० ए०, एल् एल० बी०, वकील
" नीतिराज सिंह, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०

योग–२

नागपुर

श्रीयुत करुणाशंकर न० दुबे, मेयो रोड
" रामनारायण मिश्र, लेक्चरर, एग्रिकल्चरल कालेज, धर्मपेठ
" विलायती राय कौशल, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, इंसपेक्टर फोन और टेलिग्राफ
" सरस्वतीप्रसाद चतुर्वेदी, एम० ए०, व्याकरणाचार्य, काव्यतीर्थ, संस्कृत के प्रोफेसर, मारिस कालेज

योग–४

बालाघाट

श्रीयुत गंगाशंकर पंड्या, बी० ए०, आनर्स (लंदन), ठि० श्री जी० बी० त्रिवेदी, डिविजनल फारेस्ट अफसर

योग–१

श्रीयुत लक्ष्मीनाथ मिश्र एम० ए०, एल० टी०, एल्-एल० बी०, डायरेक्टर, शिक्षाविभ

योग—३

ग्वालियर

श्रीयुत श्रीमंत सरदार आनंदरावजी भाऊ साहब फाल्के, कृष्ण मंदिर
„ एम० बी० गर्द, डायरेक्टर ऑफ आर्कियालॉजी
„ एन० बी० गोडबोले, विक्टोरिया कालेज, लश्कर
श्रीमती कमला थापन, एम० ए०, कमला राजा गर्ल्स कालेज
श्रीयुत राजा खलकसिंह जू देव, खनियाँधाना स्टेट, रेजिडेंसी
„ गुरुप्रसाद टंडन, एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रोफेसर, विक्टोरिया कालेज
„ त्रिवेणीप्रसाद वाजपेयी, एम० ए०, एल० टी०, साहित्यरत्न, व्याख्याता, हिंदी और अँगरेजी साहित्य, विक्टोरिया कालेज
„ रईसुद्दौला बहादुर पंचमसिंह साहब, पहाड़गढ़ कोठी, लक्ष्मीगंज
„ कुँवर पृथ्वीसिंह मैजिस्ट्रेट, खनियाँ धाना स्टेट, रेजिडेंसी
„ भास्कर रामचंद्र भालेराव, नायब सूबा, पोस्ट भिंड, बी० एन० आर०, बाया ग्वालियर
„ रावराजेन्द्र श्रीमंत सरदार कर्नल मालोजी नरसिंह-राव साहब शितोले, नरसिंहनिवास
„ राधाकृष्ण जायसवाल विशारद, जैंद्रगंज, लश्कर
„ रामचंद्र श्रीवास्तव 'चंद्र', एम० ए०, एल्-एल० बी०, साहित्यरत्न, जयाजीप्रताप, लश्कर
„ श्रीमती सरोजनी रोहतगी, स्टेशन रोड

योग—१४

दतिया राज्य

श्रीयुत जुगुलकिशोर वैश्य, अवसरप्राप्त डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर पी० डब्लू० डी० ग्वालियर राज्य, हाल स्टेट, इंजीनियर

योग—१

धार राज्य

श्रीयुत महाराज आनंदराव पँवार
" काशीप्रसाद दुबे, धारेश्वर दरवाजा
" कृष्णराव पूर्णचंद्र मांडलीक, चीफ इंसपेक्टर, ग्रामोद्धार
" गोपालचंद्र सुगंधी, एम० ए०, डिप्टी इंस्पेक्टर आव स्कूल्स, जाडलेन
" चिंतामणि बलवंत लेले, इतिहास कचहरी
" पुरुषोत्तम डबराल, एम० ए०, रासमंडल
" मेलाराम वर्मा, एम० ए०, प्रिंसिपल, आनंदकालेज
" शरच्चंद्र भटोरे, अध्यापक, बनियाँ वाड़ी

योग—८

नागोद राज्य (वाया सतना जी० आई० पी० आर०)

श्रीयुत महाराजकुमार लाल भार्गवेंद्र सिंह जू देव, दीवान

योग—१

बड़वानी (वाया महू)

श्रीयुत महेंद्रनाथ नागर, बी० ए०, साहित्यरत्न, रानीपुर

योग—१

भूपाल राज्य

श्रीयुत ज्ञानानारायण जोशी, शास्त्री, चौक

योग—१

मुस्थान (मालवा)

श्रीयुत महाराज भरतसिंह साहब

योग—१

रतलाम राज्य

श्रीयुत कवि गुलाबशंकर कल्याणजी मोरी, ठि० पंड्या चुन्नीलाल केशव
लाल सुमी, श्री सज्जन नारायण मार्केट
" रावसाहब चुन्नीलाल एम० आफ दीवान
" नाथूराम शर्मा बी० ए०, असिस्टेंट सेक्रेटरी, स्टेट काउंसिल

योग—३

रीवाँ-राज्य

श्रीयुत ठाकुर साहब गोपालशरण सिंह नई गढ़ी, पोस्ट मऊगंज
" महावीरप्रसाद अग्रवाल एम० ए०, एल्-एल० बी०, दरबार हाई स्कूल कालेज
" राय बहादुर रामशरण मिश्र एम० ए०, डायरेक्टर शिक्षा-विभाग

योग—३

समथर स्टेट (झाँसी)

श्रीयुत विश्वनाथसिंह फूलवान, पोस्ट मोठ

योग—१

सीतामऊ राज्य

श्रीयुत महाराजकुमार डाक्टर रघुबीरसिंह एम० ए०, एल्-एल० बी०, डी० लिट्०, रघुबीर निवास

योग—१

११—मैसूर

(सभासदों की संख्या—३)

मैसूर

श्रीयुत जी० सच्चिदानंद, १०५५ नंजराज, अग्रहार
" ना० नागप्पा, एम० ए०, ९४४ चामुंडी मंदिर
" हिरण्यमयजी, ठि० हिंदी प्रचार-सभा

योग—३

१२—राजपूताना

(सभासदों की संख्या १६९)

अजमेर

श्रीयुत राजा कल्याणसिंह भिनाय स्टेट, मेरवाड़ा
" किशनलाल दुबे, सहायक अध्यापक, डमेंड, मेमोरियल हाईस्कूल
" रावसाहब गोपालसिंह राठौर, खरवा

श्रीयुत महामहोपाध्याय साहित्यवाचस्पति, रायबहादुर, डाक्टर गौरीशंकर हीराचंद ओझा

" ठाकुर नारायणसिंह, बी० ए०, संपादक, क्षात्रधर्म

" कुँवर नाहरसिंह, बी० ए०, एल्-एल० बी०, उदयपुर हाउस, मेयो कालेज

" पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी, साहित्याचार्य, धर्मशिक्षक तथा अँगरेजी के प्रोफेसर, मेयो कालेज

" रायबहादुर मदनमोहन शर्मा, एम० ए०, सेक्रेटरी, बोर्ड ऑव् हाई स्कूल ऐंड इंटरमीडियट एजुकेशन, अजमेर मेरवाड़ा

" रामचंद्र शर्मा वैद्य, राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय

श्रीमती रामदुलारी दुबे, गणेशगंज

श्रीयुत रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, एम० ए०, उदवों की हवेली, फदक्का चौक

श्रीमती सुशीला भार्गव, फूलनिवास, कचहरी रोड

श्रीयुत दीवान बहादुर हरबिलास शारदा, हरनिवास, सिविल लाइंस

" रायबहादुर प्रोफेसर हरिप्रसाद, नालंद रोड

योग—१४

माउंट आबू

श्रीयुत रोशनलाल भट्ट, राजपूताना एजेंसी आफिस

योग—१

उदयपुर (मेवाड़)

श्रीयुत अंबालाल देरासरी, नागरवाड़ी

" उमाशंकर द्विवेदी, "विरही", विरही सदन

" करनीदानजी दधवाड़िया, खेमपुर की हवेली

" खवास जोरावरनाथ, भन्याणी चौहट्टा

" कुँवर तेजसिंह मेहता, भूतपूर्व मिनिस्टर

" दयाशंकर श्रोत्रिय, संचालक, महिला-मंडल

" डाक्टर दामोदरलाल शर्मा, एम० ए०, पी-एच डी०, गोवर्धनगली

" पुरोहित देवनाथ, मास्टर ऑव् सेरेमनीज, पुरोहितजी की हवेली

" कुँवर फतहलाल महता, राय पन्नालाल भवन

श्रीयुत बख्तावरलाल शर्मा, मिशन अस्पताल
श्रीमती भुवनेश्वरी देवी, संगीतरत्ना, अमल का काँटा
श्रीयुत रणबहादुर सिंह, एम० ए०, एल० टी०, भूपाल नोबुल्स हाईस्कूल
,, रावबहादुर ठाकुर राजसिंह बेदला
,, रामशंकरजी भट्ट, अध्यक्ष षट्दर्शन, भट्टजी का रावला

योग १४

काँकरोली (मेवाड़)

श्रीयुत गोस्वामी ब्रजभूषण शर्मा, काँकरोली महाराज

योग १

कोटा

श्रीयुत गोपीनाथ अग्रवाल, बी० ए०, शिक्षक श्री महाराजकुमार
,, कविराजा दुर्गादानजी, कोटड़ी
,, डाक्टर मथुरालाल शर्मा, एम० ए०, डी० लिट्०, पञ्चायतभवन
,, सेठ मोतीलाल जैन, पोस्ट मँगरोल

योग ४

चिड़ावा

श्रीयुत रामचंद्र शर्मा, 'प्रफुल्ल', श्रीकृष्ण वाचनालय

योग १

जयपुर

श्रीयुत गणेशनारायण सोमाणी, वकील
,, महामहोपाध्याय गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, दशावताप, पान का दरवाजा, सिटी
,, पुरोहित प्रतापनारायण कविरत्न, ताजीमी सरदार, राज्य
,, मुकुंद शास्त्री पर्वणीकर, हवामहल के सामने
,, मोतीलाल शर्मा, बालचंद्र प्रेस, सिटी
,, रामकृष्ण शुक्ल, 'शिलीमुख', एम० ए०, महाराजा कालेज
,, रूड़मल शर्मा, बी० ए०, बी० टी०, छगमूलाल की टोंटी, चौकड़ी तोपखाना

श्रीयुत स्वामी लक्ष्मीराम, वैद्य, आयुर्वेदाचार्य, संगानेर दरवाजा
,, राजश्री ठाकुरसाहब शिवनाथसिंह, मलसीसर भवन
,, शुकदेव पांडे, प्रिंसिपल, बिड़ला इंटरकालेज, पिलानी
,, पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए०, विद्याभूषण, तहसीलदार का रास्ता

योग ११

जोधपुर

श्रीयुत डाक्टर कल्याणबक्श माथुर, एम० एस० सी०, डी० फिल०, ९५ रोड १ सरदारपुरा
,, दीवान बहादुर धर्मनारायण काक, सी० आई० ई०, डिप्टी प्राइम मिनिस्टर, स्टेट
,, रामकरणजी, मोती चौक
,, साहित्याचार्य विश्वेश्वरनाथ रेऊ, अफसर इंचार्ज, आर्कियालाजिकल डिपार्टमेंट, राज्य
,, शुभकरण बदरीदान कविया, एम० ए० एल-एल० बी०, रायपुर की हवेली
,, सोमनाथ गुप्त, एम० ए०, काली गुमटी, सरदारपुरा

योग-६

झालरापाटन

श्रीयुत नवरत्न गिरधर शर्मा, झालावाड़ राजगुरु
,, रायबहादुर सेठ मानिकचंद सेठी, विनोदभवन, सिटी

योग-२

डूंगरपुर स्टेट

श्रीयुत राठोर सूरजमल थागड़िया, पुरातत्त्व विभाग,

योग-१

नवलगढ़

श्रीयुत हरनाथसिंह, डुंडलोद, पोस्ट

योग-१

नाथद्वारा (मेवाड़)

श्रीयुत भट्ट पुरुषोत्तम शर्मा, तैलंग, विद्याविभाग,

योग–१

प्रतापगढ़

श्रीयुत महाराजा महारावल सर रामसिंह, के० सी० एस० आई०,

योग–१

फलोदी

श्रीयुत अनूपचंद लूणावत, लूणावतों की गवाड़,

योग–१

बनेड़ा (मेवाड़)

श्रीयुत रविशंकर देरासरी बार-एट-ला,

योग–१

ब्यावर

श्रीयुत मुनि ज्ञानसुन्दर जी,

,, दीपचंद्र अग्रवाल, एलक पन्नालाल, दि जैन सरस्वतीभवन, नाशिया

,, रामेश्वरप्रसाद गुप्त, एम० ए०, चंग गेट,

योग–३

बीकानेर

श्रीयुत अगरचंद भैरोदान सेठिया, मुहल्ला मरोठियों का,

,, अमीरचंद भूरा, देशनोक,

,, अयोध्याप्रसाद तिवारी, विशारद, एज्युकेशन गुफाडियो

,, डॉक्टर अरुणकुमार मजूमदार, एल० एम० एफ० प्रिंस बिजयसिंह मेमोरियल जेनरल हास्पिटल फार विमेन एंड चिल्ड्रेन,

,, अविनाशचंद्र, एल० एम० एस० एफ०, डिस्पेंसरी, गंगा शहर,

,, आनंदप्रकाश बी० एस-सी०, सब हेड टी० सी० सेक्शन, रेलवे आडिट आफिस

श्रीयुत डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव एम० ए०, पी० एच० डी०,
डी० लिट्०, प्राफेसर, डूँगर कालेज
" मुंशी इब्राहीमखाँ ममेजा, श्रीगंगाशहर रोड, पेशकार, तहसील
सदर
" ईश्वरदयालजी, वकील, हाईकोर्ट
" ऊधोदास, हिंदी प्रभाकर, रेलवे स्टोर
" एम० एन० थेलानी, प्रिंसिपल, डूँगर कालेज
" क० मोहनलाल बोहरा, सहायक अध्यापक, स्टेट स्कूल
" कन्हैयालाल कोचर, बी० ए०, एल्-एल० बी०, अध्यापक,
कोचरों का चौक
" कस्तूरचंद व्यास माधवनिवास, चूनगर चौक
" कानदान शर्मा, साहित्यप्रभाकर, आबकारी विभाग
" केवलचंद्र शर्मा, बी० ए०, एल्-एल० बी०, वकील हाईकोर्ट,
आचार्यों का चौक
" केशवप्रसाद गुप्त, एम० ए०, एल्-एल० बी०, डिस्ट्रिक्ट जज
" केशवानंद शर्मा, बी० एस्-सी०, बी० सी० ई०, महकमा तामीरात
" खुशहालचंद डागा, ठि० श्रीराजा विश्वेश्वरदयाल डागा,
सी० आई० ई०
" गंगादास बारठ, अध्यापक, स्टेट हाइ स्कूल, चूरू
" गजराज ओझा, एम० ए०, एल्-एल० बी०, तहसीलदार,
रतनगढ़ स्टेट
" गुलाबसिंह वर्मा, क्लर्क, रेलवे स्टोर्स
" डॉक्टर गोपालसिंह, एल० एम० एस० एच०, गोपाल-मेडिकल
हाल, गंगाशहर
" गोपीनाथ तिवारी, एम० ए०, मुख्य हिंदीअध्यापक, एस० एम०
हाईस्कूल
" गोवर्धनलाल पांडे, सूरसागर के पास 'रामनिवास', तहसीलदार सदर
" गौरीशंकर आचार्य, बी० ए०, हेडमास्टर, बी० के० विद्यालय
" चंद्रधर इस्सर, एम० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट
" चंद्रशेखर शास्त्री, वैद्यराज, चंद्रशेखर फार्मेसी
" चंद्रसिंह, विशारद, डूँगर कालेज होस्टेल

श्रीयुत सेठ चंपालाल बांठिया, भीनासर

,, चेतनदास खत्री, भीनासर

,, छगनलाल गुलगुलिया, देशनोक

श्रीमती छोटाबाई प्रधानाध्यापिका, स्वर्गीय श्री हमीरमल बांठिया बालिका विद्यालय, भीनासर

श्रीयुत छोटूलाल सुराना, पुरानी लाइन, गंगाशहर

,, जगन्नाथ ओझा, सारस्वत, वैद्यभूषण, गंगाशहर

,, जगन्नाथजी रामदेव विश्वकर्मा, पुरानी लाइन, गंगाशहर

,, जवनलाल बैद, भीनासर

,, जयप्रकाश गुप्त, क्लर्क, रेलवे दफ्तर

,, मुन्शी जलालखाँ, कलक्टर, सर्किल पुलिस इंसपेक्टर, छनकरनसर

,, जसवन्तसिंह सिंगवी, बी० ए०, एल-एल० बी०, प्राइम मिनिस्टर साहब की कोठी

,, जीवनमल जोशी, वकील, सुजानगढ़

,, कुँवर दर्शनसिंह सेंगर, महकमा खास

,, डाक्टर दिगपालसिंह राठौर, एल० एम० पी०, एल० पी० एच०, हैल्थ अफसर, ३१ पोफेर्स क्वार्टर्स, रानी बाजार

,, देवदमन गोस्वामी आबकारी विभाग

,, डाक्टर धनपतराम, इंचार्ज, चैरिटेबल एलोपैथिक डिस्पेंसरी, मेहता चौक

,, स्वामी नरोत्तमदास, एम० ए०, शांतिआश्रम, पावर हाउस के पास

,, नाथूराम खड़गावत, खड़गावतों की गवाड़

,, कुँवर प्रतापसिंह सेंगर, बड़े पोस्ट आफिस के पास

,, प्रयागदत्त व्यास, गिरानी, सुनारों की गवाड़

,, ठाकुर पूर्णसिंह, बी० ए०, असिस्टेंट इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स, शिक्षाविभाग

,, फतेहचंद गुलगुलिया, देशनोक

,, फाल्गुन गोस्वामी, गोस्वामी चौक

श्रीमती बसंतबाई, सहायक अध्यापिका, स्व० श्री हमीरमल बांठिया बालिका विद्यालय, भीनासर

श्रीयुत भँवरलाल खत्री, देशनोक

श्रीयुत भँवरलाल नाहटा, द्वि० श्रीशंकरदान नाहटा, नाहटों की गवाड़
„ भँवरलाल बैद, हेडक्लर्क, कस्टम्स् डिपार्टमेंट
„ भँवरलाल सुराना, बैद, देशनोक
„ भगवानदत्त शर्मा, बी० ए०, अध्यापक, स्टेट मिडिल स्कूल,
राम लदेसर
„ भीष्मदेव शर्मा, अध्यापक, चौपड़ा स्टेट स्कूल, गंगाशहर
„ भैरवदान खत्री, बी० ए०, डिप० पी० इ०, डिप्टी इंसपेक्टर
ऑव स्कूल्स,
श्रीमती मथुराबाई, सहायक अध्यापिका, स्व० श्री सेठ हमीरमल बाँठिया
बालिका विद्यालय, भीनासर
श्रीयुत महंत मनोहरदास, कबीरमंदिर, देशनोक
„ मनोहरलाल, फार्मेसी इचार्ज, जनाना अस्पताल
„ माणचंद शर्मा, द्वितीयाध्यापक, श्री जैन श्वेतांबर पाठशाला,
नए कुएँ के पास
„ मूलचंद मूँधड़ा, देशनोक
„ मेघजी भक्तराम विश्वकर्मा, भीनासर
„ मेहरचंदजी, अध्यापक, स्टेट स्कूल, हनुमानगढ़ फोर्ट
„ वैद्यभूषण मोहनलाल कोठारी, देशनोक
„ मोहनसिंह ठीकेदार, स्टेशन रोड, श्री डूँगर कालेज के सामने
„ यशराज कट्टा, सराफा बाजार
„ ठाकुर युगुलसिंह खीची, एम० ए०, एल्-एल० बी०, बार् एट लॉ,
डी० पी० एड (लंदन), रोशनीघर के पास
„ रघुवरदयाल गोयल, वकील हाईकोर्ट, मुहल्ला गालछान
„ रामकृष्ण मलिक, बी० ए०, पर्सनल असिस्टेंट टु चीफ इंजीनियर,
पी० डब्लू० डी०
„ सेठ रामगोपालजी मोहता
„ रामचंद्र० रघुवंशी असकानंद, संचालक, अध्यात्ममंडल, लोको दफ्तर
„ रामप्रताप भैरूँदान मेद, क्षत्रिय स्वर्णकार, पुरानी लाइन, गंगाशहर
„ रामबक्स मूँधड़ा, देशनोक
„ रामलोटनप्रसाद वर्मा, विशारद, अध्यापक श्रीसादूल हाई स्कूल
„ ठाकुर रामसिंह, एम० ए०, डाइरेक्टर जनरल ऑव एजुकेशन

श्रीयुत लक्ष्मीनारायण मूँधड़ा, बी० ए०, देशनोक

श्रीमती लाडवती देवी, धर्मपत्नी श्री शंभूदयालजी, अध्यापक, स्टेट मिडिल स्कूल, मीनासर

श्रीयुत वल्लभ गोस्वामी, गोस्वामी चौक

,, विद्याधर शास्त्री, एम० ए०, प्रोफेसर, डूँगर कालेज

,, वैद्य शंकरदत्त शर्मा शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य, मोहता धर्मार्थ चिकित्सालय तथा आयुर्वेद विद्यालय

,, शंभूदयाल सक्सेना, साहित्यरत्न, सेठिया कालेज

,, श्रीनारायणजी, वैद्य, शास्त्री

,, श्रीराम शर्मा, बी० ए० (इलाहाबाद), असिस्टेंट हेड मास्टर, गा० नो० हाई स्कूल

,, शेरसिंह, एम० ए०, एल्-एल० बी०, जज, हाईकोर्ट

श्रीमती सरस्वती देवी शर्मा, विद्याविनोदिनी, धर्मपत्नी डाक्टर जयशंकरजी, वैद्य विशारद, मोहता अस्पताल, मोहता चौक

श्रीयुत सुन्दरलाल शर्मा, बी० ए०, पसनल असिस्टेंट टु दि प्रिंसिपल, जनाना मेडिकल ऑफिसर

,, सूबेदारसिंह शर्मा, हेडक्लर्क, जनाना अस्पताल

,, सूर्यप्रसाद शर्मा, बी० ए०, रानी बाजार, गुरुद्वारे के पास

,, सूर्यमल माठोलिया, हनुमान पुस्तकालय, रतनगढ़

,, हनुमानदत्त शर्मा, वकील, पो० सुजानगढ़,

,, हरिरत्न वर्मा, बी० ए०, अध्यापक स्टेट मिडिल स्कूल, राज सरेसर

,, महंत हरिहर गिर, डेरा रामनगर,

योग—९६

बूँदी

श्रीयुत रायावत महेंद्रसिंह, चीफ रेवेन्यु अफसर, स्टेट,

,, राज्य कवि राव शत्रुसाल जी,

योग—२

भरतपुर

श्रीयुत प्रभुलाल गुप्त, अध्यापक, वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल, कुमावर राज्य,

श्रीयुत प्रेमनाथ चतुर्वेदी, बी० ए०, ब्राह्मणों का मुहल्ला, सिटी

योग—२

भीलवाड़ा (मेवाड़)

श्रीयुत ठाकुर चंद्रनाथ माथुर, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट

योग—१

मारवाड़

श्रीयुत पुरुषोत्तमदास पुरोहित, बी० ए०, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, बलोत्रा

योग—१

रामकोट

श्रीयुत ए० एल० स्वादिया, क्युरेटर, वाट्सन म्युजियम

योग—१

बड़ी रूपाहेली (मेवाड़)

श्रीयुत ठाकुर साहब चतुरसिंहजी, राजस्थान

योग—१

शाहपुरा

श्रीयुत माननीय महाशय चोखूलाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, जज, हाईकोर्ट, रियासत

योग—१

साँभर

श्रीयुत कृष्णकुमार पुरोहित एम० ए०, एल्-एल० बी०, वकील हाईकोर्ट

योग—१

१३—संयुक्त प्रांत

(सभासदों की संख्या ५२८)

अलमोड़ा

श्रीयुत चिंतामणि तिवारी, मुहल्ला कनौली

श्रीयुत नारायणदत्त जोशी, गवर्नमेंट इंटर कालेज
,, मक्खनलाल, एम० एस्-सी०, गवर्नमेंट इंटरमीडियट कालेज
,, विश्वंभरदत्त भट्ट, एम० ए०, गवर्नमेंट इंटर कालेज
,, हीरावल्लभ तिवारी, ठि० श्री मक्खनलाल, एम० एस्-सी०, गवर्नमेंट इंटर कालेज

योग—५

अलीगढ़

श्रीयुत गोकुलचंद शर्मा, एम० ए०, साहित्यसदन
,, फूलचंद मिश्र, आनरेरी मैजिस्ट्रेट, श्यामनगर
,, मुरलीमनोहर गुप्तारा, एम० ए० (प्रयाग), एम० ए० (आक्सन), धर्मसमाज इंटर कालेज

योग—३

आगरा

श्रीयुत अंबिकाचरण शर्मा, एम० ए०, हिंदी विभाग, संत जांस कालेज
,, अमूल्यरत्न प्रभाकर, प्रभाकरभवन, राजामंडी
,, कैप्टेन राव कृष्णपालसिंह, केसरा भाट
,, गलाबराय, एम० ए० (आगरा), गोमतीभवन
,, चिरंजीलाल शर्मा पालीवाल, भैरवबाजार
,, जीवनचंद तात्लुकेदार, एम० ए०, पुस्तकाध्यक्ष, संत जांस कालेज
,, टीकमसिंह तोमर, लेक्चरर हिंदी, बलवंत राजपूत कालेज
,, निहालकरण सेठी, सिविल लाइन
,, महेंद्र जैन, मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा
,, ठाकुर रामसिंह, बी० ए०, असिस्टेंट कमिश्नर इन्कमटैक्स, बिहारी निवास, टु डला, जिला
,, विश्वंभरदयाल शांडिल्य, एम० ए०, लेक्चरर इन हिंदी, आगरा कालेज
,, ठाकुर वेणीमाधवसिंह, एम० एस्-सी०, असिस्टेंट इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स
,, प्रोफेसर हरिहरनाथ टंडन, एम० ए०, संत जांस कालेज

योग—१३

आजमगढ़

श्रीयुत अलगूराय शास्त्री, एम० एल० ए०, डाकखाना अमिला, जिला
" त्रिवेणीप्रसाद साहु, महल्ला माल्धरगंज, शहर
" दुक्खीसिंह, प्रधानाध्यापक, अपर प्राइमरी स्कूल, बकवल, मऊ नाथभंजन
" लाल परीखासिंह, ग्राम बकवल, पोस्ट मऊ, जिला
" प्यारेलाल, आजिज, एम० ए०, एल० टी०, अजमतगढ़ पैलेस
" मुंशी महेंद्रलाल श्रीवास्तव, हेडमास्टर, एम० ए० वी० स्कूल, मऊ नाथभंजन
" राजकुमार सिंह, सुरजपुर
" रामावतार मिश्र, बी० ए०, एल्-एल० बी०, ग्राम बस्ती, पोस्ट रामपुर, जिला
" राय रासबिहारीलाल, गुरुटोला
" रायसाहब विन्ध्येश्वरीप्रसाद सिंह, डिप्टी कलेक्टर
" हरकृष्णदास सर्राफ, आसिफगंज
" हरिहरप्रसादजी, जज

योग—१२

इटावा

श्रीयुत कालीदत्त मिश्र, सेक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड
" चौधरी कृष्णगोपाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एडवोकेट
" महादेवप्रसाद, एडवोकेट
" राजाराम मुख्तार
" रामनारायण चतुर्वेदी, एम० ए०, एल० टी०, साहित्यरत्न, गवर्नमेंट इंटर कालेज
" रायबहादुर विश्वंभरनाथ, रघुनाथभवन, डिप्टी
" शारदाप्रसाद, जसवंतनगर, जिला
" सूरजप्रसाद, भर्थना, जिला

योग—८

इलाहाबाद

श्रीयुत अमरनाथ झा, एम० ए०, वाइस चांसलर, प्रयाग विश्वविद्यालय
श्रीमती इंदुमती तिवारी, एम० ए०, ४ बी बैंक रोड
श्रीयुत कृष्णाचन्द्र एम० ए०, एल्-एल० बी०, सिविललाइन
,, कृष्णाराम मेहता, बी० ए०, एल्-एल० बी०, लीडर प्रेस
,, कुँवरकृष्ण मुखिया, गवर्नमेंट नार्मल स्कूल
,, राय बहादुर कौशलकिशोर बी० ए०, 'अवध', ३ लाउथर रोड
,, गुर्ति सुब्रह्मण्यम्, विशारद, दारागंज
श्रीमती कुमारी चंद्रावती त्रिपाठी, एम० ए०, १६ बैंक रोड
श्रीयुत आयुर्वेदपंचानन जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, ३ सम्मेलनमार्ग
,, तारकेश्वरनाथ वर्मा, मुख्तार, हँडिया
,, महामान्नीय डाक्टर सर तेजबहादुर सप्रू, एम० ए०, एल् एल० डी०, के-टी०, डी० सी० एल०, १८ अलबर्ट रोड
,, चौधरी धर्मसिंह, बी० ए०, एल० टी०, नं० १ बेली रोड, नया कटरा
,, डाक्टर धीरेंद्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट० (पेरिस), अध्यक्ष हिंदी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय
,, नंददुलारे वाजपेयी, एम० ए०, इंडियन प्रेस
,, ठाकुर नेहपालसिंह, आई० ई० एस०, २१ म्योर रोड,
,, माननीय पुरुषोत्तमदास टंडन एम० ए०, एल्-एल० बी० (अध्यक्ष प्रांतीय असेंबली संयुक्त प्रांत, लखनऊ), १० क्रास्थवेट रोड
,, बाबूराम अवस्थी, एम० ए०, बी० एस्-सी०, एल-एल० बी०, एडवोकेट हाईकोर्ट, ३२ ए० एलगिन रोड
,, डाक्टर बाबूराम सक्सेना, एम० ए०, डी० लिट्, २४ बेथम लाइन
,, रायबहादुर ब्रजमोहन व्यास, इक्जिक्यूटिव अफसर, म्युनिसिपल बोर्ड
,, भगवतीप्रसाद, हिंदू महिला विद्यालय, कैनिंग रोड
,, रायबहादुर बाबू भगवतीशरणसिंह, चंद्रभवन, क्लाइव रोड
,, मनोहरलाल जुत्शी, एम० ए०, १ बेली रोड
श्रीमती रत्नकुमारी, ठि० डाक्टर सत्यप्रकाश, डी० एस्-सी०, डी० बेली रोड

श्रीयुत राजेंद्रसिंह गौड़, एम० ए०, सी० टी०, अध्यापक, डी० ए० वी० हाईस्कूल
,, डाक्टर रामकुमार वर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०, अध्यापक हिंदी विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय
,, राय रामचरण अग्रवाल, एम० ए०, एल् एल० बी०, विशारद, बड़ी कोठी, दारागंज
,, रामनरेश त्रिपाठी, हिंदी मंदिर
,, डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी, एम० ए०, डी० एस्-सी०, १०६, लूकरगंज
,, लक्ष्मीधर वाजपेयी, संपादक, तरुणभारत ग्रंथावली, दारागंज
,, विष्णुदत्त भार्गव, १६ कैनिंग रोड
,, वेंकटेशनारायण तिवारी, एम० ए०, एम० एल० ए०, कटरा
,, शक्तिधर शर्मा गुलेरी, एम० ए०, संस्कृतविभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय
,, शालिग्राम पेशकार, ७६६, कटरा
,, शिवदयाल जायसवाल, नं० ११५, नखासकोना
,, रायसाहब श्रीनारायण चतुर्वेदी, एम० ए० (लंदन), संयुक्त प्रांत के शिक्षाप्रसाराध्यक्ष, दारागंज
,, श्रीराम भारतीय, एम० ए०, स्थायी मंत्री, अखिल भारतीय सेवासमिति, १५, कचहरी रोड
,, श्रीराम वाजपेयी, १ अयम लाइंस
,, सत्यजीवन वर्मा, एम० ए०, हिंदुस्तानी एकेडमी, संयुक्त प्रांत
,, सत्याचरण, एम० ए०, बी०-टी०, प्रधानाध्यापक डी० ए० वी० हाईस्कूल
,, सद्‌गोपाल, एम० एस्-सी० (टैक), १० बैंक रोड
,, सुरेंद्रनाथ तिवारी, आफिस ऑव असिस्टेंट इंसपेक्टर जनरल रलवे पुलीस

श्रीमती कुमारी सुशीलकुमारी वर्मा ठि० रायसाहब श्री व्रजनारायण, असिस्टेंट इंजीनियर, नं० ४२, कैनिंग रोड

श्रीयुत हरिकेशव घोष, इंडियन प्रेस लि०
,, हरिराम अग्निहोत्री, इनकम टैक्स अफसर

श्रीयुत रायबहादुर हिम्मतसिंह के० माहेश्वरी, केसर भवन, १८ पार्क रोड

योग—४५

उन्नाव

श्रीयुत कृष्णदत्त त्रिपाठी, साहित्यरत्न, ठि० श्री हजारीलाल आश्रम, मौरावाँ
,, जयनारायण कपूर, बी० ए०, एल्-एल० बी०, वकील, प्रधान मंत्री, हिंदी साहित्य पुस्तकालय, मौरावाँ, जिला
,, शिवदुलारे त्रिपाठी, मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा, मौरावाँ, जिला

योग—३

एटा

श्रीयुत रामदत्त भारद्वाज एम० ए०, एल् एल० बी०, एल० टी०, ए० बी० पी० हाई स्कूल कासगंज
,, वासुदेवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, साहित्यरत्न, हिंदी अध्यापक, गवनमेंट हाईस्कूल

योग—२

कनखल

श्रीयुत विष्णुदत्त वैद्य
,, सोमदत्त मिश्र पुरीय

योग—२

कानपुर

श्रीयुत अयोध्यानाथ शर्मा, एम० ए०, सनातनधर्म कालेज
,, एन० बी० भारद्वाज, नयागंज
,, ठाकुर कन्हैयासिंह, बी० ए०, इनकम टैक्स अफसर
,, कालिकाप्रसाद धावन, सेक्रेटरी, गयाप्रसाद पुस्तकालय, सरस्वती-भवन, मेस्टन रोड
,, कुंजविहारी लाल श्रीवास्तव, ए० बी० म्युनिसिपल, हाइ स्कूल, नयागंज
,, केशवचंद्र शुक्ल, डिप्टी कलक्टर

श्रीयुत चन्द्रशेखर पांडे, एम० ए०, प्रोफेसर, सनातनधर्म कालेज, नवाबगंज
,, दुर्गाप्रसादजी, डिप्टी कलक्टर
,, नारायणदास पाजेरिया, ठि० श्री जगन्नाथ विजराजजी, कूपरगंज
,, सेठ पद्मपत सिंहानिया, कमला टावर
,, परमेश्वरदीन मिश्र, एम० ए०, बी० एस-सी०, एल्-एल० बी, एडवोकेट हाईकोर्ट, श्री० पं० देवीचरण मिश्र, रिटायर्ड पुलीस इंसपेक्टर के सुपुत्र, फछियाना मुहाल, मोतीमुहाल सड़क सिटी
,, परिपूर्णानंद वर्मा, शास्त्री, कमला टावर
,, प्रभुलाल शर्मा बी० ए०, एल० टी०, १८ मुन्नालाल स्ट्रीट, परेड
,, प्राणस्वरूप चतुर्वेदी, अवसरप्राप्त डिप्टी कलक्टर, ७७ स्वरूपनगर
,, मन्नीलाल नेवटिया, काहू कोठी
,, माधवप्रसाद पांडे, एस० सी०, रिटायर्ड डिप्टी इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स, प्रेमनगर
,, मुंशीराम शर्मा, एम० ए०, आर्यनगर
,, रतनचंद कालिया, १८ मुन्नालाल स्ट्रीट
,, लाला रामरतन गुप्त, बिहारी निवास
,, लक्ष्मीकांत त्रिपाठी एम० ए०, पटकापुर

श्रीमती विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मंजु', विद्या विभाग, नवाबगंज

श्रीयुत श्यामसुन्दरलाल शुक्ल, रिटायर्ड डिप्टी इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स, रामबाग सीसामऊ
,, संग्रामप्रसाद, सब डिप्टी इंसपेक्टर ऑव स्कूल्स, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड
,, सत्यनारायण पांडेय, एम० ए०, हिंदी के लेक्चरर, सनातनधर्म कालेज
,, सद्गुरुशरण अवस्थी, एम० ए०, प्रेममंदिर
,, हरीचंद खन्ना, इंसपेक्टर, ओरियंटल अश्यूरेंस कंपनी, १६।५२ गैंजेज बंक, सिविल लाइन
,, हीरालाल खन्ना, एम० एस्-सी०, प्रिंसिपल, बी० एन० एस० डी० कालेज

योग—२७

खीरी

श्रीयुत मनमोहनराम अवस्थी, एम० ए०, लखीमपुर

श्रीयुत आदित्यप्रकाश मिश्र, डिप्टी कलक्टर
,, नानकरामजी, एक्साइज इंस्पेक्टर, निघासन
,, वैकुंठाप्रसाद बाजपेयी, लखीमपुर
,, सूरजनारायण दीक्षित एम० ए०, एल्-एल० बी०, एडवोकेट, लखीमपुर

योग–५

गढ़वाल

श्रीयुत सीताराम थपल्याल, ग्राम गंगोलीसैण, डाकघर पोखरी खेत, जिला
,, दौलतराम जुयाल, ग्राम म्यारणासार, पोस्ट देवगढ़ा, जिला
,, शालिग्राम वैष्णव, शान्तिसदन, कर्णप्रयाग

योग–३

गाजीपुर

श्रीयुत रायबहादुर घनश्यामदास, रिटायर्ड कलक्टर
,, भागवत मिश्र, बी० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट,

योग–२

गोंडा

श्रीमती पूर्णिमा चाँदमल, ठि० श्री चाँदमल आई० सी० एस०

योग–१

गोरखपुर

श्रीयुत अग्निमुनिमल्लजी, एम० ए०, एल्-एल० बी०, राजादरबाजा, पडरौना
,, रायसाहब आद्याप्रसाद, बी० ए०, एल् एल० बी०, ऐडवोकेट, रईस, बसंतपुर, जिला
,, एस० एल० पांडेय, हेडमास्टर, किंग एडवर्ड हाई स्कूल, देवरिया, जिला
,, कामेश्वरीप्रसाद नारायणसिंह, पोस्ट सलेमगढ़
,, कुँवरबहादुर एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रिंसिपल डी० बी० इंटर कालेज

श्रीयुत ठाकुर गिरिजाशंकर सिनहा, एम० ए०, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट, देवरिया, जिला
,, घनश्यामनारायणदास, १२६ कसया रोड, नोटीफाइड एरिया
,, चिंतामणि, डिप्टी कलेक्टर
,, जगन्नाथप्रसाद, एम० ए०, एल् एल० बी०, देवरिया, जिला
,, त्रिगुणानंद मिश्र, ग्राम मकुची, पोस्ट सवराय
,, देवीप्रसाद मालवीय, अलीनगर
,, नंदकिशोरसिंह, पडरौना राज्य, जिला
,, परमहंसमल्लसिंह, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, वकील
,, प्रागध्वजसिंह, वकील, एम० एल० ए०, देवरिया
,, पुरुषोत्तमदास रईस
,, प्यारेलाल गर्ग, डिप्टी डाइरेक्टर ऑव एग्रिकल्चर
,, बालमुकुन्द गुप्त, एम० ए०, साहित्यरत्न, बालमुकुंद इंटर कालेज
,, सेठ बिट्ठलदास, डिप्टी कलेक्टर
,, रायबहादुर मधुसूदनदास
,, महादेव राव, बुकसेलर, रेती चौक
,, परमहंस बाबा राघवदास, परमहंसाश्रम, बरहज, जिला
,, रामनाथ पांडेय, एम० ए०, प्रोफेसर, सेंट ऐंड्रूज़ कालेज
,, राय साहब राजेश्वरीप्रसाद, एम० ए०, एल् एल० बी०, ऐडवोकेट
,, रामनारायण तिवारी, अलीनगर
,, सेठ रामप्रसाद भालोठिया, पोस्ट सिसवाबाजार, जिला
,, विंध्येश्वरीनारायणचंद्र एम० ए०, एल् एल० बी०, बसंतपुर, जिला
,, शशिभूषण गुप्त, मार्फत श्री इंदुभूषण गुप्त, न्यू बिल्डिंग, गोलघर
,, सत्यनारायण आर्य, एम० ए०, बी० टी०, हेडमास्टर, श्रीकृष्ण सयोग इंगलिश स्कूल, बसंतपुर धूसी, पोस्ट सरकुलवा, जिला
,, सद्गुरुप्रसाद, चौधरी बलदेवप्रसाद रोड
,, सरयूप्रसादसिंह, एम० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर, उदितनारायण हाई स्कूल, पडरौना
,, सूर्यप्रसाद मिश्र, विशारद, वकील, देवरिया, जिला
,, हरिहरप्रसाद दुबे, एम० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट
,, हीरानंद पाठक, रीडर, कलक्टरेट

श्रीयुत हीरालाल, ओवरसियर, देवरिया, जिला

योग–३४

ज्वालापुर

श्रीयुत रायबहादुर गंगाप्रसाद, एम० ए०, (अवसरप्राप्त चीफ जज-टेहरी राज्य) वानप्रस्थ आश्रम

योग–१

जौनपुर

श्रीयुत भगवतीप्रसाद सिंह, एम० ए०, डिप्टी कलेक्टर
,, रायबहादुर रामनारायण मिश्र, बा० ए०, मैनेजर, स्टेट
,, कुँवर भोपालसिंह, सिंगरामऊ राज्य, जिला
,, श्रीराम उपाध्याय, ऐडवोकेट

योग–४

झाँसी

श्रीयुत कालिकाप्रसाद अग्रवाल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट, मानिक चौक
,, मैथिलीशरण गुप्त, चिरगाँव
,, श्यामबिहारी शर्मा, एम० ए०, एल० टी०, ५९, लक्ष्मणगंज
,, हीरालाल शास्त्री, हेड पंडित, मैकडानेल हाईस्कूल

योग–४

देहरादून

श्रीयुत अमरनाथ, वैद्य शास्त्री, वनस्पति औषधालय
,, आनंदस्वरूप सिनहा, एम० ए०, एल० टी०, डी० ए० वी० कालेज
,, ए० डी० बनर्जी, प्रिंसिपल, डी० ए० वी० कालेज
,, कृष्णदेव शर्मा, डी० ए० वी० कालेज
,, गुरुप्रसाद शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष, श्री महात्मा खुशीराम पब्लिक लाइब्रेरी
श्रीमती चंद्रावती लखनपाल, एम० ए० बी० टी०, प्रिंसिपल, महादेवी कन्या पाठशाला
,, जयदेवी पिल्डिपाल, बी० ए०, १४, इस्टरिन रोड

श्रीमती धनवती देवी, २, हरद्वार रोड
श्रीयुत संत निहालसिंह, जर्नलिस्ट
श्रीमती मनोरमा खास्तगीर, एम० ए०, मार्फत श्री खास्तगीर, अध्यापक, द दून स्कूल
श्रीयुत सेठ रामकिशोर, मोहनी भवन
„ रामचंद्रजी, रिटायर्ड सबडिविजनल अफसर, धीराजभवन, लक्ष्मण चौक
„ लक्ष्मणदेव, ठि० लाला मुन्नालाल सर्राफ, धामावाला बाजार
श्रीमती शीलावती मेंबर, एम० ए०, बी० टी०, कानपुर रोड
„ विद्यावती सेठ, आचार्या, कन्या गुरुकुल, रामपुर रोड
श्रीयुत साधूराम महेंद्र, प्रिंसिपल, साधूराम हाईस्कूल
श्रीमती सावित्री गुप्ता, एम० ए०, सिद्धांतशास्त्री, महादेवी कन्या पाठशाला
श्रीयुत हरनारायण मिश्र, विद्यामंदिर
„ लाला हुकुमचंद पुरी, ई० ए० सी० फारेस्ट, नं० १, हरद्वार रोड
श्रीमती हेमंतकुमारी चौधरानी, ८ चंद्र रोड, शाजनवाला

योग–२०

प्रतापगढ़ (अवध)

श्रीयुत ठाकुर लालकुमारसिंह, कालाकाँकर
„ सुमित्रानंदन पंत, प्रकाशगृह, कालाकाँकर
„ कुँवर सुरेशसिंह, कालाकाँकर

योग–३

नैनीताल

श्रीयुत तुलाराम वर्मा, नं० २० बड़ा बाजार
„ रायसाहब डाक्टर भवानीशंकर याज्ञिक, पटवा डोंगर
„ ठा० रामनारायणसिंह, आई०एफ०एस०, डिविजनल फारेस्ट अफसर

योग–३

फर्रुखाबाद

श्रीयुत महेश्वर, बी० ए०, भारतीय पाठशाला

श्रीयुत रामनाथ शर्मा, एम० ए०, एल्-एल बी०, मुन्सिफ, कायमगंज

योग—२

फ़ैज़ाबाद

श्रीयुत आचार्य नरेन्द्रदेव, एम० ए०, एम० एल० ए०

„ राजरूप ओझा, बी० ए०, एल् एल० बी, अकाउन्टैंट, म्युनिसिपल बोर्ड आफ़िस

„ रामस्वरूप, एम० ए०, बी० टी०, विशारद, होमांट हाई स्कूल, टाँडा, ज़िला

„ श्रीराम मिश्र, ऐडवोकेट, श्रीनिकेतन

योग—४

बदायूँ

श्रीयुत गौरीशंकरप्रसाद शर्मा, मु० कानूनगोयान

श्रीमती मालतीदेवी, ठि० पं० शिवकुमार सिंहल, एम० ए०, एल्-एल० बी०, सिविल लाइन

योग—२

बनारस

श्रीयुत अम्बिकादत्त उपाध्याय, एम० ए०, आचार्य, अस्सी

„ अंबिकाप्रसाद श्रीवास्तव, बी० ए०, मैनेजिंग डाइरेक्टर, भारती बीमा कंपनी, वारानगर

„ डाक्टर अचलबिहारी सेठ, कमच्छा

„ अमरनाथ जेतली, शास्त्री, मैदागिन

„ अमरनाथ मेहरोत्रा, नीची बागपुरी

„ अमरेशप्रसाद सिंह, संकटमोचन

„ राय साहब डाक्टर कैप्टन अयोध्याप्रसाद मिश्र, मदैनी

„ साहित्यवाचस्पति अयोध्यासिंह उपाध्याय, 'हरिऔध', संकटहरण

„ अवधबिहारीलाल, बी० ए०, एल्-एल० बी०, ६५।१३४, बड़ी पियरी

„ अशोकजी एम० ए०, ११, भुलानाला

„ आमोदकुमार वर्मा, चौखंभा

श्रीयुत इकबालनारायण गुर्टू, एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रो-वाइस चांसलर, हिंदू विश्वविद्यालय
„ उदित मिश्र, ग्राम कुकी, पोस्ट चन्दागाँव
„ उमाशंकरजी, १५०, दारानगर
„ कन्हैयालाल, मछपुरी फुलवाई, चौखंभा
„ कमलनाथ अग्रवाल, काशी पेपर स्टोर्स, सिद्धमाता की गली, बुलानाला
„ रायबहादुर कमलाकर दुबे, एम० ए०, सजुरी
श्रीमती कमलाकुमारीजी, भूतपूर्व आनरेरी महिला मैजिस्ट्रेट, ५१५, चेतगंज
श्रीयुत कांताजाथ पांडे, एम० ए०, अध्यापक, हरिश्चंद्र कालेज
„ कालीचरणसिंह, गवर्नमेंट पेंशनर, ग्राम फुलवरिया, कार्लो पलटन, बनारस कैंट
„ काशीनाथ उपाध्याय, एम० ए०, साहित्यरत्न, सराय गोवर्द्धन
„ काशीराम, एम० ए०, संस्कृत पाठशालाओं के अवसरप्राप्त निरीक्षक, मीरघाट
„ किशोरीरमणप्रसाद, मामूरगंज, काशी
„ कविराज कृष्णचंद्र शर्मा, कालभैरव
„ राय कृष्णजी, पांडेपुर
„ राय कृष्णदास, रामघाट
„ कृष्णदास अग्रवाल, सुँ ड़िया
„ कृष्णदेवप्रसाद गौड़, एम० ए०, एल० टी०, बड़ी पियरी
„ कृष्णलाल जालान, सुखलाल साहु गेट,
„ कृष्णानंद एम० ए०, बी० टी०, ३।१७८, अर्दली बाजार
„ के० एन० वांचू, आई० सी० एस० जिला एवं सेशन जज
„ केशवप्रसाद मिश्र, भदैनी
„ खेदनलाल, एम० एल० ए० (केंद्रीय), चेतगंज
„ गंगाशंकर मिश्र, एम० ए०, गंगातरंग, नगवा
„ गणेश रामचंद्र भागवत, ५।१२, पत्थरगली, कालभैरव
„ गयाप्रसाद ज्योतिषी, एम० ए०, प्राच्य विद्या विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय
„ गरीबदास, ठीकेदार, काशी स्टेशन, ईस्ट इंडियन रेलवे

श्रीयुत गिरधरलाल व्यास, कमच्छा
,, डाक्टर गिरवरसिंह, जी० पी० वी० सी०, वेटरेनरी सर्जन
,, गिरिजाशंकर गौड़, विशारद, २८८, पक्की पियरी
श्रीमती ज्ञानवती त्रिवेदी, गुप्ता गार्डन, लंका
श्रीयुत गुप्तेश्वरसिंह, बी० ए०, एल्-एल० बी०, कबीरचौरा
,, गुरुशरणलाल श्रीवास्तव एम० ए०, एल् एल० बी०, मुंसिफ
,, बाबू गोवर्द्धनदास गुप्त [प्रधानाचार्य संकेत लिपि-विद्यालय, ना० प्र० सभा], कोदई चौकी
,, राय गोविंदचंद्र, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, एम० एल० ए०, कुशस्थली
,, गोविंद मालवीय, एम० ए०, एल्-एल० बी०, एम० एल० ए०, न्यूइंश्योरेंस कंपनी
,, गौरीनंदन उपाध्याय, बी० ए०, एल्-एल० बी०, वकील, चौखम्भा
,, सेठ गौरीशंकर गोयनका, अस्सी
,, चंद्रबली पांडेय, एम० ए० ठि० मुंशी महेशप्रसाद आलिम फाजिल, नाटी
,, चंद्रभाल बी० एस्-सी०, एम० एल० सी०, शांतिसदन, सिगरा
,, चंद्रमौलि सुकुल, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा
,, ठाकुर जगदीशप्रसादसिंह एम० ए०, एल्-एल० बी०, प्रिंसिपल, उदयप्रताप क्षत्रिय कालेज
,, जगन्नाथप्रसाद खत्री, गोलागली
,, रायबहादुर जगन्नाथप्रसाद मेहता, एम० बी० ई०, चेयरमैन, म्युनिसिपल बोर्ड, बनारस
,, जगन्नाथप्रसाद शर्मा, एम० ए०, औरंगाबाद
,, आयुर्वेदाचार्य जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी, एम० ए०, अस्सी
श्रीमती कुमारी जनक कौल, राजघाट स्कूल
श्रीयुत जमुनादत्त सनवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय कार्यालय
,, जयकृष्णदास, कालभैरव
,, जयचंद्र नारंग, विद्यालंकार, मदैनी
,, जयेंद्रनारायण सिन्हा, ३।१७८, भदैलीबाजार
,, ज्योतिर्भूषण गुप्त, सेवा उपवन

श्रीयुत जीवनदास अग्रवाल, प्रधानाध्यापक, अग्रवाल महाजनी पाठशाला
,, ठाकुरदास ऐडवोकेट, राजादरवाजा
,, ठाकुरप्रसाद शर्मा, एम० ए०, एल्-एल० बी०, मलदहिया
,, ठाकुर त्रिभुवनप्रसाद सिंह, गोविंद, बार एट लॉ
,, त्रिवेणीदत्त द्विवेदी, बेनिया बाग
,, गोस्वामी दामोदरलालजी, चुलानाला
,, दामोदरदास खन्डेलवाल, छोटी गैबी
,, ठाकुर दिलीपनारायणसिंह, एम० ए०, १२०, छोटी पियरी
,, दीनानाथ निगम, बी० ए०, एल्-एल० बी०, तेलियाबाग
,, द्वारिकादास, म्युनिसिपल कमिश्नर, २६ गोविन्दजी नायक
,, देवेंद्रचन्द्र विद्याभास्कर, विद्याभास्कर बुकडिपो
,, घनराज सुदन, नेरा कंपनी, राजा कटरा, चौक
,, नंदगिरि कांतानाथ शास्त्री तैलंग, टेढ़ी नीम
,, पं० नंदलाल भारद्वाज, बी० ए०, एल० टी०, अध्यापक डी० ए०वी० कालेज
,, नवरंगसिंह, दूकान इंडियन प्रेस, चौक
,, नागेश उपाध्याय, एम० ए०, मदैनी
,, निष्कामेश्वर मिश्र, बी० ए०, एल० टी०, लाहोरी टोला
,, पद्माकर द्विवेदी, खजुरी
,, पद्मनारायण आचार्य, एम० ए०, अस्सी
श्रीमती पार्वती देवी कलमकर (यमुना देवी मंजूरकर), महिला विद्यालय, हिंदू विश्वविद्यालय
श्रीयुत डाक्टर परमात्माशरण, प्रो० इतिहास-विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय
,, डाक्टर प्रतापनारायण राजवान, पी-एच० डी०, हेडमास्टर सेंट्रल हिंदू स्कूल
,, प्राणाचार्य कविराज प्रतापसिंह, प्रताप पार्क, हिंदू विश्वविद्यालय
,, प्राणनाथजी ६।१३८ गणित विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय
,, डाक्टर प्राणनाथ विद्यालंकार, डी० एस्-सी० (लंदन), पी०-एच० डी० (वियना), प्रो० एंशंट मिडिल ईस्ट हिस्टरी एंड ऐंटिक्विटीज, हिंदू विश्वविद्यालय
,, पुरुषोत्तमलाल श्रीवास्तव, एम० ए०, मछोदरी

श्रीयुत प्यारेलाल श्रीवास्तव, बी० ए०, 'कामिल' आनरेरी मैजिस्ट्रेट,
उन्नासी १२।५ औरंगाबाद

„ बजरंगबली गुप्त, आसभादेवी

„ बटुकनाथ शर्मा, एम० ए०, कालभैरव

„ बनारसीप्रसाद सारस्वत

„ बलदेव उपाध्याय एम० ए०, रामलालभवन, दूधविनायक

„ राजा बलदेवदास बिरला, लालघाट

„ बलदेवप्रसाद मिश्र, १९ शक्करकंद की गली

„ बलदेव वैद्य, ग्राम तथा डाकघर, बड़ागाँव

„ बलराम उपाध्याय, ऐडवोकेट, बड़ी पियरी

„ डाक्टर ब्रजमोहन, एम० ए०, पी-एच० डी०, एल्-एल० बी०,
हिंदू विश्वविद्यालय

„ ब्रजमोहन केजरीवाल, नंदनसाहु लेन

„ ब्रजमोहनव्यास, बी० ए०, सिगरा

„ बा० ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल्-एल बी० ऐडवोकेट, भुलानाला

„ ब्रजलाल सव्वरलाल, पोस्टमास्टर, सदर पोस्ट आफिस

„ बाँकेबिहारीलाल, बी० एस्-सी०, एल० टी०, सिद्धमाता की गली

„ बाबूराव विष्णु पराड़कर, प्रधान संपादक 'आज', ज्ञानमंडल

„ बिट्ठलदास नागर, दामोदरदासजी बल्लभदासजी, सूत टोला

„ बिहारीलाल विश्वकर्मा, हंसतीर्थ तालाब

„ बाबू बैजनाथ केडिया, अध्यक्ष हिंदी पुस्तक एजेंसी, चौक

„ राय भगवतीप्रसाद, ग्राम भगवपुर, पोस्ट रोहनियाँ

„ डाक्टर भगवानदास, एम० ए०, डी० लिट्० भूतपूर्व एम० एल० ए०
(केंद्रीय) सिगरा

„ भगवानप्रसाद, अवसरप्राप्त डिप्टी इंसपेक्टर ऑफ स्कूल्स, ग्राम
भदिलाह, पोस्ट शिवपुर

„ डाक्टर भोलानाथसिंह, डी० एस्-सी०, इरविन प्रोफेसर ऑफ
ऐग्रिकल्चर, युनिवर्सिटी प्रोफेसर ऑव प्लांट फिजियालॉजी, हेड
ऑव दि इंस्टिट्यूट ऑव ऐग्रिकल्चरल रिसर्च, डीन ऑव दि
फैकल्टी ऑव टेकनालाजी, हिंदू विश्वविद्यालय

श्रीयुत डाक्टर मंगलदेव शास्त्री, एम० ए०, डी० फिल० (आक्सन),
प्रिंसिपल, गवर्नमेंट संस्कृत कालेज

" मंगलाप्रसादसिंह, जमींदार, मंगलभवन, मेलूपुर

" साहित्यवाचस्पति महामना मदनमोहन मालवीय, हिंदू विश्वविद्यालय

" मदनमोहन शास्त्री, शक्करकंद गली

" महादेवलाल सराफ, फार्मेसी विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय

" माधोप्रसाद खन्ना, थियासाफिकल सोसायटी

" ठाकुर मार्कंडेय सिंह, एम० ए० साहित्यरत्न, अध्यापक, उदयप्रताप
क्षत्रिय कालेज

" मुकुंददेव शर्मा, मारफत पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध',
संकटहरन

" मुरारीलाल केडिया, नंदनसाहु लेन

" मोहनलाल गुप्त, एम० ए०, रामप्रसाद बिल्डिंग, चेतगंज

" लाल रत्नाकरसिंह, डिप्टी कलेक्टर

" रमापति शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, अध्यापक बेसेंट (थियासाफि-
कल) स्कूल

" रमेशदत्त पांडे, बी० ए०, वरनापुल

" डाक्टर राजेंद्रनारायण शर्मा, सराय गोवर्द्धन

" राजेश्वरीदयाल सिनहा, बी० ए०, २१।६६, कमच्छा

" राय साहब राजेश्वरीप्रसाद गवर्नमेंट प्लीडर

" राधेकृष्णदास, शिवाला घाट,

" बाबू रामचंद्र वर्मा ३ सरस्वती फाटक

" रामचरन पांडे, क्वींस कालेज

" रामनारायण मिश्र, बी० ए०, अवसरप्राप्त पी० ई० एस०, कालभैरव

" रामनारायण मेहरोत्रा, लाहोरी टोला,

" रामन्योछावरलाल, ईश्वरगंगी

" रामप्रसाद जौहरी, ४०।५२ सुतही इमली

" रामबहोरी शुक्ल, एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न, प्रो० क्वींस कालेज

" रामशंकरलाल, वकील, दारानगर,

" रामशंकरलाल नैपाली, चौखंभा;

" रामशरणलाल मुख्तार, रामनिवास, सेनियाबाग

श्रीयुत ठाकुर रामाधारसिंह, वकील, विश्वेश्वरगंज
" रामेश्वरसहाय सिनहा, [सुपरिटेंडेंट, शिक्षा-विभाग, म्युनिसिपल बोर्ड], ६४।१०० हौजपुरा
" लक्ष्मण नारायण गर्दे, पत्थरगली, रतनफाटक
" चौधरी लक्ष्मीचंद्र, भारतेंदुभवन, चौखंभा
" लक्ष्मीनारायण मिश्र, 'संचय', १।१८२ झूसी संगम
" लल्लीप्रसाद पांडेय, इंडियन प्रेस लि०
" लालचंद खत्री, कोठी, पूरनचंद, हरनारायण, रानीकुआँ
" लालजीराम शुक्ल, एम० ए०, प्रोफेसर, टीचर्स ट्रेनिंग कालेज
" वंशगोपाल झिंगरण, एम० एस-सी०, बी० एड०, प्रोफेसर टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा
" वाचस्पति उपाध्याय, एम० ए०, भदैनी
" विजयकृष्ण, ११०, खजुरी
" विद्याभूषण मिश्र, एम० ए०, एल्‌ एल० बी०, मामूरगंज
" विमलानंदन प्रसाद, आनरेरी मुंसिफ, दारानगर
" विश्वनाथप्रसाद, बुलानाला
" विश्वनाथप्रसाद भार्गव, ठिकाना बाबू मनोहरलाल भार्गव, अवनपर
" विश्वेश्वरनाथ जेठली, २।१।०१ कमच्छा
" वेणीप्रसाद, रानी कुआँ
" वेणीप्रसाद गुप्त, एम० ए०, एल० टी०, अध्यापक, हरिश्चंद्र कालेज
" राय शंभूप्रसाद, ग्राम जगतपुर, पोस्ट रोहनियाँ
" शशिशेखरानंद गैरोला, इंजीनियरिंग कालेज, हिंदू विश्वविद्यालय
" शांतिप्रिय द्विवेदी, सहायक संपादक, 'कमला', कमला कार्यालय
" शारदाप्रसाद, कोठी, किशोरीलाल मुकुंदीलाल, विश्वेश्वरगंज
" राय साहब ठाकुर शिवकुमारसिंह, वैजनत्था
" शिवनाथ भारद्वाज, एम० ए०, एम० एस्‌०-सी०, पटनी टोला
" शिवप्रसाद गुप्त, सेवा उपवन,
" शिवमंगलसिंह 'सुमन' एम० ए०, मार्फत श्री डाक्टर दुबे, ग्लास टेकनालोजी विभाग, हिंदू विश्वविद्यालय

श्रीमती शिवरानी देवी, सरस्वती प्रेस, रामकटोरा
श्रीयुत श्यामनारायणसिंह, बी० ए०, एल्‌ एल० बी०, मध्यमेश्वर

श्रीयुत साहित्यवाचस्पति, रायबहादुर श्यामसुंदरदास, बी० ए०,
१४।१११, टेढ़ी नीम
" राय श्रीकृष्णजी, पांडेपुर
" श्रीकृष्ण पंत, ललिताघाट
" श्रीनाथ शाह, दुर्गाकुंड
" श्रीनिवास शाह, दुर्गाकुंड
" श्रीशचंद्र शर्मा, बी० ए०, एल् एल० बी०, बी० टी०, कालभैरव
" संकठाप्रसाद गुप्त, कोठी, श्री छोटेलाल धामनदास, सुँड़िया
" सखराम, काशी ग्रामोफोन स्टोर्स, चुलानाला
" संपूर्णानंद, बी० एस्-सी०, एल० टी०, एम० एल० ए०, भूतपूर्व
शिक्षामंत्री, संयुक्त प्रांत, जालपा देवी,
" सच्चिदानंद भारतीय एम० ए०, एल्० टी०, सहायक अध्यापक,
सेंट्रल हिंदू स्कूल
" राय सत्यव्रत, लहरतारा
" सहदेवसिंह, ऐडवोकेट, बड़ी पियरी
" साँवलजी नागर, सेंट्रल हिंदू स्कूल
" सीताराम, रजिस्ट्रेशन क्लर्क
" सीताराम चतुर्वेदी, एम० ए०, एल् एल० बी०, बी० टी०, प्रोफेसर
टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, कमच्छा
" सीताराम मिश्र बी० ए०, बी० टी०, सेंट्रल हिंदू स्कूल, कमच्छा
श्रीमती हीराकुमारी जैन, व्याकरण-न्याय-सांख्यतीर्थ, न्यु० ई० २,
हिंदू विश्वविद्यालय

योग—१८३

बरेली

श्रीयुत ओरम्प्रकाश मित्तल, गंगापुर,
" कृष्णकुमारलाल सक्सेना, (स्वर्गवासी बाबू शिवकुमारलाल, सब इंसपेक्टर पुलिस के सुपुत्र), निकट पत्थरवाली हवेली, मुहल्ला भूड़
" गुणानंद जयाल, अध्यापक, बरेली कालेज,
" दिनेशचंद्र, एम० ए०, ठि० मकान नं० ११३, ख्वाजा कुतुब

श्रीयुत बलराम शर्मा, एम० ए०, एल् एल० बी०, द्वारा पं० राधेश्याम शर्मा, कथावाचक, राधेश्याम प्रस
„ भोलानाथ शर्मा, एम० ए०, अध्यापक, बरेली कालेज
„ ठाकुर रामकिंकर सिंह, पी० सी० एस०, केन इंसपेक्टर
„ साहु रामनारायणलाल, वाँसों की मंडी
„ साहित्याचार्य विर्येंद्र शास्त्री, पंचतीर्थ, २७६, कुँअरपुर
„ शंकरसहाय सक्सेना, प्रोफेसर, बरेली कालेज
„ श्रीधर पंत, शास्त्री, एम० ए०, एल० टी०, प्रोफेसर, बरेली कालेज, साहूकारा

योग—११

बलिया

श्रीयुत गणेशप्रसाद, एम० ए०, हिंदी अध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल
„ ठाकुरदास अग्रवाल, एम० ए०, एल् एल० बी०, वकील
„ परशुराम चतुर्वेदी, वकील
„ राजासिंह, तहसीलदार, राम महाराज, पोस्ट रेवती, जिला
„ शिवप्रसादसिंह, बी० टी० सी०, विशारद, अध्यापक, मिडिल स्कूल रेवती, रेलवे स्टेशन रेवती, जिला
„ श्यामसुंदर उपाध्याय, सेक्रेटरी, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड
„ सीताराम पांडे, प्रधानाध्यापक, मिडिल स्कूल भीमपुरा, पोस्ट औराइ कलाँ, जिला
„ हरिकृष्ण राय, साहित्यरत्न, हेडमास्टर, ग्राम माजिदपुर, पोस्ट दलन छपरा, जिला

योग—८

बस्ती

श्रीयुत नरसिंह नारायण मिश्र, वैद्य, नगर राज्य, पोस्ट नगर, जिला

योग—१

बाँदा

श्रीयुत कन्हैयालाल मिश्र, आयापवेराफ, डि० श्री महावीरप्रसाद, ठीकरा, अतर्रा बाजार

श्रीयुत मूलचंद जैन, एम० ए०, एल् एल० बी०, करवी

योग—२

बाराबंकी

श्रीयुत गोपालचंद्र सिंह, एम० ए०, एल्०-एल० बी०, विशारद, मुंसिफ

योग—१

बुलंदशहर

श्रीयुत केशवराम, अनूपशहर

" धर्मबीलाल शर्मा, एम० ए०, एल० टी०, विशारद, पद्मसिंह गेट, खुर्जा

" मगनलाल गुप्त, मुख्तार, माल व फौजदारी

" सर जीवनलाल चौबे, खजांची, इंपीरियल बैंक

" त्रिभुवननाथ चतुर्वेदी, विज्ञानाध्यापक, जे० ए० एस० स्कूल, खुर्जा, जिला

" राय साहब मदनमोहन सेठ, एम० ए०, एल् एल० बी०, अफसर ग्राम जिला एवं दौरा जज, शिवपुरी

" महेशचंद्र गर्ग, एम० ए०, ग्राम एवं डाकघर पहासू, जिला

योग—७

मथुरा

श्रीयुत आर० सी० भार्गव, प्रधानाध्यापक, किशोरीरमण कालेज

" कामेश्वरनाथ, एम० ए०, प्रभाकर प्रेस

" क्षेत्रपाल शर्मा, सुखसंचारक कंपनी

श्रीमती गायत्रीदेवी गुप्त, अध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल

श्रीयुत गोपालदत्त शर्मा, प्रधानाध्यापक, श्री गोवर्द्धनलाल हिंदी विद्यापीठ

" जवाहरलाल चतुर्वेदी, कूचावाली गली

" मदनमोहन नागर, क्युरेटर, कर्जन म्युजियम

" मोहनवल्लभ पंत, एम० ए०, बी० टी०, लेक्चरर, किशोरीरमण इंटरकालेज

" रघुनाथदास भार्गव, बी० ए०, एल्-एल० बी०

" रायबहादुर राधारमण, रिटायर्ड डिप्टी कलक्टर, हैंपियरनगर

श्रीयुत रामनिवास पोद्दार,
श्रीमती रामप्यारी देवी, अध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल
श्रीयुत रामसिंह पाठक, गोवर्द्धन
श्रीमती शकुन्तला भार्गव, प्रधानाध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल
श्रीयुत सत्येंद्र, एम० ए०, एल० टी० सी०, गली कानूनगोयान, रामदास की मंडी
श्रीमती कुमारी स्नेहलता कक्कड़, अध्यापिका, किशोरीरमण गर्ल्स स्कूल
श्रीयुत लाला हीरालाल, श्यामकाशी प्रेस

योग–१०

मिर्जापुर

श्रीयुत महंत परमानंद गिरि, मुहल्ला गुसाईं टोला, कोठी महंतजी
„ प्रमथनाथ भट्टाचार्य, बेलखलीगंज
„ रामप्रतापजी, मालिक दूकान भैरवमल फतहचंद, घुरेलमंडी
„ वासुदेव उपाध्याय, गाँव भभदा, डाकघर कछवाँ, जिला
„ राजा शारदा महेशप्रसादसिंह शाह, बड़हराधीश, बड़हर, पोस्ट राजपुर, जिला

योग–५

मुजफ्फरनगर

श्रीयुत गोविंदबिहारी शेरावाल, एम० ए०, सनातनधर्म कालेज
„ बाबू जगदीशप्रसाद, रईस

योग–२

मुरादाबाद

श्रीयुत केदारनाथ 'विफल', बी० ए०, एल० टी०, गवर्नमेंट हाईस्कूल, अमरोहा
„ केशवचन्द्र, ठिकाना लाला लछमनदास मथुरादासजी, गंज
„ गंगाशरण, शर्मा, 'शील', एम० ए०, एस० एस० इंटर कालेज, चंदौसी
„ तोताराम गुप्त, काँठ

योग–४

मेरठ

श्रीयुत आनंदस्वरूप दुपलिश, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, वकील

श्रीमती कमलादेवी भटनागर, ठि० बाबू चंद्रस्वरूप भटनागर, सब-रजिस्ट्रार
श्रीयुत साहित्यरत्न कृष्णानंद पंत, एम० ए०, प्रोफेसर, मेरठ कालेज
,, चैतन्यप्रकाश, विद्यार्थी, खादी भंडार
,, पृथ्वीनाथ सेठ, शांतिनिकेतन
,, बालमुकुंद शास्त्री, सेवामंदिर देवनागरी इंटर कालेज
,, मुरारीलाल शर्मा, अध्यापक, सेवा मंदिर देवनागरी इंटर कालेज
,, चौधरी रघुबीर नारायणसिंह, एम० एल० ए० (केंद्रीय), असोडा, पोस्ट हापुड़
,, शांतिस्वरूप अग्रवाल, प्रधानाध्यापक, कमर्शल ऐंड इंडस्ट्रियल हाई स्कूल, हापुड़

योग—९

मैनपुरी

श्रीयुत पातीराम ज्ञानीराम, सिरसागंज
,, बृजमोहनलाल मदनलाल, सिरसागंज
,, बाबूराम वित्थरिया, साहित्यरत्न, सिरसागंज, जिला
,, रघुराज सिंह, मौजा बखरेड़, पो० मदान, जिला
,, राधामोहन फरसैया, सर्राफ ऐंड ग्रास मर्चेंट, मुकाम सिरसागंज, जिला
,, रुस्तमसिंह रघुबीरसिंह सिरसागंज
,, मुनहरीलाल शर्मा, एम० ए०, विशारद, हेडमास्टर बी० ए० बी० स्कूल, सिरसागंज
,, सूरजभान, सिरसागंज

योग—८

रायबरेली

श्रीयुत राजा जगन्नाथबख्श सिंह, ताल्लुकेदार, रहवाँ, जिला
,, शिवनारायणलाल, विशारद, बैजनाथाश्रम, ग्राम और पोस्ट बछरावाँ, जिला

योग—२

लखनऊ

श्रीयुत डाक्टर अवध उपाध्याय, डी० एस्-सी०, प्रोफेसर, गणित विभाग, लखनऊ यूनिवर्सिटी

श्रीयुत ए० जी० शिरफ, आई० सी० एस०, मेंबर रेवेन्यू बोर्ड,
बोडस क्वार्टर्स

,, एन० सी० मेहता, आई० सी० एस०, एजुकेशन सेक्रेटरी,
युक्तप्रांतीय सरकार

,, राव साहब एम० एल० आर० सेर, इनकमटैक्स कमिश्नर

,, कालिदास कपूर, एम० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर कालीचरण
हाई स्कूल

,, काशीनाथ गुप्त, एल० एल० बी० (फाइनल), २० महमूदाबाद होस्टेल

,, त्रिभुवननारायण सिंह, नेशनल हेराल्ड आफिस,

,, दीनदयाल गुप्त, एम० ए०, एल० एल० बी०, हिंदी के लेक्चरर, लखनऊ
विश्वविद्यालय

,, डाक्टर पन्नालाल, आई० सी० एस०, डी० लिट्०, ऐडवाइजर टु द
यू० पी० गवर्नमेंट

,, डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, एम० ए०, एल० एल० बी०, डी० लिट०,
हिंदी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

,, महादेव वाजपेयी, ३९ मेजर बैंक्स रोड

,, बालकृष्ण पांडे, प्रिंसिपल कान्यकुब्ज इंटर कालेज

,, बालकृष्णराव, आई० सी० एस०, अंडरसेक्रेटरी, इन्फर्मेशन
डिपार्टमेंट, यू० पी० गवर्नमेंट

,, बैजनाथसिंह, एम० ए०, बी० टी०, नेशनल हाई स्कूल

श्रीमती मनीबाई शाह, युनिटी लाज

श्रीयुत माधवशरण, ५१८ नरही

,, रामबीरबिहारी सेठ, रिसालदार बाग

,, विद्यासागर भटनागर भौसमबाग, सीतापुर रोड

,, वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, क्यूरेटर, प्रांतीय अजायबघर

,, शंकरदयाल शर्मा, १०१, महमूदाबाद होस्टेल

,, श्रीधरसिंह, एम० ए०, गवर्नमेंट जुबिली इंटरमीडिएट कालेज

, रावराजा डाक्टर श्यामबिहारी मिश्र, एम० ए०, रायबहादुर,
१०५ गोलागंज

,, रायबहादुर शुकदेवबिहारी मिश्र, गोलागंज

श्रीयुत सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', नारियलवाली गली, हाथीखाना, मूसामण्डी
" रायसाहब डाक्टर सूरजप्रसाद श्रीवास्तव, असिस्टेंट डाइरेक्टर पब्लिक हेल्थ, युक्तप्रांत
" हरिश्चंद्र, आई० सी० एस०, सेक्रेटरी टु द गवर्नमेंट युक्तप्रांत जुडिशल डिपार्टमेंट

योग—२६

वृंदावन

श्रीयुत वनविहारीलाल शर्मा, संपादक, 'नाम-माहात्म्य'

योग—१

सहारनपुर

श्रीयुत वागीश्वर, पुस्तकालयाध्यक्ष, गुरुकुल काँगड़ी, जिला
" वागीश्वर विद्यालंकार, उपाध्याय, गुरुकुल काँगड़ी, जिला
" देवव्रत, मंत्री, आर्य समाज गुरुकुल काँगड़ी, जिला

योग—३

सीतापुर

श्रीयुत अनिरुद्धसिंह, नीलगाँव
श्रीमती कुमारी इन्द्रमोहिनी सिन्हा, ठि०-श्री एम० एम० सिन्हा, डिप्टी कमिश्नर
श्रीयुत कन्हैयालाल मल्होत्र, एम० ए०, एल्-एल० बी०, वकील, मोतीबाग
" कृष्णविहारी मिश्र, गंधौली सिधौली
" गंगाधरप्रसाद मेहरोत्रा, कोठी और पोस्ट, बिसवाँ
" ठाकुरप्रसाद शर्मा, हिंदी साहित्य सभा, लालबाग
" वैद्य मधुसूदन दीक्षित, शास्त्री, मृत्युंजय औषधालय
" ठाकुर रामसिंह तालुकेदार
" राजा सूरजबख्श सिंह, आनरेरी मुंसिफ व मैजिस्ट्रेट, कस्मांडा, पोस्ट कमालपुर, जिला
" सोमेश्वरदत्त शुक्ल

योग—१०

१०

सुल्तानपुर

श्रीयुत दिनकरप्रकाश जोशी, कुड़वार
„ महेशप्रसाद, प्रधानाध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल
„ कुमार रणंजयसिंह, भूतपूर्व एम० एल० ए० (केंद्रीय), अमेठी राज, जि०
„ शेषमणि त्रिपाठी, एम० ए०, बी० टी०, साहित्यरत्न, सब डिप्टी इंसपेक्टर ऑव् स्कूल

योग–४

हरद्वार

श्रीयुत रामेश्वरदयाल निगम, हेडमास्टर, म्युनिसिपल हाई स्कूल
„ महंत शांतानंदनाथ, श्रीमत्यनाथ ज्ञानमंदिर पुस्तकालय
„ हरिहरप्रसाद मिश्र, भागीरथी पुस्तकालय

योग–३

हरदोई

श्रीयुत ठाकुर अर्जुनसिंह, आनरेरी स्पेशल मैजिस्ट्रेट, जमींदार, मौजा दुर्गीपुर, जि०
„ राय साहब जिनेश्वरदास, स्पेशल मैनेजर, कोर्ट ऑव् वार्ड्स
„ व्रजभूषणशरण सेवली, एम० ए०, एल्-एल० बी०, आई० पी०, सुपरिंटेंडेंट पुलिस
„ सेठ वंशीधर, मैनेजिंग डाइरेक्टर, लक्ष्मी शुगर एंड ऑयल मिल्स
„ शिरोमणिसिंह चौहान, एम० एस्-सी०, विशारद, सब-डिप्टी, जि०

योग–५

हाथरस

श्रीयुत रायबहादुर चिरंजीलाल बागला, रईस, म्युनिसिपल कमिश्नर

योग–१

बनारस राज्य, रामनगर

श्रीयुत खानबहादुर सैयद अली आमिन, चीफ सेक्रेटरी, बनारस राज

श्रीयुत सत्यनारायण सोया, बी० ए०, एल-एल० बी०, वकील हाईकोर्ट, रेसिडेंसी रोड

योग—३

१६—विदेश

(सभासदों की संख्या—१३)

अफ्रिका

मारिशस

श्रीयुत के० एम० भगत, मंत्री स्कूल विभाग, हिंदी प्रचारिणी सभा, मोकाई लौंग

योग—१

केनिया कालोनी (ब्रिटिश ईस्ट अफ्रिका)

श्रीयुत रणधीर विद्यालंकार, पोस्ट बक्स ७४३, नैरोबी
,, रमनभाई जे० पटेल, द्वारा एक्सप्रेस ट्रांसपोर्ट कं० लि०, पोस्ट बक्स ४३१, नैरोबी
,, सत्यपाल, पोस्ट बक्स २८३, नैरोबी

योग—३

युगांडा

श्रीयुत दयालजी भीमभाइ देसाई, पोस्ट नं० ७१, जिंजा

योग—१

अमेरिका

बोस्टन

श्रीयुत डा० आनंद के० कुमारस्वामी, डी० एस-सी० (लंदन) क्यूरेटर ऑव दी इंडियन सेक्शन, म्यूजियम ऑव फाइन आर्ट्स

योग—१

एशिया

मस्केत

श्रीयुत विमाम जे० पटेल, मस्केत, अरेबिया, परशियन गल्फ

योग—१

बर्मा

श्रीयुत डाक्टर ओ३म्प्रकाश, एम० बी० बी० एस०, बोकीन,
पो० कामायुत
रंगून

योग—१

यूरप

इंगलैंड

श्रीयुत रेवरेंड ई० मीव्ज, नं० १, दो लाइन्स, हार्निओल्ड रोड मालवर्न

" बी० माइम बेली महोदय, २३६ निवर स्ट्रीट, लंदन नं० ३
रेवरेंड जे० चैडविक जैस्सन, बोयस २, आर्लैंड कजोम हेलराम
रोड, पोलगेट, सरे

योग—३

पोलैंड

श्रीयुत स्टेफेन स्टासाक प्रोफेसर ऐट दी युनिवर्सिटी, पलताव

योग—१

रूस

श्रीयुत प्रोफेसर ए० बारान्निकफ, क्लाचिन स्ट्रीट, १ एफ/लाग ६, लेनिनग्राद,
यू० एस० एस० आर०

योग—१

संवत् १९९७ के अंतिम तीन मास में स० १९९८ के लिये बने साधारण सभासदों की नामावली

श्रीयुत अमरनाथ काक, बी० ए०, एल्-एल० बी०, ऐडवोकेट, श्रीनगर (काश्मीर)

,, ए० चंद्रहासन, एम० ए०, हिंदी के लेक्चरर, महाराजा कालेज, इर्नाकुलम, कोचीन (मद्रास)

,, एस० एन० तिवारी, बी० ए०, एल० टी०, अध्यापक, गवर्नमेंट हाई स्कूल, बालाघाट, सी० पी० बरार

,, ऋषिराम आचार्य, बी० ए०, आचार्य, दयानंद ब्राह्म विद्यालय, लाहौर

,, कालीप्रसाद मिश्र दशाश्वमेध नं० १७।१०, बनारस

,, कृष्णगोपाल शर्मा नेनवाँ, बूँदी स्टेट, बूँदी (राजपूताना)

श्रीमती कृष्णकुमारी बघले, 'विशारद', नालंदा विद्यापीठ पो० नालंदा, जि० पटना

श्रीयुत चंद्रभानजी रायजादा, वकील, अमेठी (सुल्तानपुर), अवध

,, चेतराम शर्मा, आर्यकन्या गुरुकुल, राजवाड़ी, पोरबंदर (काठियावाड़)

,, छोटूभाई सुथार, बी० एस्-सी०, विशारद, भारती विद्यामंदिर, नड़ियाद, बी० बी० आर०

,, जगदीशचंद्र जोशी, नंदन कानन, हैवलक रोड, लखनऊ

,, जगमोहनलाल चतुर्वेदी, बी० एस्-सी०, एल्-एल० बी०, ७० ओरा, सिकंदराबाद, हैदराबाद रियासत, दक्षिण

,, द्वारकाप्रसाद, इंजीनियर, डालमियानगर, शाहाबाद

,, धर्मेंद्र ब्रह्मचारी, शास्त्री, प्रो० जैक्सन हास्टल, पटना कालेज, पटना

,, डाक्टर नारायणसिंह, बड़ाबाजार, टीटागढ़, चौबीस परगना

,, प्रकाशचंद्र गुप्त एम० ए०, प्रो० सेंट जान्स कालेज, आगरा

,, प्यारेलाल मल्होत्रा, नं० १ मलानी रोड, त्यागरायनगर, मद्रास

,, बनवारी सिंह, क्षत्रिय इंटर कालेज, जौनपुर

,, भोलानाथ मिश्र, एम० ए०, डिप० एड्० (लेन्स्) मछरहटा, जौनपुर

,, मनमोहनलाल, बी० ए०, एल्-एल० बी०, एडवोकेट, अजाती मदरसा, बस्ती

श्रीयुत मनोरंजनप्रसाद, एम० ए०, प्रिंसिपल, राजेंद्र कालेज, छपरा, बिहार
" रायबहादुर माधोराम सेठ, जतनबर, बनारस
" मुकुंद नायक, विशारद, [पो० दलसिंगसराय (दरभंगा)]
वर्तमान पता—६० लेक रोड, बालीगंज, कलकत्ता
" मैनबहादुरसिंह, बी० ए०, एल्-एल० बी०, क्षत्रिय इंटरकालेज, जौनपुर
" रंगलाल जाजोरिया, भारत बिल्डिंग्स, माउंट रोड, मद्रास
" रघुनाथसहाइ गुप्त, पोस्ट टीटागढ़, जि० चौबीस परगना, बंगाल
" राजरोशनराय शर्मा, कीनीसन जूट मिल्स्, पो० टीटागढ़,
जि० चौबीस परगना
" राजाराम पांडेय, बी० ए०, एल० टी०, क्षत्रिय कालेज, जौनपुर
" कुँवर राजेंद्रसिंह, मैनेजर कुर्री सुदौली राज, जिला रायबरेली
(अवध)
" रामगोपाल संघी, रेड हिल्स, नामपल्ली, हैदराबाद (दक्षिण)
" रामनाथ शर्मा, रिटायर्ड इंस्पेक्टिंग आफिसर फारेस्टस, ग्वालियर
" रामनाथ सिंह, क्षत्रिय इंटर कालेज, जौनपुर
" रामबालक शास्त्री, प्रधान संस्कृताध्यापक, जयनारायण हाई स्कूल,
बनारस
" राममूर्ति सिंह बी० एस-सी०, एल-एल० बी०, वकील, जौनपुर
" लक्ष्मीनारायण गुप्त, हैदराबाद सिविल सर्विस, बेगम पेठ,
हैदराबाद (दक्षिण)
" लक्ष्मीनारायण गुप्त, जुवेलर, बाकरगंज, पो० बाँकीपुर, पटना
" वंशीधर विद्यालंकार, वेस्टर्न टाकी के पीछे, काचीगुडा,
हैदराबाद (दक्षिण)
" विन्ध्येश्वरीप्रसाद, शास्त्री, रसायन आश्रम, अगदल (-कचहरी रोड),
चौबीस परगना (बंगाल)
" विट्ठलनाथ कपूर, मछरहट्टा, जौनपुर
" विनयसिंह देवड़ा, एम० ए०, गलथनी, पैरनपुरा रोड,
मारवाड़ (जोधपुर)
" विनायकराव विद्यालंकार, बैरिस्टर, जायबाग, हैदराबाद (दक्षिण)
" विश्वेश्वर नारायण विजूर, बी० एस-सी, एल० टी०,
गणपति हाईस्कूल, मंगलौर

श्रीयुत विष्णुदत्त पांडेय, ७ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता।
„ श० दा० चितले, राष्ट्रभाषा विशारद, एम० ए०, बी० टी०, हिंदी प्रचार संघ, पुणें
„ संतुलाल,कोठी, जौहरीमल गणेशदास, कटरा आहलूवालियाँ, अमृतसर
„ सीताराम गुप्त, (प्रो० गवर्नमेंट कालेज।) कृष्णनगर, लाहौर
„ सूर्यप्रताप आरागंज, हैदराबाद (दक्षिण)
„ हरिदत्त बेबरानी, गाँव नवमीन, पो० चौंडामंडी, जि० गढ़वाल
„ हरेकृष्ण चतुर्वेदी हेडमास्टर, अमेठी (सुल्तानपुर) अवध

योग–४९

संवत् १९९८ के प्रारंभ से अब तक (१ वैशाख १९९८ से ९ श्रावण १९९८) बने सभासदों की नामावली

मान्य—

श्रीमती महादेवी वर्मा, एम० ए०, महिला-विद्यापीठ, इलाहाबाद
श्रीयुत वेंकटेशनारायण तिवारी, एम० ए०, एम० एल० ए०, कीडगंज, इलाहाबाद

विशिष्ट—

श्रीयुत सेठ जुगुलकिशोर बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता
„ राजा पन्नालाल बंशीलाल पीत्ती, बेगमबाज़ार, हैदराबाद (दक्षिण)
„ रा० ब० राजा ब्रजनारायणसिंह, पडरौना राज, पो० पडरौना, ज़िला गोरखपुर
„ लक्ष्मीनिवास बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता
„ हरिकेशव घोष, इंडियन प्रेस लि०, इलाहाबाद

स्थायी—

श्रीयुत कमलाप्रसादसिंह, श्यामपोखर स्ट्रीट, कलकत्ता
„ कृष्णकुमार बिड़ला, ८ रायल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता
„ जगन्नाथप्रसाद, एम० ए०, एल्-एल० बी०, देवरिया, ज़िला गोरखपुर
„ जगन्नाथ शर्मा वाजपेयी, एम० ए०, आयुर्वेदाचार्य, कश्मी, बनारस
„ प्राणाचार्य कविराज प्रतापसिंह, प्रताप पार्क, हिंदू विश्वविद्यालय, बनारस
„ प्यारेलाल गर्ग, डिप्टी डायरेक्टर ऑव् एग्रिकल्चर, गोरखपुर

श्रीयुत भगवतीप्रसादसिंह, एम० ए०, डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट, जौनपुर

" आनरेब्ल राजा युवराजदत्त सिंह साहब, एम० सी० एस०, ऑव् ओयल एंड कैमरा इस्टेट, ओयलनरेश, पो० ओयल, जिला खेरी (अवध)

" रामचंद्र शर्मा वैद्य, राजस्थान आयुर्वेदिक औषधालय, अजमेर

" लक्ष्मीनारायण पोद्दार, १६।१ हरिसन रोड, बागड़ बिल्डिंग, कलकत्ता

" सेठ वंशीधर, मैनेजिंग डायरेक्टर, लक्ष्मी शुगर ऐंड आयल मिल्स, हरदोई

" महाराजकुमार शक्तीप्रसादसिंह देव, पंचकोट, मानभूम

" मुंशरीप्रसाद, रईस, स्पेशल मैजिस्ट्रेट, चौक, जौनपुर

" रायबहादुर सूर्यप्रसाद, ऐडवोकेट, दुलहिनजी की कोठी, बनारस

" हरिश्चंद्र, आई० सी० एस०, युक्त प्रांतीय सरकार के शिक्षा विभाग के सेक्रेटरी, लखनऊ

साधारण—

श्रीयुत रायबहादुर केदारनाथ खेतान, एम० एल० सी०, पडरौना, जिला गोरखपुर

" ठाकुर जमुनाप्रसादसिंह, इनकमटैक्स अफसर, कानपुर

" बैजनाथ बाग्म, बी० ए०, एल० टी०, हेडमास्टर, नार्मल स्कूल, फैजाबाद

" रामभरोसे सेठ, अवसरप्राप्त पी० ई० एस०, डी० ए० वी० कालेज, बनारस

" वासुदेवशरण अग्रवाल, एम० ए०, एल्‌-एल० बी०, क्युरेटर-प्राविंशल म्यूजियम, लखनऊ

" विष्णु शर्मा भारतीय, मुकाम बक्सरियों शाहजहाँपुर, युक्त प्रांत

" महाराज वीरेंद्रशाहजू देव बहादुर, राज्य जगम्मनपुर, पो० जगम्मनपुर, जि० जालौन

" सहदेवसिंह, ऐडवोकेट, बड़ी पियरी, बनारस

" राय हरेकृष्ण, सिगरा, बनारस

" 'अज्ञेय', पोस्ट बक्स ६२, दिल्ली

" कृपालसिंह रावत, श्रेणी १०, डी० ए० बी०, कालेज, देहरादून

" कृष्णटोपण लाल शर्मा, काव्यतीर्थ, वैद्यविशारद, मुखी की गली, हैदराबाद, सिंध

श्रीयुत मुनि कान्तिसागरजी, मोजैन श्वेताम्बर मंदिर, सिवनी, सी० पी०
,, कालीप्रसाद सिंह, श्रीमान् राजा साहब आवागढ़ के हाउस होल्ड कंट्रोलर, आवागढ़, एटा
,, काश्यपकृष्ण शर्मा, डिप्टी कलक्टर, बनारस
,, गोपालदास, डी० ए० वी० स्कूल, ९५ बिगन्डेट स्ट्रीट, रंगून, बर्मा
,, गोपीचंद कछवाहा, क्लार्क डाक आफिस, बीकानेर
,, जगीरसिंह, एम० ए०, छोटी गैबी, बनारस
,, जगतनारायणलाल, हेड ट्रेन एग्जामिनर, ई० आई० आर०, मुगलसराय, जिला बनारस
,, जनार्दन शर्मा, पोस्ट मास्टर, श्रदयरामसर, बीकानेर
,, जयशंकर दुबे, खजुरी, बनारस
,, जयश्री पांडेय, बी० एस्-सी०, एल्. एल० बी०, वकील, बड़ी पियरी, बनारस
,, छेदीप्रसाद आयुर्वेदाचार्य, वैद्यशास्त्री, श्रीकल्याण औषधालय, मुगलसराय जिला बनारस
,, तोलाराम चोपड़ा, ठि० श्री० भैरूँदान ईश्वरचंद्र चोपड़ा, गंगाशहर, बीकानेर
,, द्वारकानाथ तिवारी, मछरहट्टा, जौनपुर
,, देवीनारायण, एम० ए०, एल-एल० बी०, साक्षी विनायक, बनारस
,, कुँवर प्रियानंदप्रसादसिंह, एम० ए०, एल्.एल० बी०, सुवही डुमली, बनारस
,, बुद्धप्रकाश, लाल भगवराम बिल्डिंग, सरस्वती प्रेस, मेरठ
,, डॉक्टर भगवराम, आई० एम० डी०, रजिस्टर्ड मेडिकल प्रैक्टिशनर्स, बीकानेर
,, भगवानदीन शुक्ल, तालुकेदार, मुकाम शाहपुर, जिला बैतूल, सी०पी०
,, महावीरसिंह गहलोत, बी० ए०, मरती दरवाजा, जोधपुर
,, महालचंद वैद, भीनासर, बीकानेर
,, महेशलाल आर्य, पा० बिहारशरीफ पटना, बिहार
,, मोतीलाल, हेडमास्टर, प्राइमरी स्कूल मुगलसराय, जिला बनारस
,, मोतीलाल मेनारिया एम० ए०, मगनारघाट, उदयपुर (मेवाड़)
,, राधाकृष्ण चतुर्वेदी, डिप्टी सुपरिंटेंडेंट, सेंट्रल जेल, बीकानेर

श्रीयुत राधारमण पांडेय, व्याकरणाचार्य, अध्यापक, गवर्नमेंट इंटर कालेज, फैजाबाद

,, रामकृष्ण आचार्य (कलकत्ती), म्युनिसिपल कमिश्नर, आनरेरी मैजिस्ट्रेट एंड मुंसिफ सदर, आचार्यों का चौक, कलकतिया बिल्डिंग, बीकानेर

,, रामेश्वरदयालजी, डिप्टी कलक्टर, फैजाबाद

,, लक्ष्मीदास, सत्ती चबूतरा, बनारस

,, विश्वेश्वरजी, सिद्धांतशिरोमणि, दर्शनाचार्य, गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृंदावन, मथुरा

,, श्यामबहादुर सिंह, मारवाड़ी सम्मेलन, कालवा देवी, बंबई

,, शिवानंद तिवारी, बी० ए०, एल० टी० हेडमास्टर, गुर्जर पाठशाला, बनारस

,, सत्यनारायण द्विवेदी, बी० ए०, हेडमास्टर, स्टेट स्कूल, नाहर, बीकानेर

,, हरदेव पांडेय, कानूनगो, पो० मुगलसराय, जिला बनारस

,, हीरालाल चौलक, एम० ए०, हिंदी और संस्कृत के अध्यापक, डी० ए० बी० कालेज, शोलापुर

नि.शुल्क—

श्रीयुत काशीप्रसाद मिश्र, आयुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ, विश्वनाथ फार्मेसी, सुंदरदास बाग, बनारस

,, माधवशरण, ५१२, नरही, लखनऊ

,, रघुवरदयाल मिश्र 'मान', हेडमास्टर, मिडिल स्कूल बिधूना, जिला इटावा

,, श्रीराम भारतीय, अखिल भारतीय सेवा समिति बिल्डिंग्स, इलाहाबाद

योग—७२

संशोधन

सेठ रामगोपाल आर्य, मक्खनाथ भवन, आजमगढ़ स्थायी सभासद हैं। खेद है इनका नाम स्थायी सभासदों की सूची में भूल से नहीं आ सका।

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
मान्स पदक के दाता—पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०। इसके ब्याज से भी एक पदक प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है।			
९—द्विवेदी पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—स्वर्गीय पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी। इसके ब्याज से सर्वोत्तम हिंदी ग्रंथ के रचयिता को प्रति वर्ष स्वर्णपदक दिया जाता है।	१५००)	११९०)॥।	४६)
१०—शंभूरत्नस्मारक निधि			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—स्वर्गीय बाबू जयशंकर प्रसाद। इसके ब्याज से साहित्य-परिषद तथा गोष्ठी के अधिवेशन किये जाते हैं।	११००)	९०४॥=)	५५॥)
११—शिवलाल मेहरोत्रा निधि			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—बाबू गंगाप्रसाद खत्री। इसके ब्याज से कला-भवन के लिये वस्तुएँ खरीदी जायेंगी।	१००)	९१।)	३॥)
१२—बलदेवदास पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—बाबू व्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल० बी० काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जायगा।	१००)	९९=)४	३॥)

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक मूल्य
१३—रायबहादुर डा० हीरालाल स्वर्णपदक			
गवनमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल। इसके ब्याज से प्रति दूसरे वर्ष एक स्वर्ण-पदक, पुरातत्त्व मुद्राशास्त्र, इपीग्राफी, भाषाविज्ञान तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी में लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध के रचयिता को दिया जायगा।	१०००)	१००१)	३५)
१४—राधाकृष्णदास पदक			
गवनमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—बाबू शिवप्रसाद गुप्त। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य-पदक दिया जायगा।	१००)	९९=)४	३॥)
१५—गुलेरीपदक			
गवनमेंट स्टाक सर्टिफिकेट दाता—श्री जगद्धर शर्मा गुलेरी।	१००)	१००॥=)॥	३॥)
१६—रेडिचे पदक			
गवनमेंट स्टाक सर्टिफिकेट फुटकर चंदे से।	१००)	१००॥=)१०	३॥)

नोट—निधि १ का रुपया इंपीरियल बैंक के हिस्सों में लगा है और शेष के स्टाक सर्टिफिकेट ट्रेजरर चैरिटेबल एंडाउमेंट फंड्स, युक्तप्रांत के पास जमा हैं।

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक आय
ग्रौष्म पदक के दाता—पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०। इसके ब्याज से भी एक पदक प्रति चौथे वर्ष दिया जाता है।			
९–द्विवेदी पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१५००)	११९०)॥।	५६)
दाता—स्वर्गीय पंडित महावीरप्रसादजी द्विवेदी। इसके ब्याज से सर्वोत्तम हिंदी ग्रंथ के रचयिता को प्रति वर्ष स्वर्णपदक दिया जाता है।			
१०–शंभूरत्नस्मारक निधि			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	११०)	६०४॥)	४॥)
दाता—स्वर्गीय बाबू जयशंकर प्रसाद। इसके ब्याज से साहित्य-परिषद तथा गोष्ठी के अधिवेशन किये जाते हैं।			
११–शिवलाल मेहरोत्रा निधि			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१[illegible]०)	९२॥)	३॥)
दाता—बाबू गंगाप्रसाद खत्री। इसके ब्याज से कला-भवन के लिये वस्तुएँ खरीदी जायँगी।			
१२–बलदेवदास पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	[illegible]०)	८८)४	३॥)
दाता—बाबू ब्रजरत्नदास बी० ए०, एल्-एल० बी०, काशी। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य पदक दिया जायगा।			

निधि का नाम और विवरण	अंकित मूल्य	क्रय मूल्य	वार्षिक मूल्य
१३—रायबहादुर डा० हीरालाल स्वर्णपदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१०००)	१००१)	३५)
दाता—स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल। इसके ब्याज से प्रति दूसरे वर्ष एक स्वर्ण-पदक, पुरातत्त्व मुद्राशास्त्र, इंडोलॉजी, भाषाविज्ञान तथा एपीग्राफी संबंधी हिंदी में लिखित सर्वोत्तम मौलिक पुस्तक अथवा गवेषणापूर्ण निबंध के रचयिता को दिया जायगा।			
१४—राधाकृष्णदास पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	९९=)४	३॥)
दाता—बाबू शिवप्रसाद गुप्त। इसके ब्याज से प्रति चौथे वर्ष एक रौप्य-पदक दिया जायगा।			
१५—गुलेरीपदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	१००॥~)॥	३॥)
दाता—श्री जगद्धर शर्मा गुलेरी।			
१६—रेडिचे पदक			
गवर्नमेंट स्टाक सर्टिफिकेट	१००)	१००॥~)१०	३॥)
फुटकर चंदे से।			

नोट—निधि नं० १ का रुपया इंपीरियल बैंक के हिस्सों में लगा है और शेष के स्टाक सर्टिफिकेट ट्रेजरर चैरिटेबल एंडाउमेंट फंड्स, युक्तप्रांत के पास जमा हैं।

परिशिष्ट ६

१ वैशाख से ३० चैत्र १९९७ तक २५) या अधिक दान देनेवाले सज्जनों की नामावली

प्राप्ति तिथि	दाता का नाम	धन	प्रयोजन
१२ वैशाख	श्री सुधीरकुमार वसु	२५)	श्री रामप्रसाद समादर कोप
२६ "	श्री काशीप्रसाद, काठी		
	श्री किशोरीलाल मकुंदीलाल, काशी	२५)	कलाभवन
२७ "	मेहता श्री फतहलाल साहब, उदयपुर	५००)	"
" "	" " "	१००)	स्थायी कोप
२८ "	श्रीमती रामदुलारी दुबे, अजमेर	१००)	"
१६ मार्गशीर्ष	" " "	१०००)	रुक्मिणीदेवी ग्रंथमाला
इस वर्ष चार	युक्तप्रांतीय सरकार	१०००)	पुस्तकालय
किश्तों में	" "	२०००)	हिन्दी हस्तलि० पुस्तकों की खोज
१३ ज्येष्ठ	श्री सूर्यनारायण व्यास, उज्जैन	१००)	स्थायी कोप
१३ आषाढ़	श्री सेठ घनश्यामदास बिड़ला, दिल्ली	५५०)	कलाभवन
८ चैत्र			
७ श्रावण	श्री घनश्यामदास पोद्दार, बंबई	१०१)	स्थायी कोप
" "	श्री नन्दकिशोर लोहिया कलकत्ता	१०१)	" "
१७ "	श्री भागीरथ कनोडिया, "	१५०)	कलाभवन
२० "	श्री राय कृष्णदास जी, काशी	५०)	"
२६ भाद्रपद / २६ पौष	श्री पुरुषोत्तमदास हलवासिया, कलकत्ता	६००)	
२६ भाद्रपद	" " "	४००)	कूप निर्माण
२७ भाद्रपद	श्री मुरारीलाल केडिया, काशी	५०)	मूर्ति मंदिर

प्राप्ति तिथि	दाता	प्राप्त धन	प्रयोजन
५ आश्विन	श्री रामेश्वर गौरीशंकर ओझा, अजमेर	१००)	स्थायी कोष
१९ "	श्री रमेशचंद कालिया, कानपुर	१००)	"
२६ "	श्री हरीचंद खन्ना, कानपुर	१००)	"
" "	श्री रायबहादुर रामदेव चोखानी, कलकत्ता	१०)	नागरी प्रचार
२९ "	श्री डा० सच्चिदानंद सिन्हा, पटना	१००)	स्थायी कोष
२० "	श्री कुँवर सुरेश सिंह कालाकाँकर	१००)	"
३० "	राय कृष्णदासजी के द्वारा	१००)	कलाभवन
१ कार्तिक	श्री सेठ जुगलकिशोर बिड़ला, नई दिल्ली	२५)	"
११ कार्तिक	श्री म० कृष्ण जी, बी० ए०, लाहौर	१००)	स्थायी कोष
१६ "	श्री प्रो० अमरनाथ झा, प्रयाग	५)	श्रीरामप्रसाद समादर कोष
१८ "	श्री सेठ पदमपत सिंहानिया, कानपुर	१००)	स्थायी कोष
४ मार्गशीर्ष	श्री कुमार राव कृष्णपाल सिंह आगरा	१०)	"
१२ "	श्री सेठ चंपालाल बाँठिया, बीकानेर	१०१)	"
२० "	श्री० एन० सी० मेहता, आई० सी० एस०, लखनऊ	२५)	श्रीरामप्रसाद समादर कोष
१९ पौष	श्री महाराजकुमार डा० रघुबीरसिंह एम० ए०, डी० लिट्, सीतामऊ	४०१)	नागरीप्रचार
" "	" " " "	१००)	स्थायी कोष
२३ "	श्री डा० अमूल्यचरण उकील, कलकत्ता	२५)	फुटकर
२४ "	श्री लाला बनवारीलाल, काशी	१००)	नागरीप्रचार
१ माघ	श्री सतीशकुमार, बरेली	१०१)	"
" "	श्री लाला लालचंद, लाहौर	१००)	स्थायी कोष
" "	श्री शिवप्रसादजी गुप्त, काशी	१२१)	श्रीरामप्रसाद समादर कोष

प्राप्ति तिथि	दाता का नाम	धन	प्रयोजन
७ माघ	श्री राय रामचरण अग्रवाल, प्रयाग	२५)	श्री रामप्रसाद समादरकोष
" "	श्री राय रामकिशोर अग्रवाल, प्रयाग	३०)	"
९ "	श्री प्रो० हरि रामचंद्र दिवेकर, उज्जैन	१००)	स्थायी कोष
११ "	श्री साहु रामनारायण लाल, बरेली	१००)	"
१८ "	श्री राय गोविंदचंद, काशी	१००)	श्री रामप्रसाद समादरकोष
३० "	श्री भरतराम, दिल्ली	१००)	स्थायी कोष
५ फाल्गुन १५ चैत्र	श्री प्यारेलाल गर्ग, गोरखपुर	२००)	डाक्टर महेंद्र लाल गर्ग विज्ञान ग्रंथावली
२० फाल्गुन	श्री रामेश्वरसहाय सिन्हा, काशी	१००)	स्थायी कोष
२४ फाल्गुन ११ चैत्र	म्युनिसिपलबोर्ड, बनारस	३६०)	पुस्तकालय
३ चैत्र,	श्रीमती रमाबाई जैन, डालमिया नगर	१००)	स्थायी कोष
७ "	श्री शुकदेवशरण केदारनाथ भार्गव, बंबई	१००)	स्थायी कोष
१९ "	श्री प्रो० लालजीराम शुक्ल, काशी	१००)	"
२६ "	श्री गोपीकृष्ण कानोडिया, कलकत्ता	२००)	कलाभवन
२६ "	श्रीकृष्णदेवप्रसाद गौड़, काशी	१००)	स्थायी कोष
		योग १८७७१)	

परिशिष्ट १०

काशी नागरीप्रचारिणी सभा के आय-व्यय का लेखा

१ वैशाख ९७ से ३० चैत्र १९९८ तक

आय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग	व्यय	साधारण विभाग	पुस्तक विभाग
गत वर्ष की बचत	५७४७॥≡)२				
हिन्दी पुस्तकों की खोज, यु० प्रां०	२०२०)		हिन्दी पुस्तकों की खोज, यु० प्रां०	१२०१।।।)॥	
साहित्य परिषद्	४८॥≡)११		साहित्य परिषद्	५७।=)॥	
पदक तथा पुरस्कार	४७१)११		पदक तथा पुरस्कार	×	×
देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०		१०८१॥=)	देवीप्रसाद ऐतिहासिक पु० मा०		२ ७।=)॥
बालाबक्स रा० चा० पु० मा०		५१ ।)	बालाबक्स रा० चा० पु० मा०		१८४५=)॥
सूर्यकुमारी पुस्तकमाला		१५९१।।।)॥	सूर्यकुमारी पुस्तकमाला		२८८ ।=)१०½
देव पुरस्कार ग्रंथावली		९१९॥≡)॥	देव पुरस्कार ग्रंथावली		१४१।=)॥
रुक्मिणी देवी ग्रंथमाला		१००)	रुक्मिणी देवी ग्रंथमाला		१॥=)
महेन्दुलाल गर्ग विज्ञान ग्रं० मा०		२)			

बचत का ब्योरा—

रकम	बैंक		खाता	
११।।।=)।।	रोकड़ सभा में			
४१५।-)॥	इलाहाबाद बैंक	चलता	खाता	नं० १
१६।।)११	” ”	”	”	नं० २
१०५-)॥	” ”	सेविंग	बैंक	प्रकाशन
५६)॥	” ,	,	”	पुस्तकालय अमानत
८५)	” ,	”	”	शिवलाल मेहरोत्रा निधि
२६७।।)।	पो० आ०	”	”	सभा
१४२७।।।-)१	” ”	”	”	चैरिटेबुल एवं ट्रस्ट फंड
४ ४=)११	” ”	”	”	कलाभवन
१=)२	” ”	,	”	पुस्तकालय
८७४।-)=	” ”	”	”	प्राविडेंड फंड
१७१।।।-)॥	” ”	”	”	भवननिर्माण कोष
११७।।।=)।।।	” ”	”	”	स्थायी कोष
।।।-)४	” ”	”	”	खोज
१९।।।=)।	” ”	”	”	संकेत लिपि
९४)	” ”	”	”	कवियों के चित्र, परिचय
६९८)	” ”	”	”	श्रीमती रुक्मिणी तिवारी ग्रंथमाला
४१५।।)१	बनारस बैंक	”	”	अमानत
७०)	” ”	”	”	स्थायी कोष
१९।।)।	सेंट्रल बैंक	,	”	देव पुरस्कार ग्रंथावली
२१७।।)	” ”	”	”	अमानत
२)	पो० आ०	”	”	डा० मोहनलाल गर्ग सि० ग्रं०

भाषा का प्रश्न

(लेखक—श्री चंद्रबली पांडे, एम० ए०)

आज-कल हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी के झगड़े के कारण भाषा की समस्या बहुत ही जटिल हो गई है। किंतु लेखक ने कई लेख लिखकर इस पुस्तक में इस प्रश्न को बहुत अच्छी तरह सुलझाया है। पृष्ठसंख्या १८८, मूल्य ॥)

मुगल बादशाहों की हिंदी

(लेखक—श्री चंद्रबली पांडे, एम० ए०)

इस पुस्तक में लेखक ने सप्रमाण सिद्ध किया है कि मुसलमान बादशाह हिंदी से प्रेम करते थे और हिंदी में रचना भी करते थे। पृ० सं० १०४ मूल्य ॥)

मुल्क की जबान और फाजिल मुसलमान (उर्दू में)

(संपादक—शाह साहब नासिरुद्दीनपुरी)

इस पुस्तक में नागरी लिपि और हिंदी भाषा के संबंध में मुसलमान विद्वानों की सम्मतियाँ संगृहीत की गई हैं। मूल्य ।≈)

रघुनाथरूपक गीताँ रो

(संपादक—श्री महताब चंद खारैड़, विशारद)

डिंगल-भाषा के महाकवि मंछ (मनसाराम) का यह प्रसिद्ध ग्रंथ १८८३ वि० में लिखा गया था। इसमें रामचंद्रजी की कथा का बड़ा कवित्वपूर्ण वर्णन है और यह डिंगल-भाषा का अत्यंत प्रामाणिक रीतिग्रंथ भी है। खारैड़ जी ने डिंगल छंदों का हिंदी में शब्दार्थ और भावार्थ देकर इस ग्रंथ का बड़ी योग्यता के साथ संपादन किया है। आरंभ में पुरोहित हरिनारायण शर्मा, बी० ए०, विद्याभूषण की लिखी हुई महत्त्वपूर्ण भूमिका है। पृष्ठ-संख्या ३१०, सजिल्द, मूल्य २)।

मोहें जो दड़ो

(लेखक—श्री सतीशचंद्र काला, एम० ए०)

मोहें जो दड़ो अर्थात् 'मुर्दों का टीला' सिंधु प्रांत में एक बहुत प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ की खोदाई में मिली हुई वस्तुओं से भारत के प्राचीन इतिहास और संस्कृति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है जिसका वर्णन इस पुस्तक में है। पृ० सं० २००, मू० २)

मुद्रक—श्री अपूर्वकृष्ण बसु, इंडियन प्रेस, लिमिटेड, बनारस ब्रांच।

श्रीमान सेठ भैरोदानजी सेठिया

श्रीमान् सेठ भैरोंदानजी सेठिया

श्रीवीतरागाय नम

भाषणम्

मगलाचरण

त्रैलोक्य सकल त्रिकालविषय सालोकमालोकित ।
साक्षाद्येन यथा स्वय करतले रेखात्रय सागुलि ॥
रागद्वेषभयामयान्तकजरालोलत्वलोभादयो–
नाल यत्पदलङ्घनाय स महादेवो मया वन्द्यते ॥

जिसने हाथ की अगुलि सहित तीन रेखाओं के समान तीनों कालसम्बन्धी तीन लोक और अलोक को साक्षात् देख लिया है, तथा जिसे राग द्वेष भय रोग जरा मरण तृष्णा लालच आदि जीत नहीं सकते, उस महादेव–देवाधिदेव–को मैं नमस्कार करता हूँ ।

श्रीमान् स्वागतकारिणी के सभापति महोदय ! उपस्थित महानुभावो ! माताओ ! बहिनो !

आपने कृपा करके अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फरेन्स जैसी आदर्श महासभा के और उस पर भी भारतवर्ष के मुकुट रूप सुविशाल विद्या के केन्द्र बम्बई नगर में होने वाले महत्त्व पूर्ण और उत्तरदायी इस पुण्य- सम्मेलन के सभापति का भार समाजके अनेक श्रीमान् धीमान् अनुभवी समाजहितैषी उत्साही महानुभावों को छोड़कर जो मुझ जैसे अल्पज्ञ और असमर्थ आदमी के सिर पर रक्खा है, इसका कारण केवल आप लोगों का मेरे प्रति प्रेमभाव ही प्रतीत होता है। जब मैं इस कार्य की गुरुता पर-विचार करता हूँ, तो मालूम होता है कि आपने मेरे ऊपर रहे हुए प्रेम का अतिशय उपयोग किया है। मुझे इस पद के स्वीकार करने में अनेक सकोच थे, क्योंकि ऐसी विशाल महासभा के सभापति में जितने गुण होने चाहिये, उनका विचार करते हुए मैं अपने को योग्य नहीं पाता हूँ। लेकिन आप महानुभावों की आग्रहपूर्ण प्रेरणा को टाल देना भी असंभव हो गया था। अस्तु, समाजसेवा की भावना के बल से इस गुरुतर भार को उठाने की हिम्मत की है। आशा है कि आप सज्जन हस्तावलम्बन देकर मेरी कठिनाइयाँ दूर करेंगे। और मैं अपने जो विचार प्रकट करूं उन्हें ध्यानपूर्वक सुनेंगे।

धर्म
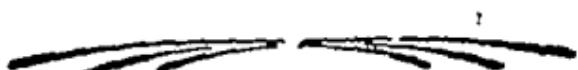
संसार के समस्त आस्तिक समाज का धर्म ही ध्येय है। और यह है भी ठीक। क्योंकि सांसारिक विषय ज्वाला के सन्ताप से सन्तप्त संसारी जीवों को दु खों से छुड़ाकर अनन्त निराबाध सुख में पहुँचाने वाला धर्म ही है। इसलिये इस विषय की ओर सब से पहले आपका ध्यान खींचना आवश्यक समझता हूँ।

जिनधर्म निजधर्म (आत्मधर्म) है। आत्मा अनादि है और अनन्तकाल तक रहेगा। अतएव उसका धर्म जैनधर्म भी अनादि और अनन्त है। इस परिभाषा से यह भी सिद्ध होता है कि जैनधर्म विश्व का धर्म हो सकता है। विश्वधर्म मे जो लक्षण होने चाहिए, वे सब इसमें मौजूद है। परन्तु छोटे से छोटा कार्य भी बिना प्रयत्न के नहीं होता। फिर जैनधर्म को विश्वधर्म बनाने के लिये कितना परिश्रम करना होगा, इसका अनुमान आप ही लगा सकते है। इसके लिये हमें समाज मे उत्कट विद्वान्, स्वार्थत्यागी, महापुरुषों की बड़ी आवश्यकता है। वर्तमान युग धर्म-बीज बोने का सस्कृत क्षेत्र है। इस बुद्धिवाद के जमाने मे हर एक देश सत्य की खोज मे लगे हुए दिखाई देते है। यदि इस समय हम परमात्मा महावीर के तत्त्वज्ञान की कसौटी स्याद्वाद, आचरणवाद का उत्कृष्टतत्त्व अहिंसावाद, और आत्मशोधक सर्वोत्कृष्ट अध्यात्मवाद के तत्त्वो को दूसरो के समक्ष रक्खे, तो सत्यान्वेषी समाज निस्सन्देह प्रभु वीर की छत्रछाया मे शान्ति-रसपान करता मिलेगा। वह दिन हमारे लिये कितने आनन्द का, कितने सौभाग्य का

और कितने गौरव का होगा। और तब ही हम वीर के सचे पुत्र कहलाएंगे। प्रभो! वह सुदिन शीघ्र आवे।

समाज की परिस्थिति

महानुभावो! जब हम समाज की वर्तमान परिस्थिति पर नज़र डालतेहैं, तो आशा के पूर्ण प्रकाश के बदले निराशा का घोर अन्धकार नज़र आने लगता है। जो परिस्थिति किसी समाजहितैषी धर्म-प्रिय से नहीं देखी जा सकती, वह है मानसिक और शारीरिक निर्बलता। जिधर आंख उठाकर देखतेहैं, उधर प्रायः पुरुषार्थहीन निस्तेज, निरुत्साह, निर्बल निर्बुद्धि और निराशावादी स्त्री पुरुष दिखाई देते हैं। न तन में बल, न वीर्य, न पराक्रम, न तरंगे मारते उछलता हुआ उत्साह ही दिखाई देता है, और न लहराती हुई लगन। यह तो हुई व्यक्तियों की दशा, अब समाज की ओर दृष्टि दौड़ाइये। यहां असन्तोष के और भी गहरे गर्त में गिरना पड़ता है। इसमें न सामाजिक भान है, न विद्या प्रेम है, न समाजसुधार के भाव हैं, न वात्सल्य है, न संगठन शक्ति है, न निष्पक्षता है, न विद्यागौरव है और न कर्तव्यपरायणता। ज्यादा क्या कहें, आज हमारे पास गौरव की वस्तु ही क्या रह गई है? हम वीतरागदेव, निर्ग्रन्थ गुरु और दया धर्म पर, जो कि वास्तव में हमारी मौरूसी जायदाद नहीं है, इतराते हैं, और यदि क्रियात्मक धर्म जो अपनी सम्पत्ति कही जा सकती है- पर दृष्टि डालते हैं, तो बिल्कुल गिरी अवस्था पाते हैं। हम में वह नमूनेदार अहिंसा, वह

आदर्श सत्य, वह पवित्र अचौर्यव्रत, वह सर्वार्थसाधक ब्रह्मचर्य और वह धर्ममूल सन्तोष कहां है ?, यदि हम में अहिंसा भाव होता तो दूसरों के दु'ख सुख की परवाह न कर केवल स्वार्थसाधन में ही न लगे रहते। यदि सत्य होता तो व्यापार की ऐसी दुर्दशा न होती। परदेशी व्यापारियों का व्यापार कितनी सत्यनिष्ठा और निष्कपटता से भरपूर है। यह बात उनके ट्रेडमार्क ही को देखकर हो जाने वाले विश्वास से विदित है। जिस सोने पर नेशनल बैंक की छाप होगी, उसे लोग बिना परीक्षा किये ही छाप मात्र देखकर निस्सन्देहभाव से खरीद डालते हैं। लेकिन हमारा व्यापार कितनी सत्यनिष्ठा और निष्कपटता पूर्वक होता है, यह बात एक कपड़े के थान को ही देख कर भली भाँति जानी जा सकती है। यही हाल हर एक कर्तव्य का है। मेरे मित्रो! मेरे इन शब्दों से आप अप्रसन्न न होंगे, बल्कि अपनी स्थिति पर। हम सब उसे सुधारने की चेष्टा करें और आदर्श गृहस्थ बनें। नीतिपूर्वक धनोपार्जन करें, बड़ों का विनय करें, सत्यनिष्ठ बन, परस्पर में बाधा न पहुँचा कर त्रिवर्ग-धर्म अर्थ काम- का सेवन करें, अयोग्य आहार विहार न करें, सत्पुरुषों के समागम से अपना आचरण उज्ज्वल बनावें, विवेकी बने, इन्द्रियों और मन पर काबू करें, धर्मशास्त्रों को सुनें, मनन करें, और उन के अनुसार प्रवृत्ति करें, लोक प्रिय कृतज्ञ सौम्यप्रकृति गुणग्राही परोपकारी तत्त्वज्ञानी और दानी बनें, दीन दुखियों पर दया करें और पाप से डरें तथा हमारी रग २ में धर्मप्रेम व्याप्त रहे। यदि हम सब इन नियमों का पूर्णतया पालन करेंगे, तो निस्संदेह

हम अपने आपको महावीर के सच्चे सेवक बनाकर अपने आचरणों से ही जैनधर्म की महत्ता प्रकट कर सकेंगे।

कुरीतियाँ

(बाल विवाह)

परन्तु आज जो हमारी परिस्थिति है, उसे देखते हुए मालूम होता है कि हम इन आदर्शों से बहुत दूर हैं। अभी तक समाज ऊँघ रही है, उसे मालूम ही नहीं, कि अन्य समाजें मध्याह्न के सूर्य के समान प्रकाशित हो रही हैं। समाज सृष्टि के मुख्य अंग बालक बालिकाएँ हैं। वे ही हमारे उज्ज्वल भविष्य की जीवित आशाएँ हैं। यह ध्रुव सत्य है कि जिस समाज के बालक एवं बालिकाएँ जैसी होंगी, भावी समाज भी उसी प्रकार का होगा। क्योंकि उनके समुदाय ही का नाम समाज है। इससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि हमारे समाज का सुधार बालकों के सुधार पर निर्भर है। पर हम सुधार के इस मूल सिद्धान्त को प्रथम तो समझते ही नहीं, या समझ कर भी उपेक्षा करते हैं। इसी नासमझी या उपेक्षा का फल बालविवाह है। भला मैं इस अज्ञानता भरी कुप्रथा के विषय में क्या कहूं। बालकों का कच्ची अवस्था में वीर्य का पात होने से वे शक्तिहीन हो जाते हैं, जिससे न विद्या का लाभ ले सकते और न उनका धर्मसेवन में चित्त लगता है, बल्कि उनका जीवन ही उनके लिये भाररूप हो जाता है। कोई सभा, सभापति और व्याख्याता ऐसा न होगा, जिसने इसकी भरसक निंदा न की हो। यह समाज रूपी पौधे की जड़ में लगा हुआ

एक सर्वनाशक भयंकर कीड़ा है, जिसने समाज को नि'स-
त्त्व बना दिया है और दिनोदिन हमारी परिस्थिति को शोच
नीय बनाता जा रहा है। बालविवाह के परिणाम से वे बच्चे
अपने मूर्ख और निर्दय माता पिताओं की कुत्सित आनन्द-
लिप्सा का प्रायश्चित्त भोगते हुए, हाय २ करते अपनी जिन्द
गी बिताते हैं। इसलिये मित्रो! इस कुप्रथा को रोकने के
लिये यह सामाजिक नियम कर दिया जाय कि बालक की और
कन्या की परिपक्व अवस्था हुए बिना शादी न की जाय।

वृद्ध विवाह

इसके सिवाय भी अनेक निन्दनीय रीतियाँ हम में प्रच
लित हैं। यद्यपि वे अज्ञात नहीं है, पर फिर भी वे ज्यों की
त्यों बनी हुई हैं। कितना आश्चर्य है कि जिन्हें समाज एक
स्वर से हानिकारक समझता है, उसके सुधार की भी उसमें
शक्ति नहीं है। यदि हममें यह क्षुद्र शक्ति भी होती तो
वृद्धविवाह, कन्याविक्रय और बहुविवाह आदि कलकों को
कभी के धोकर अपने मस्तक को उज्ज्वल एवं उन्नत बना
सकते, परन्तु आज तो "अगम बुद्धि बानियों" की बुद्धि
पर आवरण पड़ा है। यही कारण है कि समाज के वृद्धपुरुष
भी अपनी विषय वासनाओं को काबू में नहीं रख सकते
और पुत्री और पोतियों सरीखी बालिकाओं का जीवन
बर्बाद करने में तनिक भी नहीं हिचकिचाते। उन्हें इस बात
का विचार भी नहीं होता कि इससे समाज की क्या दुर्दशा
हो रही है। युवकों की क्या दशा हो रही है और जो बालि
-का मेरी पैशाचिक वासनाओं के द्वारा बालविधवा बनाई

जारही है, उस बेचारी की क्या दुर्दशा होगी। सच पूछिये तो ऐसे नर, नर नहीं नरपिशाच हैं, जिन्हें निर्दोष भाली भाली बालिकाओं के सौभाग्य नष्ट करने में ही आनन्द का अनुभव होता है। ये पिशाच समाज का गला कब छोड़ेंगे यह तो परमात्मा ही जानें, पर समाज को अपना भला बुरा आप ही सोच लेना चाहिए।

कन्या विक्रय

हाँ, हम भले बुरे का असली विचार तब ही कर सकेंगे जब उनकी मोहिनी— लक्ष्मी का ममत्व त्याग सकेंगे। अपनी संतान को शाक भाजी की तरह न बेचकर" अपनी ही सन्तान के जीवित मांस को बेचकर पैसा पैदा करना घोर पाप है" ऐसा समझ लेंगे। अभी तो हम यह बात समझते हुए भी मानो नहीं समझ रहे हैं। ओफ़! कितना अधःपात! पन्द्रह कर्मादानो में प्राणी के अंगभूत ऊन आदि के व्यापार का त्याग करने वालों का ऐसा असीम अधःपात! मित्रो! "यदतीतमतीतमेव तत्" अर्थात् हुआ सो हुआ, भविष्य का विचार कीजिये और समाज को विनाश के मुँह से बचाइये।

वाग्दान (सगाई)

सज्जनो! खेद है कि समाज सुधार के बदले नयी २ कुरीतियों के जाल में फंसकर उनका शिकार बनता जा रहा है। किये हुए वाग्दान— (सगाई— सम्बन्ध) का बिना खास कारणों के किसी प्रकार के स्वार्थसाधन के लिये छोड़ देना, हमारे उक्त कथन का ज्वलन्त उदाहरण है। क्योंकि सगाई छोड़ देने के नीति में पाँच कारण बताये गये हैं। देखिये—

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतितेऽपतौ ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥ १ ॥

अर्थात् जिसके साथ सगाई सम्बन्ध कर दिया गया हो, यदि वह बारह वर्ष तक लापता रहे, कालकवलित हो जाय, दीक्षित हो जाय (दीक्षा का अभिलाषी हो) नपुंसक खतरनाक रोग वाला हो और जाति से पतित हो जाय तो इन पाँच आपत्तियों में से किसी के उपस्थित होने पर दूसरे के साथ किया हुआ वाग्दान छोड़ा जा सकता है, अन्यथा नहीं ।

किन्तु आजकल उल्लिखित कारणों के बिना नगण्य कारणों का सहारा लेकर स्वार्थसिद्धि के लिये लोग अपने वचन का निर्वाह नहीं करते । यह बात प्रतिष्ठित व्यापारी समाज को नीचा दिखाने वाली है । अतः हमारा कर्तव्य है कि सगाई करने से पहले वर कन्या के कुल, गुण, स्वभाव, धर्म, आयु, अवस्था, आचरण, प्रतिष्ठा, शारीरिक सम्पत्ति और ज्ञान आदि के विषय में खूब सोच विचार लें, क्योंकि यह संतान के सारे जीवन की भलाई बुराई का प्रश्न है । और जब सम्बन्ध कर चुकें तो फिर उसे बिना कारण न छोड़ें । छोड़ देने से नीतिविरोध, सामाजिक बंधनों की शिथिलता, वचनभंग और विश्वासघात आदि अनेक बुराइयाँ पैदा होती हैं ।

बहु विवाह

सज्जनो ! ऊपर बताई हुई कुप्रथाओं के अतिरिक्त एक और भी कुप्रथा है । वह है बहु विवाह । मैं मानता हूँ कि

प्राचीन काल में बहु विवाह की प्रथा प्रचलित थी, पर अब वह प्राचीन काल नहीं है। अब जमाना बदल गया है। हमारी शारीरिक और मानसिक स्थिति पहले जैसी नहीं है। हम आँखों देखते हैं कि एक पत्नी के रहते हुए दूसरा विवाह करना क्या है, मानो कलह मोल लेना है। उस का जीवन अशान्तिमय हो जाता है, तथा धर्म पालन करना तो दूर रहा शारीरिक सुख भी नसीब नहीं होता। इस लिये जहाँ तक बन सके बहुत शीघ्र इस रिवाज को जड़ से उखाड़ फेंकना चाहिये।

व्यर्थ व्यय

महानुभावो! जब हम फिजूलखर्ची की ओर दृष्टि डालते हैं, तो हमारे हृदय को बड़ी चोट पहुँचती है। जिस पैसेको अनेक कठिनाइयां भोगकर और अठारह पाप स्थानो का सेवन कर पैदा करते हैं, उसे समाज के थोथ बन्धनों या कोरी 'वाहवाही' के लिये पानी की तरह बहा देते हैं, यह कितनी अज्ञानता की बात है। मृतक-भोजन को ही लीजिये,यह जातिद्वारा अवश्य कर्त्तव्य ठहरा दिया गया है। आइये इस पर थोड़ा विचार करें। कल्पना कीजिये, एक स्त्री विधवा हो गई। कुटुम्ब में कोई दूसरा पालक नहीं है। १–२ बाल बच्चे हैं। स्थिति साधारण है। जाति के बन्धन से उसे नुकता अवश्य करना होगा। नहीं तो उसका पति रास में लौटाया जाता है। और जाति की तानेबाजी जुदी। ऐसी हालत में उसे यदि हुए तो बचे खुचे गहने और रहने का घर आदि बेच कर पंचों के उदरदेव को लड्डू जलेबी का नैवेद्य चढ़ाना पड़ता है। ओफ्!

कैसा भयानक दृश्य ! । एक तरफ घर में हाय हाय, और दूसरी ओर बड़ी २ मूछों वाले धनी मानी पंच सरदारों की सेनाकी चढ़ाई । सौभाग्य तो यमराज ने लूट ही लिया था, रहा सहा सर्वस्व ये पंचराज लूट रहे हैं । असीम निर्दयता।

बन्धुओ ! इस ओर दृष्टिनिपात करो । इस भयंकर प्रथा का यथासंभव शीघ्र बहिष्कार करो । ऐसा न समझो कि यह पुराना रिवाज है, परम्परा से चला आया है, इसलिये इसे कैसे बदलें । यह बात हृदय से निकाल देनी चाहिए । क्योंकि सिद्धान्त नियमों के अतिरिक्त समाज के नियमों का परिवर्तन समय और संयोग के अनुसार होता रहता है । परम्परागत अच्छे रीति-रिवाजों में से, जो समयानुकूल हों, उन्हें कायम रखकर या सुधार कर प्रतिकूल रिवाजों का त्याग कर देना चाहिए । रहा लौकिक निन्दा का डर । सो यदि पंच या बिरादरी मिलकर मर्यादा बांधे, तो उसके अनुसार वर्तन करने में कोई निन्दा या बाधा नहीं है । यदि ऐसे कामों में एकदम सफलता न मिले तो प्रयास करते जाओ, और कम करते जाओ । हर्ष है कि कितनेक प्रान्तों में यह रिवाज बन्द हो गया है और कितनेक प्रान्तों में घृणा दृष्टि से देखा जाने लगा है । आशा है कुछ समय में ही हम इससे मुक्त हो सकेंगे ।

जिन सम्पत्तिशालियों को अपनी सम्मान रक्षा के लिये तथा यशस्कीर्ति के लिये खर्च करना आवश्यक मालूम हो, उन्हें चाहिये कि धार्मिक या सामाजिक संस्थाओं में लगायें । ताकि उसे पुण्य की प्राप्ति हो, सच्चा यश हो, समाज का भला हो, गरीबों को सहायता मिले और आ

रम्भ से चले। यदि श्रीमान् इस मार्ग का अवलम्बन करें तो साधारण परिस्थिति वालों का सुभीते से निर्वाह हो जाय। इसके अतिरिक्त समाज के बन्धनों के बिना भी ऐसे उत्सव गोठ आदि में, जिन से सामाज और धर्म को किसी प्रकार का लाभ नहीं होता, हजारों रुपये मौज शौक़ और नामवरी के लिये खर्च किये जाते हैं। यह क्या उचित है? यदि वे रुपये समाज के असहाय, गरीब दीन हीन बालकों की रक्षा शिक्षा दीक्षा में लगाये जायँ तो समाज की दशा कितनी जल्दी सुधरे। भला, इस बात का विचार कीजिये कि देश और समाज के एक अङ्ग निराधार मनुष्यों को अन्न के लाले पड़ रहे हैं, तन पर पर्याप्त वस्त्र नहीं है, जिस किसी तरह अपने संकटपूर्ण जीवनशकट को आगे धकेलते हैं, और हम मोटर गाड़ियों पर सवार होकर तेल फुलेल लगाकर बाग बगीचों में जीमन सैर सपाटा करते फिरते हैं। अगर हमारे हृदय में सच्ची दया और स्वधर्मिवात्सल्य होता तो हम इस व्यर्थ-व्यय के बजाय उनकी स्थिति सुधारने में लगे होते।

इसी प्रकार विवाह पर भी आवश्यकता से अधिक खर्च करने का प्रचार हो रहा है, इस फिजूल खर्च को रोक कर यदि वही रकम उन बालक बालिकाओं की शिक्षा और जीवन सुधार के लिये व्यय की जाय तो पिता अपनी संतति के प्रति वास्तविक कर्तव्य पालन कर सके। क्योंकि विवाह तो तीन दिन की खुशी है, उसमें हजारों रुपया का बरबाद करना और बच्चों की शिक्षा में चौथाई भी न लगाना, वणिक जैसी चतुर कौम के लिये अत्यन्त लज्जास्पद है।

इस विषय में समाज के नेताओं और पंचों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे विवाह का खर्च घटाने के लिये पंचायती नियम बनावें और विवाह खर्च के अनुसार कुछ लाग लगा कर उस द्रव्य से किसी भी प्रान्तिक ज्ञानसंस्था की सहायता करें।

यदि एक वर्ष का भी व्यर्थ व्यय मिटाकर शिक्षाप्रचार के कार्य में लगाया जाय तो निस्सन्देह एक अच्छा जैन विश्वविद्यालय क़ायम करके चलाया जा सकता है। अतः समाज के नेताओं को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

हमारी कॉन्फरेन्स

(महासभा)

प्राचीन काल में भारतवर्ष में सभाओं का पूर्ण प्रचार था। भगवान् का समवसरण भी सभा का एक आदर्श प्रकार था। इसी प्रकार संघ-सम्मेलन, स्वामिवात्सल्य प्रथाएँ भी सभाओं के विशेष २ रूप थे। किन्तु काल के परिवर्तन से उन संस्थाओं का अब वैसा प्रचार नहीं रहा। अतः समाज धर्म और देश के सुधार के लिए हमारे समाज में कॉन्फ़रेन्स स्थापित करने की इच्छा का उदय हुआ। इसके फलस्वरूप पहला अधिवेशन सन् १९०६ में मौरवी (काठियावाड़) में हुआ। अतः मौरवी कॉन्फ़रेन्स की जन्म भूमि है। उसके जन्मदाता होने का श्रेय स्व० सेठ अंबावीदास डोसाणी को है। तदनन्तर दूसरा अधिवेशन १९०८ में रतलाम, तीसरा १९०९ में अजमेर, चौथा १९१० में जालन्धर, पाँचवा १९१३ में सिकन्दराबाद और छठा १९१४ में मलकापुर में हुआ।

सिकन्दराबाद के अधिवेशन तक कॉन्फ्ररेन्स का शुक्ल पक्ष था। उस थोड़े ही समय में कॉन्फ्ररेन्स ने प्रेस, पेपर (अखबार), जैन ट्रेनिङ्ग कॉलेज रतलाम, बोर्डिंगहाउस बम्बई, बालाश्रम अहमदनगर, छुन्नरशाला अजमेर वगैरह विभाग स्थापित किए। सारे भारतवर्ष मे उपदेशको का भ्रमण प्रारम्भ कराया। कितने ही कुरिवाजों पर कुठाराघात हुआ। पजाब मारवाड़ गुजरात जैसे दूरवर्ती भाइयों में स्वधर्मप्रेम जागृत हुआ। लोगों ने ज्ञान की क़ीमत समझी। शतावधानी प० मुनि श्रीरत्नचन्द्रजी महाराज की सहाय्य से अर्धमागधी कोष का कार्य भी कॉन्फ्ररेन्स ने अपने ज़िम्मे लिया। लोगो में चारों ओर ख़ासी जागृति हुई।

उत्थान और पतन – चढ़ाव और उतार प्रकृति का सहज नियम है। भला, कॉन्फरेन्स के काल का परिवर्तन क्यों न होता? बस कॉन्फ्ररेन्स का प्रकाश फीका पड़ने लगा। इस समय की स्थिति आप से अज्ञात नहीं। मैं गई गुज़री कह कर आत्मा को दुखी करना नहीं चाहता। अस्तु

अब पुन शुक्लपक्ष आया। दोज के पतले और छोटे से चन्द्रमा को लोग जिस आतुरता और आनन्द से देखते हैं, वैसी आतुरता और आनन्द से मलकापुर के अधिवेशन मे भारत के सकल सघ ने भाग लिया। मलकापुर जैसे छोटे शहर ने कॉन्फ्ररेन्स के अधिवेशन पर बारहवर्ष से लगा हुआ ताला खोला। सच है कि छैनी, हीरा कणी, तिजोरी की चाबी, यंत्रो की कल, देखने में छोटी होने पर भी सगीन काम कर बताती है, यही कार्य मलकापुर के दस घरों के छोटे से सघ ने कर बताया।

दोज के चांद को देखकर विचक्षण पुरुष सारे महीने का भविष्यफल कह देते हैं। मलकापुर के अधिवेशन मे बनाये गये कार्यक्रम से हमने जो आशाएँ बांधीं थीं वे सौभाग्यवश सफलता के उन्मुख हो रही हैं, यह प्रगट करते हुए मुझे अतीव आनन्द होता है।

अन्तिम अधिवेशन के अनन्तर—

कॉन्फरेन्स का कार्यालय बम्बई जैसे विशाल और विख्यात क्षेत्र में आया। कॉन्फ़रेंस-रथ की धुरा निष्पक्ष अनुभवी विचारशील उत्साही मन्त्रियों की सुयोग्य जोड़ी पर रक्खी गई। सो ठीक ही हुआ। श्रीमान् सूरजमल लल्लूभाई जौहरी तथा श्रीमान् वेलजी लखमशी नप्पु B A. L L B ने वयोवृद्ध श्रीमान् सेठ मेघजी भाई थोभण जे० पी० के सभापतित्व में जो कार्यभार उठाकर कॉन्फ़रन्स की कीर्ति का पुन प्रसार किया है, इसके लिए मैं उन्हें सहर्ष धन्यवाद दिए बिना नहीं रह सकता। समाज आपके इस प्रशंसनीय प्रयास को सन्मान दृष्टि से देखता है।

कॉन्फरेन्सप्रकाश पत्र—जो शोचनीय स्थिति में आ गया था और जिसके लिए गत अधिवेशन के प्रमुख महोदय ने नरम से नरम शब्दों में "भाट" और "बीजक" कहा था, उस स्थिति को सुधारकर उनके सूचित किए हुए मार्ग से प्रगतिशील बना है। आज इस की ग्राहक संख्या पहले से पांच गुनी बढ़ गई है। "प्रकाश" की लोकप्रियता का यह एक प्रबल प्रमाण है।

जैन ट्रेनिङ्ग कॉलेज— पुनः प्रारम्भ करने के लिए मलकापुर म जो प्रस्ताव हुआ था, तदनुसार ता० १६ अगस्त सन् १९२६ को बीकानेर में प्रारम्भ हो गया है। इस समय उसमें १४ विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हमारा समाज ज्ञान मे इतना पिछड़ा हुआ है कि नियमानुसार मेट्रिक क्लास के विद्यार्थियों को प्रवेश करने के लिए प्रयत्न किया गया, परन्तु वैसे विद्यार्थी न मिल सके और अन्त मे मिडिल क्लास के विद्यार्थी प्रविष्ट करने पड़े। आश्चर्य है, ऐसा करने पर भी विद्यार्थियों की संख्या पूरी नहीं हुई। मेरी इच्छा है कि अधिक विद्यार्थी कॉलेज से लाभ उठावें। इस इच्छा को पूर्ण करने के लिए आप सब से आग्रहपूर्ण प्रार्थना करता हूँ।

शिक्षासुधारणा परिषद्— राजकोट में हुई। उसने पाठशालाओं का पठनक्रम सरीखा करना, पाठ्यपुस्तकें तैयार करना, पाठशालाओं की देखरेख के लिए इन्स्पेक्टर नियत करना, अध्यापक-परीक्षा लेना आदि की योजना की है। इन योजनाओं का सफल देखने के लिए हम उत्सुक हैं। गुजराती भाइयों ने उक्त कार्य करने के लिए कॉन्फरेन्स को जो सहायता दी है, वह प्रशंसनीय है। यही योजना हिन्दीविभाग (मारवाड़, मेवाड़, मालवा, पंजाब और मध्यभारत) के लिए होना बहुत जरूरी है। और इस के विषय में शीघ्र परिषद् बुला कर निर्णय करने के लिए हिन्दीविभाग के भाइयों से निवेदन करता हूं।

तिथियों की एकता— हमारे भिन्न २ सम्प्रदायों के मतभेद का एक कारण तिथियों की भिन्न २ मान्यता है।

कॉन्फरेन्स के प्रयास से तिथियों की एकता हो गई है। एक सर्वमान्य टीप भी प्रकाशित हो चुकी है। इस अवसर की जानकारी और शान्तिवर्द्धक प्रवृत्ति के लिए गुजरातवि भाग के मुनिराज और श्रीसघ धन्यवाद के पात्र हैं। इसी प्रवृत्ति को स्वीकार करने के लिए मैं हिन्दी विभाग के मुनि राज और श्रीसंघ से प्रार्थना करता हूं। फलवाले वृक्ष ही नम जाते हैं, यह विचार कर छोटी छोटी बातों के मतभेद को छोड़ देने म ही संघ धर्म और आत्मा का कल्याण है। वह दिन धन्य होगा जब हिन्दीविभाग भी इस एकता को स्वीकार करेगा।

अर्द्धमागधी कोष— कोषका कार्य पूर्ण करने के लिए बहुत ताकीद हो रही है। कॉन्फरेन्स का प्रेस अजमेर से इन्दौर भेज दिया गया है। आशा है यह कार्य एकाध वर्ष में ही पूर्ण हो जायगा।

मलकापुर अधिवेशन के बाद का काम काज बताने के बाद यह बतला देना आवश्यक समझता हू कि कॉन्फरेन्स में पास हुए कितने ही प्रस्ताव कागजों म लिखे रह जाते हैं। इस स्थिति को हमें बदल देना चाहिए। इच्छानुसार लम्बे प्रस्तावों के पास करने से ही सुधार नहीं हो जाता। अत प्रस्ताव भले ही थोड़े हो, पर जितने हों, उन्हे अमल में लाया जाय। सुधार का यही एक अच्छा मार्ग है। प्रस्तावो को अमल मे लाने के लिए समस्त समाज म उपदेशकों द्वारा आन्दोलन कराना चाहिए।

पहले प्रस्ताव

इससे पहले के अधिवेशनो में उत्तमोत्तम और आवश्यक प्रस्ताव पास हो चुके हैं। जैसे बालविवाहविरोध, लग्न की मर्यादा, वृद्धविवाह का निषेध, बहुविवाह का विरोध, व्यर्थव्यय का निषेध, दीक्षा लेने की योग्यताप्रदर्शक पचास साक्षिया होने पर दीक्षा देना, जैनशालाओं की वृद्धि करने और जाच करने के लिए इन्स्पेक्टर नियत करना, इत्यादि प्रस्ताव ज्यों के त्यों कागज़ों में ही लिखे पड़े है। इतना ही नहीं, जगह २ उपदेशक घुमाना, चार आना फण्ड एकत्र करना और प्रान्तिक सेक्रेटरियो द्वारा प्रत्येक शहर और गाँवो में समिति स्थापित करना, और प्रान्तिक कॉन्फरेन्स करना, ये खास कार्रवाइयाँ भी नहीं हुई हैं। इस प्रकार आपका ध्यान आकर्षित करता हूँ कि कॉन्फरेन्स के पहले प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण होने पर भी क्यों पार न पड़ सके? इस प्रश्न का निर्णय कर और उनमें यथा योग्य संशोधन कर अमल में आने के उपाय काम में लाय।

प्रान्तिक समिति

जिन प्रान्तो के सामाजिक रीतिरिवाज़ प्रथाएँ और भाषा एक हो, उन मुख्य २ प्रान्तों की प्रान्तिक सभा स्थापित करें। वहां के विचारक लोग अपने समाज और संघ में सुधार करने का विचार करें और अमली कार्य करें। ऐसी प्रत्येक प्रान्तिक सभाओं के अधिवेशन प्रतिवर्ष जनरल कॉन्फ़रेन्स के अधिवेशन से पहिले हो। और अपने सुधार व प्रगति कॉन्फ़रन्स को बताये। १

प्रान्तिक व्यवस्था

कॉन्फ़रन्स ने अपनी व्यवस्था करने और अपना पैगाम पहुँचाने के लिए भारत के २६ विभाग करके, वहा के दो प्रतिष्ठित और उत्साही प्रान्तिक सेक्रेटरी बनाने का जो नियम बनाया है, वह ठीक है। प्रान्तिक सेक्रेटरी के ज़िम्मे चार आना फण्ड एकत्र करना, मर्दुमशुमारी करना, अपने विभाग में प्रवास करना, और जनता की सहानुभूति कॉन्फ़रेंस के प्रति बढ़ाना आदि कार्य हैं, वे सेक्रेटरियों को अपने कारबार से फ़ुर्सत न मिलने के कारण पूरे नहीं हो सके। कितनेक प्रान्त के अग्रेसरों ने सेक्रेटरी पद भी स्वीकार नहीं किए। इस बाधा को दूर करने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें एक २ वैतनिक सहायक मंत्री दिया जाय। वह अपने विभाग में मत्री की आज्ञानुसार घूमकर चार आना फंड एकत्र करना, मर्दुमशुमारी करना, पाठशालाएँ स्थापित करवाना, सुधार का उपदेश देना, सघ की व्यवस्था का निरीक्षण करना, कुरीतियों को हटाना, कॉन्फ़रेन्स के प्रति सहानुभूति बढ़ाना, आदि कार्य करे और अपने कार्य की रिपोर्ट मत्री के पास भेजता रहे। इस प्रकार हिन्द के २६×२=५२ प्रतिष्ठित गृहस्थों का कॉन्फ़रेंस अपना अंगभूत बना सकेगी। और प्रत्येक प्रान्त के दो २ अनुभवी विद्वानों को मिलाकर विद्वानों और श्रीमानों का एक सयुक्त "निरीक्षक मण्डल" हो सकता है, यह मण्डल नियत समय पर एकत्र होकर अपनी २ त्रुटियों को सुधार कर उन्नति के उपाय सोचे। यह "निरीक्षक मण्डल" प्रान्तिक सभा और जनरल सभा को कुतुबनुमा का काम देगा।

से सुन कर तटस्थ रीति से सोचें और उनको दूर करने का प्रयास करें। वहाँ सघ का एकत्र करके बहुमत से स्थानीय व्यवस्थापक मडल स्थापन करें, जो प्रत्येक कार्य वहाँ के सघ की बहुमति से किया करें। यदि किसी कार्य में मत भेद हो जाय तो मध्यस्थ मण्डल से निपटेरा करा लेवे। सघ में परस्पर प्रेम, शान्ति, व्यवस्था व सगठन के लिए यही एक अद्वितीय व अमोघ साधन है, इसलिए सज्जनो ! इस ओर आपका ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करता हू।

अनाथालय

सज्जनो! हमारा समाज दयामागा समाज है। हम पशु पक्षियो की रक्षा करने के लिए पींजरापोल आदि संस्थाएँ स्थापित करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं। इसी प्रकार करुणा बुद्धि से अनाथ बालकों की भी रक्षा करना परम आवश्यक है। क्योंकि पशु आदि की अपेक्षा मनुष्य ज्ञान आदि में अधिक है। इसलिए रक्षा-कार्य में इन्हें पहला स्थान मिलना चाहिए। जिन अनाथ निराधार बालकों के रक्षक माता पिता भाई आदि नहीं होते, वे बेचारे निराश्रय होकर इधर उधर मारे फिरते हैं। और पेट की अग्नि को शान्त करने के लिये जैसा सहारा मिलता है, उसीका आश्रय ले लेते हैं। ऐसे ही हजारों अनाथों ने अन्न के बिना काल की शरण ली है, या अपने धर्म को तिलांजलि देकर विधर्मियो की शरण ली है। इसलिये उनकी रक्षा शिक्षा के लिये अनाथालय होना अत्यन्त आवश्यक है। एक अनाथालय आगरे में स्थापित हुआ है। यदि उसकी व्यवस्था ठीक हो तो उसे सहायता देकर उन्नत बनाना

चाहिए। किन्तु इस महत्त्व पूर्ण कार्य के लिये इतने में ही सन्तोष न कर लेना चाहिए, बल्कि और २ भी स्थापित कर वास्तविक दयाधर्म का परिचय देना चाहिए। ध्यान रहे कि इन अनाथों की रग २ में जैनधर्म का महत्त्व और प्रेम व्याप्त हो जाय। उनकी शिक्षा ऐसी हो कि वे स्वाश्रयी सदाचारी और समाजसेवी बनें। नये जैन बनाने का यह अच्छा उपाय है।

श्राविकाश्रम

इस उन्नतिशील समय में स्त्रीशिक्षा की कितनी आवश्यकता है ?, इस विषय मे सर्वत्र ऊहापोह हो रहा है। ऐसी अवस्था मे अपना पीछे रहना उचित नहीं कहा जा सकता। हमारी कन्याएँ और बहिनें शिक्षित, सुशील और सहायक बने, नैतिक और धार्मिक उन्नता सीखें, उनका शारीरिक और मानसिक विकाश हो, आरोग्य के और गृहोपयोगी आवश्यक नियमों को जाने, बालकों को शूरवीर बनावे, इत्यादि सब बातों का आधार स्त्रीशिक्षा पर ही निर्भर है। आजकल आयु की कमी, तथा बाल विवाह, वृद्धविवाह आदि कुप्रथाओं के कारण विधवाओं की सख्या बढ गई और बढती जा रही है। उन मे बाल विधवाओं की सख्या भी बहुत है। उनकी स्थिति देख कर किस समाज हितैषी का हृदय विदीर्ण न होगा ? विधवा होने के बाद उनका जीवन निराधार हो जाता है। उनके पालक उनकी पूरी परवाह नहीं करते। अशिक्षित होने से न तो वे नीति और धर्म की रक्षा कर सकती हैं और न

कुरीतियों से बचकर अपना पवित्र जीवन व्यतीत कर सकती हैं। ऐसी अवस्था में उनमें से बहुतों का अधःपात हो जाता है। बहुतेरे उदाहरण तो हम आँखों देखते हैं। अत धर्ममय जीवन बिताने के लिए, शील और सदाचार की रक्षा के लिए शिक्षा की प्राप्ति के लिए श्राविकाश्रम की हर एक प्रान्त में आवश्यकता है। उसमें धार्मिक और नैतिक शिक्षा के साथ २ सीना पिरोना कसीदा काढ़ना आदि जीवननिर्वाह के योग्य हुन्नर सिखाया जाय। तथा समाज की अन्य शिक्षासंस्थाओं के लिए अध्यापिकाएँ और उपदेशिकाएँ तैयार की जायँ।

हुन्नर शाला

मनुष्य के मुख्य दो कार्य हैं- जीवननिर्वाह और आत्मोद्धार। जीवननिर्वाह के पूरे साधन होने पर ही आत्मोद्धार में प्रवृत्ति हो सकती है। फिर बढ़ती हुई गरीबी और बेकारी के ज़माने में व्यवसाय और कला हुन्नर सिखाने की कितनी आवश्यकता है? दूसरी साधारण जातियों के लोग मिहनत मज़दूरी करके अपना निर्वाह कर लेते हैं, लेकिन जैन जाति के लोग वैसा करके अपना निर्वाह नहीं कर सकते। और कई लोग बुद्धि की मन्दता उम्र की अधिकता और विद्या के साधन न मिलने से पूरी शिक्षा नहीं पा सकते, उनके निर्वाह के लिए कला और हुन्नर सिखाने की खास ज़रूरत है। वह हुन्नर या कला ऐसी हो, जिस में आरम्भ ज्यादा न हो और जिससे सुखपूर्वक अपना जीवन बिता सकें। इसी उद्देश्य से

अजमेर में हुनरशाला खोली गई थी, किन्तु समाज के दुर्भाग्य से यह बन्द हो गई है। अब फिर उसके पुनरुद्धार के लिए प्रयास करना चाहिये। उस के अतिरिक्त योग्य २ स्थानो में अथवा हर एक प्रान्तमें, जहां जो हुनर सुभीते से सिखाया जा सके, ऐसे स्थानों में ऐसी हुनर शालाए खोली जावे।

कॉन्फ़रेन्स के एक उत्साही कर्णधार श्रीयुत् दुर्लभजी भाई जौहरी ने जयपुर में "जौहरीशाला" स्थापित कर के मीनाकारी हीरा, मोती आदि जवाहिरात का काम साहित्य के साथ सिखाने का शुभ विचार प्रकट किया था। तदनुसार पन्ने घिसने का काम सिखाना प्रारंभ कर दिया है, व जवाहिरात का साहित्य तैयार हो रहा है, यह प्रशसनीय है। समाज को चाहिए कि ऐसी सस्थाओं को सहायता देकर उत्तेजना दें, और अपनी सन्तान को तथा स्कॉलर्शिप देकर अन्य जैनविद्यार्थियों को शीघ्र भेजकर उनसे लाभ उठावें *।

समाज के प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है "चाहे वह व्यवसायी हो या नौकरपेशा" कि वह अपनी आय में से कुछ हिस्सा अवश्य निकाला करें और उससे अपने यहा कोई उपयोगी सस्था छोटे या बड़े रूप में स्थापित करें, या अपने प्रान्त की संस्थाओं को सहायता किया करें। समाज की शीघ्र उन्नति का यह एक सरल मार्ग है।

---

* हरएक सस्था में धार्मिक शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिए।

हमारे गुरु

मित्रो ! अपने परमोपकारी, चारित्रवान्, निर्ग्रन्थ गुरुओं पर हमें गर्व और श्रद्धा है कि वे वीरशासन को दिपावेंगे,-प्रकाशित करेंगे तथा विश्वप्रेम की ध्वजा फहरावेंगे। हमारे गुरुओं ने अपने कुटुम्ब के १०-५ मनुष्यों की रक्षा का भार छोड़ कर लाखों जैनों को धर्म में स्थिर करने और ८४ लाख योनियों के अनन्त जीवों की रक्षा और हित-साधन की जिम्मेवारी अपने हाथ में ली है। ऐसा विशाल उत्तरदायित्व जिन्होंने प्रसन्नता से लिया है, वे हमारे गुरु हैं। यह हमारे लिये गौरव की बात है, और यदि सच पूछा जाय तो सारे संसार की खाक छानने पर भी उनकी जोड़ी का कोई दूसरा त्यागी न मिलेगा।

इन विचक्षण महानुभावों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे जिस सम्प्रदाय में आचार्य न हो, उसमें चतुर्विध संघ की अनुमति से आचार्य की स्थापना करें और वे सब आचार्य गुणग्राहक बुद्धि से परस्पर प्रेम का प्रचार करें। पश्चात् सब आचार्य आपस में एक दूसरे की सम्मति मिला कर "मुनिसम्मेलन" करें और उसमें भावी सुधारों की योजना करके धर्मोन्नति और धर्मप्रचार के लिये शीघ्र कटिबद्ध हो जायँ।

बन्धुओ ! मेरी यह विनति आप उन पवित्रात्माओं को अर्ज़ करके योग्य प्रेरणा करें।

ज्ञानप्रचार

ज्ञान आत्मा का गुण है। यह समता सहिष्णुता ऋजुता और दिव्यता पैदाकर हमारा जीवन ज्योतिर्मय बनाता

है। धार्मिक क्रियाओं से आत्मबल शुद्धि और जीवन की दिव्यता प्रगट होती है; किन्तु ज्ञान धार्मिकक्रियाओं के लिए दीपक समान है। आज कल के विज्ञानप्रिय और चमत्कारी समय में जैनों को सब से आगे रहना चाहिए। अपने आगम केवलज्ञानी के वचन हैं। यह मानकर ही सन्तोष न कर लेना चाहिए, बल्कि उसकी वैज्ञानिक सत्य ता संसार के सामने उपस्थित करनी चाहिए। उसके उपाय इस प्रकार हैं—

तत्वशोधकवर्ग— कुशाग्रबुद्धि, शोधनशक्ति और तत्वज्ञान प्रेमियों को तत्वज्ञान के साथ तुलनात्मक पद्धति से अन्यशास्त्रों (विज्ञान शरीरमानस समाज, शास्त्र) का अभ्यास कराने के लिए और स्वाभाविक रुचि वाले गृहस्थ व त्यागी को लेखन, वक्तृत्व, कवित्व, आदि की शक्ति बढ़ाने की सुविधा कर दी जाय। इस विषय में लाखों का खर्च भी निष्फल न होगा। ये लोग जैनतत्व का नवीन ढंग से प्रकाश फैलावेंगे। उपदेश, शिक्षणपद्धति, समाज-सुधार आदि की नयी रीतियाँ बतलाकर नवीन चेतन और उत्साह प्रगट करेंगे।

शिक्षाप्रचारक मण्डल (Education Board)—जनता में शिक्षा की रुचि बढ़ाने के लिए, शिक्षक और शिक्षिकाएँ, तैयार करने के लिए फुर्सत के समय घर बैठे अभ्यास करने की प्रेरणा करने के लिए ऐसे मण्डल की जरूरत है, जो कि भिन्न २ श्रेणियों के अभ्यासक्रम की रचना करके प्रति वर्ष परीक्षा लेने की व्यवस्था करे। यह जैनधर्मप्रवेशक शिक्षक विनीत पण्डित स्नातक आचार्य आदि कक्षाओं में उत्तीर्ण होने

वालों को प्रमाणपत्र पदवी और पुरस्कार देने की व्यवस्था करे।

मासिक पत्र और ट्रेक्ट— जैनतत्त्वज्ञान, जीवनोपयोगी विषय तथा स्त्रियों बालकों और युवाओं को समयधर्म तथा नीतिधर्म की शिक्षा देने के लिए, कुप्रथाओं को दूर करने और आत्मा में शान्त प्रेमरस प्रकट करने के लिए अनुभवी विद्वान् सम्पादक के सम्पादकत्व में एक आदर्श मासिकपत्र शुरू होना चाहिए। इसके सिवाय भिन्न २ विषयों पर अनुभवी विद्वानों द्वारा भिन्न २ भाषाओं में ट्रेक्ट प्रगट करके सस्ती कीमत से या बिना मूल्य बँटवाना चाहिए।

"**जैनगीता**—जैनतत्त्वज्ञान को संक्षेप और सरलता से बताने वाली एक छोटी किताब की जरूरत है, जो जैन फिलासफ़ी का शीघ्र अभ्यास करने वालों को उपयोगी हो सके। ऐसी पुस्तक का अनुवाद संसार की सब भाषाओं में करके सस्ती कीमत में बेचा जाय। इस कार्य में सब जैन फिरकों के अनुभवी विद्वानों की सहायता मिलने की संभावना है।"

ग्रन्थ-प्रकाशन— आजकल जीवन-कलह के भरपूर प्रपंचों से शास्त्राध्ययन की प्रवृत्ति शिथिल होगई है। ऐसी दशा में संस्कृत प्राकृत आदि भाषाओं के पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति का समय कैसे मिल सकता है? ऐसी हालत में लोगों को तत्त्वज्ञान सिखाना हो, धर्म के सन्मुख करना हो और ज्ञानप्रेमी बनाना हो, तो प्राचीन महान ग्रन्थ और सिद्धान्तों का मातृभाषा में अनुवाद कर प्रसिद्ध करना चाहिए। दिगम्बर आचार्यों ने इस विषय

में बहुत कुछ काम किया है। तथा जैसलमेर में "प्राचीन जैन आगमोद्धारक कमेटी" ने प्राचीन शास्त्रभण्डार अभी खोला है, उसमें ताड़पत्र पर भी बहुत से ग्रन्थ मौजूद हैं। वहां पण्डित और लेखक को भेजकर किसी भी ग्रन्थ की दो प्रतियां बनाकर एक प्रति जैसलमेर भण्डार को दी जाय और एक लिखाने वाला ले, ऐसा कमेटी ने नियम रक्खा है । इस तरह यथेष्ट प्राचीन साहित्य पाने का यह सुनहरी अवसर है । इससे लाभ उठाना भी मैं आवश्यक समझता हूं।

मैं विद्वानों से फिर भी प्रेरणा करता हूं कि अपने गौरव बढ़ाने वाले प्राचीन आगम और ग्रन्थों को आधुनिक शैली से मातृभाषा में अनुवाद करके प्रकट करें तो जनता का अधिक उपकार होगा।

धर्म प्रचार

हम लोग आपसी झगड़ों में पड़कर अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर रहे हैं, जब कि आर्यसमाज और ईसाई जैसे समाजों ने थोड़े ही दिनों में आश्चर्यजनक उन्नति कर ली है। इस समय ईसाइयों की संख्या भारतवर्ष में लगभग ५० लाख और समाजियों की करीब २० लाख सुनी जाती है। उधर वह दिनोंदिन बढ़ती जाती है और इधर हमारी संख्या घटती जा रही है। यदि हमारी संख्या इसी रफ्तार से घटती रही तो थोड़े ही दिनों में परिणाम भयंकर होगा। परन्तु यह हो नहीं सकता, क्योंकि सर्वज्ञ का कथन है कि धर्म पांचवे काल के अन्त तक अवशिष्ट रहेगा। इससे मालूम होता है कि हमारी उन्नति अवश्य

बल और कायबल आदि सुख की सामग्री मिली है, वह सब हमारे पूर्व जन्म में की गई करुणापूर्वक सहायता का फल है।

नीति शिक्षा

समाज में जिस प्रकार धर्मप्रचार की जरूरत है, उसी प्रकार नीतिज्ञान प्रचार की भी। नीतिज्ञान न होने से मनुष्य मनुष्यत्व से भी हाथ धो बैठता है। नैतिक शिक्षा सदाचार की जड़ है, और सदाचार मनुष्य जीवन का प्राण। जिस व्यक्ति में सदाचार-हीनता हो, वह मनुष्य होकर भी पशुसमान है। यही बात किसी कवि ने कही है—

मानुष बनते नीति से, नय बिन पशु समान।
इससे मन में नीति को, रखिए चतुर सुजान॥

जिस समाज में सदाचारी व्यक्ति होते हैं, वह समाज गौरवदृष्टि से देखा जाता है। अतः हे मित्रो! सदाचार का प्रसार करने के लिए नीतिविज्ञान की बड़ी भारी आवश्यकता है।

गुण-सन्मान

"गुणियों के गुण दिपाना" यह सम्यक्त्व का अंग है। इससे जनता में गुणग्राहक वृत्ति जागृत होती और गुणी जनों के उत्साह की वृद्धि और विकास होता है। नये नये गुणी जनों की वृद्धि और विकास होने से नैतिक उच्चता और सद्गुणों की व्यापकता होती है। यह गुणसन्मान करने का कार्य कॉन्फरेन्स का है। अतः वह प्रत्येक अधिवेशन के समय सुयोग्य विद्वानों गृहस्थों और साधुओं को योग्य कृतज्ञतासूचक पदवी प्रदान करे। पदवी प्रदान

करने से पहले उस व्यक्ति की सचरित्रता और श्रद्धा जरूर देखी जानी चाहिए। इस तजवीज़ से हम प्रगति करके बहुत उन्नत हो सकेंगे।

महिला-महिमा

स्त्रियों का सुधार, शिक्षा और महिमा यह माता की महत्ता है। स्त्रियों में निडरता, विद्याप्रेम, संस्कृति व्यवस्थाशक्ति, आरोग्यज्ञान स्वाश्रय और सेवाभाव का विकास करना कितना महत्त्वपूर्ण है? यह अब स्पष्ट हो चुका है। स्त्रियों की आत्माओं को हमने अपनी डरपोक और कायरवृत्ति से कुचल दिया है। उन्हें फिर पोषण करके विकसित करना हमारा पहला कर्तव्य है। किं बहुना, हमारे संसारसुख के अभ्युदय की कुंजी, स्त्रियों के सुधार में रही हुई है।

इस अधिवेशन में स्त्रियों ने पुरुषों का जो हाथ बँटाया है, उसे देख कर मेरा हृदय प्रफुल्लित होता है। बहिनों को मेरा आशीर्वाद है कि इसी प्रकार पुरुषों के प्रत्येक कार्य में सहकार देकर अपना मान और गौरव बढ़ावें।

सिकन्दराबाद में सन् १९१३ के अधिवेशन के समय महिलापरिषद् की चौथी बैठक हुई थी, पर उल्लेखनीय कोई कार्य नहीं हुआ है।

बहिनो! सन् १९१३ के बाद तेरह वर्ष का खासा ज़माना गुज़र चुका। मानो राम सीता और पाण्डव द्रौपदी का वनवास समाप्त हुआ है। आप भी बम्बई जैसे उदार और विशाल क्षेत्र में स्त्री-उन्नति की उदार और विशाल योजनाएँ रचकर कर्त्तव्यशील बनो! और भारत की पिछड़ी हुई बहिनों को अपने आदर्श से जागृत करो।

उपसंहार

प्रिय आत्मबंधुओ! और बहिनो! अब मैं अपना व्याख्यान समाप्त करता हूँ। यद्यपि मैं ने आपका बहुत समय लिया है, किन्तु जब आप लोगों ने समाज की सेवा करने का कार्य मुझे सुपुर्द किया, तो मुझे अपना कर्तव्य पालन करना ही चाहिए। मित्रो! मैं ने यथाशक्ति समाज की स्थिति और भावी कर्तव्य आपके समक्ष रक्खा है। आप लोग उस पर यथोचित विचार मनन और प्रगति करके कर्तव्यमें लावें। केवल विचार या विधिज्ञान से कार्य की पूर्णता नहीं हो सकती। प्रभु महावीर ने भी "सम्यग्ज्ञानदर्शन चारित्राणि मोक्षमार्ग" और "ज्ञानक्रियाभ्याम् मोक्षः" इन सूत्रों से ज्ञानपूर्वक क्रिया की आवश्यकता प्रतिपादन की है। अतः आप भी विधिज्ञान श्रद्धा और क्रिया शीलता से समाज देश और धर्म में जागृति फैलाओ। किं बहुना, सांसारिक बन्धनों को क्रमशः दूर कर उच्च तदशा और आत्मशुद्धि पाकर मुक्तात्मा बनो। यह मेरी सदा सर्वथा प्रार्थना है।

अन्तिम मंगल—

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यक् समवतु मघवा व्याधयो यान्तु नाशम्।
दुर्भिक्षं चौरमारी क्षणमपि जगतां मा स्म भूज्जीवलोके,
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्वसौख्यप्रदायि ॥ १ ॥

शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!